Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

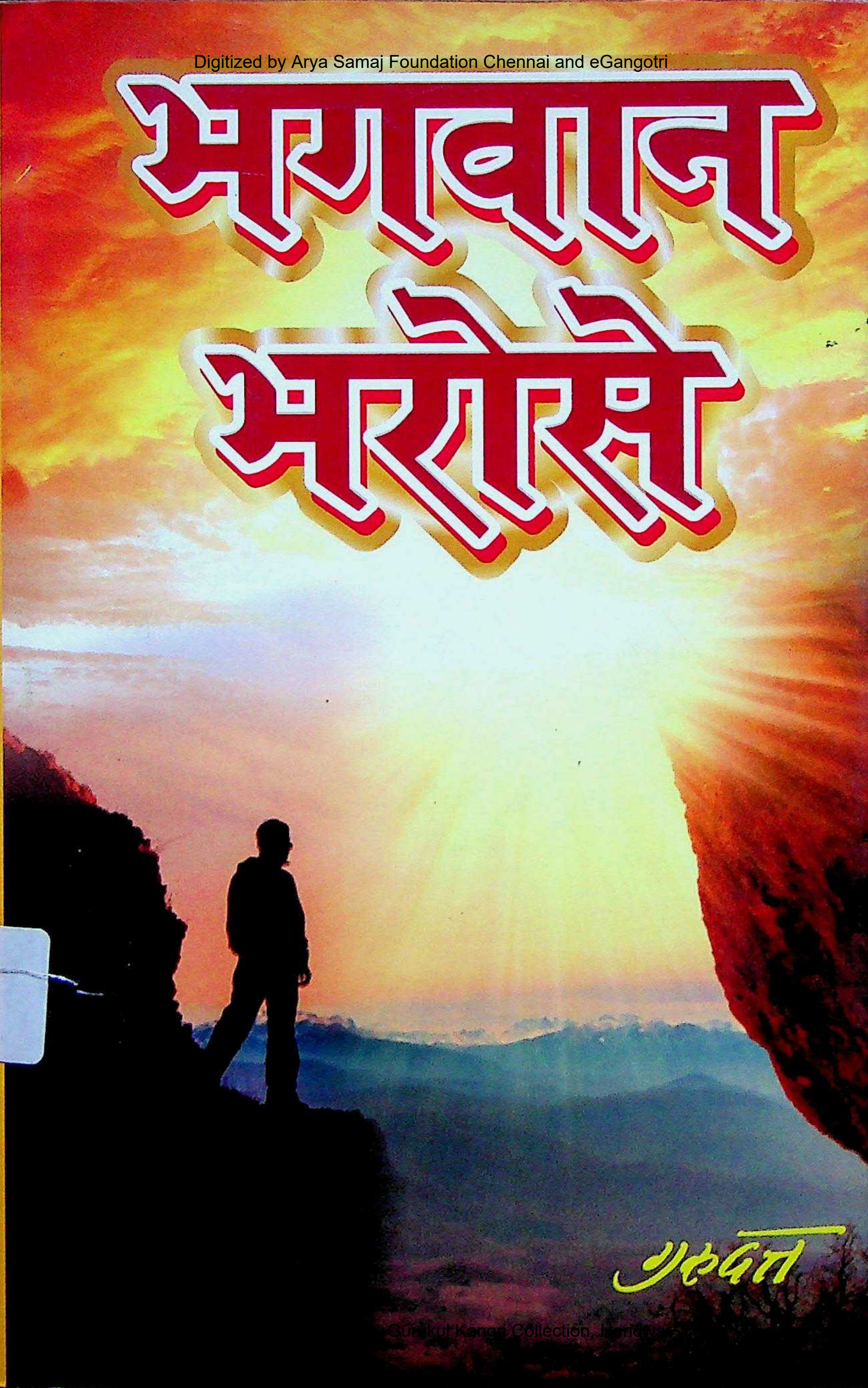

Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की
कुछ पुनःमुद्रित रचनाएँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167950

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान भरोसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव
जीवन में ईश्वर
की आवश्यकता एवं
महत्व पर प्रकाश डालता
सशक्त, रोचक,
मनोरंजक ज्ञान व
शिक्षा से भरपूर
सारगर्भित
उपन्यास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान भरोसे

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

081
167950

Central Library
167950
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

प्रकाशक

हिन्दी साहित्य सदन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-B

© ईशान दत्त

भगवान भरोसे

₹ 300/-

पुस्तक	:	भगवान भरोसे
लेखक	:	गुरुदत्त
ISBN	:	81-88388-41-6
संस्करण	:	2017
प्रकाशक	:	हिन्दी साहित्य सदन 2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबन्धु गुप्ता रोड, करोलबाग, (पुलिस स्टेशन के समीप) नई दिल्ली-110005
ई-मेल	:	indiabooks@rediffmail.com hindisahityasadan@gmail.com
वैबसाइट	:	www.hindisahityasadan.com
दूरभाष	:	23553624, 23551344, 9213527666
मुद्रक	:	गोयल एन्टरप्राईजिस, दिल्ली-110002

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

जीवन में सफलता प्राप्त करने का उपाय योग-साधना है। किसी भी कार्य की सिद्धि के लिए उस कार्य में लगने से पूर्व चित्त की वृत्तियों का निरोध करना आवश्यक होता है। अर्थात् चित्त को एकाग्र कर उस कार्य में लग जाने से कार्य सिद्ध हो जाता है। यही योग है–

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः

और योग-साधना के लिए प्रथम पग है यम और नियमों का पालन करना। यम और नियम दस है–

अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः।
शौचसंतोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः।।

नियमों में अन्तिम अर्थात् पाँचवाँ नियम है ईश्वर-प्रणिधान। ईश्वर-प्रणिधान को साधारण भाषा में भगवान भरोसे कहते हैं। भगवान भरोसे का यह अभिप्राय नहीं कि कार्य तो कुछ नहीं करना और इच्छा यह करना कि परमात्मा स्वयमेव हमारी आवश्यकताओं को पूर्ण कर देगा। योग-दर्शन में वर्णित ईश्वर प्रणिधान का यह अर्थ नहीं है।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तप और स्वाध्यायादि यम-नियमों का पालन करने पर भी यदि कार्य सम्पन्न होता न दिखाई दे तो अपने पूर्व प्रयास को ईश्वरार्पण समझना ही भगवान भरोसे होना है।

अनेक बार विचार और योजनाबद्ध कार्य करते हुए भी मनुष्य को सफलता अथवा कार्यसिद्धि में सन्देह दिखाई दे तो वह क्या करे? ऐसी स्थिति में सिद्धि को परमात्मा के आश्रय छोड़कर कार्य करता जाए।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्तवकर्मणि।।
योगस्थःकुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्धयसिद्ध्यौः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।

फल की कामना न करते हुए कर्म करता जा। फल की इच्छा न कर, परन्तु इसमें कार्य करना छोड़ न दे।

आसक्ति छोड़कर कर्म कर। सिद्धि हो या असिद्धि हो, दोनों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समान मानकर योगस्थ होकर कर्म कर।

और फिर कोई यह धारणा बना ले कि अमुक कार्य उसने ही सम्पन्न किया है, यह भ्रान्ति है। सांख्य के मतानुसार कार्य की सम्पन्नता के पाँच कारण हैं–

अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम्।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पंचमम्।।
शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्म प्रारभते नरः।
न्याय्यं वा विपरीत वा पञ्चैते तस्य हेतवः।।

ये पाँच कारण हैं–अधिष्ठान अर्थात् स्थान, करने वाला, करण अर्थात् साधन, चेष्टा अर्थात् प्रयत्न और दैव।

मन, बचन, शरीर और धर्मानुसार अथवा धर्म-विपरीत जो कर्म कभी मनुष्य करता है उसके यह पाँचों कारण हैं।

दैव अर्थात् परमात्मा सबसे प्रबल है। क्योंकि अन्य चारों में भी वही कार्य करता दिखाई देता है।

इस पर भी जो मनुष्य समझे कि मैं ही करता हूं, वह दुर्मति है।

तत्रैवं सति कर्तारमात्मानं केवलं तु यः
पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न स पश्यति दुर्मतिः।।

यह है प्रस्तुत उपन्यास 'भगवान भरोसे' का भाव। उपन्यास होने से इसके पात्र, स्थान, और घटनाएं सब काल्पनिक हैं। केवल भाव ही वास्तविक है। रोचकता और भाव-प्रतिपादन में यह कितना सफल हुआ है, यह पाठकों के जानने का विषय है।

–लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान भरोसे

प्रथम परिच्छेद

:1:

भगवान भरोसे रहने में भी विशेष प्रकार का आनन्द रहता है। इस अवस्था में आशा पूर्ण न होने पर भी असन्तोष और दुःख नहीं होता। भाग्य को दोष देकर मनुष्य चित्त को शान्ति दे लेता है। प्रयत्न का फल मिलने पर मुख से ईश्वर का धन्यवाद निकल जाता है और अभिमान करने के लिए स्थान नहीं रह पाता।

परमात्मा को अपनी सफलता-असफलता से प्रथक् रखने में तो सुख और दुःख दोनों की अनुभूति होती है। सुख की अवस्था में मनुष्य को स्वयं में आत्मविश्वास और अपनी बुद्धि तथा प्रयास पर गर्व होता है। आत्मविश्वास और गर्व से उजड्डता तथा अभिमान एक ही पग आगे हैं और विरले ही इस पग को उठाने से रुक सकते हैं। असफलता के समय दुःख में तो निराशा और उत्साहहीनता उत्पन्न होने लगती है। यह विनाश का किनारा ही है।

बी० ए०, द्वितीय श्रेणी में, उत्तीर्ण कर निरंजनदेव नौकरी करने के लिए दिल्ली को चल पड़ा। उसके दूर का सम्बन्धी लाला नारायणदास भारत सरकार के केन्द्रीय कार्यालय में सुपरिण्टेण्डेंट था। एक बार नारायणदास लाहौर आकर उसके पिता के घर पर ठहरा था। उस समय उसने अपनी कारगुजारियाँ सुनाई थीं। निरंजनदेव ने उसकी बातों को सुना था और अपने मन में भी उसी के कार्यालय में नौकरी करने का विचार बना बैठा था। इस विचार से उसने उस दिन नारायणदास से पूछा था, "आपके कार्यालय में नौकरी मिलती किस प्रकार है ?"

"कोई कठिन बात नहीं हैं। परीक्षाफल निकलने पर वहां आ जाना और, जिस योग्य होगे, वैसा काम मिल जाएगा। वहाँ तो चपरासी से लेकर सचिव तक के स्थान रिक्त होते रहते हैं। थोड़ा साहस, थोड़ी चतुराई और थोड़ा बात करने का ढंग आना चाहिए, फिर तो उन्नति का मार्ग स्वयमेव बनता चला जाता है।"

"देखो निरंजनदेव! मैं दसवीं पास करके वहाँ गया था और दस वर्ष में सुपरिंटेण्डेंट बन गया हूँ। मैं यत्न कर रहा हूँ कि अंडरसेक्रेटरी बन जाऊँ। यदि इस वर्ष नहीं तो अगले वर्ष निश्चय ही बन जाऊँगा।"

"आप पर तो भगवान की कृपा प्रतीत होती है।"

"भगवान-वगवान कुछ नहीं। कम-से-कम, मैंने तो उसे कभी देखा नहीं। मैं सैल्फ-मेड व्यक्ति हूँ। मैंनें कभी किसी पर भरोसा नहीं किया। जिसके अस्तित्व को मैं मानता नहीं ऐसे परमात्मा पर भरोसा करने की मैं मूर्खता नहीं कर सकता।"

यद्यपि निरंजनदेव के घर के संस्कारों तथा नारायणदास के विचारों में कोई समानता नहीं थी, तथापि वह नौकरी का लोभ छोड़ नहीं सका। परीक्षाफल निकलने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह दिल्ली हैवलौग स्क्वेयर में नारायणदास के क्वार्टर पर जा पहुँचा।

नारायणदास दफ्तर जाने के लिए तैयार खड़ा था। निरंजनदेव को अपने क्वार्टर के सामने तांगे पर से उतरते देख वह विस्मित-सा खड़ा रह गया।

"आओ निरंजनदेव! अपने आने की सूचना तो देते!" नारायणदास ने उलाहना-सा जताते हुए कहा।

"इसकी आवश्यकता नहीं समझी।"

"और मैं घर पर न मिलता, तो ?"

"तो कहीं धर्मशाला या होटल में ठहरकर आपकी प्रतीक्षा कर लेता। मैं तो अपने सब काम परमात्मा के भरोसे ही करता हूँ। मुझे विश्वास था कि आप अवश्य मिल जाएँगे।"

"यदि तुम एक दिन का विलम्ब करके आते तो मैं कभी नहीं मिलता। मैं कल ही लम्बे टूर पर जा रहा हूँ।"

"तब तो मेरा परमात्मा पर भरोसा करना सार्थक हो गया। मेरी अन्तरात्मा ने मुझे प्रेरणा दी थी कि मैं कल ही लाहौर से चल दूँ। सो चला आया और आप मिल गये।"

"इस वर्ष मैंने बी० ए० पास कर लिया है और अब नौकरी प्राप्त करने में आपसे सहायता लेने के लिए आया हूँ।"

"मेरे विचार से तो इसके लिए भी परमात्मा को ही बुलाना पड़ेगा।" नारायणदास ने व्यंग्य के भाव में मुस्कराते हुए कह दिया।

"परमात्मा ने तो आपके घर का मार्ग दिखा दिया है।"

"वह मेरा क्या लगता है ?"

"यह तो बताया नहीं। परन्तु उन्होंने मुझे आपके पास भेजा है, इसमें भी सन्देह नहीं है।" कहता हुआ निरंजनदेव हँस पड़ा।

"अच्छी बात है, तुम यहाँ ठहरो। मुझे दफ्तर जाने के लिए देर हो रही है। शाम को लौटने पर बात करेंगे।"

लाला नारायणदास को परमात्मा के नाम से चिढ़ थी और साथ ही उसके भक्तों से भी उसे चिढ़ होने लगी थी। इस पर भी सांसारिक जीव होने के नाते वह अपना व्यवहार इस प्रकार का बनाये रहता था कि जिससे लोक-संग्रह में उसे प्रमाद न आने पाये।

लोक-संग्रह और लोक-कल्याण में तो अन्तर है ही। लाला नारायणदास का ध्यान लोक-संग्रह की ओर होता था। इस कार्य में सहसा कोई लोक-कल्याण का कार्य हो जाए तो दूसरी बात थी। परन्तु लोक-कल्याण उसके लिए कभी साध्य नहीं रहा।

उसको सन्देह था कि निरंजनदेव का कार्य करने से उसके लोक-संग्रह में वृद्धि होगी। दूसरे उसने अपने मन में विचार किया कि यदि यह कहता है कि परमात्मा मेरा सहायक है और वह सर्वशक्तिमान है तो फिर वह क्यों इसके लिए चिन्ता करे। इस कारण ताँगे में चढ़ते ही उसके मस्तिष्क से निरंजनदेव की बात निकल गई।

उसको निरंजनदेव की स्मृति तभी हुई, जब वह सायंकाल अपने घर वापस आया। अगले दिन सरकारी काम से उसे बाहर टूर पर जाना था। इस कारण उसे निरंजनदेव की समस्या पर विचार करने की आवश्यकता अनुभव हुई। जब वह दफ्तर से आया तो उस समय निरंजन उसके क्वार्टर के बाहर लॉन में एक कुर्सी पर बैठा हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई पुस्तक पढ़ रहा था। उसे देख नारायणदास पूछने लगा, "क्या पढ़ा जा रहा है ?"

"गांधीजी की आत्मकथा है।"

नाक चढ़ाते हुए नारायणदास बोला, "अच्छा पढ़ो, मैं अभी कपड़े बदलकर आता हूँ।"

वास्तव में वह इसके विषय में अपनी पत्नी से बातचीत करना चाहता था। नारायणदास की पत्नी श्यामा यद्यपि निरंजनदेव से परिचित नहीं थी, इस पर भी उसने उसके पिता लाला अर्जुनदेव का नाम सुना हुआ था। निरंजनदेव की माँ से उसका अधिक परिचय था। दोनों गुजराँवाला के एक ही मुहल्ले की लड़कियाँ थीं। विवाह के बाद वे परस्पर मिलीं तो नहीं थीं. परन्तु निरंजनदेव की माँ मोहिनी ने नारायणदास को पहचान लिया था। जब वह लाहौर में अर्जुनदेव के मकान पर ठहरा था, तो मोहिनी ने उसको देखा, पहचाना और बोली, "मैं आपको जानती हूँ। लाला वैशखीमल के घर आपका विवाह हुआ है न ? श्यामा मेरी सहेली थी। हम एक साथ खेलती थीं।"

नारायणदास ने विचार किया कि निरंजनदेव की माँ की सहेली से पूछकर ही उसके विषय में विचार करना चाहिए। अतः वह भीतर गया तो श्यामा उसके सम्मुख आ गई। उसने पूछा, "चाय पियेंगे ?"

"क्यों, किसलिए पूछ रही हो ?"

"घर में मेहमान आया है न ?"

"ओह! ठीक है। उसको भी चाय पीनी होगी। मैं कपड़े बदल लूँ, तब उसको बुला लेंगे। अच्छा यह बताओ, यह लड़का नौकरी की तलाश में आया है, मैं कल बम्बई, मद्रास, कलकत्ता के लिए जा रहा हूँ। एक महीना लग जाएगा। इसका क्या प्रबन्ध किया जाये ?"

"तब तो आज इसको दफ्तर बुलवाकर इसकी अर्जी-पर्चा करवा देते।"

"बात यह है कि जब वह कहने लगा कि उसको परमात्मा पर बहुत विश्वास है तो मैंने समझा कि मैं इसके और परमात्मा के बीच में क्यों खड़ा होऊँ ? इस कारण मैं उसके विषय में बिल्कुल भूल ही गया था।"

"परन्तु वह तो आपको ही अपना परमात्मा समझकर यहाँ आया है। इस अवस्था में आप उसके परमात्मा के मध्य किस प्रकार आ सकते थे ?"

"तो तुम चाहती हो कि उसकी सहायता करनी चाहिए ?"

"मेरे कहने पर ही आप उसकी सहायता करेंगे क्या ?"

"परमात्मा की अपेक्षा मैं तुमको अधिक मानता हूँ।"

श्यामा ने प्रेम-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा तो नारायणदास ने कह दिया, "अब तो मैं जा रहा हूँ। तब तक चाहो तो उसको रख सकती हो। आने पर ही कुछ किया जा सकेगा।"

"वैसे तो आजकल गरमी के दिन है। रात्रि को बाहर सो रहा करेगा। क्या विचार है आपका ?"

"ठीक है। घर में दो-दो लड़कियाँ हैं, तनिक सावधानी से रहना होगा।"

"क्यों, आपने इसमें कोई खराबी देखी है क्या ?"

"मैं कुछ नहीं जानता। यदि कुछ हुई भी तो इतनी जल्दी किस प्रकार मालूम हो सकती है ? मैंने तो तुमसे केवल सावधानी बरतने के लिए कहा है। मैं भगवान-भरोसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ भी नहीं छोड़ना चाहता।"

श्यामा को भगवान पर इतना अविश्वास कभी भी नहीं भाया था। इस पर भी वह अपने पति की परमात्मा के विषय में धारणा सुनकर समझ चुकी थी कि जहाँ भगवान पर विश्वास के कुछ अर्थ नहीं, वहाँ उस पर अविश्वास करने में भी कोई कारण नहीं। एक बात वह बचपन से अपने बड़ों से सुनती रही थी कि "परमात्मा के ढंग न्यारे हैं।"

नारायणदास ने कहा, "अच्छा, सतीश को भेजकर निरंजनदेव को भीतर बुलवा लो और नौकर को चाय बनाने के लिए कह दो।"

क्वार्टर के सेहन में चाय के लिए मेज-कुर्सियाँ लग गईं। नारायणदास भीतर जाकर मेज पर बैठ गया। सतीश निरंजनदेव को बुलाने चला गया। उसने निरंजनदेव के पास जाकर कहा, "भाईसाहब! आइये आपको माताजी बुला रही हैं।"

निरंजनदेव ने कुर्सी पर से उठते हुए कहा, "क्या नाम है तुम्हारा ?"

"सतीश कुमार।"

"पढ़ते हो ?" कुर्सी उठाते हुए निरंजनदेव ने पुनः पूछा।

सतीश ने उसके हाथ से कुर्सी लेते हुए कहा, "आप इसे छोड़िये, मैं भीतर ले जा रहा हूँ।"

"तुमसे तो मुझमें अधिक बल है।" निरंजनदेव ने कुर्सी नहीं छोड़ी।

"जी, यह तो ठीक ही है, परन्तु मैं आपसे छोटा हूँ, इसलिए मुझे आपका काम करना चाहिए।"

निरंजनदेव अभी भीतर जा ही रहा था कि नारायणदास की दोनों कन्याएँ हाथ में पुस्तकें लिये हुए आ गईं। निरंजनदेव ने उनके लिए मार्ग छोड़ दिया। दोनों ने उसकी ओर देखा और भीतर चली गईं। निरंजनदेव को घरेलू पहरावे में देखकर लड़कियों ने अपने मन में यह अनुमान लगा लिया था कि घर में कोई अभ्यागत आया हुआ है। वे अपने कमरे में चली गईं। निरंजनदेव नारायणदास के समीप जाकर बैठ गया। सतीश भी वहाँ आ बैठा। लड़कियाँ अपनी पुस्तकें रखकर चाय पीने के लिए आ गईं।

मीटू इनके घर में नौकर था। उसका काम था रोटी बनाना, मकान की सफाई रखना और बाजार से साग-भाजी खरीदकर लाना। वह अभी चाय के बर्तन लगा ही रहा था कि नारायणदास ने निरंजनदेव से कहा, "मैं तो कल सरकारी काम से दिल्ली से बाहर जा रहा हूँ। इसलिए मेरे लौटने तक तुम यहाँ रहो। लौटने के बाद जो कुछ हो सकेगा, मैं तुम्हारे लिए करूँगा।"

"कब तक लौटने का विचार है ?"

"एक मास लग जाएगा।"

निरंजनदेव कुछ परेशानी अनुभव करने लगा परन्तु इस परिस्थिति में, जो अपने अधीन नहीं थी, वह क्या कर सकता था ? वह मौन हो गया। नारायणदास ने ही कहा, "तुम हमारे घर में रह सकते हो। मैंने सतीश की माँ को समझा दिया है और मैं समझता हूँ कि तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट न होगा।"

"मैं आपका बहुत आभारी हूँ। हाँ, माताजी को यदि कुछ कष्ट हो, तो मैं कहीं अन्यत्र रहने का प्रबन्ध कर लूंगा।"

"नहीं, तुम्हें कहीं अन्यत्र जाने की अवश्यकता नहीं। पत्र में अपनी माताजी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिख देना कि श्यामा को मोहिनी की अभी याद है और उसके लड़के की देखभाल वे भली प्रकार करेंगी।"

निरंजन मुस्कराता हुआ पति-पत्नी का मुख देखता रहा। चाय पीते हुए इधर-उधर की बातें होती रहीं। एकाएक श्यामा ने अपनी लड़कियों की ओर संकेत कर कहा, "ये तुम्हारी बहिनें है-रमा ओर माया। रमा एम० ए० के प्रथम वर्ष में पढ़ रही है और माया नवीं कक्षा में।" फिर उसने अपने लड़के के विषय में बताया, "यह सतीश कुमार है। इस समय सातवीं श्रेणी में पढ़ता है।"

"हम पांच भाई-बहिन हैं। सबमें बड़ा मैं हूँ और सबसे छोटा धर्मदेव। वह सातवीं श्रेणी में पढ़ रहा है।"

"अच्छा, जब तुम्हारा काम लग जाए तो तुम अपनी माँ और भाई-भहिनों को यहाँ बुलाना। मोहिनी बहिन मुझसे एक वर्ष बड़ी हैं। लेकिन विवाह उनका मुझसे पाँच वर्ष पहले हो गया था। वे सब लोग यहाँ आएँगे तो खूब चहल-पहल हो जाएगी।"

नारायणदास ने पूछा, "कभी अपनी ननिहाल गए हो ?"

"जी! अभी कुछ दिन पूर्व परीक्षा समाप्त होने पर गया था। नानाजी ने अब इमनाबाद में मकान बना लिया है और गुजराँवाला में तो केवल दोनों मामाजी ही रहते हैं।"

"तुम कहाँ गए थे ?"

"मैं पन्द्रह दिन इमनाबाद रहा था और दस दिन गुजराँवाला। परीक्षाफल घोषित होने पर मैं लाहौर चला आया था।"

श्यामा ने पूछा, "तुम्हारे बड़े मामा, सन्तराम के अब कितने बच्चे हैं ?"

हँसता हुआ निरंजन बोला, "काफी हैं। यदि भूल नहीं कर रहा तो दस तो अवश्य होंगे। छोटे मामा रतनचन्दजी के भी चार बच्चे हैं। चारों लड़के हैं। बड़े मामा की तीन लड़कियाँ हैं और शेष लड़के हैं।"

"उन दोनों पर ईश्वर की बड़ी कृपा प्रतीत होती है।"

"जी, दिन-भर हो-हल्ला रहता है।"

इस पर पुनः नारायणदास ने हँसते हुए कहा, "सन्तराम अपनी पत्नी को गालियाँ देता होगा ?"

"नहीं, गालियाँ क्यों देंगे ? वे तो बहुत प्रसन्न हैं। उनकी किराने की दुकान खूब चलती है। दो बड़े लड़के तो उनके साथ ही काम करते हैं। बड़े लड़के की सगाई हो चुकी है, किन्तु मामाजी पहले राधा का विवाह करना चाहते हैं।"

"कोई नौकर है घर पर ?"

"जी नहीं। मामी और उनकी लड़कियाँ सब मिल-मिलाकर ही घर का काम करती हैं।"

"क्यों, लड़कियाँ पढ़ती नहीं क्या ?"

"तीनों ही पढ़ती हैं।"

"फिर स्कूल का काम किस समय करती हैं ?"

"काम वे प्रातःकाल उठकर कर लेती हैं। सबके लिए पढ़ने का समय प्रातःकाल का निश्चित है। इसके अतिरिक्त फिर जब अवकाश मिल जाय, तब भी पढ़ती हैं।"

नारायणदास इस वार्तालाप के समय हंसता ही रहा। अन्त में उसने पूछा, "दोनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मामा एक साथ रहते हैं अथवा अलग-अलग ?"

"दुकानें तो अलग-अलग हैं, पर रहते एक साथ ही हैं और खाना भी एक साथ ही खाते हैं।"

"छोटे मामा क्या करते हैं ?"

"उनकी कपड़े की दुकान हैं।"

"घर का खर्चा कौन देता है।"

"खर्चा नानाजी देते हैं। हिसाब बड़ी मामीजी रखती हैं। नानाजी महीने में एक बार आकर हिसाब देख जाते हैं।"

"बहुद जल्दी उनके घर में भयंकर विस्फोट होगा।"

"क्यों ?"

"क्योंकि वे लोग मानव-प्रकृति के विपरीत कार्य कर रहे हैं। तुम्हारी मामियाँ लड़ेंगी और घर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे।"

"यह सब-कुछ ईश्वराधीन हैं।"

इससे तो नारायणदास को जोर की हँसी आ गई। वह बोला, "नहीं निरंजन! यह मनुष्य के आधीन है। जब मनुष्य कोई भी अस्वाभाविक कार्य करता है तो उसका मन सितार के तार की भाँति खिंच जाता है। जितना खिंचाव अधिक होगा, उतना ही तनाव भी अधिक होगा और जब तार टूटेगा तो उसका शब्द भी उतने ही जोर का होगा।"

निरंजनदेव कुछ नहीं बोला। इस प्रकार की भविष्यवाणी करने का उसका स्वभाव नहीं था। साथ ही वह अभी स्वयं को अनुभवहीन ही समझता था। उसकी धारणा थी कि नारायणदास उससे आयु में बड़ा होने के साथ-ही-साथ अनुभव में भी बड़ा है। इस कारण वह चुप ही रहा।

: 2 :

सरकारी दौरे से लौटने में नारायणदास को पैंतीस दिन लग गये। अपने क्वार्टर में वह दिन के बाहर बजे पहुँचा। उस समय श्यामा के अतिरिक्त घर पर कोई नहीं था। नारायणदास ने पूछा, "सब ठीक है न ?"

"जी, सब ठीक है। बच्चे पढ़ने के लिए गए हुए हैं।"

नारायणदास को निरंजनदेव का स्मरण नहीं रहा और इस कारण उसने उसके विषय में पूछा भी नहीं। किन्तु स्नानादि कर जब वह भोजन पर बैठा तो उसको स्मरण हो आया। उसने पूछा, "निरंजनदेव कहाँ है ?"

"वह दफ्तर गया है।"

"किसके दफ्तर में ?"

"अपने दफ्तर। वह नौकर हो गया है।"

"कहाँ ?"

"सरकारी दफ्तर में ही। कुछ नाम तो उसने बताया था किन्तु मुझे स्मरण नहीं रहा।"

"किसने लगवाई है उसकी नौकरी ?"

"उसने यह नहीं बताया। प्रातःकाल भोजन कर वह नित्य यहाँ से चला जाया करता था और मध्याह्नोत्तर तीन बजे लौटा करता था। एक दिन वह आया तो कहने लगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि उसकी नौकरी लग गई है। मैंने पूछा कहाँ, तो उसने कुछ नाम बताया था और यह भी कहा कि हायर ग्रेड में आ गया है। वह वर्ष में नौकरी पक्की हो जाएगी।"

नारायणदास को इससे विस्मय हुआ। उस दिन वह कार्यालय नहीं गया। सायंकाल निरंजन आया तो उसने बड़ी उत्सुकता से उससे पूछा, "सुना है तुम नौकर हो गये हो ?"

"जी, ईश्वर की कृपा से नौकरी अनायास ही मिल गई है। एक दिन मैं सेक्रेटेरियेट में गया था। नोटिस-बाड़ पर एक नोटिस लगा हुआ था, जिसमें सी० पी० डब्ल्यू० डी० में नॉन-टैक्निकल रिक्रूटमैंट के लिए आवेदनपत्र आमन्त्रित किये गये थे। उस दिन प्रार्थना-पत्र देने की अन्तिम तिथि थी। मैंने उसी समय फॉर्म लिया और भरकर दे आया। दो दिन बाद परीक्षा हुई और फिर इण्टरव्यू हो गया। मुझको काम पर जाते हुए आज आठ दिन हो गये हैं।"

"पर तुमको एकदम हायर ग्रेड में कैसे लिया गया है ?"

"यह तो मैं स्वयं भी नहीं जानता। यह बात इण्टरव्यू के समय निश्चय हुई थी कि मैं इसके योग्य हूँ। मुझे 'लैटर ऑफ अपॉयण्टमैंट' मिल गया है।

"चाचाजी! मैं तो इसे ईश्वर की कृपा ही मानता हूँ। वैसे तो समय व्यतीत करने के लिए मैं नित्य ही सेक्रेटेरियेट की ओर जाया करता था, इस पर भी उस ओर कभी नहीं गया था, जिधर यह नोटिस लगा हुआ था। उस दिन बिना किसी योजना के मैं उस ओर जा पहुँचा और नोटिस-बोर्ड पर दृष्टि चली गई।"

"जब मैंने देखा कि मैं भी इस स्थान के लिए आवेदनपत्र दे सकता हूँ और आज ही उसकी अन्तिम तिथि है, तो मेरे मन में यही विचार आया कि यह सब किसी अदृश्य प्रेरणा से हो रहा है। मुझे अवश्य ही यह नौकरी मिल जाएगी। मैंने तुरन्त फॉर्म लिया और वहीं बैठकर फॉर्म भरा और हैड क्लर्क को दे आया। उसने कहा कि तीन बजने में केवल दो ही मिनट शेष हैं और यदि तुम दो मिनट बाद आते तो तुम्हारा आवेदनपत्र नहीं लिया जाता। समय पर ही आ गये हो।"

"मैंने उसका धन्यवाद किया और चला आया। दूसरे दिन मैं इस विषय में पता करने गया तो मुझे परीक्षा की तिथि, स्थान और समय बता दिया गया। कुल तीस प्रार्थी थे। कुछ गणित के प्रश्न थे, एक निबन्ध लिखना था और कुछ कार्यालय-सम्बन्धी प्रश्न थे। अपनी बुद्धि से मैंने सबका उत्तर दे दिया। फिर मुझे इण्टरव्यू के लिए बुलाया गया। सिलैक्शन कमेटी के सम्मुख एक्जीक्यूटिव इंजीनियर ने मुझे 'बेस्ट ऑफ दि लॉट' कहकर उपस्थित कर दिया। इस पर तो मुझ पर प्रश्नों की झड़ी लगा दी गई। पन्द्रह मिनट की भेंट के बाद वहीं पर मुझे बता दिया गया कि मेरी नियुक्ति हो गई है और कल तक मुझे नियुक्ति-पत्र भी मिल जाएगा। मेरे सामने ही एक्जीक्यूटिव इंजीनियर ने कहा, 'डायरेक्ट टू दि हायर ग्रेड।' सबने उसकी बात का समर्थन कर दिया। तीन-चार दिन के बाद मुझे नियुक्ति-पत्र मिल गया और इस समय मुझे पौने दो सौ रुपया मासिक मिलता है।"

"निरंजन! यह सब तुम्हारी योग्यता ही है जिसके कारण तुम्हें नौकरी मिली है।"

"चाचा जी! योग्यता भी उसी की दी हुई है।"

"किसकी ?"

श्यामा ने बात बदलकर कहा, "निरंजन! तुमने माँ को इस विषय में लिख दिया है कि नहीं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह तो मैंने उसी दिन लिख दिया था और माँ का आर्शीवाद-पत्र भी आ गया है। आपको वे पृथक् पत्र भेजने वाली हैं। इस कारण मैंने बताया नहीं।"

"बहुत-बहुत बधाई निरंजन! परन्तु क्वार्टर तो तुमको स्थायी होने के बाद ही मिलेगा।" नारायणदास ने कह दिया।

"जी।"

इस पर श्यामा ने पुनः बातों का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए कहा, "तब तक तुमको हमारे साथ ही रहना चाहिए।"

निरंजनदेव ने इसके लिए श्यामा के प्रति आभार प्रदर्शित कर दिया। नारायणदास को यह बात बहुत ही विचित्र प्रतीत हुई थी कि जिस व्यक्ति को वह बुद्धू समझता था, वइ इतनी सुगमता से नौकरी पा गया है। दो वर्ष हुए, एम० ए० पास करके उसके भाई का लड़का दिल्ली आया था तो उसको नौकरी दिलवाने के लिए उसे बहुत भागदौड़ करनी पड़ी थी।

उस समय की बात का स्मरण होते ही नारायणदास के मन में निरंजन के प्रति प्रतिष्ठा में वृद्धि ही हुई थी। अब वह उसको योग्य और कुशल युवक भी मानने लगा था।

अगले मास की पहली तारीख को जब निरंजनदेव को पच्चीस दिन का वेतन मिला तो वह एक टोकरी में फल और मिठाइयाँ लेकर ही घर पहुँचा। उसको विदित हुआ कि लाहौर से उसकी माताजी का भेजा हुआ एक पत्र और पार्सल आया है।

पत्र श्यामा के नाम था। उसमें उन दोनों के प्रति कृतज्ञता प्रकट की थी। श्यामा की दोनों लड़कियों के लिए पार्सल में रेशमी साड़ी और जम्पर का कपड़ा था।

नारायणदास समझ रहा था कि ईश्वर की कृपा है अथवा नहीं, परन्तु निरंजनदेव और उसके घरवाले दुनियादारी जानते हैं और यही इनकी सफलता का कारण भी है।

वह देखता था कि निरंजनदेव न तो कभी सन्ध्या-उपासना करता है, न ही वह किसी मन्दिर अथवा ठाकुरद्वारे में जाता है। नई-दिल्ली में प्रायः सब भक्तगण प्रति मंगलवार को हनुमानजी के मन्दिर में प्रसाद चढ़ाने के लिए जाया करते थे। निरंजनदेव कभी भी वहाँ नहीं गया था।

एक दिन जब इस विषय पर बात हो रही थी तो निरंजनदेव ने बताया, "मैं तो कभी किसी मन्दिर आदि में जाता नहीं।"

"तो तुम आर्यसमाजी हो ?"

"आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव आदि अवसरों पर तो कभी चला जाता हूँ, परन्तु नियमितरूपेण साप्ताहिक अधिवेशनों में कभी नहीं गया।"

"क्यों ?"

"कभी विचार ही नहीं आया।"

"तो तुम कैसे ईश्वर के भक्त हो ? कभी पूजा-पाठ और सन्ध्या-उपासना करते भी तुम्हें देखा नहीं ?"

"मैं भक्त नहीं हूँ। मैं तो परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास करने वाला व्यक्ति हूँ।"

"बिना भक्ति के विश्वास कैसा ?"

"भक्ति का अर्थ तो यह हुआ कि स्वयं को कुमार्ग से बचाने के लिए नित्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुनय-विनय की जाय। मैं इस प्रकार की कोई विनय-अनुनय नहीं करता। किन्तु अपनी बुद्धि से मैं सदा सन्मार्ग पर चलने का यत्न करता रहता हूँ।"

"सन्मार्ग का निश्चय तुम किस प्रकार करते हो ?"

"इसके लिए भक्ति की आवश्यकता नहीं। इसके लिए तो ज्ञान की आवश्यकता है। प्रत्येक अवस्था में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, ज्ञान से पता चलता है। इसकी प्राप्ति के लिए मैं सत्संग करता रहता हूँ।"

"अच्छा! कहां जाते हो भला तुम सत्संग करने के लिए ?"

"महापुरुषों द्वारा प्रणीत पुस्तकों के पास।"

नारायणदास को इस धारणा की पुष्टि होती जा रही थी कि निरंजदेव वास्तव में ही समझदार युवक है।

निरंजनदेव को नारायणदास के मकान में रहते हुए अभी दो मास भी नहीं हुए थे कि उसके मन की परीक्षा हो गई। उस समय वह इस प्रकार की परिस्थिति में पड़ गया कि उसके लिए निर्णय करने में अपनी पूर्ण शक्ति का प्रयोग करना पड़ा। वह प्रायः दस बजे सो जाया करता था। एक रात जब वह लेटा ही था कि रमा उसके कमरे में आई और उसे गणित की 'बाईनॉमियल थ्योरम' समझाने के लिए आग्रह करने लगी। रमा ने वही साड़ी पहिन रखी थी जो निरंजनदेव की माँ ने उसके लिए भेजी थी।

निरंजनदेव ने उसे समझाया, किन्तु रमा की समझ में नही आई। उसने पुनः समझाया, किन्तु फिर भी रमा की समझ में नही आई। इस पर निरंजन ने कह दिया, "प्रतीत होता है कि इस समय तुम थकी हुई हो, कल प्रातःकाल आना, मैं फिर समझा दूँगा।"

"मैं थकी हुई नहीं हूँ। मैं तो दो घण्टे सोकर आई हूँ।"

"किन्तु फिर भी तुम एक सरल सी बात इस समय समझ नहीं पा रही हो।"

"बात यह है कि जब मेरी नींद खुली तो मेरा चित्त किया कि मैं आपसे बातें करूँ, इसलिए मैं यहाँ चली आई हूँ।"

"तो तुम यह थ्योरम समझने के लिए नहीं आई हो ?"

"जी नहीं। मेरा दिल सोने को नहीं कर रहा था।"

"क्यों ?"

"यह तो कह नहीं समती। आप कोई बात कीजिये, मैं सुनती रहूँगी।"

"क्या होगा इससे ? इस समय तो तुम्हें अपनी पढ़ाई की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।"

"इस समय तो मेरा चित्त नहीं करता।"

"तो जाकर सो जाओ।"

"नींद नहीं आती। बिस्तर काटता है।"

"क्या मतलब ?"

"रमा आँखे नीची किये बैठी रही। सहसा निरंजनदेव के मन में कुछ प्रकाश होने लगा। उसने रमा से कहा, "रमा! चली जाओं यहाँ से।"

"क्यों ?"

"बस, चली जाओ। नहीं तो मैं चोटी से पकड़कर घसीटता हुआ अभी तुम्हारी माताजी के पास ले जाऊँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो क्षण तक रमा उसका मुख देखती रही और फिर चुपचाप उठकर अपने कमरे में चली गई। निरंजनदेव के पूर्ण शरीर का रक्त उसके मस्तिष्क में चढ़ गया था। उसका सिर भन्ना रहा था। कमरे से निकल वह बाहर घास के मैदान में नंगे पाँव घूमने लगा।

: 3 :

इस घटना के बाद कई दिन तक निरंजनदेव को रमा दिखाई नहीं दी। वह समझ गया कि रमा को अपनी करनी पर लज्जा आ रही है। इसके एक मास बाद की बात है, निरंजनदेव प्रातःकाल दफ्तर जाने से पूर्व भोजन कर रहा था। रमा, माया और सतीश पढ़ने के लिए जा चुके थे। नौकर भोजन करा रहा था। श्यामा ने निरंजन से कहा, "आज रमा का जन्म-दिवस है। उसके उपलक्ष्य में चाय-पार्टी दी जा रही है।"

"कितने बजे ?"

"पाँच बजे।"

"निरंजन! समय पर आ जाना।" नारायणदास ने कह दिया।

निरंजनदेव ने कहा, "मैं समय पर पहुँच जाऊँगा। रमा बहिन अब कितने वर्ष की हो गई है ?"

निरंजन के मुख से रमा के लिए बहिन शब्द सुनकर पति-पत्नी चुपचाप निरंजन का मुख देखते रहे। पहले तो निरंजन समझा ही नहीं, किन्तु कुछ समय बाद उनकी चुप्पी उसको अखरने लगी तो उसने नारायणदास से पूछा, "आप कभी लाहौर चलेंगे ?"

"क्यों, क्या बात है ?"

"पिताजी ने पूछा है।"

"तो उनको लिख दो कि अब तो वे मुझे निमन्त्रण देंगे तो मैं आऊँगा।"

"यही तो वे कह रहे हैं। आप बड़े अफसर हैं। कहीं वे ऐसे समय निमन्त्रण दे दें जब आपको सुविधा न हो तो फिर लाभ क्या ? इसी कारण वे जानना चाहते थे।"

"यों तो श्यामा कह रही है कि उसको अपने माता-पिता से मिलने को बहुत चित्त करता है। इस कारण मेरा विचार बड़े दिन की छुट्टियों में उधर जाने का हो रहा है।"

"अभी तो सितम्बर ही है।"

"क्यों, उन्हें बहुत जल्दी है क्या ?"

"यह तो उन्होंने बताया नहीं।"

इससे तो वे दोनों और भी गम्भीर हो गए। भोजन कर निरंजन अपने आफिस चला गया। नरायणदास अपनी पत्नी से बोला, "यह बेल मढ़े चढ़ती प्रतीत नहीं होती।"

"मैं तो दो मास से आपसे कह रही हूँ, आप उसके पिता को पत्र लिखिये। लेकिन आप हैं कि कल-परसों पर टालते जाते हैं।"

"मैं यही विचार कर रहा था कि इसकी नौकरी स्थायी हो जाए तब बात चलाऊँ। उस समय इसको क्वार्टर भी दिलवाने का यत्न करूँगा। हाँ बीच में रखते हुए सगाई की बात चली तो ठीक नहीं होगा।"

"परन्तु अब क्या करोगे ?"

"देखो श्यामा! मैं धनी हूँ, अफसर हूँ, मेरे सम्बन्ध भी बड़े लोगों में हैं और लड़की भी स्वस्थ एवं सुन्दर है। बीस हजार लड़की को दहेज में देने का निश्चय है तो फिर तुम क्यों चिन्ता करती हो ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देख लो, लड़का स्वस्थ है, सुन्दर है, समझदार है और उन्नति करने वाला है। भले घर का तथा भरे-पूरे परिवार का है। लड़की सुखी रहेगी।"

"तो तुम चाहती हो कि मैं अर्जुनदेव को अवश्य लिखूँ ?"

"मैं तो समझती हूँ कि पहले ही बहुत विलम्ब हो गया है। अब और अधिक विलम्ब नहीं करना चाहिए।"

"अच्छी बात है, आज लिख दूँगा।"

सायंकाल निरंजनदेव पौने पाँच बजे ही आ गया। नारायणदास अभी नहीं आया था। श्यामा ने ड्राइंगरूम को सजा रखा था। सभी ने अच्छे वस्त्राभूषण धारण किये हुए थे। श्यामा ड्राइंगरूम के द्वार पर खड़ी थी। वहाँ पहुंच निरंजन ने पूछा। "कहाँ है रमा बहिन ?"

"भीतर बैठी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है।"

निरंजनदेव जब अन्दर पहुँचा, रमा सतीश के साथ बात कर रही थी। यद्यपि उसका मुख लाल हो रहा था तथापि वह सतीश को समझा रही थी कि उसके बटन-होल में लगा गुलाब का फूल ठीक सज नहीं रहा। सतीश बोला, "मैं जानता हूँ, यह कहाँ सजेगा। बताऊँ।"

"बताओ।"

"तुम्हारे जूड़े में।"

इस पर तो रमा बिल्कुल लाल हो गई। निरंजनदेव तब तक उनके सामने जा खड़ा हुआ। माया और सतीश खिलखिलाकर हँस रहे थे। निरंजन भी हँसने लगा। सतीश ने समझा कि उसने बहुत ठीक बात कही है। अपने बटन-होल से फूल को निकालकर वह रमा के जूड़े में ठोंसने लगा। रमा ने अपना जूड़ा उसकी ओर करते हुए कहा, "तुम्हें वहाँ लगा हुआ अच्छा लगता है, तो लगा दो।"

किन्तु सतीश लगा नहीं सका। निरंजनदेव ने सतीश की सहायता कर दी। जब फूल लग गया तो रमा उठकर दर्पण के सम्मुख जा खड़ी हुई। तिरछी होकर उसने उसकी शोभा निहारी। फिर मुस्कराकर निरंजनदेव की ओर देखने लगी। मानों वह उसका धन्यवाद कर रही हो। इस पर निरंजनदेव की हँसी निकल गई।

रमा पुनः सोफे पर बैठ गई। सतीश ने उसके समीप बैठते हुए कहा, "अब दीदी प्रसन्न है।"

वह प्रसन्न तो थी, परन्तु इसलिए कि वह फूल निरंजनदेव ने उसके जूड़े में लगाया था। निरंजनदेव ने समझा कि उस रात डाँटकर कमरे से निकालने पर रमा को क्रोध आया होगा, वह अब मिट गया है।

इस समय नारायणदास आ गया। नारायणदास के भाई का लड़का सुरेन्द्र भी अपनी पत्नी कृष्णा के साथ आ गया। यही लोग इस पार्टी में आमन्त्रित थे। श्यामा ने कहा, "यह चायपार्टी बिल्कुल घर के लोगों की है। मैंने बाहर के किसी भी व्यक्ति को नहीं बुलाया।"

सब लोग आ गए तो नौकर चाय का पॉट रख गया। खाने का सामान पहले ही मेज पर रखा हुआ था। सब खाने लगे। खाते हुए कृष्णा ने अपने बटुए में से एक 'हेयर पिन' निकाल रमा को देते हुए उसे बधाई दी। अब नारायणदास ने मेज पर रखे जानेवाला कलम-दवात युक्त राइटिंग पैड उसको दिया। सतीश ने एक कार्डबोर्ड का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डिब्बा उसको दिया। सबने उत्सुकता से रमा को वह डिब्बा खोलते हुए देखा। उसमें फ्रेम में लगी एक ड्राइंग थी, जिसमें फूलों के गुच्छे में लिखा था, 'विश दीदी, मैनी मैनी सच हैप्पी डेज।' यह सतीश की अपनी ड्राइंग थी।

निरंजनदेव ने भी अपनी जेब से एक पैकेट निकालकर रमा को दिया। रमा ने पैकेट खोला। उसमें पार्कर फिफ्टीन का पैन और पेन्सिल थी। उसमें एक कागज की चिट थी, जिस पर लिखा था 'वहिन रमा के अठारहवें जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में उसके भाई निरंजनदेव की ओर से।' रमा का मुख पीला पड़ गया। उसने निरुत्साहित-सी होकर डिब्बी को वन्द किया और अपने सामने रख लिया।

चाय समाप्त हुई। सबने वधाइयाँ दीं। निरंजनदेव ने भी वधाई दी तो रमा ने मुख मोड़ लिया। निरंजनदेव ने नमस्कार किया और रमा के कुछ भी उत्तर न देने पर वह ड्राइंगरूम से निकल अपने कमरे में चला गया।

निरंजनदेव समझ रहा था कि रमा उसके प्रति वहिन की भावना नहीं रखती। परन्तु जिस ढंग से वह उसके कमरे में रात के समय आई थी और जिस ढंग से आज उसने उसके साथ व्यवहार किया था, वह ढंग निरंजनदेव ठीक नहीं समझता था। वह समझता था कि उनका परस्पर विवाह हो सकता है, परन्तु उनके माता-पिता के द्वारा। स्वयं तो वह, वहिन बनाने के अतिरक्त, अन्य कोई सम्बन्ध जानता ही नहीं था।

वह रात के भोजन से पूर्व घूमने के लिए कनॉटप्लेस को चला गया। दो घण्टें वहाँ मन बहलाकर आया तो उसने देखा कि उसकी मेज पर वह कलम की डिब्बी रखी हुई है। उसने डिब्बी को खोलकर देखा तो कलम के दो टुकड़े हुए पड़े थे। पैन्सिल को भी तोड़ने का यत्न किया गया था, परन्तु वह टूट नहीं पाई थी। वह कागज जिस पर उसने लिखा था, 'वहिन रमा के लिए....' उस पर लाल स्याही से लिखा हुआ था, 'प्रेमी के रूप में आज जो उपहार देंगे वही स्वीकार होगा। मैं आपकी बहिन नहीं हूँ।'

पैन और पैन्सिल की यह दुरवस्था देखकर निरंजनदेव को बहुत दुःख हुआ। उसने डिबिया बन्द करके अपनी मेज की दराज में रख ली। खाने का समय हो गया था, अतः वह भोजनालय में जा पहुँचा। शेष सब लोग वहाँ पहले से ही विद्यमान थे।

निरंजनदेव ने देखा कि रमा का मुख विवर्ण हो रहा है। वह मन में विचार कर रहा था कि उसे उनका मकान छोड़ देना चाहिए। इसके लिए उसने निश्चय किया कि अगले दिन से ही वह यत्न करेगा। फिर भी जब तक वह वहाँ पर है, तब तक किसी प्रकार के मन-मुटाव की बात उचित नहीं समझता था।

भोजनोपरांत नारायणदास और उसकी पत्नी अपने कमरे में चले गये। सतीश भी अपने कमरे में जा रहा था। केवल माया और रमा वहाँ पर बैठी रहीं। निरंजनदेव ने रमा के कहा, "इधर आओ।"

उसने रूखेपन से पूछा, "क्या है ?"

"कुछ है। माया, तुम भी आ जाओ।"

"मैं नहीं आऊँगी।" इतना कह रमा अपने कमरे की ओर जाने लगी तो निरंजनदेव ने उसका मार्ग रोक लिया।

उसने कहा, "रमा। कहना मान लो। तुमको एक बहुत ही मजेदार वस्तु दिखाने वाला हूँ।"

रमा नहीं चाहती थी कि पैन के तोड़ने की बात उसके माता-पिता को विदित हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माया को तो इसका ज्ञान था। इससे वह मुस्कराती हुई खड़ी रही। निरंजनदेव ने कहा, "रमा! अब भी मान जाओ, नहीं तो मैं पोल खोल दूंगा।"

माया ने धीरे से कहा, "दीदी! सुन तो लो एक बार।"

दोनों निरंजनदेव के कमरे में जा पहुंचीं । उसने वहाँ खड़े-खड़े ही पैन का डिब्बा खोलकर दिखा दिया। माया तो मुस्कराती रही। रमा ने कहा, "क्या देखूं ? मैंने तो कलम ही तोड़ी है, लेकिन आपने तो मेरा दिल ही तोड़कर रख दिया है ?"

"देखो, भले घर की लड़कियों की-सी बात करो। कहाँ टूटा है तुम्हारा दिल ? टूटे दिलवाले बात भी कर सकते हैं क्या ?"

"इस कागज पर लिखा हुआ आपने पढ़ा है ?"

"हाँ, पढ़ा है। परन्तु यहाँ लिखने से कैसे बात बनेगी ? यह बात तो माता-पिता के करने से ही हो सकती है।"

"तो आप अपने माता-पिता से कह दीजिये।"

"तुम क्यों नहीं कहतीं ?"

"इसलिये कि मैं लड़की हूँ किन्तु आप तो लड़के हैं!"

"परन्तु इस पैन को तोड़कर तो तुमने मेरे मन से अपना मान मिटा दिया है।"

"इससे तो मैंने आपका अपने साथ भाई का सम्बन्ध तोड़ा है।",

"देखो, जब तक हमारा विवाह नहीं हो जाता, मैं तुम्हें बहिन ही मानूँगा। मुझे डर है कि तुम स्वयं को वश में नहीं रख सकोगी।"

"मैं या आप ? आप ही अपने को धोखा देने के लिए मुझे बह्नि बहिन कहते रहते हैं।"

"कुछ भी हो, तुमने इसे तोड़कर बहुत बुरा किया है। अच्छा, अब तुम जा सकती हो। मैं यह किसी को नहीं दिखाऊँगा, अन्यथा इसका परिणाम तुम्हारे लिए ही बुरा होगा।"

"जो मन में आये करिये। मैं तो अपने मन के भाव किसी से छिपाकर नहीं रख सकती।"

"अब तो मुझे यह मकान छोड़ना पड़ेगा।"

"मैं आपको बदनाम कर दूँगी।"

: 4 :

ये सन् 1937-38 के दिन थे। भारत सरकार ने यह निश्चय कर लिया था कि वह अपने आफिस दिल्ली-शिमला में बदला नहीं करेगी। धीरे-धीरे सभी कार्यालय स्थायी रूप से दिल्ली में ही रहा करेंगे। इस कारण कुछ कार्यालय तो ग्रीष्म ऋतु में दिल्ली में भी रहने लगे थे और शेष के लिए प्रबन्ध किया जा रहा था।

इन्हीं दिनों निरंजनदेव दिल्ली नौकरी ढूंढने के लिए आया था। निरंजनदेव के दिल्ली जाने के उपरान्त उसके माता-पिता के पड़ोस में एक घटना घटित हुई। निरंजनदेव के पिता ने लाहौर कृष्णानगर में मकान बना लिया था। उनके मकान के समीप ही एक निर्धन क्लर्क ने भी अपना मकान बनाया था। उसका मकान लगभग दो सौ वर्गगज भूमि में था और एक मंजिल ही बना हुआ था। उसे भी बेचारा चन्द्रभानु पूर्ण नहीं कर पाया था। अपने आफिस से प्राविडेण्ट-फण्ड में से, उसको दो हजार रुपया उधार मिला था;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उससे वह दीवारें खड़ी करा छत ही डलवा सका था।

अर्जुनदेव स्वयं भी कोई धनी आदमी नहीं था, इस पर भी उसने अपनी पाँच सौ वर्गगज भूमि पर एक दोमंजिला मकान बनवा लिया था और उसका निचला भाग दो सौ रुपया मासिक किराएं पर देकर ऊपर की मंजिल पर स्वयं रहने लगा था। अर्जुनदेव किसी अंग्रेजी फर्म में कार्य करता था। उसको इस समय चार सौ रुपया मासिक मिलता था। इस प्रकार वह इस स्थिति में था कि उसे अपने लिए कहीं हाथ पसारने की कभी आवश्यकता नहीं होती थी। अपने बच्चो को वह अंच्छी शिक्षा भी दे रहा था। आस-पड़ौस के लोग जानते थे कि वह कभी किसी की सहायता भी कर सकता है।

एक दिन पड़ौसी चन्द्रभानु के घर बारात आई और बारात के स्वागत के बाद चन्द्रभानु की पत्नी सुभद्रा, मोहिनी के पास आई और आँसू बहाते हुए कहने लगीं, "वहिन जी। हमारी लाज रख लो।"

"बात क्या है, सुभद्रा बहिन।"

"अपनी बिरादरी में ही किसी भले घर के लड़के से नलिनी के विवाह का प्रबन्ध किया था। आज बारात आई है। इससे पहले तो कोई बात नहीं हुई थी, लेकिन अब लड़के का पिता कह रहा है कि उसके लड़के को दो हजार रुपया नकद मिलेगा तो वह विवाह करायेगा, अन्यथा बारात को वापस ले जाएगा।"

"तो फिर क्या चाहती हो ?"

"हमारे पास रुपया नहीं है। लड़की बी० ए० तक पढ़ी है। नौकरी करके कुछ रुपया एकत्र किया था। वह सब खर्च हो गया हैं। परन्तु उसका श्वसुर तो इसका कोई मूल्य ही नहीं समझता।"

"तो फिर क्या करना चाहती हो ?"

"नलिनी के पिता ने मुझे आपके पास भेजा है कि निरंजन के पिता नलिनी के श्वसुर से मिलकर उसको समझाएँ और उससे भावताव कर दें। नलिनी के पिता चाहते हैं कि आप हमारा मकान गिरवी रख लें और एक हजार तक के लिए उनको मना लें।"

मोहिनी ने कहा, "सुभद्रा बहिन! ये आदमी अच्छे नहीं हैं। जो इस समय सौदेबाजी करने में लज्जा अनुभव नहीं करते, वे जीवनभर लड़की को तंग करते रहेंगे।"

"पर अब क्या हो सकता है ? बारात आ चुकी है, मिठाई बाँटी जा चुकी है। वेदी तैयार है। पण्डित संस्कार कराने की प्रतीक्षा में बैठा है। लड़की की सहेलियाँ उसका श्रृंगार करा रही हैं।"

"अच्छा ठहरो, मैं उनको बुलाती हूँ, देखें वे क्या कहते हैं।"

अर्जुनदेव को बुलाकर उसे पूर्ण परिस्थिति से अवगत कराया गया। इससे तो अर्जुनदेव को क्रोध चढ़ आया। उसने चन्द्रभानु की पत्नी को अपने पति को भेजने के लिए कह दिया। चन्द्रभानु आया तो अर्जुनदेव ने कहा, "चन्द्रभानु! ये लोग महापातकी हैं और तुम अपनी भोली-भाली लड़की को इन पातकियों के घर भेजने में मुझसे सहायता लेने आये हो। तुम ऐसा करने से नरक में जाओगे ही, साथ ही मुझे भी घसीटकर ले जाओगे। मैं ऐसा नहीं करूँगा।"

"मेरा कहा मानो। इनको वापस कर दो। मैं तुम्हारी लड़की का विवाह किसी अन्य अच्छे वर के साथ करवा दूँगा।"

चन्द्रभानु मुख देखता रह गया। फिर कुछ विचारकर बोला, "बाबूजी! यहाँ खून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
GUR-B

हो जाएगा।"

"कुछ नहीं होगा। जो धन के लोभी हैं वे अपनी जान भय में नहीं डाल सकते। करने की बात तो यह है कि उनको विदित हो जाय कि हत्या उनकी होगी, तुम्हारी नहीं।"

"यह कैसे संभव है ? मुझ निर्धन का पक्ष कौन करेगा ?"

"यह तुम मुझ पर छोड़ो।"

"अपनी लड़की समझ, जो उसके हित में हो, वही करिये।"

"तुम्हारी लड़की क्या चाहती है ?"

"वह क्या चाहेगी ? अभी तक तो हमने उसे पता भी नहीं लगने दिया कि बाहर क्या हो रहा है ?"

"मेरी लड़की सुधा आपके घर गई हुई है। उसको भेज दो। मैं उसके द्वारा नलिनी के मन की बात जानना चाहता हूँ।"

सभी लोग अर्जुनदेव के घर से निकल चन्द्रभानु के घर की ओर चल दिये। वहाँ पर वर का पिता अपने आठ-दस सम्बन्धियों के साथ खड़ा हँसी-ठट्ठा कर रहा था। इन सबको आता देख वह उनको छोड़कर इनके समीप आ गया।

चन्द्रभानु ने अर्जुनदेव का परिचय करा देना उचित समझा। उसने वर के पिता की ओर संकेत कर कहा, "ये लाला कल्याणदास हैं। इनके सुपुत्र रमेश का सम्बन्ध नलिनी से हो रहा है।"

"अच्छा।" हाथ जोड़ते हुए अर्जुनदेव ने कहा।

अर्जुनदेव का परिचय कराते हुए चन्द्रभानु ने कहा, "और ये हैं हमारे पड़ौसी लाला अर्जुनदेव जी। बड़े सज्जन पुरुष हैं। हम पर बहुत दयाभाव रखते हैं।"

अपनी घड़ी की ओर देखते हुए कल्याणदास ने कहा, "विवाह का मुहूर्त टल रहा है। जल्दी करिये!" वह समझा था कि रुपये का प्रबन्ध हो गया है।

सुभद्रा भीतर चली गई थी। सुधा आई तो उसे एक ओर ले जाकर अर्जुनदेव ने सारी स्थिति समझाते हुए कहा कि वह नलिनी के पास जाकर पता करे कि इस स्थिति में भी वह रमेश से विवाह करने के लिए उद्यत है ? सुधा ने पूछा, "यदि नलिनी ने कह दिया कि अब तो विवाह हो ही जाना चाहिए, तो क्या आप रुपया दे देंगे ?"

"मेरे पास इतना रुपया इस समय कहाँ से आयेगा ?"

सुधा पीत-मुख खड़ी रह गई। इस पर अर्जुनदेव ने आगे कहा, "हम इन-लोगों को बहुत ही नीच मानते हैं। हाँ, यदि नलिनी यहाँ विवाह चाहती है तो फिर हम हस्तक्षेप नहीं करेंगे। अन्यथा मेरी राय है कि उसको पिछवाड़े से निकालकर घर ले जाओ।"

"तो ठीक है।"

इतना कहकर वह लौटने लगी तो अर्जुनदेव ने उसके कान में कहा, "देखो, घर में हल्ला न मचे। सब-कुछ चुपचाप होना चाहिए। उसका यहाँ से हमारे घर जाना भी पता न चलना चाहिए। कुछ भी शोर मचा तो यहाँ फौजदारी हो जायेगी। नलिनी के पिता का पक्ष दुर्बल हैं।"

सुधा मकान में चली गई। अर्जुनदेव ने अपनी पत्नी से कहा, "तुम अब घर चलो। नलिनी पिछले द्वार से आएगी तो उसको घर में रखना। मैं पुलिस में सहायता के लिए जाऊँगा।"

Central Library
167950
Gurukula Kangri (Deemed University) Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलिस का नाम सुन मोहिनी भय से काँप उठी। परन्तु नलिनी के भविष्य का विचार कर अपने मन को स्थिर करती हुई वह घर को चली गई।

पाँच मिनट के भीतर ही सुधा घर से बाहर आई और उसने अपने पिता को बताया कि नलिनी उनके घर चली गई है।

अर्जुनदेव ने अपनी लड़की से कहा, "तुम अभी तो विवाह वाले घर में रहो। कुछ देर वहाँ ठहरकर अपने घर में चली जाना।"

"आप कहाँ जा रहे हैं ?"

"सरकार से रक्षा की याचना करने के लिए। देखें, सफलता मिलती है अथवा नहीं।"

जब सुधा चली गई तो अर्जुनदेव पुनः लाला कल्याणदास के पास आकर कहने लगा, "कम-से-कम आपको कितना मिल जाय जिससे कि आपका काम चल सकेगा ?"

"मैंने बताया तो है कि आभूषणों के अतिरिक्त दो हजार रुपया नकद चाहिए।"

"इतना तो नहीं हो पा रहा। यदि आप आभूषणों के अतिरिक्त एक हजार नकद पर सन्तोष कर लें तो मैं प्रबन्ध कर सकता हूँ।"

"जी नहीं साहब! इससे एक पैसा कम नहीं होगा। हमने इन्हें कह दिया था कि इतना कम-से-कम हमें चाहिए। ये विवाह के समय देने की बात करते रहे। अब माँगा है तो कहते हैं कि प्रबन्ध कर देते हैं।"

"देखिये, एक सहस्र का प्रबन्ध तो अभी हो गया है। शेष आप दया कर छोड़ दीजिये। फिर भी जीवन-भर तो लड़की वाले देते ही रहते हैं।"

"जी नहीं।"

"अच्छा ठहरिये। मैं एक अन्य स्थान पर प्रबन्ध करने के लिये जा रहा हूँ। यदि आपके भाग्य में लिखा है तो मिल जाएगा।"

एक मजिस्ट्रेट आनन्दस्वरूप, कृष्णानगर में रहता था। उसके साथ अर्जुनदेव की साधारण मेल-मुलाकात थी। वह उसके घर पर जा पहुँचा। अर्जुनदेव की बात सुन वह कहने लगा, "मैं इसमें क्या कर सकता हूँ ?"

"आप उनको अनुचित दबाव डालकर रुपया वसूल करने के अपराध में पकड़ सकते हैं। जिस प्रकार आप किसी दुर्बल को पकड़कर और उसे मुक्का दिखाकर उसकी जेब से रुपया निकालने वाले को हवालात में डाल सकते हैं, वैसी ही बात यह भी है।"

"जब कोई स्वेच्छा से देना चाहे तो सरकार को उसमें हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं हैं।"

"परन्तु यहाँ तो स्वेच्छा से कोई नहीं दे रहा है।"

"लड़की वाले ने अवश्य ही वचन दिया होगा।"

"ऐसी कोई बात नहीं है। न तो वचन दिया गया है और न ही इस विषय में कोई लिखत-पढ़त हुई हैं।"

"लड़की वाला झूठ भी तो बोल सकता है ?"

"तो लड़के वालों के लिए अदालत खुली है। आपको तो, बल-पूर्वक की जाने वाली किसी बात को रोकना है।"

"वे कोई बात बलपूर्वक कर रहे हैं ?"

"जी! वे कह रहे हैं कि उनका रुपया मिलना चाहिए नहीं तो वे बिना विवाह किये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही लड़की को बलपूर्वक ले जाएँगे।"

"कितने लोग हैं वे ?"

"वारात चली जाने के बाद अभी बीस-पच्चीस हैं।"

"और लड़कीवालों के साथ ?"

"पाँच-छः। यों तो मैं भी पचास-साठ लोगों को मुहल्ले में से एकत्रित कर सकता हूँ, परन्तु फौजदारी की राय तो आप नहीं देंगे।"

"मैं यही विचार कर रहा हूँ कि किस धारा के अधीन मैं इस कार्य में हस्तक्षेप करूँ।"

"धारा तो मैं बता सकता हूँ। हाँ, यह मैं आपके सामने सिद्ध कर सकता हूँ कि वे विवाह करने के लिए रुपया मांग रहे हैं और न मिलने पर फौजदारी करने की धमकी दे रहे हैं। आप कम-से-कम उनको डरा-धमकाकर यहाँ से भगा तो सकते ही हैं।"

"वह कैसे ?"

"अभी आप मेरे साथ चलिये। यदि आपको विश्वास हो जाय कि वे कोई अनुचित कार्यवाही कर रहे हैं, तो आप कोतवाली से पाँच कॉन्स्टेबल बुलवा लीजिये। मुझे विश्वास है कि उन्हें देखते ही वे भाग जावेगे।"

आनन्दस्वरूप गम्भीर विचार में पड़ गया। अर्जुनदेव ने कहा, "यदि आप कहें तो मैं डिप्टी कमिश्नर को टेलिफोन पर घटना का विवरण बता दूं। यदि वे कहेंगे तो ठीक हैं।"

आनन्दस्वरूप इसे भी पसन्द नहीं करता था। उसने कह दिया, "इस प्रकार नहीं। मैं अभी अनारकली थाने में फोन कर दस कॉन्स्टेबल बुला लेता हूँ। मैं पहले अकेला आपके साथ वहाँ जाऊँगा और फिर यदि आवश्यकता पड़ी तो यहाँ से कॉन्स्टेबल को बुलवा लेंगे।"

"जैसा आप ठीक समझें।"

आनन्दस्वरूप ने अपने घर पर कॉन्स्टेबल बुलवा लिये। दस मिनट वाद वे आये तो पुलिस की गाड़ी में ही आनन्दस्वरूप और अर्जुनदेव चन्द्रभानु के मकान की ओर चल पड़े। एक मोड़ के पीछे गाड़ी खड़ी कर दी गई और वे दोनों चन्दभानु के मान पर पहुँचे।

जिस समय ये पहुँचे, कल्याणदास चन्द्रभानु को डाँट रहा था। अर्जुनदेव को आता देख कल्याणदास ने कहा, "क्या हुआ है ?"

"कुछ तो प्रबन्ध हो गया है। बताइये, कितना माँग रहे हैं आप ?"

"आनन्दस्वरूप चुपचाप सुन रहा था। कल्याणदास ने कहा, "लगन का समय हो गया है और आप अभी भाव-ताव ही कर रहे हैं।"

"आप कहते हैं कि लड़की के पिता ने आपको कुछ देने का वचन दिया था ?"

"जी! दो हजार नकद और आभूषण इसके अतिरिक्त। मिठाई भी जो बाँटी गई है, वह बड़ी घटिया थी।"

"वचन लिखित है क्या ?"

"ऐसी बातें लिखित नहीं होती।"

"देखिये कल्याणदासजी! एक हजार का तो प्रबन्ध हो ही गया था, पाँच सौ का और हो गया है, मैं समझता हूँ कि अब आप मान जाइये।"

"जी नहीं। हम अपने-आप निपट लेंगे। आप बीच में न आइये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय आनन्दस्वरूप ने कहा, "अर्जुनदेवजी! इनको फुल डोज ही देना चाहिए। आप जाइये और सब ले आइये।"

जब अर्जुनदेव गया तो आनन्दस्वरूप ने कल्याणदास से कहा, "जरा लड़के को तो दिखाइये। देखें वह इतने मूल्य का है भी कि नहीं ?"

कल्याणदास ने लड़के के छोटे भाई को आवाज देकर दूल्हा को बाहर लाने के लिए कह दिया।

रमेशचन्द्र बाहर आकर अपने पिता के पास खड़ा ही हुआ था कि चारों ओर से पुलिस के सिपाहियों ने उसको घेर लिया। आनन्द स्वरूप ने कॉन्स्टेबलों को कहा, "इन बाप-बेटा दोनों को पकड़कर हवालात में ले चलो। एक कागज पर मैं हुक्म लिख देता हूँ। प्रातः काल मैं आऊँगा।"

यह सुना तो कल्याणदास को पैरों के नीचे जमीन खिसकती सी मालूम देने लगी। बाराती तो पुलिस की सूरत देखते ही भाग खड़े हुए थे। घर से कल्याणदास के घर की स्त्रियाँ निकलीं तो वे चन्द्रभानु को गालियाँ देने लगीं।

आज्ञा लिखने के लिए आनन्दस्वरूप अभी कागज माँग ही रहा था कि कल्याणदास कहने लगा, "अगर ये दहेज देना नहीं चाहते तो मैं लड़के का विवाह करना नहीं चाहता। यह किसी प्रकार भी अवैधानिक नहीं हैं।"

"यह तो ठीक है, परन्तु बारात लाकर, मिठाई खाकर रुपये माँगना और विवाह न करने की धमकी देना तो 'इल्लीगल 'ऐक्सटॉर्शन' हैं। यह अपराध है।"

"देखो कल्याणदास! मैं तुम्हारे साथ एक रियायत कर सकता हूँ कि तुम दोनों बाप-बेटे पाँच-पाँच हजार के मुचलके लिख दो कि बुलाने पर हाजिर हो जाओगे तो मैं तुमको घर जाने की इजाजत दे सकता हूँ। अन्यथा रात हवालात में काटनी पड़ेगी।"

"मैं मुचलका लिखकर देने के लिए तैयार हूँ।"

: 5 :

मुचलका लिख देने पर कल्याणदास और उसके लड़के रमेश को छोड़ दिया गया। वे लोग अपने घर चले गए। चन्द्रभानु ने आनन्दस्वरूप के पांव पकड़कर धन्यवाद किया और अर्जुनदेव ने हैडकॉन्स्टेबल के हाथ में बीस रुपये के नोट देते हुए कहा, "इनकी आप लोग चाय पी लेना।"

इस प्रकार जब सब लोग विदा हो गये तो चन्द्रभानु अपनी पत्नी सहित नलिनी से मिलने के लिए अर्जुनदेव के घर पर चला आया।

नलिनी एक कोने में बैठी रो रही थी। चन्द्रभानु ने कहा, "मेरा पांच सौ से अधिक खर्च हो गया है। इस पर भी लड़की नरक-कुण्ड में गिरती-गिरती बच गई है।"

अर्जुनदेव ने उसको सान्त्वना देते हुए कहा, "मैं तुम्हारी लड़की के विवाह के लिए यत्न करूँगा।"

कई दिन के विचारोंपरान्त अर्जुनदेव ने निश्चय किया कि नलिनी से निरंजन का विवाह कर दिया जाए। उनका विचार था कि चौदह छुहारे देकर चन्द्रभानु सगाई कर जाय, वस्त्राभूषण लड़की ने अपने अर्जित धन से बनवा रखे थे। विवाह का प्रबन्ध वह अपने खर्च पर कर लेगा। इस पर चन्द्रभानु तो अर्जुनदेव को भगवान का अवतार ही समझने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह की तिथि निश्चित करने से पूर्व अर्जुनदेव ने निरंजनदेव और उसके दिल्ली के संरक्षक नारायणदास से पूछ लिया कि वे कब आ सकेंगे।

इसके उत्तर में नारायणदास का पत्र आया। पत्र में लिखा था–

"कदाचित् आप मेरा धन्यवाद करना चाहते हैं, परन्तु मैं तो धन्यवाद-पत्र से ही सन्तोष करने वाला नहीं। मैं समझता हूँ कि मैं अब आपसे अधिक घना और सुदृढ़ सम्बन्ध बना लूँ।"

"हमारी बड़ी लड़की रमा इस समय सत्रह वर्ष की हो गई है। यदि निरंजन के साथ आप उसकी सगाई की स्वीकृति दें तो मैं और रमा की माँ कभी भी आकर शगुन लेने के लिए तैयार हैं। लड़की सुन्दर, सुशील, पढ़ी-लिखी और निरंजनदेव की देखी-भाली है। मैं समझता हूँ कि यह सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आप इस निर्णय में अपनी स्वीकृति शीघ्र ही दीज़िये, जिससे कि यह शुभ कार्य हो सके।"

"वैसे तो इसकी आवश्यकता नहीं थी, इस पर भी मैं यह बताने में कोई हानि नहीं समझता कि मैंने लड़की के विवाह पर बीस सहस्र रुपया दहेज देने का निर्णय किया हुआ है। निरंजन की बारात का वह स्वागत क़रूँगा कि नई दिल्ली में धूम मच जाएगी।"

पत्र मिला तो अर्जुनदेव अवाक् रह गया। उसको अपनी भूल प्रतीत होने लगी। वह समझने लगा कि नलिनी के माता-पिता से निश्चय करने से पूर्व उसे निरंजनदेव से पूछ लेना चाहिए था।

मोहिनी से पूछा गया तो उसने कहा कि यदि निरंजन ने नलिनी से विवाह स्वीकार नहीं भी किया तो भी वह नलिनी का विवाह प्रबन्ध अब स्वयं करेगी। वह कहीं अन्यत्र लड़का ढूँढेगी और विवाह का सारा खर्चा स्वयं करेगी। निरंजन का दूसरा भाई अभी चौहद वर्ष का ही था, अन्यथा कोई असुविधा न होती।

अर्जुनदेव ने कहा, "मैं समझता हूँ कि तार देकर निरंजनदेव को यहाँ बुला लेना चाहिए। पूर्ण परिस्थिति जानने के बाद ही आगे बात करनी चाहिए।"

तार दिया गया और दफ्तर से अवकाश लेकर निरंजनदेव लाहौर आ गया। इन दिनों निरंजनदेव नारायणदास का क्वार्टर छोड़कर अपने कार्यालय के एक क्लर्क के साथ रहने लगा था। रमा के जन्मदिन की दावत के तीसरे दिन ही उसने यह प्रबन्ध कर लिया था। जब उसने श्यामा से इस विषय में बात की तो श्यामा ने पूछा, "क्यों, कहाँ जा रहे हो ?"

"माँजी! रमा और माया को एक से अधिक भाई के यहाँ रहने पर कष्ट होता प्रतीत होता है।"

रमा और माया तो तब तक पढ़कर आई नहीं थीं। सतीश आकर खेलने चला गया था। श्यामा ने कहा, "मैं समझती हूँ कि तुम्हें भ्रम हो गया है।"

"जी, भ्रम नहीं। मेरे पास उनके मन के भावों का प्रमाण विद्यमान है।"

"प्रमाण ? कैसा प्रमाण ?"

"मैं आपको दिखा सकता हूँ, किन्तु यदि आप वचन दें कि इसके लिए आप उसे डाँटेंगी नहीं, अपितु प्यार से उसे समझाएँगी।"

श्यामा अनिश्चित मन खड़ी थी। निरंजनदेव ताँगा साथ ही लाया था। उसने अपना समान समेटकर उस पर रख दिया। फिर उसने अपनी जेब से पैन की डिबिया निकालकर श्यामा को दिखाते हुए कहा, "यह पैन मैंने उस दिन रमा को उसके जन्म-दिवस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के उपलक्ष्य में दिया था। उसने इसे तोड़कर मुझे लौटा दिया है।"

टूटे पैन को देख श्यामा खड़ी रह गई। रमा ने अपनी बात अंग्रेजी में लिखी थी। श्यामा अंग्रेजी जानती नहीं थी, इस कारण रमा का लिखा हुआ वह पढ़ नहीं सकी। उसने कहा, "यह डिबिया मुझे दे जाओ। मैं उससे इसका कारण पूछूँगी।"

"उसने कारण लिखा है और मैंने आपको बता दिया है। इस पर भी आपने मुझे वचन दिया है कि आप उसे प्यार से समझाएँगी। यह मैं आपको दिये जा रहा हूँ। मैं आज रात को चाचाजी से मिलने के लिए आऊँगा और उस सब कष्ट के लिए, जो इस अवधि में मैंने आप लोगों को दिया है, क्षमा-याचना करूँगा।"

"अब कहाँ जा रहे हो ?"

"नम्बर तीस फौच स्क्वैयर में एक कमरा मिल गया है।"

इस प्रकार निरंजनदेव नारायण दास के घर से चला गया।

सायंकाल रमा और माया आई और निरंजनदेव का कमरा खाली देख समझ गई। दोनों को माँ का मुख भी विषादयुक्त प्रतीत हुआ। पुस्तकें रखकर वे चाय पीने के लिए आईं तो श्यामा चुपचाप उनके पास आकर बैठ गई। उसका विचार था कि नारायणदास के आने पर उससे राय करने के बाद ही वह इस विषय में कुछ बात करेगी। परन्तु बात रुक नहीं सकी। माया ने पूछ लिया, "निरंजन भापा कहाँ हैं, उनका कमरा खाली पड़ा हैं ?"

"हमारा क्वार्टर छोड़कर वह अन्यत्र चला गया है।"

"क्यों ?"

"यह तो तुम लोग ही बताओगी तो पता चलेगा। मेरे साथ तो उसका कोई झगड़ा नहीं।"

"माँ! झगड़ा तो हमारा भी नहीं हुआ।"

"तो क्या हुआ है ?"

माया ने रमा के मुख की ओर देखा। वह चाहती थी कि वह स्वयं ही बताये तो ठीक है। रमा चाय में चम्मच से चीनी मिला रही थी। रमा को उत्तर न देते देख श्यामा ने डाँटते हुए पूछ लिया, "क्या बात हुई है, रमा ?"

रमा ने वैसे ही प्याले की ओर देखते हुए कहा, "वह मुझे अपनी अविवाहित पत्नी बनाना चाहता था। मैं नहीं मानी, इस कारण वह यहाँ से चला गया है।"

"तब तो ठीक ही हुआ है। उसका यहाँ रहना तुम्हें पसन्द नहीं था न ?"

रमा ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह उठकर अपने कमरे में चली गई। इस पर माया ने धीरे से कहा, "माँ! दीदी झूठ बोल रही है।"

"तो क्या बात हुई है ?"

"दीदी उनसे विवाह करना चाहती थी। उन्होंने स्वीकार नहीं किया। जन्म-दिन पर उन्होंने इसको पैन और पेंसिल भेंट में दी थी, उसमें उन्होंने लिखा था कि वे यह अपनी बहन रमा को भेंट में दे रहे हैं। दीदी ने कलम तोड़ दी और कागज पर लिखे को काटकर स्वयं लिख दिया कि वह उसे प्रेम करती है और प्रेम भेंट चाहती है। कलम उसने उन्हें वापस कर दी है।"

इस समय नारायणदास आ गया। उसके हाथ में एक तार पकड़ा हुआ था। श्यामा ने पूछा, "यह तार किसका है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"निरंजन का है। अभी-अभी बाहर तार वाला देकर गया है।"

"निरंजन तो यहाँ से चला गया है।"

'कहाँ"

"तीस नम्बर फौच स्क्वेयर में।"

"क्यों ?"

"यह उससे लड़ पड़ी है।" उसने माया की ओर संकेत कर कहा।

"क्यों माया! किसलिए लड़ी हो उसके साथ ?"

"मैं नहीं पिताजी! रमा लड़ी है और मैंने कारण बता दिया है माताजी को।"

माया चाय पी चुकी थी। श्यामा और नारायणदास एक दूसरे का मुख देखते रहे। माया ने वहाँ से टल जाना ही उचित समझा। जब माया चली गई तो नारायणदास ने श्यामा से पूछा, "क्या बताया है ?"

"निरंजनदेव ने बताया है कि रमा और माया को एक से अधिक भाई का यहाँ रहना पसन्द नहीं और उसके प्रमाण में उसने यह दिया है।"

श्यामा ने कलम की डिब्बी निकालकर दिखाई। उसने कहा, "रमा बताती है कि वह उसको अविवाहित पत्नी बनाना चाहता था। वह नहीं मानी, इस कारण निरंजन चला गया है। माया कहती है कि रमा झूठ बोलती है। बात इसके बिल्कुत विपरीत है। रमा उसकी संगति पति के रूप में चाहती थी, किन्तु निरंजन ने स्वीकार नहीं किया। इस कारण उसने उसकी भेंट तोड़ डाली है और वापस कर दी है।"

"अर्थात् माया ने निरंजन का समर्थन किया है।"

"जी!"

नारायणदास ने कलम देखी और फिर उसमें रखे कागज के टुकड़े को भी। उसने रमा के लिखे हुए को भी पढ़ा। प्रढ़कर नारायणदास ने कहा, "माया की बात ठीक प्रतीत होती है।"

"रमा ने इतना बड़ा झूठ क्यों बोला ?"

"माया से पूछकर इसका पता लगाना चाहिए।"

"मैं पूछने वाली थी, इतने में आप आ गये। इस कारण वह बताती-बताती रुक गई।"

नारायणदास ने निरंजनदेव के नाम आया तार खोलकर पढ़ लिया। उसमें लिखा था कि तुम जल्दी लाहौर आ जाओ। पढ़कर कुछ विचारकर उसने कहा, "मैं समझता हूँ कि काम बन रहा है। अर्जुनदेव नें लड़के से राय करने के लिए उसको बुलाया है। परन्तु तुम्हारी लड़की ने सब-कुछ बिगाड़ दिया प्रतीत होता है। उसे चुप-चाप धीरज रखना चाहिए था, या तुम्हें बताती। मैं चाहता हूँ कि मैं निरंजनदेव से मिलूँ और उसको अपने अनुकूल करने का यत्न करूँ।"

"वह कह गया है कि रात को आपसे मिलने के लिए आएगा।"

"परन्तु मैं उससे एकान्त में बात करना चाहता हूँ।"

"पहले माया से सब बात सुन लीजिए, तभी उससे बात करना ठीक होगा।"

भीतर कमरे में माया और रमा लड़ पड़ी थीं। माया जब भीतर आई तो रमा ने कहा, "तुमने माताजी को सब बात क्यों बताई है ?"

"भापा पर तुमने झूठा आरोप जो लगाया था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह तुम्हारा क्या लगता था जो उसकी बदनामी से तुमको इतना दुःख हुआ है ?"

"जो तुम्हारा लगता है, वही मेरा भी लगता है।"

"अर्थात् तुम भी उससे प्रेम करने लगी हो ?"

"रमा! तुम पागल हो गई हो।"

"तुम छिनाल हो गई हो।"

दोनों के झगड़ने की आवाज सुन माँ कमरे में आ गई। उसने कहा, "क्या बात है रमा ?"

उत्तर में माया बोली, "यह मुझसे कह रही है कि मैंने सत्य बात क्यों बताई है।"

"माँ! यह झूठ बोलती है।"

"परन्तु माया की बात का तो समर्थन हो गया है।" नारायणदास ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा।

नारायणदास कलम की डिब्बी में रखा कागज दिखाते हुए बोला, "यह कागज समर्थन कर रहा है कि वह तो तुमको बहिन मानता है और तुम उसकी पत्नी बनना चाहती हो।"

इस पर माया ने पिछली रात की बात बता दी और एक रात पहले की बात भी, जब रमा उससे 'बाईनॉमिकल थ्योरम' समझने के लिए गई थी। नारायणदास ने रमा को बताया, "हम भी तुम्हारा विवाह निरंजनदेव से करना चाहते थे। मैंने उसके पिता को पत्र लिखा था। उस पत्र के पहुँचने पर उसके पिता ने उसको तार देकर लाहौर बुलाया है। मैं यह उसको देने के लिए जा रहा हूँ। परन्तु तुमने बेसब्री से निरंजन को नाराज कर दिया है। तुमने सारा काम बिगाड़ दिया है।"

"देखो, मैं जा रहा हूँ और बिगड़े काम को सुधारने का यत्न करूँगा। अब तुम प्रसन्न हो जाओ। यदि वह मान गया तो तुम्हारे दिल की मुराद पूरी हो जाएगी।"

इस बात को सुनकर रमा को अपनी पहली करतूत पर पश्चाताप होने लगा। उसको स्मरण हो आया कि निरंजन ने कहा था कि पति-पत्नी तो माता-पिता ही बना सकते हैं। हम अपने-आप तो, बहिन-भाई ही बन सकते हैं। वह इस कथन का अर्थ यह समझती थी कि वह बहिन-भाई का सम्बन्ध छोड़कर पति-पत्नी का सम्बन्ध मान जाएगा, यदि उसके माता-पिता मान जाएँ तो।

रमा आँखे झुकाये खड़ी रही। नारायणदास तार लेकर निरंजनदेव के पास चला गया। वह अपने कमरे में बैठा किसी पुस्तक का अध्ययन कर रहा था। नारायणदास को आया देख पुस्तक को एक ओर रख के खड़ा हो वह उसका स्वागत करने लगा। नारायणदास ने बैठते हुए पूछा, "तुम तो बिना बताये ही चले आये हो ?"

"बिना बताये नहीं। मैं तो माताजी को बताकर आया हूँ और आने का कारण भी उनको बता आया हूँ।"

"रमा मूर्ख है। उसको ज्ञान नहीं कि किसी कार्य की सिद्धि किस प्रकार की जाती है।"

"चाचाजी! मूर्ख तो वह है, परन्तु कार्य की सिद्धि के उपाय वह उतने ही जानती है जितने कोई भी स्त्री जान सकती है। परसों रात उसने मुझे बदनाम करने की धमकी दी थी। इस कारण मैंने एक रात और रहना उचित नहीं समझा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपको न बताकर आने के लिए मुझे लज्जा आती है। इसके लिए मैं आज रात को आकर क्षमा माँगना चाहता था। मैंने माताजी को बताया भी था कि मैं आऊँगा।"

"तो ठीक है। रात को तुम भोजन करने के लिए चलना। मैं तुम दोनों में सुलह करा दूँगा। देखो, मैं तुम्हें एक रहस्य की बात बताता हूँ। मैने पहले ही तुम्हारे पिताजी को लिखा है। मैं और श्यामा तुमसे रमा का विवाह करने का प्रस्ताव कर चुके हैं। मेरा विचार है कि तुम्हारे पिता को भी यह प्रस्ताव स्वीकार है। आज उन्होंने तुम्हारे नाम यह तार भेजा है। इससे मुझे कुछ ऐसा आभास मिलता है कि तुम दोनों का विवाह हो जाएगा।"

इतना कह नारायणदास ने तार निकालकर निरंजनदेव के हाथ में दे दिया। तार को पढ़कर निरंजनदेव ने मेज पर रख दिया। फिर वह कहने लगा, "मुझे रमा से सुलह करके बहुत प्रसन्नता होगी। इस पर भी मेरा निवेदन है आपके क्वार्टर में तो मैं लाहौर से लौटकर ही आऊँगा। तब तक मेरे मन में भी एक स्पष्ट कल्पना हो जाएगी कि उसका और मेरा सम्बन्ध बहिन-भाई का रहेगा अथवा कुछ और।"

"मेरे विचार में आज मुझे नहीं जाना चाहिए। मैं जानता नहीं कि उसका-मेरा क्या सम्बन्ध बनेगा।"

"तुम्हें तो वह पत्नी-रूप में अस्वीकार्य नहीं होगी ?"

"जो कुछ परमात्मा को स्वीकार होगा मैं उसे किस प्रकार अस्वीकार कर सकता हूँ ?"

"परमात्मा! परमात्मा!! परमात्मा!!! यह क्या झगड़ा डाल रखा है ? तुमको अपने माता-पिता का कहना मानना चाहिए।"

"इस विषय में माता-पिता का निर्णय ही परमात्मा का आदेश है। जीवन के सुख-दुःख तो अपने कर्मफल से मिलते हैं और उसके निमित्त परमात्मा का आदेश होता है।"

"कुछ भी हो। मैं तो कहूँगा कि तुम्हें अपने माता-पिता का कहना मानना चाहिए।"

"आपका कहना सर्वथा धर्मसंगत है। इसी कारण मैंने यह निवेदन किया है कि मैं वहाँ से लौटकर आपके घर आऊँगा।"

: 6 :

नारायणदास लौट गया। निरंजनदास ने घड़ी में समय देखा, सात बजे थे। फ्रण्टियर-मेल साढ़े आठ बजे जाती थी। वह गाड़ी पकड़ने के लिए तैयार हो गया। उसने ताँगा किया और ईस्टर्न कोर्ट जाकर अपने आफिसर को तार दे दिया कि लाहौर से उसके पिता का तार आया है इस कारण वह लाहौर जा रहा है, सम्भवतः दो दिन तक वापस आ जाएगा।

वहीं से वह सीधा स्टेशन को चला गया।

लाहौर पहुँचने पर उसके पिता ने उसे नलिनी की सारी बात ज्यों-की-त्यों बता दी। फिर उसने नारायणदास का पत्र भी पढ़कर सुना दिया। यह सब-कुछ करने के बाद उसने कहा, "मैंने इस विषय में तुम्हारे विचार जानने के लिए ही तुम्हें यहाँ बुलाया है।"

"इसमें मेरे विचार जानने की क्या अवश्यकता है ? आप जैसा करने की आज्ञा देंगे वैसा ही करूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसमें तीन बातें विचारणीय हैं। प्रथम यह कि तुमने दोनों लड़कियों को देख रखा है। उन दोनों में तुम्हें कौन पसन्द है ? दूसरे, तुमने नारायणदास को किसी प्रकार का वचन दिया है क्या ? उनकी लड़की को अस्वीकार करने पर वे तुमसे किसी प्रकार की रुष्टता तो प्रकट नहीं करेंगे ? तीसरे, नाराज होकर नारायणदास तुम्हारी नौकरी में किसी प्रकार की हानि तो नहीं पहुँचा सकता ?"

निरंजनदेव ने विचारकर कहा, "जहाँ तक दोनों में प्राथमिकता का प्रश्न है मेरी इस विषय में कोई सम्मति नहीं है। कोई उन्नीस-बीस हुई भी तो यह आपकी स्वीकृति की तुलना में कुछ महत्व नहीं रखती। नारायणदास जी को मैंने किसी प्रकार का वचन नहीं दे रखा है। इस कारण उनके नाराज होने का कोई कारण नहीं तीसरी बात कि नारायणदास मुझे कुछ हानि पहुँचा सकते हैं कि नहीं, मैं इसको कुछ भी महत्व नहीं देता। यह कोई ऐसी बात नहीं कि इसके लिए मैं कोई उचित कार्य करने से रुक जाऊँ।

"पिताजी! यदि आप कहेंगे तो मैं यहाँ विवाह करूँगा और स्वयं को भगवान भरोसे छोड़ दूँगा। मुझे कोई कारण प्रतीत नहीं होता कि परमात्मा मुझसे रुष्ट हो सकता है।"

लड़के के मुख से स्थिति का विश्लेषण सुनकर अर्जुनदेव बहुत प्रसन्न हुआ। वह जानता था कि ठीक से युक्ति करने वाला व्यक्ति सदा सफल होता है। इस कारण उसने एक प्रश्न और उससे किया "तुम विवाह में अपने श्वसुर से कितना दहेज मिलने की अपेक्षा रखते हो ?"

"पिताजी! विवाह दहेज के लिए किया जाता हैं अथवा दहेज विवाह पर दिया जाता है। विवाह तो स्वतः एक आवश्यकता है। दहेज माता-पिता अपनी सामर्थ्य और प्रेम के अनुरूप देते हैं। वे कुछ दें अथवा न दें, इस पर विवाह का होना निर्भर नहीं है।"

"देखों निरंजन! नारायणदास ने बीस हजार दहेज देने के लिए कहा है। दूसरी ओर नलिनी की माँ बेचारी तो एक रुपया भी भेंट नहीं दे सकती।"

"यह तो विचारणीय बात नहीं है, पिताजी!"

"तो ठीक है। विवाह कब करना चाहते हो ?"

"जब आपकी इच्छा हो।"

"कितने दिन की छुट्टी लेकर आए हो ?"

"मैंने तो दो दिन की भी छुट्टी तार द्वारा ली है।"

"तो ऐसा करो, आज रात विवाह कर लो। कल तुम दिल्ली लौट जाना और फिर वहाँ रहने आदि की व्यवस्था कर अपनी पत्नी को ले जाना।"

"जैसी आप आज्ञा देंगे।"

विवाह हो गया और तीसरे दिन निरंजनदेव दिल्ली भी पहुँच गया। वहाँ पहुँच उसने पिछले दो दिनों की अनुपस्थिति के लिए अवकाश का प्रार्थना पत्र लिख दिया। प्रार्थना स्वीकार हो गई। अब वह अपने लिए मकान का प्रबन्ध करने मे लग गया। उसे लाहौर से लौटे तीन दिन हुए थे कि नारायणदास उससे मिलने के लिए आया। उसके साथ श्यामा भी आई थी।

"क्यों निरंजन, वही बात की न ? भात खाया और खिसके! श्यामा ने उलाहना दिया।"

"माताजी! सब-कुछ पिताजी ने पहले ही निश्चय किया हुआ था, मैं गया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह हो गया।"

"हम तो तुम्हारी बहू को शगुन डालने के लिए आए हैं।"

"वह तो अभी आई नहीं। मैं सरकारी क्वार्टर के लिए यत्न कर रहा हूँ।"

"वह तुम्हें अभी कैसे मिल सकता है ?"

"मुझे तो नही मिलेगा। किन्तु जिसको मिल सकता है ऐसे किसी व्यक्ति से लेने का प्रयत्न कर रहा हूँ। आशा करता हूँ कि अगले सप्ताह तक यह हो जाएगा। तब आपको तथा अप । मित्र-सम्बन्धियों को निमंत्रण दूँगा। उस समय मेरा विचार है कि माताजी और पिताजी भी आएँगे।"

"हमे कल उनका पत्र मिला था। उन्होंने लिखा है कि हमारा प्रस्ताव उन्हें बहुत विलम्ब से प्राप्त हुआ है। उसके पूर्व ही वे लोग विवाह के विषय में निश्चय कर चुके थे। अतः जब तुम वहाँ पहुंचे तो विवाह कर दिया गया।"

"उन्होंने यह भी लिखा है कि यद्यपि तुम रहने के लिए पृथक् मकान ले रहे हो, इस पर भी तुम्हें हमारे ही संरक्षण में समझते है।"

"मैं भी यही समझता हूँ। मैं आप लोगों से मिलने के लिए आने वाला था, किन्तु फिर मैंने सोचा कि नलिनी आ जाए तो आप सब को ही अमान्त्रिक करना ठीक रहेगा। मैं मकान मिलने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। सम्भवतः सोमवार तक मकान मिल जाएगा। फिर एक में माताजी नलिनी को लेकर आ जाएँगी। कदाचित् पिताजी भी साथ आ जाएँ।"

"अच्छी बात है। आज तो हमारे घर पर चलो।"

"चलिए। अब तो रमा और माया के प्रति मेरे मन के भाव स्थिर हो चुके हैं और मैं समझता हूँ कि अब रमा को भी बहिन बनना ठीक प्रतीत होगा।"

नारायणदास के साथ ही निरंजनदेव उनके क्वार्टर पर चला गया। मार्ग में नारायणदास ने कहा, "मुझसे थोडी भूल हो गई है। रमा के विवाह का विचार तो उस दिन से ही हमारे मन में आ गया था जिस दिन तुम नौकरी ढूँढने के लिए यहाँ आए थे। मुझे चाहिए था कि जिस दिन तुम्हारी नौकरी लग जाने की सूचना मिली थी, उसी दिन तुम्हारे पिताजी को लिख देता और तुमको तथा रमा को भी अपने विचार बता देता।"

"मैं भी समझता हूँ कि यदि आप ऐसा करते तो रमा का विवाह हो चुका होता। परन्तु चाचाजी! जो बात ईश्वर को स्वीकार नहीं थी, वह किस प्रकार हो सकती थी ?"

"अपनी भूल के लिए मैं ईश्वर को उत्तरदायी नही मान सकता।"

"अमने विचार से तो आप भूल नहीं कर रहे थे और फिर कौन जानता है कि रमा वहिन का सम्बन्ध मुझ नालायक से कहीं अच्छे स्थान पर हो जाए! परमात्मा के ढंग न्यारे हैं, कोई नहीं कह सकता कि वह क्या करने वाला है।"

"यह तो बाद में ही पता चलेंगा। एक स्थान पर बातचीत हो रही है। देखने में तो वर तुमसे अच्छा ही प्रतीत होता है। यह तो समय पर पता चलेगा। अब तुम बताओ, तुमको क्या-क्या मिला है ?"

"लड़की है। पाँच फुट, पाँच इंच। दुबली-पतली। रंग गोरा है।"

श्यामा बोली, "यह बात नहीं। यह बताओं कि दहेज वगैरह क्या मिला है ?"

"बस, लड़की के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। सुना है, उसकी अपनी अर्जित सम्पत्ति के कुछ आभूषण हैं। शेष आप जब पिताजी यहाँ आएँ, तो उनसे पूछ लीजिएगा। वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब बात आपको सविस्तार बता देंगे। जहाँ तक मुझे ज्ञात है लड़की को 'सूहेसालू' भी माताजी ने दिये थे।"

नारायण दास हँस पड़ा। उसने कहा, "तुम्हारे पिता भी न जाने क्या देखकर रीझे हैं! अच्छा, हम तुमको एक दिन बुलाएँगे और रमा के भावी पति से तुम्हारा परिचय कराएँगे। वास्तव में तुमसे सम्बन्ध न बन सकने का अब मुझे कोई मलाल नहीं रहा।"

"तब तो ठीक है। मुझे आशा है कि रमा बहिन भी अब मुझसे रूष्ट नहीं होगी।"

जब वे लोग क्वार्टर में पहुँचे तो भोजन का समय हो गया था। निरंजनदेव ने भी भोजन नहीं किया था, इसलिए सभी लोग भोजन करने बैठ गये। आज नारायणदास का भतीजा सुरेन्द्र और उसकी पत्नी कृष्णा भी आये हुए थे। इन सबकी उपस्थिति में निरंजन रमा के मन के भावों का अनुमान नहीं लगा सका। रात को दस बजे जब वह वहाँ से जाने लगा तो माया ने कहा, "भापा! भाभी को लेकर तो आया करेंगे न ?"

"हाँ, यदि ननदों का भाभी के प्रति स्नेह रहा तो।"

माया इसका उत्तर नहीं दे सकी। इस समय रमा कृष्णा से मिल रही थी। उसने निरंजनदेव को दूर से ही नमस्कार किया और और वह चला आया।

निरंजनदेव के एक मित्र बिहारीलाल को क्वार्टर अलाट हो चुका था और वह क्वार्टर निरंजनदेव को रहने के लिए मिल गया। जिस दिन उसको क्वार्टर की चाबी मिली, उसी दिन उसने अपने पिता को इसकी सूचना का तार दे दिया और इसके तीसरे ही दिन मोहिनी अपनी पुत्र-पधू को लेकर दिल्ली आ पहुँची। निरंजनदेव उनको लेने स्टेशन गया। अर्जुनदेव नहीं आया था। पत्नी के आने के तीसरे दिन निरंजनदेव ने इस नवीन क्वार्टर में अपने विवाह के उपलक्ष्य में एक समारोह किया। इसमें उसके आफिस के लगभग सभी अफसर और उनकी पत्नियाँ, नारायणदास का पूर्ण परिवार और कुछ अन्य परिचितों को आमन्त्रित किया गया था। लगभग अस्सी व्यक्ति इस अवसर पर आमन्त्रित थे। वैंजर रैस्टोरेंट वालों को चाय-पार्टी का प्रबन्ध सौंपा गया था।

मोहिनी को जब इस बात का ज्ञान हुआ तो उसने सोचा कि उसकी बहू को इस अवसर पर बहुत सज-धजकर रहना चाहिए। वह नहीं चाहती थी कि उसके लड़के की मान-प्रतिष्ठा में किसी प्रकार की हीनता प्रकट हो।

नारायणदास अपनी लड़कियों के साथ आया। सुरेन्द्र भी अपनी पत्नी के साथ आया और बहुत-से क्लर्क और अधिकारी भी अपनी-अपनी पत्नियों के साथ आये थे। नारायणदास को अपना संरक्षक घोषित कर निरंजनदेव ने उसे अभ्यागतों का स्वागत करने का कार्य सौंप दिया। इस अवसर पर उसने कहा, "चाचाजी! पिताजी तो आये नहीं हैं। अतः अब आपको ही घर का पुरखा होने के नाते अभ्यागतों का स्वागत करना चाहिए।"

नारायणदास को भी यह कार्य भला प्रतीत हुआ।

निरंजनदेव श्यामा, रमा और माया को लेकर अपनी पत्नी के पास गया। उनका उसने अपनी माताजी तथा नलिनी से परिचय कराया। स्वयं वह बाहर आकर अभ्यागतों के चाय-पानी के प्रबन्ध में लग गया।

नलिनी को देखकर तो रमा का मुख विवर्ण हो गया। नलिनी उससे कहीं अधिक सुन्दर थी। जब मोहिनी ने बताया कि वह बी० ए० पास है और लाहौर की एक फ़र्म में दो सौ रुपये की नौकरी छोड़कर आई है तो रमा को सब-कुछ फीका-फीका प्रतीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने लगा। इसी क्षण उसको विचार आया कि अब तो उसका सम्बन्ध एक इंजीनियर के सुपुत्र ठेकेदार से हो रहा है। इससे उसको कुछ सन्तोष होता था। वह सोचती थी कि भले ही नलिनी अधिक सुन्दर हो, परन्तु वह तो अब अधिक धनी परिवार में जा रही है।

चाय के समय निरंजनदेव नलिनी को लेकर अभ्यागतों से मिलने लगा। कुछ लोगों ने भेंट में कुछ वस्तुएँ दीं और अन्य सबने आशीर्वाद दिया।

चाय-पार्टी के बाद जब सब लोग विदा हो गये तो मोहिनी ने श्यामा को रूकने के लिए आग्रह करते हुए कहा, "श्यामा बहिन! घर के लोग तो ठहरने चाहिए। रात का भोजन यहीं पर होगा।"

श्यामा मान गई। रमा और माया भी यही चाहती थीं। नारायणदास ने तो अभी नलिनी को भेंट भी नहीं दी थी। वह सब लोग भीतर चले गये। वहाँ बैठकर श्यामा ने नलिनी को एक आभूषणों का सैट और एक जोड़ी वस्त्र दिये। अपने पुत्र के विवाह के उपलक्ष्य में मोहिनी ने रमा और माया के लिए एक-एक सूट का कपड़ा और दोनों को इक्यावन-इक्यावन रुपये दिये।

मोहिनी तो भोजन बनाने के लिए चली गई, अन्य सब बहू को घेरकर बैठ गये। सबके पीछे बैठा हुआ निरंजनदेव उसकी पत्नी के साथ किया जाने वाला मजाक और उनका उत्तर सुनकर आनन्दविभोर हो रहा था। एकाएक रमा अपने स्थान से उठकर उसके समीप आ बैठी और बोली, "कैसी है भाभी?"

"रमा! बहुत-बहुत धन्यवाद तुम्हारा। तुमने उसे भाभी तो स्वीकार किया! इसका अभिप्राय यह हुआ कि मैं भाई के रूप में स्वीकार हूँ।"

"आप तो अभी भी पुरानी लकीर पीटे जा रहे है।"

"तो तुम उस बात को भूल गई हो?"

"तभी तो आपकी माताजी से भेंट स्वीकार कर ली है।"

"ठीक है। अब मैं वैसी कोई बात नहीं कहूँगा। वैसे तो मैने अपने प्रति तुम्हारे मन के भावों का उल्लेख किसी से नहीं किया, इस पर भी कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारे माता-पिता को उस घटना का ज्ञान है।"

"हाँ, माया सब बक गई है। वह बच्चों की-सी बातें करती है।"

"है भी तो तुमसे छोटी ही।"

"परन्तु जब मैं उतनी बड़ी थी, मुझे सब-कुछ पता था। वह तो सर्वथा बुद्धू ही है। हाँ, भाभी बहुत समझदार प्रतीत होती है। खूब जवाब दे रही है।"

"पसन्द है तुम्हें?"

"सुन्दर तो है ही। परन्तु वह दो सौ की नौकरी छोड़कर आई है आपकी पौने दो सौ की आय के लिए।"

"इसमें पिताजी की सम्मति चली है। उनका कथन था कि पत्नी तो गृहलक्ष्मी होती है। उसको किसी बाहरी व्यक्ति की नौकरी शोभा नहीं देती।"

"इसमें हानि क्या है।"

"हानि यह है कि यदि नलिनी लाहौर की नौकरी न छोड़ती तो मैं यहाँ और वह वहाँ। क्या लाभ होता इस विवाह का?"

रमा मुस्कुराई और कहने लगी, तो उसको यहाँ कहीं नौकरी दिलवा दीजिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु घर का काम-काज कौन करेगा?"

"एक नौकर रख लीजिए। नौकर के वेतन से तो वह अधिक अर्जन करेगी।"

"परन्तु घर के सब काम तो नौकर के करने से नहीं होते?"

"देख लीजिए। आपकी आय दुगुनी हो जायेगी। उस दिन पिताजी कहते थे कि आप तो किसी से एक पैसा रिश्वत नहीं लेते। यदि कभी कोई कुछ दे भी जाता है तो आप उसे अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को दे देते है।"

"यह उनको किसने बताया है?"

"उस दिन क्लब में एक्जीक्यूटिव इंजीनियर बता रहे थे, पिताजी को।"

"तुम्हारे पिताजी इस बात को कैसा समझते हैं?"

"वे तो आपको मूर्ख समझते हैं। आपके इस दहेज के बिना विवाह को भी आपकी मूर्खता ही मानते हैं।"

"हाँ, वे धन को ही सब-कुछ समझते हैं, परन्तु मेरे मन में धन की अपेक्षा धर्म की महिमा अधिक हैं।"

"धर्म क्या होता है?"

"जो बात ठीक है, वह धर्म है।"

"यही तो पूछ रही हूँ कि ठीक क्या है। मान लीजिए कोई आपकी किसी सेवा के लिए एक सौ रुपये का नोट देता है। बताइए, यह सौ रूपया ले लेना अनुचित क्यों हो गया?"

"इसलिए कि वह कार्य करने के लिए तो मुझे सरकार की ओर से वेतन मिलता है। इस कारण मैं उसी काम के लिए किसी अन्य से प्रतिकार का अधिकार नहीं हूँ। जैसे एक अपराध के लिए दो बार दण्ड नहीं दिया जा सकता, उसी प्रकार एक कार्य के लिए दो स्थान से वेतन नहीं लिया जा सकता।"

"परन्तु आफिस के अतिरिक्त समय में भी तो आप किसी का कार्य कर सकते हैं?"

"प्रत्येक सरकारी कर्मचारी, चौबीस घण्टे का नौकर होता हैं।"

"यदि आपके ऐसे ही विचार हैं, तब तो कर चुके उन्नति।"

"खैर, रमा तो मुझे-जैसे निखट्टू के पल्ले पड़ने से बच गई है। ईश्वर की कृपा से वह निखट्टू किसी अन्य के साथ नत्थी कर दिया गया है।"

"आप अपने इस नत्थी हुए साथी से प्रसन्न हैं?"

"अभी तक तो अप्रसन्नता का कोई कारण प्रतीत नहीं हुआ।"

उधर भोजन की प्रतीक्षा में बैठे सब लोग नलिनी से हँसी-ठट्टा कर रहे थे। माया ने ही बात आरम्भ करते हुए उससे पूछा, "भाभी! कैसे लगे हमारे भैया? प्रसन्न हो उनसे?"

"प्रसन्न नहीं हूँगी तो ननदें घर में रहना दूभर कर देंगी।"

"वाह! भैया से लड़ोगी तो हम क्यों नाराज होने लगीं?"

"तो क्या बहिन को भाई की प्रसन्नता में प्रसन्नता नहीं होगी?"

"हमें भैया-भाभी में लड़ाई होने में आनन्द आएगा।"

"क्या आनन्द आएगा?"

"जब भाभी-भैया एक-दूसरे को दाँतों और नाखूनों से नोच खायेंगे तो उनका मुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और शरीर देखकर आनन्द आएगा।"

"तो ऐसा करो, भैया को ऐसा करना सिखा दो। कहने से करके दिखाना अधिक प्रभावशाली होगा।"

सब हँस पड़े। सतीश बोला, "भाभी! आप किस दुकान में काम करती थीं?"

"मैण्टन एण्ड कम्पनी में। वहाँ शस्त्रास्त्र विकते थे।"

"तो आप बन्दूक वेचती थीं?"

"हाँ! क्यों?"

"आप तो बड़ा भयंकर कार्य करती थीं। यदि कोई बन्दूक 'मिस-फायर' हो जाय तो बस हरिओम् तत्सत्।"

"जब चलाओ तो मिसफायर होने की सम्भावना होती है। किन्तु मैं तो चलाती नहीं थी; इसके लिए एक अन्य व्यक्ति नियुक्त था।"

"तो आप क्या करतीं थीं?"

"विके हुए माल का मैं विल बनाती थी। उसकी ऐण्ट्री रजिस्टर में कर देती थी।"

"बस, इतने-से काम के लिए दो सौ रुपये मिलते थे?"

"तो इसे आप बहुत ज्यादा समझते हैं?"

"हाँ भापा तो दस बजे से चार बजे तक काम करते हैं और पौने दो सौ ही पाते हैं। वे तो काम करते-करते थक जाते हैं।"

"थक तो मैं भी जाती थी।"

"सत्य? और क्या करती थीं आप?"

"छः घंटा कुर्सी पर बैठती थी। बैठे-बैठे थक जाती थी।"

"हाँ, यह तो बहुत कठिन काम है। हम तो स्कूल में एक 'पीरियड' भर बैठने में ही थक जाया करते हैं। कहीं चपरासी घंटी बजाना भूल जाये तो हमारी टाँगें दुखने लग जाती हैं।"

"तो फिर क्या होता है?"

"वैंच के नीचे से आगे बैठे लड़कों की पीठ की मरम्मत होने लगती है।"

: 7 :

घर लौटते हुए नारायणदास अपनी पत्नी से कह रहा था, "निरंजन बहू तो अच्छी लाया है?"

"भाग्यशाली है। गरीब की लड़की होने के कारण कभी लड़ेगी भी नहीं। पढ़ी-लिखी होने के कारण कभी दुर्भाग्य से धनाभाव हुआ तो कुछ काम भी कर लेगी। हँसमुख तो है ही, बात करने में भी चतुर है।"

"मैं तो समझता हूँ कि निर्धनता की लू में यह कोमल फूल एक-दो वर्ष में ही मुरझा जाएगा। सुन्दर और पढ़ी-लिखी पत्नी को तरोताजा रखने के लिए धन का होना परमावश्यक है।"

"मुझे निरंजन पर पूर्ण विश्वास है कि वह शीघ्र ही तरक्की करेगा।"

"उसको अपने तौर-तरीके बदलने पड़ेंगे, नहीं तो नई दिल्ली में काम नहीं चल सकेगा। यह ठेकेदारों के बिलों का निरीक्षण करता है। जब पास होते हैं तो ठेकेदार नियमानुसार दो प्रतिशत क्लर्क को देते हैं। यह लेता ही नहीं। कभी माँगता तो है नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि कोई दे जाता है तो यह अपने पास एक पैसा नहीं रखता। सब-का-सब अपने अधीनस्थ कर्मचारियों में बाँट देता है।"

"इसके अफसर खुश हैं इससे ?"

"एक्जीक्यूटिव इंजीनियर कुछ परेशान तो प्रतीत होता था। वह इस कारण कि उनका सारा-का-सारा महकमा ईमानदार आदमी से डरता है। उनकों डर लगा रहता है कि कहीं वह उनकों कभी रंगे हाथ पकड़वा देगा।"

"इसका अफसर आज मेरा इससे सम्बन्ध जान गया है और वह मुझे कहता था कि मैं इसको समझा दूँ।"

"तो फिर ?"

"मुझको एकान्त में बात करने का अवसर नहीं मिला। अब वह बीवी ले आया है। एक दिन इसकी बीवी को घर पर निमन्त्रण दूँगा और घर पर ही उससे बात करूँगा।"

"निमन्त्रण तो मैं दे आई हूँ। रविवार के दिन मध्याह्न के भोजन पर मैंने उनको बुलाया है। मोहिनी सोमवार को जाने वाली है, इस कारण इसी रविवार को बुलाना उचित समझा है।"

"उस दिन तो मैं कमलनारायण और उसके माता-पिता को बुला रहा था। मेरा विचार था कि वे लड़की देख लें और फिर हो सके तो उसी दिन बात भी पक्की हो जाए।"

"तब तो और भी अच्छा है। मोहिनी भी लड़के को देख लेंगी।"

नारायणदास और एक्जीक्यूटिव इंजीनियर के मध्य निरंजनदेव के विषय में हुए वार्तालाप का कुछ आभास तो उसको रमा की बातों से मिल गया था, परन्तु इसका अधिक ज्ञान उसको अगले दिन कार्यालय में जाने पर हुआ।

वह लंच के समय अपनी टेबल पर से उठकर कुछ खाने-पीने के लिए जा रहा था कि चपरासी ने उसके समीप आ कहा, "आपको साहब इसी समय याद कर रहे हैं।"

"कहाँ हैं ?"

"अपने कमरे में।"

निरंजनदेव लौटकर एक्जीक्यूटिव इंजीनियर श्री टंडन के कमरे की ओर चल पड़ा। द्वार पर चिक उठाते हुए उसने कहा, "क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?"

"आओ-आओ! निरंजनदेव! इधर आओ।"

निरंजनदेव उस कुर्सी पर जाकर बैठ गया जिसकी ओर साहब ने-संकेत किया था। उसके वहाँ पहुँचते ही चपरासी चाय का सामान ले आया।

टंडन ने निरंजनदेव से कहा, "ज़रा यह सेब कतरो।"

निरंजन सेब छीलने लगा तो टंडन बोला, "बिना छीले ही कतर डालो।"

निरंजन ने वैसा ही किया। सेब खाते हुए टंडन बोला, "छीलने से तो सेब की बहुत-सी ताकत नष्ट हो जाती है।"

"जी, परन्तु हकीम लोगों का कहना है कि इसका छिलका बहुत कठिनाई से हजम होता है।"

"हाँ, लेकिन अगर जरा चबाकर खाया जाय, तो यह इतना महीन हो जाता है कि इसके विटामिन्स निकल आते हैं और हजम होने में भी कठिनाई नहीं होती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा, यह तो बताओं कि तुम्हारा नारायणदास से क्या संबंध है ?"

निरंजनदेव सतर्क हो गया। वह बोला, "वे मेरे पिताजी के मित्र हैं। मैं जब यहाँ नौकरी की खोज में आया था,तो इनके पास ही ठहरा था। विवाह होने पर अब मैं अलग मकान में रहने लगा हूँ।"

"कल तुम्हारे यहाँ वह अभ्यागतों का स्वागत कर रहा था, इसलिए मैंने पूछा हैं। वैसे वह आदमी अच्छा नहीं हैं। वह तो तुम्हारी निन्दा करता था।"

"सत्य. ?"

"हाँ, उस दिन क्लब में भी अपने-आप ही तुम्हारे विषय में बात करने लग गया और फिर कहने लगा कि तुम दुनियादारी तो बिलकुल जानते ही नहीं हो। इससे अनजाने में भी धोखा खा सकते हो। मैंने जब इसका मतलब पूछा तो कहने लगा कि तुम हमारे विभाग में काम करने के योग्य नहीं हो। उसने यह भी कहा कि यदि मैं कहूँ तो वह तुम्हें ऐसे विभाग में भिजवा सकता है, जहाँ सीधे-सादे व्यक्ति का निर्वाह भी सरलता से हो जाय।"

"यह बात मेरे हितचिन्तन की दृष्टि से भी तो हो सकती है ?

"हाँ, प्रकट रूप में तो वह यही कह रहा था; परन्तु वास्तव में उसका आशय कुछ और ही था।"

"क्या आशय हो सकता है उनका ?"

"यह तो तुम जानते ही हो कि प्रतिवर्ष करोड़ों रुपयों का काम हमारे विभाग द्वारा होता है। इसमें बहुत हेराफेरी होती है। अतः इस महकमें में लेन-देन चलता रहता है। तुमने चार महीने से एक नई प्रथा चालू कर दी है। उससे जहाँ ठेकेदार उच्छृङ्खल होते जा रहे हैं, वहाँ सभी एस० डी० ओ० त्रसित प्रतीत होते हैं।"

"ठेकेदारों से तो मेरा सम्पर्क केवल उनके बिलों को चैक करते समय ही आता है। मैं तो अपनी सूझ-बूझ और नियमों के अनुसार उन्हें चैक करता हूँ। मैं उनसे किसी प्रकार की रियायत नहीं करता। इसी कारण वे डरते होंगे।"

"ठीक है! कई नियम तो ऐसे हैं, जो हमने केवल ठेकेदारों को तंग करने के लिए ही बना रखे हैं। उन नियमों का प्रयोग तुम सब स्थानों पर करते हो। इससे वे जो डिविज़नल इंजीनियरों से डरते थे, अब नहीं डरते। तुम उनकी भी गलतियाँ निकालने लगते हो।"

फिर कुछ विचारकर टंडन बोला, "डिविजनल इंजीनियरों की रिपोर्ट की तो प्रतिष्ठा तुम्हें रखनी ही चाहिए। जब तुम उनकी गलतियाँ निकालने लगते हो तो वे बेचारे पसीना-पसीना हो जाते हैं।"

"यह भय तो उनको तब लगना चाहिए, जब वे जान-बूझकर गलती करते हों।"

"यह तुम किस प्रकार कह सकते हो कि वे जान-बूझकर गलती नहीं करते ?"

"तो फिर वे जान-बूझकर गलती क्यों करते हैं ?"

"इसलिए कि ठेकेदार उनका मुख मीठा करते रहें।"

"ओह, यह मुझे ज्ञात ही नहीं था।"

"अब मालूम हो गया है तो क्या करोगे ?"

"समझता हूँ कि परस्पर के निश्चयानुसार एक परम्परा स्थापित कर लेनी चाहिए। मेरा अभिप्राय यह है कि आप मेरी नियमों की पुस्तक पर निशान लगा दें। तीन प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के नियम होने चाहिए। एक तो वे, जिनकी किसी स्थिति में भी अवहेलना नहीं होनी चाहिए। दूसरे वे, जिनके विषय में डिविजनल आफिसरों के हस्ताक्षरों पर मुझे किसी प्रकार की आपत्ति नहीं करनी चाहिए। और तीसरे वे, जिनकी अवहेलना होने पर मैं अपनी राय लिखने से पूर्व आपसे परामर्श कर लिया करूँ।"

टंडन समझने लगा कि निरंजनदेव ने बहुत ही अच्छा सुझाव दिया है। परन्तु वह स्वयं इस विषय में कुछ करना नहीं चाहता था। उसको नारायणदास के कहने पर डर लग रहा था कि वह कहीं उसको ही किसी मुकद्दमें में न फँसा दे। इससे वह गम्भीर विचार में पड़ गया। बहुत देर तक चाय की सुरकी लगाता हुआ वह सोचता रहा। एकाएक उसने सतर्क हो कहा, "मैं तुमको तो कुछ भी लिखकर दे नहीं सकता। हाँ, हमारे महकमें में रायसाहब गोपीचन्द ईमानदार व्यक्ति है। उसको मैं कह दूँगा कि वह तुम्हें बिल पास करने की प्रचलित प्रथा का ज्ञान करा दे।"

"तुमने यदि तदनुसार कार्य किया तो विभाग के सभी कर्मचारी तुमसे प्रसन्न रहेंगे।"

"ठीक है। मैं भी आपसे किसी प्रकार का लिखित आदेश नहीं माँगता था। न ही मैं इस प्रकार की कोई आवश्यकता समझता हूँ कि कोई मुझे कुछ लिखकर दे। इस पर भी रियायत अथवा सख्ती जो कुछ भी मुझको करनी है, वह किसी एक नियम के आधार पर होनी चाहिए जिससे किसी को भी इस बात की शिकायत न हो कि जो रियायत अथवा सख्ती उसके साथ हो रही है वह दूसरों के साथ नहीं हो रही है।"

"अब आपने बताया है कि कुछ नियम जान-बूझकर कड़े बनाए गए हैं, इस कारण मैं चाहता था कि मुझे ज्ञान हो जाय कि कौन-से नियम इस प्रकार बनाये गये हैं।"

"मैं रायसाहब गोपीचन्द को सब समझा दूँगा। वे तुमको क्या-क्या करना है, इस विषय में ठीक प्रकार से बता सकेंगे।"

"मैं आपका कृतज्ञ हूँगा।"

फिर टंडन कहने लगा, "नारायणदास तो चाहता था कि मैं तुम्हारे सर्विस रोल में अभी से काले निशान लगाने आरम्भ कर दूँ, जिससे कि परमानेंट होने के पूर्व ही तुम्हारा इस आफिस से पत्ता कट जाय।"

"इस विषय में तो मैं आपको क्या सम्मति दे सकता हूँ ? जो आप उचित समझें वह करिये। जहाँ तक मेरा आपकी आज्ञा मानने का प्रश्न है, मैं सदा यही यत्न करूँगा कि उसकी किसी प्रकार अवहेलना न हो।"

इस प्रकार यह भेंट समाप्त हो गई। घर आकर उसने अपनी माँ से टंडन के साथ हुआ पूर्ण वार्तालाप सुना दिया। मोहिनी ने उससे ही पूछा, "तो अब क्या करोंगे ?"

"माँ! मुझे जैसी आज्ञा दी जाएगी, मैं वैसा करूँगा। इस पर भी स्वयं को बदनामी से बचाकर रखने का यत्न करूँगा। यदि मैं वह सब-कुछ, जिसके विषय में रायसाहब गोपीचन्द मुझे सम्मति देने वाले हैं, अपनी इच्छा से करता तो अब तक दस-बीस हजार बना चुका होता। मैं उसे ठीक नहीं समझता। अब रायसाहब की आज्ञा का पालन करूँगा। इससे ठेकेदारों को सहूलियत तो मिल जाएगी परन्तु उसका उत्तरदायित्व डिविज़नल इंजीनियरों का होगा।"

"परन्तु पकड़े गए, तो ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अव्वल तो जो डिविज़नल अफसर मेरे नियमोल्लंघन से लाभ उठाएँगे उनको ठेकेदारों से लाभ होगा, वे मेरी रिपोर्ट नहीं करेंगे। साथ ही मैं बिल पास करते समय नीचे नोट लिख दिया करूँगा, जिससे उसका उत्तरदायित्व मुझ पर न रहे। इस पर भी यदि ईश्वर को ऐसा ही कुछ स्वीकार हुआ तो मैं क्या कर सकता हूँ ?"

"यह नारायणदास तो बहुत ही बेईमान आदमी सिद्ध हुआ।"

"माँ! उससे डरने की कोई बात नहीं है। मेरे उसकी लड़की से विवाह न करने के कारण ही, वह मेरा विरोध करने लगा है।"

"परन्तु सुना है कि उसकी लड़की को तो हमसे अच्छा घर-वर मिल गया है ?"

"इस रविवार को यह भी पता चल जाएगा। सुना है, उस दिन वह और उसके माता-पिता भी नारायणदास के घर आ रहे हैं।"

"ठीक है, इस रविवार का निमन्त्रण तो मैं स्वीकार कर चुकी हूँ किन्तु भविष्य में तुम उसके घर पर जाना बन्द कर देना। उसको अपना परिचित के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं समझना। उससे सम्बन्ध-विच्छेद करने में ही अपनी भलाई समझनी चाहिए।"

"मैं भी यही ठीक समझता हूँ। दुर्जन से सम्बन्ध रखना अपने हित में नहीं हो सकता।"

नलिनी ने एक और रहस्योद्‌घाटन किया। उसने बताया, "लालाजी की दोनो लड़कियाँ ठीक नहीं हैं। एक के विषय में तो आपने बताया है कि वह बिना विवाह किए आपसे सम्बन्ध बनाना चाहती थी और दूसरी के विषय में भी मेरा कहना है कि वह अब भी अवसर मिला तो आपको छोड़ेगी नहीं।"

"क्या मतलब ?"

"यही कि वह मेरा स्थान लेने का यत्न करेगी।"

"नलिनी! कहीं तुम्हें ईर्ष्या तो नहीं हो रही ?"

"जी नहीं। उसकी बातों से मैं इसी निष्कर्ष पर पहुँची हूँ। यह अब आप सोच लीजिए कि आपको क्या करना है। मैं आपका मार्गदर्शन करना नहीं चाहती। आप स्वयं समझदार व्यक्ति है। इस पर भी मैं समझती हूँ कि पराए घर की लड़कियों से अधिक मेल-जोल ठीक नहीं।"

"निरंजनदेव नलिनी की बात से सतर्क हो गया। वह मन में विचार कर रहा था कि नारायणदास के परिवार से सम्बन्ध-विच्छेद कर देना ही ठीक होगा।"

:8:

टंडन और निरंजनदेव के मध्य हुए वार्तालाप के बाद सब-डिविज़नल इंजीनियरों की एक गुप्त बैठक हुई और सबकी यही सम्मति बनी कि जब तक निरंजनदेव उनके कार्य में किसी प्रकार की मीनमेख नहीं निकालता, हमको किसी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। रायसाहब गोपीचन्द को इस विषय में समझा-बुझा दिया गया था कि किस प्रकार वे निरंजनदेव का मार्ग-दर्शन करें।

निरंजन और गोपीचन्द की भेंट गोपीचन्द के घर पर हुई। दोनों में परस्पर दो घण्टे तक बात होती रही। बिल पास करने की प्रणाली बना ली गई। यह सब विस्तार-सहित निश्चय कर लिया गया कि ऊपर बिल भेजते समय डिविजनल इंजीनियर क्या लिखेंगे और निरंजनदेव उनको किस प्रकार स्वीकार करेगा। दूसरे दिन से ही उस निर्णय के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुसार कार्य होने लगा। उसी दिन एक ठेकेदार कमलनारायण उससे मिलने के लिए आया। उसने निरंजनदेव को बताया कि उसके बिल को उसके पास आए हुए एक मास हो गया है, इससे उसकी बहुत हानि हो रही है।

निरंजनदेव नें बिल निकालकर देखा। उस पर पाँच स्थानों पर आपत्ति के निशान लगे थे। उसने एक स्लिप उठाई और उस पर रायसाहब गोपीचन्द के लिए लिख दिया, "संलग्न बिल की क्रमसंख्या दो, पाँच, दस, पन्द्रह और तीस के सम्बन्ध में कृपया लिखिये कि इसके विषय में नियमोल्लंघन क्यों होना चाहिये ?"

अपने रिमार्क के साथ निरंजनदेव ने उस बिल को चपरासी के हाथ रायसाहब के पास भेज दिया। पाँच मिनट में ही रायसाहब का उत्तर आया। उसमें लिखा था, "क्रम-संख्या दो, पाँच, दस और पन्द्रह तो ऐसे हैं कि नियम बहुत कड़े होने से उनको प्रथा से ही रद्द मान लिया गया है और क्रम-संख्या तीस ठीक कर दी गई है।"

गोपीचन्द का उत्तर आने पर निरंजनदेव ने उस पर लिख दिया, "सम्बन्धित एस० डी० ओ० के कथनानुसार बिल को स्वीकार कर लिया जाय। कृपया चैक पर हस्ताक्षर करने का कष्ट कीजिएगा।"

टंडन के पास बिल गया तो वह स्वीकार होकर आ गया और चैक पर भी हस्ताक्षर हो गए। चैक को खजांची के पास भेज बिल को यथास्थान फाइल में लगा उसने कमलनारायण से कहा, "आपका कार्य हो गया है।"

कमलनारायण उसका धन्यवाद कर मुस्कराता हुआ चला गया। इस प्रकार उस दिन बहुत-से एकत्रित बिल पास हो गए। सभी सम्बन्धित व्यक्तियों को इससे बहुत सहूलियत हुई।

उस दिन सायंकाल जब वह घर पहुँचा तो नलिनी ने धोबी को देने के लिए उसका कोट माँग लिया। धोबी को देने से पूर्व उसने कोट की जेवें देखीं तो उनमें रखी हुई अन्य वस्तुओं के अतिरिक्त उसमें तीन बन्द लिफाफे भी थे। नलिनी ने लिफाफों को खोला तो देखा कि उनमें नोट रखे हैं। उसने अपने पति से पूछा, "ये लिफाफों में कैसे रुपये रखे हैं ?"

"कैसे लिफाफे हैं ?"

नलिनी ने लिफाफे अपने पति के हाथ में देते हुए कहा, "इन तीनों में दस-दस के कुछ नोट हैं।"

निरंजनदेव ने देखा। एक में दो सौ रुपये थे, दूसरे में साढ़े तीन सौ और तीसरे में एक सौ दस। वह समझ गया कि ठेकेदार लोग उसकी जेब में डाल गये हैं। उस दिन से पूर्व तो वे लोग काम बन जाने की आशा में प्रत्यक्ष रूप में नोट दिखाया करते थे और निरंजन उनको डाँट दिया करता था। किन्तु आज वे काम बन जाने की प्रसन्नता में चुपचाप दे गये थे।

धोबी को कपड़े देकर जब नलिनी आई तो निरंजन तब भी उसी प्रकार विचार-मग्न बैठा हुआ उन रुपयों के विषय में सोच रहा था।

"क्यों, क्या सोच रहे हैं ?"

"मैं यही सोच रहा हूँ कि ये रुपये किस प्रकार आ गए हैं। इन्हें मेरी जेब में नहीं होना चाहिए था।"

"किन्तु ये आ कहाँ से गए ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक ही मार्ग है, जिस प्रकार ये आ सकते हैं। आज कुछ ठेकेदारों के बिल निर्बाध स्वीकार कर लिये गए थे। प्रतीत होता है कि मेरा ध्यान किसी दूसरी ओर होने पर वे चुपचाप मेरी जेब में डाल गए हैं।"

"आपने उनसे माँगे नहीं थे ?"

"नहीं।"

"आपने किसी के साथ कोई विशेष रियायत की है ?"

"मैंने तो कुछ भी नहीं किया। जो कुछ किया वह दूसरों ने ही किया है। कल एक अफसर के साथ हुए समझौते के अनुसार दूसरों ने सिफारिश की है और मैंने उस पर कोई आपत्ति नहीं उठाई। इसके उपलक्ष्य में मुझे यह मिला है।"

"तब तो यह बेईमानी का धन नहीं हैं।"

"हाँ, बेइमानी का तो नहीं है, इस पर भी अनधिकारयुक्त हैं। इस पर मेरा अधिकार नहीं बनता।"

"तो आप मत लीजिए। इसे मुझे ले लेने दीजिए।"

"तुम्हारा इस पर किस प्रकार अधिकार बनता है ?"

नलिनी इस अधिकार के विषय में विचार करने लगी, किन्तु कोई समाधान नहीं ढूंढ़ सकी। वह जानती थी कि इन रुपयों को पाने के लिए वास्तव में ही कोई प्रयत्न नहीं किया गया था। एक ही उत्तर उसके मन में बार-बार आता था और उसके मुख से वहीं निकल गया, "एक ही कारण हो सकता है, जिससे मैं इनको लेने की अधिकारिणी बनती हूँ। मैं अपनी इच्छा से नहीं अपितु ईश्वर के विधान से नई-दिल्ली में आ गई हूँ। यह नगर महँगा है, किन्तु इसमें रहते हुए जीवित रहने का मेरा अधिकार है। उस अधिकार को पूरा करने के लिए मैं इन रुपयों को लेने की अधिकारिणी बन सकती हूँ।"

"परन्तु हमारा जीवन तो इसके बिना भी रहा है। ऐसी कौन-सी वस्तु है जो तुम्हें मिल नहीं रही ?"

"मैं यहाँ औरतों को रेशमी परिधान में सिनेमाघरों की ओर जाती देखती हूँ। किन्तु मेरे पास दो ही अच्छी साड़ियाँ हैं अतः इस प्रकार की औरतों में आपकी मान-प्रतिष्ठा के लिए मैं दो-तीन साड़ियाँ और खरीदना चाहती हूँ। दिन के समय मैंने माँजी से बातचीत की थी। वे कहती थीं कि वे लाहौर से खरीदकर भेज देंगी। अर्थात् पिताजी खरीदकर भेजेंगे। उनसे लेने की अपेक्षा तो इन रुपयों पर हमारा अधिक अधिकार है।"

"मैं पिताजी से लेने और इन रुपयों से लेने में तुलना नहीं करता। वास्तव में हमें दोनों स्थानों से लेने का कोई अधिकार नहीं। मेरा अधिकार तो केवल अपनी आय पर ही है और उसके भीतर ही हमको रहना भी चाहिए। किसी अन्य स्थान से रुपया लेना हमारा अधिकार नहीं।"

"हाँ, यदि तुम मेरी आय में निर्वाह नहीं कर सकती हो तो मैं कहीं तुम्हारी नौकरी का प्रबन्ध कर सकता हूँ। तुम नौकरी कर लो। वहाँ से प्राप्त वेतन से तुम साड़ियाँ खरीद लेना।"

"देखो नलिनी! प्रत्येक रुपये की आय का समाज-सेवा के रूप में हमें प्रतिकार देना चाहिए। यह सम्भव है कि मेरी सेवाओं का मूल्य समाज कुछ कम लगा रहा हो, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं हो सकता कि मैं कहीं ऐसे स्थान से, जहाँ मैंने किसी प्रकार की सेवा नहीं की, रुपया लेना आरम्भ कर दूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं इसको पाप समझता हूँ।"

नलिनी दिल मसोसकर रह गई। उसने वे रुपये चुपचाप अपने पति के सम्मुख रख दिये।

अगले दिन रविवार था। उस दिन उन्हें मध्याह्न के भोजन के लिए नारायणदास के घर पर जाना था। यथासमय वे उनके घर जा पहुँचे।

जब वे पहुँचे तो अन्य आगन्तुक अभी नहीं आये थे। निरंजनदेव आज बहुत ही सतर्क था। वह विशेष रूप से माया के व्यवहार का निरीक्षण कर रहा था। नलिनी बैठी तो रमा और माया उसके दोनों ओर बैठकर उससे घुल-मिलकर बातें करने लग गईं।

नारायणदास निरंजन के समीप आ बैठा। सतीश अपनी बहिनों की बातें सुनने लगा। मोहिनी और श्यामा अपनी अलग ही खिचड़ी पकाने लगीं।

नारायणदास ने निरंजनदेव से अपने आफिस के विषय में बात की तो निरंजन ने पूछा, "चाचाजी! आप हमारे एक्जीक्यूटिव इंजीनियर मिस्टर टंडन से मिले थे क्या ?"

"हाँ, प्रायः क्लब में मिलता रहता हैं।"

"कभी मेरे विषय में भी कोई बात हुई है, उसके साथ ?"

"हाँ, हुई थी। क्यों, क्या कहता था वह ?"

"वे पूछ रहे थे कि आप मेरे क्या लगते हैं।"

"वह तो उस समारोह में मुझे अभ्यागतों की आवभगत करते देख उसने पूछा होगा।"

"सम्भव है। परन्तु वे कह रहे थे कि क्लब में भी मेरे विषय में आप रुचि प्रकट करते रहते हैं।"

"हाँ, तुम्हारे विषय में बात हुई थी। वे तुम्हारी ईमानदारी की बात करने लगे तो मैंने चिन्ता व्यक्त की कि तुम उस कार्यालय में किस प्रकार निर्वाह कर सकोगे। उन्होंने कहा था कि वे तुम्हारी तरक्की का विशेष ध्यान रखेंगे।"

"वह ध्यान तो वे पहले दिन से ही रख रहे हैं। नौकरी लगने के पहले इण्टरव्यू के दिन भी उन्होंने मेरी बहुत सहायता की थी। नौकरी स्थायी होने के विषय में भी लिखने के लिए कह रहे हैं।"

"मिस्टर टंडन बहुत ही अच्छे आदमी हैं। उनसे मेल-जोल रखोगे तो निश्चित ही उन्नति कर लोगे।"

"आपने किसी अन्य विभाग में मेरे स्थानान्तरण कि विषय में बात कहीं थी क्या ?"

"हाँ, कही तो थी। परन्तु वे कहते थे कि वे तुम्हारा विशेष ध्यान रखेंगे।"

इनकी बातें अभी पूर्ण नहीं हो पाई थीं कि रमा की भावी श्वसुराल वाले आ गये। निरंजनदेव, पिछले दिन वाले ठेकेदार, जिसका उसने पच्चीस हजार का बिल पास किया था, को उनके साथ देख विस्मय में खड़ा रह गया। उसके मुख से निकला "ओह आप!"

"जी, मैं ही हूँ, जिस पर आपने कल कृपा की थी।" कमलनारायण ने हाथ मिलाते हुए कहा, "सोमवार के लिए मैंने एक बीस हजार का चैक काटा हुआ था। कल मैं गयसाहब गोपीचन्द से मिला तो वे कहने लगे कि मैं स्वयं आपसे मिल लूँ, चैक बन जाएगा। आपने बहुत फुर्ती दिखाई और मैं बारह बजे से पूर्व चैक लेकर बैंक पहुँच गया था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय निरंजनदेव को अपनी जेब से निकले रुपयों का स्मरण हो आया। कमलनारायण को लेकर वह सतीश के कमरे मे चला गया। वहाँ बैठ उसने उससे पूछा, "आपने कल मेरी जेब में कुछ रखा था ?"

कमलनारायण हँस पड़ा और बोला, "जी! छोड़िये इस बात को।"

"आपने तो मुझे भारी परेशानी में डाल दिया है।"

"क्यों, क्या हुआ है ?"

"मैं घर गया तो मेरी जेब में से कुछ रुपये निकले। मेरी पत्नी ने देखे तो उसके मुख से लार टपकने लगी। मैंने उसे समझाया है कि बिना सेवा किये हमको कुछ भी लेने का अधिकार नहीं है। वह मान तो गई है, परन्तु उसके मुख को देखकर ऐसा प्रतीत होता था कि उसको इसका बहुत खेद है।"

"परन्तु यह आप किस प्रकार कहते हैं कि उन रुपयों को पाने के लिए आपने किसी प्रकार की सेवा नहीं की है ?"

"मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया जिसके लिए मुझे वेतन न मिलता हो।"

"तो ऐसा करिये, मेरी ओर से अपनी पत्नी के लिए उसको कुछ ले दीजिये।"

"परन्तु उसने भी उसके लिए कुछ किया नहीं।"

"बहुत ही निर्दयी हैं आप! औरतों को तो लोग ऐसे ही भेंट देते रहते हैं।"

"देने वाले के मन में कुछ तो पाने की लालसा रहती है। भले ही वह केवल एक मुस्कराहट ही क्यों न हो।"

"तो उन्हें कह दीजिये कि वे मेरी ओर देखकर मुस्करा दें।"

दोनों उठकर उसी कमरे में आ गये। इस समय कमलनारायण के बैठने को रमा के बराबर में स्थान बना दिया गया था। कमलनारायण के दूसरी ओर नलिनी बैठी थी। परिचय कराया गया तो कमलनारायण ने बड़े ध्यान से नलिनी को देखा और मुस्करा दिया। फिर उसने अपनी होने वाली पत्नी की ओर देखा। निरंजनदेव निरन्तर उसके मुख का अध्ययन कर रहा था। कमल ने रमा को देखा तो उसके मुख की मुस्कराहट विलीन हो गई थी और वह कुछ गम्भीर हो गया। फिर दोनों में साधारण विषयों पर बातचीत होने लगी।

भोजन का समय हुआ तो सब उठकर खाने की मेज पर जा बैठे। वहाँ भी कमलनारायण को नलिनी और रमा के मध्य स्थान मिला। माया निरंजनदेव के पास बैठी थी। निरंजनदेव माया और नलिनी के बीच में था। माया के साथ मोहिनी, फिर श्यामा और नारायणदास थे। दूसरी ओर रमा के साथ कृष्णा और सुरेन्द्र तथा कमलनारायण के माता-पिता बैठे थे।

माया ने निरंजनदेव से पूछा, "हमारे होने वाले जीजाजी कैसे लग रहे हैं आपको ?"

"अच्छे सुन्दर युवक हैं। धनवान भी हैं। कपड़े तो बहुत सुन्दर पहन रखे हैं। बटनहोल में लगा गुलाब का फूल बहुत ही शोभायमान हो रहा है।"

"हाँ, मगर एक बात आप नहीं देख रहे।"

"क्या ?"

"वे नलिनी भाभी की ओर बार-बार देखकर मुस्करा देते हैं।"

निरंजनदेव के मन पर माया के विषय में नलिनी के कथन का प्रभाव विद्यमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। वह इस विचार की परीक्षा करना चाहता था। नलिनी वहुत ध्यान से कमलनारायण की बातें सुन रही थी। उसने माया से पूछ लिया, "इसका क्या अभिप्राय हो सकता है ?"

"मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि जीजाजी रमा बहिन की हँसी उड़ा रहे हैं।"

"क्या कारण हो सकता है इसका ?"

"भाभी की तुलना में उनको रमा कुरूप लग रही है।"

"यह तो बहुत बुरी बात हुई।"

"मैं अपने मन की बात बताऊँ ?"

"बोलो।"

"यह विवाह नहीं होगा।"

"क्यों ?"

"मेरा मन कहता है। बात यह है कि रमा भी इसको पसन्द नहीं करती, परन्तु रुपयें के लोभ में सभी चुप हैं।"

निरंजनदेव सोचने लगा कि माया बहुत-कुछ जानती है। यद्यपि रमा उसको मूर्ख और बुद्धू कहती थी, इस पर भी उसे वह अधिक समझदार प्रतीत हुई थी। निरंजनदेव के मन में शरारत सूझी। उसने पूछ लिया, "मैं समझता हूँ कि चाचाजी से कहकर रमा के स्थान पर माया की सगाई का प्रवन्ध करा दिया जाय तो ठीक रहेगा।"

"इस बन्दर-मुँह से ? मैं तों इस पर थूकूँ भी नही।"

"क्यों, क्या खराबी है इसमें ?"

"कुछ है जो मैं बताऊँगी नहीं। रमा के विवाह के बाद बताऊँगी।"

"उससे क्या लाभ होगा ? विवाह से पूर्व बता दो तो ठीक नहीं है क्या ?"

"रमा जानती है, इस पर भी इनके कनाट प्लेस में तीन मकानों और सिविल लाइन्स में रहने की कोठी की बात से वह लालच में आ गई है।"

"तो क्या कमलनारायण इस विवाह को अस्वीकार कर देगा ?"

"नहीं, मेरा अभिप्राय यह है कि विवाह होने पर पति-पत्नी सुखी नहीं रहेंगे।"

निरंजनदेव और माया को परस्पर बातें करते देख नलिनी उनकी ओर झुकी। उसको माया पर बहुत सन्देह था। इस कारण वह अपने पति को उसके जाल में फँसने का अवसर नहीं देना चाहती थी। निरंजनदेव ने नलिनी को बताया, "माया का विचार है कि यह सम्वन्ध सुखकारक नहीं होगा।"

"मेरा विचार भी कुछ ऐसा ही हैं। परन्तु आप इसमें कुछ मत कहियेगा। जो कुछ होता है परमात्मा की इच्छा से ही होता है। रमा मूर्खता की बातें कर रही है और कमल उसकी हँसी उड़ा रहा है।"

निरंजनदेव चिन्ता में पड़ गया। वह स्वयं तो किसी प्रकार की सम्मति न देने का निश्चय करके ही अपने घर से आया था। इस पर भी वह समझता था कि यदि इस विपय में उससे पूछा गया तो वह अपने मन की बात बताये बिना रहेगा नहीं।

उसका परमात्मा पर भरोसा अवश्य था, परन्तु बुद्धि से विचार कर कार्य करने के वाद फल के लिए भरोसे की बात होती थी। कर्म करने से पूर्व भरोसे का अर्थ तो निष्कर्म होना था और वह भगवान-भरोसे का अर्थ निष्कर्म होना नहीं समझता था।

अब नलिनी के कहने पर कि उसको इस सम्बन्ध के विषय में कुछ नहीं कहना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए, वह चिन्ता अनुभव करने लगा था।

इस समय सहसा नारायणदास ने सबके सम्मुख घोषणा कर दी, "कमलनारायणजी और रमा तो पहले भी परस्पर मिल चुके हैं। रमा को कमलजी की माताजी तथा पिताजी ने नहीं देखा था। आज उन्होंने देखा है और इस सम्बन्ध के विषय में अपनी स्वीकृति दे दी हैं। अतः मैं समझता हूँ कि इस सम्बन्ध के अनुरूप 'टीका' की प्रथा तो अभी सम्पन्न हो जानी चाहिए।"

नारायणदास जब यह घोषणा करने लगा तो श्यामा भीतर जाकर एक गोटे-किनारी का हार ले आई। वह हार उसने रमा को दिया तो नारायणदास ने कहा, "रमा! यह हार पहना दो।"

रमा ने कमलनारायण को हार पहनाया तो नारायणदास ने अपनी जेब से ग्यारह स्वर्ण मोहर निकालकर लाल रेशमी रूमाल में लड़के के हाथ में दे दीं।

निरंजनदेव ने सुख का साँस लिया।

: 9 :

सबसे पहले कमलनारायण और उसके माता-पिता विदा हुए। विदा होने के समय एक बड़ा-सा थाल मिठाई का उनको दिया गया। सगाई की तिथि निश्चित कर ली गई और यह भी निश्चय हो गया कि विवाह दिसम्बर मास में किसी शुभ दिन को कर लिया जाए। जब वे चले गए तो मोहिनी ने श्यामा से कहा, "मैं कल लाहौर जा रही हूँ।"

"नलिनी यहीं रहेगी ?"

"हाँ, अभी तो रहेगी और यदि इसने लिखा तो इसको अपनी माँ से मिलने के लिए ले जाऊँगी।"

श्यामा ने नलिनी से कहा, "कभी घर पर मन न लगे तो यहाँ चली आना।"

माया ने नलिनी के कान पर मुख लगाकर कहा, "मैं भाभी से मिलने के लिए आया करूँगी।"

नलिनी केवल मुस्करा दी। रमा गम्भीर विचारों में मग्न अपने कमरे में जा बैठी। जाने से पूर्व नलिनी उससे मिलने के लिए गई। कुछ देर बातें कर जब नलिनी जाने लगी तो रमा उसको कमरे के द्वार तक छोड़ने के लिए आई। नलिनी ने देखा, उसकी आँखे तरल हो रही हैं।

घर पहुँचकर मोहिनी अपनी लाहौर जाने की तैयारी में कुछ वस्तुएँ खरीदने के लिए नलिनी को साथ लेकर बाजार चली गई।

निरंजनदेव उस दिन की घटना पर विचार करने लगा। उसको माया का कथन कि वह कमलनारायण के विषय में कुछ जानती है, जिस कारण वह उसके मुख पर थूके भी नहीं, बहुत विचित्र प्रतीत हुआ, फिर भी विवाह से पूर्व वह उस बात को बताने के लिए तैयार नहीं है। साथ ही उसने कहा था कि रमा भी जानती है परन्तु वह धन के लोभ में विवाह के लिए तैयार हो गई है।

सबसे विचित्र बात यह हुई थी कि रमा ने नलिनी को रोते हुए विदा किया था।

इसके साथ उसको पिछले दिन आफिस में मिले रूपयों का भी ध्यान आ गया। उसने पढ़ रखा था कि जिस प्रकार की कमाई का अन्न खाया जाएगा, उसी प्रकार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि भी बनेगी, और फिर वह भी वैसे ही कर्म करने लगेगा।

अभी तक उसको इस बात का गर्व था कि उसने कभी अपनी जानकारी में किसी प्रकार का खराब काम नहीं किया। सबसे बड़ा प्रलोभन तो रमा ने ही उस दिन दिया था जब वह उसके सोने के समय एकान्त में उसके कमरे में आई थी।

अब रिश्वत का बहुत बड़ा प्रलोभन उसके सम्मुख आकर उपस्थित हुआ। उस रुपये के प्रयोग करने के लिए नलिनी ने भी एक युक्ति दी थी। उसके अपने मन में भी यह प्रश्न उपस्थित हुआ था कि उसने इस धन को प्राप्त करने लिए कोई अनुचित बात नहीं की। जो कुछ हुआ था वह दूसरों की जिम्मेदारी पर हुआ था।

परन्तु जब वह युक्ति करता था तो उसकी समझ में यही आता था कि यह धन किसी प्रकार के बेईमानी के कार्य के बदले में न सही, परन्तु है तो अधिकार-रहित ही। उसके पिता ने उसको यह बताया हुआ था कि जब हम बिना उचित ढंग और मात्रा में सेवा किए कुछ भी प्रतिकार पाते हैं तो वह अनधिकारयुक्त होता है। यह पाने वाले के सिर पर ऋण हो जाता है। ऋण तो चुकाना ही पड़ता है। यदि इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में सही। किन्तु उऋण होकर मरने में अगले जन्म में सुख मिलता है।

यह युक्ति तो उसने स्वयं ही सोचकर बना ली थी कि जब एक अपराध के लिए दो बार दण्ड नहीं दिया जाता तो एक सेवा के लिए दो बार प्रतिकार भी नहीं होना चाहिए।

प्रश्न तो यह था कि अब इस रुपये का प्रयोग वह किस प्रकार करे ? और फिर भविष्य में इस प्रकार प्राप्त होने वाले धन को ले अथवा न ले ? इन दोनों प्रश्नों के विषय में वह अभी निर्णय नहीं कर पाया था।

एक्जीक्यूटिव इंजीनियर के कथन से उसको ऐसा प्रतीत हुआ था कि यदि वह अपने आफिस के लोगों की भाँति बनकर नहीं रह पाएगा तो उसका वहाँ रहना कठिन हो जाएगा। विवाह करने के बाद नौकरी छूट जाने की कल्पनामात्र उसको भयभीत करने लगी थी।

अतः बेईमानों में बेईमानी ही दिखाई देना चाहिए। परन्तु क्या बेईमान बन भी जाना चाहिए ? यह विचारणीय बात थी।

रात को सोते समय नलिनी ने नारायणदास के परिवार के विषय में अपना निर्णय बताते हुए कहा, "मैं अब आपके इस तथाकथित चाचा के घर में नहीं जाऊँगी।"

"तुम्हारी इच्छा के विपरीत मैं कभी तुमसे वहाँ चलने के लिए नहीं कहूँगा।"

"मैं आपसे भी आग्रह करूँगी कि आप भी वहाँ न जाया करें।"

"मैं तुम्हारे आग्रह का मान करने का यत्न करूँगा। कोई अनिवार्य कारण ही हुआ तो तभी मैं वहाँ जाऊँगा। वह भी तुम्हारी जानकारी में ही।"

"माया इस घर में मिलने के लिए आने को कह गई है। मैं चाहती हूँ कि आप मेरी अनुपस्थिति में उससे न मिला करें।"

निरंजनदेव हँस पड़ा। हँसते हुए उसने पूछा, "ये सब बातें माताजी सिखा गई है क्या ?"

"नहीं, ये बातें मैंने उनके घर का वातावरण देखकर स्वयं ही विचार कर ली है। आपके चाचा और चाची दोनों ही महास्वार्थी और धनलोलुप हैं। धन ही उनका परमात्मा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कमलनारायण कल आफिस में आया था। तब मैं नहीं जानता था कि वह रमा का होने वाला पति है। मैंने उसका बिल पास कराया था और कल वाले तीन लिफाफों में से एक उसने मेरी जेब में डाला था। मैंने आज उसको पृथक् कमरे में ले जाकर पूछा था और वह मान गया है।"

"मैं यह विचार कर रहा हूँ कि तीनों लिफाफे हमारे आफिस की स्टेशनरी के लिफाफे जैसे ही हैं। इससे मेरा अनुमान है कि कल रिश्वत मुझको आफिस के लोगों ने परस्पर षड्यन्त्र करके दिलाई है। दो और बिल भी पास कराए थे, परन्तु बेचारों को मेरी जेब में लिफाफे डालने का अवसर नहीं मिला।"

"इस परिस्थिति में मैं उनको तो यह रुपया वापस कर ही नहीं सकता, जिन्होंने मुझको दिया है। पहले की भाँति इसे मैं बेईमानों में बाँट भी नहीं सकता। अपने प्रयोग में भी मैं इस रुपये को नहीं लाना चाहता। अतः इसको किसी धर्म-कार्य में गुप्तदान के रूप में दे देना चाहिए।"

"बोलो, तुम्हारा क्या विचार है ?"

"कल मेरे मन में लोभ आ गया था। परन्तु बाद में मैंने अपने मन को बहुत लानत दी थी। मैं आपके साथ निर्धनता का जीवन व्यतीत कर सकती हूँ परन्तु आपसे कभी कोई अनुचित बात करने को नहीं कहूँगी। अपनी कल की हीन मनोवृत्ति के लिए मैं आपसे क्षमा चाहती हूँ।"

"मैं अपनी आर्थिक अवस्था को सुधारने का यत्न करूँगा। परन्तु तुम तो जानती ही हो कि मैं कर्म करने में विश्वास करता हूँ। फल के लिए मैं स्वयं को ईश्वरार्पण कर देता हूँ।"

इस प्रकार इस दूसरे प्रलोभन को भी निरंजनदेव ने टाल दिया। इस पर भी वह विचार करता था कि अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने का यत्न करना चाहिए। धन के लोभ से बचने का सबसे सफल उपाय धन की कमी को पार करना है।

अगले दिन वह कार्यालय में गया तो सबसे पहले रायसाहब गोपीचन्द ही उसको मिला और वह उससे हाथ मिलाता हुआ कहने लगा, "मैं समझता हूँ कि कार्य करने का यह ढंग सबने पसन्द किया है। जब तक आप इस योजना पर काम करते रहेंगे, सब काम सफलता से होता रहेगा।"

"टंडन साहब ने कैसा पसन्द किया है ?"

"सब-कुछ उनकी राय से ही हो रहा है।"

"ठीक है, मैं तो आप सब अफसरों की सेवा के लिए ही नियुक्त हूँ।"

निरंजनदेव समझ गया कि पिछले शनिवार को जो कुछ हुआ है, वह सबकी सम्मति से ही हुआ है। जब वह अपने कमरे में जाने लगा तो गोपीचन्द ने मुस्कराते हुए कहा, "मैं समझता हूँ कि आपको भी इससे सुख मिलेगा।"

निरंजनदेव ने इसका उत्तर नहीं दिया। वह अपने कमरे में चला गया। शनिवार को अपने मेज पर की सब फाइलों को आलमारी में बन्द कर उसने उसमें ताला लगा दिया था। चाबी उसके पास ही थी। आज जब उसने वे फाइलें निकालीं तो एक फाइल में से दो वैसे ही लिफाफे नीचे गिर पड़े। फाइलों को मेज पर रखकर उसने लिफाफों को देखा तो उनमें भी नोट थे। दोनों में दो सौ रुपये थे। उसने परमात्मा का चिन्तन किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और रुपया उठाकर अपनी जेब में रख लिया।

एक बात का उसने निश्चय कर लिया था कि वह अपने मुख से न कभी माँगेगा और न ही हाथ बढ़ाकर लेगा।

इस प्रकार काम चलने लगा। बिल नित्य ही पास नहीं होते थे। इस पर भी दो-तीन लाख के बिल प्रतिमास निकल जाया करते थे। निरंजनदेव जिन-जिन बिलों में, जिन-जिन मदों को उचित नहीं समझता था, उनके विषय में वह डिविजनल अफसरों की सम्मति लिखवा लिया करता था। फिर उस पर अपनी सम्मति लिख उन्हें एक्जीक्यूटिव इंजीनियर के पास भेज देता था। चैक प्राप्त करने वाले ठेकेदार उसके भाग का रुपया नियमितरूपेण उसकी मेज पर रखी फाइलों की तह के नीचे रख जाते थे। वह रुपये उठाकर ले आता था। सब-कुछ इतना नियमपूर्वक चल रहा था कि कुछ ही दिनों में उसको इसमें कोई विशेषता दिखाई देनी समाप्त हो गई।

घर पहुँचकर वह इस रुपयें को एक लाल तागे से बाँधकर आलमारी में रख देता था। उसके मन में इतना भय समाया रहता था कि वह इनको गिनता तक नहीं था।

अपने वेतन में से पैंतीस रूपया मकान का भाड़ा, पन्द्रह रुपये भंगी-धोबी आदि और बीस रुपये किसी मुसीबत के समय खर्च करने के लिए जमा कर देता था, शेष सौ रुपये में से पति-पत्नी बहुत कठिनाई से निर्वाह करते थे। खर्च की सबसे बड़ी मद कपड़े थे।

रमा के विवाह के अवसर पर निरंजनदेव नारायणदास के घर पर गया। इस अवसर पर मोहिनी और अर्जुनदेव भी लाहौर से आए थे। उन्होंने ही भेंट-स्वरूप रमा को एक आभूषणों का सैट और एक जोड़ा कपड़े दिये।

विवाह पर बहुत धूम रही। नलिनी बारात और डोली के समय ही वहाँ गई। बहुत आग्रह करने पर भी उसने उस घर में रहना स्वीकार नहीं किया। हाँ, विवाह में एक घटना और घटी। डोली जाने वाली थी। लड़की को विदा करने के लिए तैयार किया जा रहा था। कमलनारायण तैयार होकर बाहर बरामदे में बैठा था। नलिनी किसी काम से बाहर आई और फिर भीतर जाने लगी तो कमलनारायण उठकर उसके साथ हो लिया। सेहन में शामियाना लगा था और सभी महिलाएँ वहाँ बैठी थीं। नलिनी माया के कमरे में गई तो कमल उसके पीछे-पीछे वहीं आ गया। उसने कहा, "भाभी! आपसे तो बात करने का अवसर ही नहीं मिला ?"

"हाँ, तो फरमाइए जीजाजी महाराज!"

"मैं यह जानना चाहता था कि अपनी ननद से मिलने के लिए आप कब पधार रही हैं।"

"यह बात तो आपको रमा के भाईसाहब ही बता सकते हैं।"

"परन्तु मिलने के लिए तो आपको आना चाहिए न ?"

"बहिन उनकी है न ? जब वे अपनी बहिन से मिलने के लिए कहेंगे तभी मैं आ सकती हूँ।"

"देखिए! मैंने यह विवाह तो केवल आपके दर्शनों के लिए ही किया है। और यदि आपके दर्शन न हुए तो निश्चय जानो, आपकी नंदरानी सदा के लिए यहाँ आकर बैठ जाएगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अभी यहाँ से उसको ले जाइए। यहाँ लाने की बात तो वहाँ जाकर की जाएगी।"

नलिनी इस पराए घर में हल्ला करना नहीं चाहती थी। उसने टालने के लिए कहा, "आज तो आपने इस गरीब बहिन के दर्शन कर ही लिए हैं, फिर कभी इच्छा होगी तो मेल-मुलाकात हो ही जाएगी।"

"खैर, मैंने तुमको नोटिस दे दिया है। एक बात और बता देना चाहता हूँ कि निर्धनता अपनी बनाई हुई होती है। इसको दूर करने की शक्ति मुझमें है। अलादीन के चिराग के जादू की भाँति एक दिन में निर्धनता की कालिमा धोई जा सकती है। शर्त यह है कि इसमें सहयोग होना चाहिए। आप-जैसी पढ़ी-लिखी स्त्री के साथ निर्धनता का विशेषण उपयुक्त नहीं प्रतीत होता।"

"आपके आश्वासन के लिए धन्यवाद! अब तो आप जाइए। बाहर आपकी श्रीमती आप पर सन्देह करने लग जाएँगी। पहली रात के सन्देह के बादल जीवन को नीरस कर देंगे।"

"अच्छी बात है। यह समझ लेना कि हम लोगों के हाथ बहुत लम्बे हैं और हमारे कार्य करने के भी ढंग अनेक हैं।"

"अच्छा सुन लिया है। समझने का यत्न करूँगी।" इतना कह वह कमरे के बाहर आने लगी तो कमलनारायण ने मार्ग रोकने का यत्न किया। तुरन्त नलिनी उससे अधिक चपल सिद्ध हुई। वह कमरे से निकली तो भीतर से सेहन की ओर जाने की अपेक्षा वह बाहर लॉन में जा खड़ी हुई।

अर्जुनदेव बाहर नारायणदास के मेहमानों के साथ बैठा था। ये सब लोग लड़की विदा करने आए हुए थे। मोहिनी और निरंजनदेव एक ओर कुर्सी पर बैठे थे। मोहिनी अपने जाने का कार्यक्रम बना रही थी।

नलिनी को दिन चढ़े हुए थे और मोहिनी का विचार था कि वह उसको अपने साथ ही ले जाए। कठिनाई थी निरंजनदेव के भोजन की व्यवस्था के विषय पर। निरंजनदेव माँ को आश्वासन दे रहा था कि इस विषय में उनको कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

इस समय नलिनी पीतमुख क्वार्टर से निकली और वहाँ आ गई, जहाँ उसका पति बैठा अपनी माँ के साथ बातचीत कर रहा था। निरंजनदेव ने उसको देखा तो उठकर पूछने लगा, "क्या हुआ ?"

"तनिक इधर आइये।"

उसकी माँ ने समझा कि गर्भावस्था के कारण किसी प्रकार का कष्ट होगा। उसने कहा, "यहाँ बैठो। मुख की हवा क्यों उड़ी जा रही हैं ?"

नलिनी उस कुर्सी पर बैठ गई जिस पर निरंजन बैठा था। उसने कह दिया, "एक कुर्सी और ले लीजिए।"

जब वह कुर्सी लेकर आ गया तो नलिनी बोली, "मैं यहाँ से तुरंत चली जाना चाहती हूँ।"

"ठीक है।"

मोहिनी को अपने सन्देह की पुष्टि प्रतीत हुई। उसने निरंजनदेव को भागकर ताँगा लाने के लिए कह दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरंजनदेव ने सतीश की साइकिल ली और गोल मार्केट से ताँगा ले आया। डोली ले जाने के लिए अभी बाजा नहीं आया था। इससे पूर्व ही मोहिनी निरंजनदेव और नलिनी को लेकर चली गई।

माया आकस्मात् बाहर आई हुई थी। उसने उनको बाहर जाते देखा तो भीतर जाकर माँ को बता आई। उसकी माँ ने वहीं समझा जो मोहिनी ने समझा था।

: 10 :

घर पहुँचकर नलिनी ने कमलनारायण के साथ हुए वार्तालाप का विवरण सुना दिया। उसने कहा, "विवाह के घर पर मैं एक नया विघ्न डालना नहीं चाहती थी। जी तो यही कर रहा था कि सबके सामने उसकी अच्छी मरम्मत करूँ।"

मोहिनी बोली, "तुमने ठीक ही किया है। मैं दो-तीन दिन में लाहौर जा रही हूँ, तुम भी मेरे साथ ही चली चलो। अब बच्चा होने के बाद ही यहाँ आना ठीक रहेगा।"

अर्जुनदेव वहाँ से डोली विदा होने के बाद ही आया था। चलते हुए उसने कहा, "नारायणदास! मैं एक-दो दिन मे लाहौर जा रहा हूँ। नलिनी भी हमारे साथ ही चली जाएगी। तनिक लड़के का ध्यान रखना।"

"फिर कब दिल्ली आएँगे ?"

"अब तुम दूसरी लड़की का विवाह करोगे तब ही आ सकूँगा। भाई, प्राईवेट फर्म में नौकरी है। इतनी जल्दी छुट्टी नहीं मिल सकती जितनी जल्दी सरकारी नौकरी में मिल सकती है।"

"अभी तो लड़की का आना-जाना बना रहेगा। इसको भी जीवन में स्थिर होते अभी कुछ समय लग जाएगा। इसके बाद ही दूसरी लड़की के विवाह के विषय में विचार किया जा सकेगा।"

"मेरा विचार है कि इसमें देर करने की आवश्यकता नहीं। यह विवाह भी छूत की बीमारी है। घर में आ जाय तो फिर सबको अपना असर दिखाकर ही जाती है।"

नारायणदास ने यह बात अनधिकारयुक्त समझी। उसने इसका कुछ उत्तर नहीं दिया।

विवाह के तीसरे दिन मध्याह्न के समय अनामन्त्रित ही रमा नलिनी से मिलने के लिए चली आई। उसने आते ही पूछ लिया, "भाभी! अब कैसी हो ?"

"और कब कैसी थी ?"

"परसों डोली से पहले ही चली आई थी न ?"

"हाँ, उस समय कुछ अस्वस्थ हो गई थी। अब ठीक हूँ।"

"हमारे घर कब आओगी ?"

"क्या है वहाँ ?"

"तुमने आने के लिए उनको कहा था न ?"

"हाँ, कह देना अभी लाहौर जा रही हूँ। वहाँ से मजबूत जूता ले आऊँगी, तभी उनसे मिलने का मज़ा रहेगा। ये दिल्ली के बने जूते तो ऐसे ही टूट जाते हैं।"

"भाभी! क्यां मतलब है ?"

"अपने पतिदेव को कह देना। वे समझ जाएँगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो दिन बाद रमा फिर आई। इस बार कमलनारायण मोटर में था। मध्याह्न का समय था और वह समझता था कि नलिनी घर पर अकेली ही होगी। उसको अर्जुनदेव और मोहिनी बरामदे में बैठे दिखाई दिये तो मोटर से बाहर ही नहीं निकला। रमा भीतर गई।

रमा ने नलिनी से कहा, "भाभी! तुम्हारे ननदोई बाहर मोटर में हैं और दर्शन करने की अभिलाषा करते हैं।"

"उनसे कहो आ जाएँ। किसी के सामने बात हो तो सुनने वालों को भी आनन्द आ जाएगा।"

"भाभी! क्या बात है आप दोनों में ? मैं तो कुछ समझ नहीं पा रही हूँ।"

"अच्छा, तुम तो सुखी हो न ?"

"अभी क्या कह सकती हूँ! अभी तो सारा घर अभ्यागतों से ही भरा पड़ा है। कभी एकान्त में बात करने का अवसर ही नहीं मिला। स्त्रियाँ पृथक् सोती हैं और पुरूष पृथक्।"

"तो हनीमून के लिए कहीं जाने का विचार नहीं है क्या ?"

"मैंने कहा था। वे कहने लगे कि इसमें काम की बहुत हानि हो जाएगी।"

"विवाह होने के बाद माया से मिलना हुआ है ?"

"अभी उधर से ही आ रही हूँ। वह स्कूल जाने को तैयार थी। ये कहने लगे कि हम अपनी मोटर में छोड़ देंगे तो उसने कह दिया कि व्यर्थ में ही दो रुपये का पैट्रोल फुँक जाएगा और फिर पैदल ही चल दी।"

"देखो रमा! जिस दिन तुम आकर बताओगी कि तुम सुखी हो, उस दिन मैं तुम्हारे घर आकर तुम्हें बधाई दे आऊँगी।"

"सुखी तो मैं हूँ।"

"मुझे सन्देह है। कदाचित् तुम सुख के अर्थ ही नहीं समझती। माया तुमसे अधिक समझदार है।"

"तो तुम उनसे मिलने के लिए भी नहीं आओगी ?"

"उनको मोटर से उतरकर यहाँ आने में कष्ट होता है क्या ?"

"वे तो लाहौर के जूते का मतलब समझने के लिए आए थे।"

"वह मैं सास और श्वसुर के सामने समझाने का यत्न करूँगी। वहीं तो कह रही हूँ।"

रमा गई तो कमल उसे मोटर में बैठाकर चला गया। मोहिनी ने भीतर आकर नलिनी से पूछा, "यह किसलिए आई थी ?"

नलिनी ने जब पूर्ण बात बताई तो मोहिनी गम्भीर हो इस पर विचार करने लगी। उसको चिन्ता होने लगी थी। सायंकाल निरंजनदेव से बातचीत हुई। उसने कह दिया, "माताजी! आप मेरी चिन्ता न करें। यदि नलिनी जाती है तो जाए, अन्यथा उसकी रक्षा का भी प्रबन्ध कर दूंगा।"

"नलिनी को तो चली ही जाना चाहिए। चिन्ता तो मैं तुम्हारे विषय में कर रही थी।"

"मेरी क्या चिन्ता है! भोजन का प्रबन्ध मैंने अपने पड़ोस में कर लिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम कल प्रातःकाल की गाड़ी से चले जाना चाहते हैं।"

"ठीक है।"

नलिनी के जाने के दो दिन बाद रमा फिर आई किन्तु मकान को ताला लगा था। कमलनारायण उसके साथ था किन्तु वह बाहर सड़क पर ही मोटर में बैठा रहा। जब रमा ने कहा कि मकान को ताला लगा है तो कमल कहने लगा, "बहुत बुरा किया है इस औरत ने।"

"आप मुझे बात तो बताते नहीं और व्यर्थ में भाभी से खरीखोटी सुनने के लिए मुझे भेज देते हैं।"

"तुमसे कुछ कहा है क्या उसने ?"

"हाँ, परन्तु मैं वह तब बताऊँगी जब आप अपना यहाँ आने का उद्देश्य बता देंगे।"

"रमा! बता दो, क्या कहती थी वह। इसमें तुम्हारा ही कल्याण है।"

"जी नहीं। आप बताइए, आपका भाभी से क्या सम्बन्ध है ?"

"क्या करोगी जानकर ?"

"देखिए, मैं कोई बच्ची नहीं हूँ। बताइए, आप क्यों इसके पीछे पड़े हैं ?"

"मैं उससे प्रेम करता हूँ।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब तो बता दिया है, अब आगे तुम बताओ।"

"इस प्रकार नही। आप बताइए कि भाभी ने आपको कभी आने का वचन दिया था ? आप उससे कभी एकान्त में मिले हैं ? आपको उसने कभी आपके प्रति अपने प्रेम का प्रमाण दिया है।"

"बहुत-कुछ दिया है और कुछ भी नहीं दिया। उसने मेरी ओर प्रेमभरी दृष्टि से देखा है और मेरे प्रस्ताव को सुनकर उस पर विचार करने का वचन दिया है।"

"क्या प्रस्ताव था आपका ?"

"जो एक पुरुष का किसी सुन्दर स्त्री के लिए हो सकता है।"

"परन्तु मेरा आपसे विवाह हुए आज छः दिन हो गए हैं। मेरे साथ आपका क्या व्यवहार है ?"

"जैसी तुम हो वैसा व्यवहार तुम्हारे साथ किया जा रहा है।"

"परन्तु यह तो विवाह से पहले देखने की बात थी। आपने मुझ-जैसी असुन्दर लड़की से विवाह क्यों किया था ?"

"अभी कुछ बिगड़ा तो है नहीं। तुम वापस अपने पिताजी के घर जा सकती हो।"

रमा मुख देखती रह गई। तब तक वे अपनी कोठी पर जा पहुँचे थे। दोनों घर पहुँचे तो कमलनारायण की माँ ने कहा, "तुम्हारे पिताजी कह गए हैं कि कमरों का यह सैट तुम लोगों के लिए है। देखो रमा बेटी! तुम इस सैट को देख लो, और जिस वस्तु की कमी हो बता दो, एक-दो दिन में सब ठीक करवा दिया जाएगा।

वे कोठी के एक कक्ष के एक सिटिंग रूप में खड़े थे; इसके बाहर बरामदा था, उसके बाहर घास का खुला मैदान था। रमा ने यह सब-कुछ देखा तो सुख का अनुभव किया। सास ने जब बहू को सन्तोष की साँस लेते देखा तो बोली, "कमल! तुम्हारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिताजी कल शिमला चले जाएँगे। वे कहते थे कि तुम कुछ और चाहते हो तो आज सायंकाल तक बता देना।"

"माँ! तुम ?"

"मैं अभी यहीं रहूँगी। बहू को तनिक ससुरालवालों से ज़ानपहिचान करा दूँ, तभी जाऊँगी।"

"लगभग सभी सम्बन्धियों से तो मिलना-जुलना हो गया है ?"

"लेकिन् एक के साथ अभी नहीं हुआ है।"

"किसके साथ ?" साश्चर्य कमल ने पूछा।

"तुम्हारे साथ। देखो कमल! यह औरत है और मैं भी औरत हूँ। स्वाभाविक रूप से इसके साथ मेरी सहानुभूति होगी। तुने अभी तक इसको पत्नी का पद प्रदान नहीं किया। जब तक मुझको विश्वास नहीं हो जाता कि तुम इसके साथ ठीक व्यवहार कर रहे हो, मैं कैसे जा सकती हूँ ?"

"तो तुम इसकी वकील हो ?"

"वकील तो वहुत ही घटिया शब्द है। मैं इसकी संरक्षिका हूँ। इसने मुझे माँ नाम से सम्बोधित कर माँ का अधिकार दे दिया है।"

"और मैंने क्या दिया है ?"

"तुमसे अधिकार प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं। वह तो परमात्मा ने तुम्हारे जन्म के समय दिया था।"

"माँ नाराज़ हो गई हो ?"

"नहीं, माँ कभी पुत्र से नाराज नहीं होती। हाँ, वह उसका मार्ग दर्शन करने के लिए उसको डाँट सकती है।"

"अच्छा, अब मैं भोजन की व्यवस्था देखूँगी। बारह बज चुके है। तुम लोग परस्पर इन कमरों के विषय में राय कर लो। फिर हमें बता देना।"

रमा ने एक कुर्सी की ओर संकेत कर कहा, "बैठकर बात होनी चाहिए।"

"माँ तो आज डिक्टेटर बन गई है।"

"वे माँ जो ठहरीं। उनका कहा न माना तो वे रात को कर्फ़्यू लगा देंगी।"

कमलनारायण ने हँसते हुए कहा, "आओ, पहले बेडरूम देख लें।"

कमल का पिता महानारायण इंजीनियर था। उसे बहुत लम्बा अनुभव था। रमा वेचारी उनके सम्मुख फर्निशिंग के विषय में जानती ही क्या थी। इस कारण कुछ कमी नहीं देखी गई। कमलनारायण भी कुछ परिवर्तन की बात नहीं बता सका। वहाँ बिस्तर पर बैठा तो रबड़ फोम का गद्दा देख वह मुस्कराया। रमा सामने खड़ी थी।

"माँ की इच्छा है कि आज सुहागरात हो।"

"हाँ, और इस असुन्दर लड़की के साथ।"

"देखों रमा! मैं तुमको अपने मन की बात बताता हूँ। मैं तुमसे विवाह का इच्छुक नहीं था। यह तो पिताजी दबाव डाल रहे थे। एक समय तुम्हारे पिता ने मेरे पिता को किसी मामलें में सहायता दी थी। पिताजी किसी मामले में फँस गए थे। ऑडिटर-जनरल ने जाँच के लिए तुम्हारे पिता को नियुक्त कर दिया। उन्होंने अपनी जाँच-रिपोर्ट इस प्रकार लिखी कि कोई वकील भी इतनी अच्छी रिपोर्ट नहीं बना सकता था। पिताजी बरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गए।"

"इससे वे तुम्हारे पिताजी के अहसान के नीचे दब गए। इस पर भी मैं उस दिन मध्याह्न भोजन के समय तुमको रिजेक्ट करने के विचार से गया था। वहाँ नलिनी के दर्शन हो गए। मैंने उसी समय उससे कहा कि उसको देखकर तो इस घर से सम्बन्ध बनाने की इच्छा होने लगी है।"

"इस पर वह कहने लगी, 'तब तो मैं अपने को भाग्यशालिनी मानती हूँ। आप सब प्रकार से ननदोई बनने के योग्य है।' किन्तु मैंने कहा कि मैं तो उससे अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध की आशा करने लगा हूँ। वह बोली कि विवाह होने पर तो वह होगा ही।"

"इस बात ने मेरा मुख बन्द कर दिया जब तुम्हारे पिता ने कहा कि मैंने तो तुम्हें पहले ही देखकर पसन्द किया है, मैं कहने वाला था कि यह गलत है, परन्तु नलिनी को मुस्कराते हुए अपनी ओर देखते पा चुप रह गया।"

"इसी आशा में तुम्हारी डोली के दिन मैंने नलिनी से पूछा था कि अब उसके दर्शन कब होंगे तो उसने मेरी बात सुनकर कह दिया कि उसने बात सुन ली है, समझने का यत्न करेगी। इतना कह पारे की बूँद की भांति मुझसे बचकर निकल भागी।"

"मैंने मन में निश्चय किया हुआ था कि उसको अपना-प्रेम-प्रसाद दिए बिना तुम्हें दूँगा नहीं। परन्तु न जाने आज माँ को क्या हो गया है। ऐसा प्रतीत होता हैं कि तुमने माँ से कुछ कहा है।"

"मैं सौगन्धपूर्वक कहती हूँ कि मेरी उनसे इस विषय में कोई बात नहीं हुई है। उन्होंने बताया तो है कि वे भी औरत हैं, इस कारण औरत के दुःख की बात वे समझती है। आपको तो अब मुझ पर ही सन्तोष करना चाहिए। एक बात मैं आपको बताती हूँ कि भाभी आपसे घृणा करती है। और यदि अपने हाथ बढ़ाया तो वे कह रही थी कि वे लाहौर से गामाशाही जूता ले आएँगी। दिल्ली का जूता को एक-दो बार में ही टूट जाएगा।"

"तो यह कहा है उसने ?"

"जी, मैं समझती हूँ कि समझदार व्यक्ति की भाँति दाख को बहुत ऊँची समझ आपको उसका विचार छोड़ देना चाहिए।"

⇩⇩⇩

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

:1:

महानारायण की मैनादेवी से केवल एक ही सन्तान थी। रूड़की से सिविल इंजीनियरिंग पास कर वह भारत सरकार के पास नौकर हुआ तो उसको भारत सरकार की शिमला एस्टेट पर सब डिविजनल इंजीनियर के स्थान पर नियुक्त कर दिया गया। उसके नौकर होते ही उसका विवाह भी हो गया। विवाह के एक वर्ष के भीतर ही मैनादेवी के गर्भ ठहरा तो उसको माँ के घर भेजना पड़ा। इस अवधि में महानारायण की मित्रता उसी क्षेत्र में रहने वाली एक ओवरसियर की लड़की से हो गई। राधा इंजीनियर साहब के पास रहने लगी और ओवरसियर हाथ रंगने लगा।

कुछ ही दिनों में महानारायण को गर्मी की बीमारी हो गई। इससे महानारायण बहुत परेशान हुआ। इसके लिए उसे औषधि लेनी पड़ी। उसने राधा को भी औषधि दिलवाई। दोनों ठीक तो हो गए परन्तु इसके बाद महानारायण की न तो मैनादेवी से और न ही राधा से कोई सन्तान हुई। मैनादेवी के एक लड़का हुआ था। वह था कमलनारायण।

जब मैंनादेवी प्रसव से लौटकर अपने पति के पास आई तो तब तक महानारायण ठीक हो गया था। इस पर भी मैना बीमार हो गई। मैना के रक्त की परीक्षा की गई तो उसमें भी पति की बीमारी के लक्षण दिखाई दिए। इस पर पति-पत्नी में झगड़ा हुआ परन्तु फिर सुलह हो गई। इस सुलह का परिणाम यह हुआ कि राधा अब प्रत्यक्ष रूप से इंजीनियर साहब के बँगले में रहने लगी। मैना को सन्तोष करना पड़ा।

कमलनारायण जब बड़ा हुआ तो वह ठेकेदारी करने की तैयारी करने लगा। महानारायण ने उसको दिल्ली भेज दिया और अपने परिचय के बल पर उसको काम दिलाने लगा।

कमलनारायण इंजीनियर का पुत्र होने के कारण काम के रहस्यों को समझता था, अतः कार्यक्षेत्र में आते ही सफल ठेकेदार बन गया। रुपया आने लगा और उसके साथ ही बुरी संगत भी उसको मिल गई। इधर-उधर भाग-दौड़ होने लगी। नई दिल्ली की आवारा सोसाइटी में 'खुले दिल से खर्च करने वाला शौकीन' के नाम से उसकी ख्याति होने लगी।

कमलनारायण के मित्र ताराचन्द की बहिन सोहिनी माया की ही श्रेणी में पढ़ती थी। माया का उसके साथ बहुत मेलजोल था। सोहिनी के माता-पिता भी सिविल लाइन्स में ही रहते थे। एक दिन माया अपनी सहेली सोहिनी के घर गई हुई थी तो वहाँ कमलनारायण के दर्शन हो गए। वह ताराचन्द को कहीं ले जाने के लिए आया हुआ था। ताराचन्द और उसकी मित्र-मण्डली के विषय में उनके घर में चर्चा होती रहती थी और उसकी अस्पष्ट गूँज सोहिनी के कानों में भी पड़ जाया करती थी।

उससे पहले कमलनारायण रमा को देखने उसके क्वार्टर पर आ चुका था। यद्यपि कमल को माया की पहिचान नहीं थी, किन्तु माया ने उसको देखा था। माया ने अपनी बहिन की कमल से सगाई की चर्चा सोहिनी से की तो सोहिनी, जो कुछ उसके विषय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में जानती थी, वह माया को कह गई। माया को इससे बहुत विस्मय हुआ।

एक दिन माया ने रमा को सोहिनी से सुनी हुई बात बताई तो रमा कहने लगी, "तुम्हें मुझसे ईर्ष्या होती है क्या ?"

"मुझमें ईर्ष्या के क्या लक्षण दिखलाई दिए हैं ?"

"पहले तुमने निरंजनदेव की निन्दा करनी आरम्भ कर दी थी। अब तुम इनकी निन्दा करने लगी हो।"

"मैंने तो तुमको जो बात पता चली वह बता दी। इसमें ईर्ष्या की बात कहाँ से आ गई ?"

"इसका अभिप्राय तो यही है कि तुम स्वयं इनसे विवाह करना चाहती हो।"

"मैं तो यह कह रही थी कि इस प्रकार का शराबी तथा वेश्यागामी युवक मेरा पति तो क्या, जीजा बनने के भी योग्य नहीं।"

"देखो माया! यह सब माता-पिताजी को मत बताना। हो सकता है यह सब गलत ही हो। यदि यह ठीक भी हुआ तो क्या हानि है। लाखों की आय में यह सब ऐश हो सकते है।"

माया समझ गई कि रमा रुपये की चमक-दमक देखकर चकाचौंध रह गई है। यों तो उनके घर में धन की महिमा के गीत दिनरात अलापे जाते थे। नारायणदास ऑडिटर-जनरल के दफ्तर में था। रुपये के लिए लोग क्या-क्या छल-कपट करते हैं, उसकी चर्चा नित्य होती थी। इस सबसे माया के मन पर प्रभाव पड़ता था परन्तु अज्ञात संस्कारों के कारण उसके मन में इन बातों की प्रतिक्रिया भी होती थी।

एक बात वह सोहिनी से सुन आई थी कि उसके भाई ताराचन्द की पत्नी धन-दौलत होने पर भी दिन-रात रोती रहती है। सोहिनी की माँ भी अपनी पतोहू की दुर्घटना देख रो पड़ती थी।

वह क्यों रोती थी, उसको क्या दुःख था, यह न तो सोहिनी जानती थी, न ही वह माया को बता सकी। शेष तो माया ने अपनी कल्पनाशक्ति से ही अनुमान लगाया था।

इसी आधर पर उसने निरंजनदेव को कहा था कि वह तो कमलनारायण के मुख पर थूके भी नहीं। जिस दिन कमलनारायण की माँ ने अपने पुत्र को विवश किया कि वह अपनी पत्नी से ठीक व्यवहार रखे, उससे तीसरे दिन माया और उसकी माँ श्यामा रमा से मिलने के लिए आईं। माँ तो रमा की सास से बातचीत करती रही और माया रमा के सोने के कमरे में जा पहुँची।

उसने जाते ही पूछा, "दीदी! कैसे रहे जीजा ?"

"देख रही हो न, कितनी बड़ी यह कोठी है। यह सोने का कमरा कितना सजा हुआ है और वह देखो हमारा गुसलखाना।"

धनियों के घर में अपेक्षित सभी सुख-सुविधा की वस्तुओं को दिखाकर रमा पूछने लगी, "बोलो, क्या समझी हो तुम ?"

"यह सब तो बहुत सुन्दर है। पर मैं तो जीजाजी के विषय में पूछ रही थी, उनकी कोठी के विषय में नहीं।"

रमा गम्भीर हो गई। फिर कुछ विचार कर बोली, "माया बहिन! तुम समझ नहीं सकोगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं यह पूछना चाहती हूँ कि तुम सुखी हो ?"

रमा की आँखों से आँसू टपक पड़े। माया देखती रह गई। वह इन आँसुओं की व्याख्या नहीं पूछ सकी। पूछने की आवश्यकता भी अनुभव नहीं हुई। अपनी सहेली सोहिनी की भाभी की बात सुन जैसे कल्पना के घोड़े दौड़ाया करती थी, वैसे ही वह यहाँ भी दौड़ा सकती थी।

रमा ने बाहर के कमरे में अपनी माँ और सास को बातें करते हुए सुना। इससे वह सावधान हो गई और उसने अपनी आँखे पोंछ डालीं। दोनों बड़ी आयु की महिलाएँ भीतर आईं तो रमा की सास श्यामा को उसकी लड़की के शयनागार के सुख-सुविधा की वस्तुएँ दिखाने लगी। श्यामा ने एक ही दृष्टि में देख लिया कि रमा रो रही है। इस पर भी उसने यह अपनी समधिन को जताया नहीं।

कमरा आदि दिखाकर श्यामा को वहाँ छोड़कर मैनादेवी बाहर चली गई। जब वह उनकी आवाज से दूर चली गई तो श्यामा ने रमा से पूछा, "क्यों, तुम रो रही थीं क्या ?"

श्यामा का इतना कहना था कि रमा माँ की गोद में सिर रखकर रोने लगी। श्यामा ने संकेत से माया को बाहर जाने के लिए कहा तो वह उठकर बाहर सिटिंग रूम में पहुँच गई।

माँ-बेटी परस्पर एक घंटा बातें करती रहीं। जब श्यामा बाहर निकली तो माया ने देखा कि माँ भी रोती रही है और इस कारण उसकी आँखें लाल हो रही है। इस समय मैना देवी आई तो उन दोनों को बाहर ले गई। मैना ने श्यामा से कहा, "देखिए, रमा के प्रति कमल का जो व्यवहार है मैं उसे पसन्द नहीं करती। मैं उसको समझा रही हूँ। वह कहता है कि उसने यह विवाह करके भूल की है। परन्तु मैं समझती हूँ कि मैं उसको समझा लूँगी। शीघ्र ही दोनों आनन्द से रहने लगेंगे।"

माया के मन पर इसका भारी प्रभाव पड़ा। उसको विदित नहीं था कि नलिनी लाहौर गई है। इस कारण उसी सायंकाल वह कनॉटप्लेस से कुछ खरीदने का बहाना कर नलिनी के घर जा पहुँची। वह क्वार्टर में गई तो बाहर बैठक में निरंजनदेव को बैठा देख पूछने लगी, "भापा! भाभी कहाँ है ?"

"ओह! माया कैसे आ गई ?"

"भाभी से कुछ काम था।"

"वह तो लाहौर चली गई है।"

माया अभी भी खड़ी ही थी। निरंजनदेव ने कहा, "माया। बैठोगी नहीं क्या ?"

"भाभी से मिलना था।" उसने बैठते हुए कहा।

"क्यों, कमलनारायण ने भेजा है क्या ?"

माया तो इस बात पर टुकर-टुकर मुख देखती रह गई। निरंजनदेव हँस पड़ा। माया ने पूछा, "क्यों, आप हँसे क्यों हे ?"

"इसलिए कि रमा को यहाँ भेज असफल होकर मुझे सन्देह हुआ कि अब तुमको नलिनी के पास भेजा है।"

"तो रमा यहाँ आती रही है ?"

"तुम कब मिली हो उससे।"

"मैं और माताजी आज ही उससे मिलने के लिए गये थे।"

"उसने बताया नहीं तुम्हें कि वह और उसका पति यहाँ के चक्कर लगा चुके हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"किसलिए आते रहे हैं वे ?"

"यह तो मुझे विदित नहीं। मेरे सामने बात नहीं हुई। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि नलिनी ने दो-चार खरी-खरी उसको सुनाई हैं इस कारण कुछ दिनों से वह यहाँ नहीं आया।"

"भाभी लाहौर कब गई है ?"

"आज छठा दिन है। अब वह नौ मास तक नहीं आएगी।"

"आजकल आप भोजन कहाँ करते हैं ?"

"प्रातः और सायं की चाय तो मैं यहीं बना लेता हूँ। दोनो समय की रोटी साथ के क्वार्टर वाली बहिन बनाकर भेज देती है। कपड़े धोबी धो देता है और सफाई भंगी कर जाता है।"

"आप भोजन हमारे घर पर क्यों नहीं कर लेते ?"

"यहाँ से बहुत दूर पड़ता है।"

"आते तो आपके भी दर्शन हो जाते।"

"दर्शन तो बिना भोजन खिलाए भी हो गए हैं।"

"अच्छा चलिए, मुझे छोड़ आइए।"

"क्यों, तुमको कोई यहाँ छोड़ गया है ?"

माया हंस पड़ी। उसने कहा, "मैं तो अकेली आती-जाती हूँ। स्कूल जो जाना होता है। यह तो आपके लिए कह रही थी। आप अकेले वहाँ नहीं आते न, इसलिए।"

"तो यह बात है। यहाँ से तो मैं तुम्हारे साथ चला जाऊँगा, परन्तु वहाँ से कौन छोड़ने के लिए आयेगा ?"

"तो वहीं रह जाइएगा। अभी आप वाला कमरा खाली पड़ा है।"

"नहीं माया! वहाँ अब ठीक नहीं। रमा ने एक बार अनुचित पग उठाकर उस घर से मेरा ऐसा नाता तुड़वाया है कि अब जुड़ नहीं सकता।"

"परन्तु पिताजी ने तो आपको कुछ नहीं कहा ? वे तो आपको अपने लड़के के समान ही मानते रहे हैं ?"

"हाँ, यह ठीक है। परन्तु मैं यह भी जानता हूँ कि रमा की सगाई मेरे साथ न हो सकने पर उनके मन में भी परिवर्तन आ गया है। अब रमा के विषय में उनको पता चलेगा तो उन्हें और भी दुःख होगा और इसकी प्रतिक्रिया मेरे विपरीत होगी।"

"तो आप जानते हैं कि रमा सुखी नहीं है ?"

"नहीं, मैं नहीं जानता। इस पर भी कमल के विषय में तुमने कुछ कहा था कि रमा के विवाह के बाद बताओगी।"

अब माया ने वह सब बात, जो उसने सोहिनी के मुख से सुनी थी और जो कुछ उस दिन उसे मिलने पर हुआ था, निरंजनदेव को सुना दी। माया की बात सुन निरंजनदेव गम्भीर हो गया। एकाएक वह बोला, "माया! अब तुम जाओ। तुम्हारा अकेला यहाँ रहना ठीक नहीं।"

"आपको मुझसे भय लगता है क्या ?"

"नहीं, मुझे तुमसे भय नहीं लग रहा। इस पर भी मेरा मन कह रहा है कि तुमको अँधेरा होने से पूर्व अपने घर पहुँच जाना चाहिए। यह दिल्ली है, यहाँ का वातावरण ठीक नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माया उठ खड़ी हुई। उसको भी कुछ अज्ञात भय प्रतीत हुआ और वह काँप उठी। एकाएक निरंजनदेव ने यह अनुभव किया और बोला, "चलो तुम्हें कुछ दूर तक छोड़ आऊँ।"

निरंजनदेव ने मकान को ताला लगाया और माया को साथ लेकर चल पड़ा। माया ने मार्ग में उससे कहा कि वह उसके माता-पिता को बता दे कि उन दोनों की भेंट कनाटप्लेस में हो गई थी।

"क्यों, यह झूठ क्यों ?"

"मैं आपके घर अपने मन से आई थी, किसी को बताकर नहीं आई।"

"यह तो ठीक नहीं किया और विशेष रूप से तब, जब तुम यह समझती हो कि हमारे यहाँ आना तुम्हारे माता-पिता पसन्द नहीं करते।"

माया ने बहुत दीन दृष्टि से निरंजनदेव की ओर देखा। निरंजनदेव कहने लगा, "मैं झूठ नहीं बोलूँगा। इस पर भी तुम कहती हो तो तुम्हारे घर तक मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा। कुछ इधर सें ही मैं वापस हो जाऊँगा।"

माया नें कुछ उत्तर नहीं दिया। निरंजनदेव समझ रहा था कि निश्चित ही उनके घर में उसके विषय में चर्चा होती होगी, जिससे यह समझती है कि उसका अकेले उनके घर में जाना पसन्द नहीं किया जायेगा।

चलते हुए निरंजनदेव ने माया की पढ़ाई और स्कूल के बारे में बात आरम्भ कर दी। फिर गोल डाकखाने के पास माया को छोड़ वह अपने घर को लौट गया।

: 2 :

महानारायण शिमला लौट गया था। जाने के पूर्व उसने भी कमलनारायण से कहा, "कमल! विवाह से पूर्व तुमने रमा को भली प्रकार देख लिया था और उस समय तुमने अपनी असहमति प्रकट नहीं की। इसलिए अब कोई कारण नहीं कि तुम रमा से प्यार न करो।"

"यह आपको किसने बताया है कि मैं उसके साथ उचित व्यवहार नहीं कर रहा हूँ ?"

"देखो, किसी कारण से हमारे घर में तुम ही एक लड़के हो। यदि तुम्हारी सन्तान न हुई तो हमारी कुल-परम्परा किस प्रकार चलेगी ?"

"पिताजी! सन्तान तो हो जाएगी। इसकी आप अभी से क्यों चिन्ता करने लगे हैं ?"

"चिन्ता इस कारण है कि यदि सन्तान न होनी हो तो भी उसका पता मुझे अभी एक-दो वर्ष में चल जाना चाहिए, जिससे गोद में कोई लड़का लेकर उसको पालने का अवसर तो मिल जाए। इस समय मेरी आयु पचपन वर्ष की है। मुझे यदि कोई दत्तक पुत्र बनाना पड़ा तो एक-दो वर्ष का बालक ही होगा। इसलिए मेरे वृद्ध होने से पूर्व वह सज्ञान हो किसी कार्य पर लग जाए और हमें एक पोता दे सके।"

कमल हँस पड़ा। उसने कहा, "यदि आपके मरने से पूर्व पोता नहीं हुआ तो फिर क्या हो जाएगा ?"

"देखो कमल! मैंने तुम्हें जन्म दिया, तुम्हारी माँ ने तुम्हारा पालन-पोषण किया। सर्दी-गर्मी, धूप-छाँह, सुख-दुःख से तुम्हारी रक्षा की। तुम्हारे पालन-पोषण तथा शिक्षा-दीक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर अतुल धन व्यय किया। तुमने स्वतन्त्र कार्य करना चाहा तो कार्य आरम्भ करने के लिए तुमको दो लाख रुपया दे दिया। फिर तुम्हारे विवाह पर भी काफी खर्च किया है। यह सब क्यों किया है ? आखिर तुममें कौन से सुरखाब के पर लगे हुए हैं कि मैंने यह सब-कुछ तुम्हारे साथ किया है ?"

कमल समझता था कि लड़के-लड़कियाँ तो पैदा हो जाते हैं स्त्री-पुरुष के संयोग से। संयोग होता है प्रकृति की माँग से। जैसे भूख-प्यास लगती है उसी प्रकार संयोग की इच्छा होती है। सन्तान तो फोकट में ही हो जाती है। इसके लिए कोई इच्छा नहीं करता।

जब सन्तान हो जाती है तो परम्परा और प्रथाओं से प्रेरित मनुष्य बच्चों का पालन करता है। उनको स्वस्थ, सबल और योग्य बनाकर एक काल्पनिक सुख का अनुभव करता है। वास्तव में न तो किसी के मन में सन्तान की इच्छा है और न ही उस सन्तान के पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा में किसी को कुछ लाभ है। यह सब कल्पना है।

इतना विचारकर उसने कह दिया, "पिताजी! मैंने यह विवाह आपके लिए किया है। आप नारायणदासजी के अहसान के नीचे दबे हुए थे। उनकी लड़की को अपने धन-दौलत का भोग करा आप अहसान से बरी होना चाहते थे। सो आप हो गए हैं। परन्तु मैं तो विवाह करना नहीं चाहता था। मुझे सन्तान की आवश्यकता नहीं। आपको सत्य बताता हूँ कि कई कुमारी लड़कियों के गर्भ ठहर जाने पर मैंने भ्रूण हत्याएँ कराई हैं। दो-तीन के तो गर्भपात न हो सकने पर सन्तान का गला घोंटकर यमुना में बहा दिया था। मेरे मने में सन्तान के प्रति कोई आकर्षण नहीं और न ही उसका कुछ मूल्य है। मेरे लिए औरत का मूल्य केवल औरत होने के कारण ही है अन्य किसी कारण नहीं।"

"यदि किसी घटनावश रमा के सन्तान हो गई तो आप जानें वह जाने। मुझको नहीं चाहिए। न ही मुझको रमा पसन्द है। मैं अपनी शक्ति और धन एक थर्ड क्लास लड़की पर व्यय.नहीं कर सकता।"

लड़के के उक्त विचार सुनकर तो महानारायण काँप उठा। उसको अपनी बात स्मरण हो आई। यह आज से तेईस-चौबीस वर्ष पूर्व की बात है। महानारायण विवाह कर नई-नवेली बहू को लेकर शिमला पहुंचा था। उसकी पत्नी मैना की रूप-रेखा साधारण ही थी। उसको एक पहाड़ी लड़की की सुन्दरता भा गई। वह थी उसके अधीनस्थ ओवरसियर की कन्या राधा। ओवरसियर जान-बूझकर अपनी लड़की को उसके पास लाता रहता था। इस पर भी वह तब तक पथच्युत नहीं हुआ था, जब तक उसकी पत्नी प्रसव के लिए अपने गाँव नहीं चली गई थी। उसकी अनुपस्थिति में राधा से सम्बन्ध बना। यह तो उसको बाद में विदित हुआ कि राधा चरित्रहीन लड़की है। उससे उसको उपदंश की बीमारी हो गई थी।

महानारायण उस समय के अपने विचारों को स्मरण कर हैरान होता था। राधा से उसे एक घिनौनी बीमारी प्राप्त हुई थी। वह स्वयं भी उस रोग में ग्रस्त थी। उसने अपनी चिकित्सा कराई, राधा की चिकित्सा कराई किन्तु किसी कारण चिकित्सा पूर्णरूपेण सफल नहीं हो पाई और मैना भी इस रोग से ग्रस्त हो गई। पुनः तीनों की चिकित्सा हुई। इस समय सफलता तो मिल गई किन्तु वे सन्तान उत्पन्न करने के लिए अयोग्य हो गए। तदपि मैना ने उसको क्षमा कर दिया। पति-पत्नी ने राधा को भी क्षमा कर दिया और राधा अपने कुकर्म का परिणाम सन्तान न हो सकना जान, जीवन-भर रोती रही।

महानारायण विचार करता था कि अब यह उसका लड़का है और कहता है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह कितनी ही भ्रूण हत्याएँ करवा चुका है। इतना ही नहीं, उसने तो जीवित सन्तानों के भी गले घोंटवा दिये हैं।

वह मन में विचार करता था, क्या वह ठीक है ? उसका व्यवहार अथवा कमलनारायण का व्यवहार दोनों ही वासनामय थे। वह स्वयं वासना में रत रहता हुआ भी सन्तान की इच्छा करता था। उसको भली-भाँति स्मरण था कि रोगग्रस्त होने से पूर्व राधा से संयोग के समय वह यह विचार करता था कि मैना के सन्तान होगी अथवा राधा की। सब समय उसे सन्तान का ही विचार रहता था।

एकाएक महानारायण ने बात समाप्त करते हुए कहा, "कमल! यह विवाह तुमने भूल से किया है अथवा मुझे ठगने के लिए किया हैं, जैसा भी तुम समझो, मैं इस विषय में कुछ नहीं कहता। किन्तु मैंने जो कुछ तुम्हारे साथ किया है वह अपना कुल चलाने के लिए किया है और यदि तुमने एक वर्ष के भीतर मेरे पोते को जन्म नहीं दिया तो यह निश्चय जानों कि मैं तुमको किसी काम का नहीं रखूँगा।"

बात यहीं समाप्त हो गई और महानारायण शिमला चला गया। रात को अपने पिता की बात रमा को सुनाता हुआ कमल हँस पड़ा। रमा ने कहा, "इसमें हँसने की क्या बात है ?"

"मैं तुमसे कह रहा हूँ कि तुम चाहो तो कहीं से भी एक लड़का ले आओ और मेरे वृढ़े माता-पिता को प्रसन्न कर दो। मुझे आपत्ति नहीं होगी। आजकल मुझे एक अति सुन्दर लड़की मिल गई है इसलिए मैं अपना जीवन तुम जैसी के साथ नष्ट नहीं कर सकता।"

कमल ने इतना कहा और बिना कुछ सुनने की अपेक्षा किए उसने रमा की ओर से मुख फेरा और सो गया।

विवाह से पूर्व वह प्रायः दस बजे घर आ जाया करता था और प्रायः लड़कियाँ कोठी पर ही आ जाया करतीं थीं। अब माँ के घर पर होने के कारण कोठी पर तो किसी को ला नहीं सकता था। हाँ, बारह बजे के बाद शराब के नशें में वहाँ आ सो जाया करता था।

मैनादेवी अपनी पुत्र-वधू की दुर्दशा के विषय में जानती थी।

जिस दिन माया और श्यामा रमा से मिलने के लिए आई थीं श्यामा के सुझाव पर रमा ने अपनी ओर से आगे बढ़कर कमलनारायण को प्यार करने का यत्न किया। कमल स्नानागार से रात्रि का परिधान धारण कर अपनी रजाई में घुसा और खुर्राटें भरने लगा तो रमा भी चुपचाप उसकी रजाई में घुस गई। इससे दो-तीन सेकेण्ड में ही कमल की नींद खुल गई। उसने निर्वसना रमा को जब अपनी रजाई में देखा तो क्रोधवश वह उसको पीटने लगा। रमा की चीख निकल गई। इस पर कमल उसका गला पकड़कर उसकी हत्या करने के लिए तैयार हो गया। रमा छटपटाने लगी। इस समय द्वार पर लातों से धड़ाधड़ चोटें पड़ने लगीं। कमल का ध्यान उधर गया तो रमा उसके हाथ से छूट गई। रमा के मन में भय समा गया था कि वह उसकी हत्या कर देगा। वह वहाँ से भागकर शयनागार का द्वार खोलने गई और वहीं अचेत होकर गिर पड़ी।

द्वार खुला तो मैना भीतर आ गई। रमा सर्वथा अवस्त्र थी। कमल अपने बिस्तर से बाहर निकल आया था। माँ ने घुसते ही कहा, "इसकी हत्या कर दी है न ?"

"अच्छा, तो माँ! तुम्हारे कहने पर इसने यह हरकत की थी ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ ने इस बात का काई उत्तर नहीं दिया। सबसे पूर्व उसने रमा के हृदय पर हाथ रखकर जानना चाहा कि वह जीवित है अथवा मर चुकी है। उसने हृदय के स्पन्दन का अनुभव कर अनुमान लगा लिया कि वह जीवित है। उसने कमल से कहा, "जल्दी से पानी लाओ।"

कमल किंकर्त्तव्यविमूढ़ की भाँति खड़ा था। उसके मद्य का नशा उतर रहा था। माँ स्वयं गई और स्नानागार से एक जग में पानी भरकर ले आई। उससे वह रमा के मुख पर छींटे देने लगी।

रमा को चेतना हुई तो वह लज्जित हो अपने वस्त्र ढूँढने के लिए उठी, किन्तु पुनः चक्कर खाकर गिर पड़ी। माँ ने उसको पुनः सचेत किया और उसको वस्त्र पहनाये और फिर उस कमरे से बाहर ले गई। उसे अपने शयनागार में ले जाकर उसने लिटा दिया। उसको थोड़ी ब्रांडी पिलाई और सोने के लिए कहने लगी।

इस घटना से मैना रातभर सो नहीं सकी। इस घटना के उपरान्त तो मैना ने अपने मन में निश्चय कर लिया था कि वह रमा को इस विवाह-बन्धन से मुक्त कर उसे कहीं अन्यत्र विवाह करने के लिए सहायता देने का यत्न करेगी।

: 3 :

दिन निकलते ही उसने शिमला में अपने पति को टेलीफोन किया और पूर्ण घटना बता दी। उसने उसको कहा कि वह तुरन्त दिल्ली आ जाय, जिससे कि एक-दो दिन में ही इस समस्या का कोई हल निकाला जा सके।

महानारायण अगले दिन प्रातः काल दिल्ली पहुँच गया।

उस घटना के बाद प्रातः कमल उठा और नित्य-कर्म से निवृत्त हो अपनी माँ अथवा रमा से कुछ कहे बिना कोठी से गया तो फिर लौटकर नहीं आया। रात-भर मैना और रमा बहुत देर तक उसकी प्रतीक्षा करती रहीं।

अगले दिन महानारायण आया तो मैना ने एक बार पुनः उसको पूर्ण घटना का विवरण सुना दिया। महानारायण के मस्तिष्क में पहले ही कमल के यह कहने पर कि उसने भ्रूण हत्याएँ एवं हत्याएँ करवाई हैं, हलचल मची हुई थी। अब अपनी विवाहिता पत्नी का गला घोंटकर हत्या करने की बात सुन वह अपने मन में यह निर्णय कर बैठा कि इस पातकी का डंक निकालकर इसे सर्वथा अयोग्य कर देना चाहिए। इसके लिए वह योजना बनाने लगा।

मैना बोली, "मैं समझती हूँ कि आप इस लड़की को पुनः विवाह की स्वीकृति दिलवा दें।"

"क्या होगा इससे ?"

"इससे यह पुनः विवाह कर लेगी। इसमें मैं सहायता दे दूंगी।"

"यह तो फिर विचार कर लेंगे। मैं पहले इस पापी को सीधा करने का यत्न करना चाहता हूँ।"

"क्या करियेगा ?"

"अभी बता नहीं सकता। तनिक आराम करने दो।" इतना कह वह स्नानादि में लग गया। कमल के पास दो मोटरें थीं। एक तो वह जब गया था तो अपने साथ ले गया था। दूसरी गैरेज में खड़ी थी। महानारायण ने मोटर निकलवाई और सीधा एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वकील के पास गया। उसके द्वारा उसने जिस-जिस बैंक में कमल का हिसाब था, उसमें उसने एकाउण्ट-फ्रीज करने का नोटिस दे दिया। उसी दिन उसने कमल के रुपया खर्च करने पर प्रतिबन्ध का दावा दायर कर दिया। इंजंक्शन का नोटिस निकलवाकर वह सीधा दिल्ली के एक्जीक्यूटिव इंजीनियर से मिला और उसके साथ एक षड्यन्त्र किया। रायसाहब गोपीचन्द से भी राय की गई और निरंजनदेव को षड्यन्त्र में सम्मिलित किया गया।

निरंजन को यह विदित नहीं था कि कमल ने रमा के साथ किस प्रकार का दुर्व्यवहार किया है। उस रात की दुर्घटना दो व्यक्तियों महानारायण और मैना देवी के अतिरिक्त किसी को विदित नहीं थी। एक्जीक्यूटिव इंजीनियर को तो महानारायण ने केवल यह कहा कि कि उसका लड़का उससे बागी हो गया है और वह उसकी सम्पत्ति को नष्ट कर रहा है। इस कारण वह उसको शिक्षा देना चाहता है। इस विचार से एक योजना बना ली गई।

योजना रायसाहब गोपीचन्द की थी। उसने निरंजनदेव से कहा, "हमको विश्वस्त सूत्र से विदित हुआ है कि कमल आज तुम्हें रिश्वत लेते हुए कपड़वाने का यत्न करेगा। हम चाहते हैं कि ऐसे दुष्ट व्यक्ति को सीधा किया जाय। मैं तुमको सावधान करने आया हूँ। वह आज अपने बिल का रूपया लेने के लिए आएगा। उस बिल में तुम उन नियमों के आधार पर आपत्ति कर देना जो हमने इसके लिए बनाये हुए हैं। वह तुमको कुछ ले-देकर बिल पास कराने तथा चैक बनाने के लिए कहेगा। तुम इनकार करते जाना, कुछ लेना नहीं। सामने की कुर्सी पर मैजिस्ट्रेट बैठा होगा। वह ठीक जब तुम इनकार कर रहे होगे उसको पकड़कर ले जाएगा। देखो, अगर तुमने तनिक भी असावधानी का परिचय दिया तो तुम हवालात में होगे!"

निरंजनदेव मुख देखता रह गया। गोपीचन्द ने पुनः कहा, "देखो, यह है हमारा मतलव, जब हम कहते हैं कि हममें से हर एक सबके लिए है और सब एक के लिए हैं।"

निरंजनदेव सतर्क हो गया। कमल का उसकी पत्नी को पथभ्रष्ट करने के प्रयास के कारण उसके प्रति उसके मन में किंचित् भी सहानुभूति नहीं थी। इस कारण यह नेक काम करने के लिए वह तैयार हो गया।

गोपीचन्द के जाने के कुछ समय के बाद एक अपरिचित व्यक्ति आकर निरंजनदेव के सम्मुख कुछ दूरी पर रखी एक बेंच पर बैठ गया। वहाँ पर एक क्लर्क बैठा काम कर रहा था। उस अपरिचित नवागन्तुक ने कहा, "मुझे एक्जीक्यूटिव इंजीनियर से मिलना है, किन्तु मैं आधा घण्टा पहले आ गया हूँ। क्या मैं यहाँ बैठ सकता हूँ ?"

क्लार्क ने बैठने की स्वीकृति दे दी। वह सज्जन बैठे तो निरंजनदेव सतर्क हो गया। कुछ दर में कमलनारायण आ गया और वह सीधा निरंजनदेव की मेज के सम्मुख जाकर बैठ गया। साधारण अभिवादन के बाद कमलनारायण ने अपने तीन बिलों के विषय में पूछा। निरंजनेदव ने रजिस्टर देखकर कहा, "उनमें से अभी तक एक ही चैक हो पाया है। शेष दो अभी रायसाहब के पास पड़े हैं। एक बिल में दस हजार रोकने के लिए कह दिया गया है। वह केवल आठ हजार के लिए ही पास हो सकता है।"

"क्यों, आज ऐसी क्या बात हो गई है ? देखिए निरंजनदेवजी! मुझे आज रुपयों की बहुत जरूरत है। अभी इसको निकलवा दीजिये और यह देखिये!" इतना कह उसने सौ-सौ के दस नोट निकालकर प्रथा के अनुसार फाइल की तह के नीचे घुसेड़ने का यत्न किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरंजनदेव ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहने लगा, "देखिये, मैंने आपको कई बार कहा है कि मेरे यहाँ यह बात नहीं चलती। आप यहाँ से तुरन्त चले जाइये, अन्यथा मैं आपका यह बिल भी रोक दूँगा।"

"भैया, देखो तो सही मैं क्या दे रहा हूँ। आज मान जाओ, अगली बार चाहो तो देर कर देना। तुम बिल मुझको दिखाओ। मैं रायसाहब से नीचे लिखवा लेता हूँ।"

"क्या लिखवा लायेंगे ?"

"यही कि बिल पास होना चाहिए अन्यथा काम रुक जाएगा।"

"मैं यथानियम उनके पास बिल भिजवा दूँगा।"

"परन्तु मुझे तो अभी रूपयों की आवश्यकता है।" इतना कह उसने अपनी जेब से रूपयों की एक गड्डी और निकाली। निरंज़नेदव ने तुरन्त अपने चपरासी को आवाज दे दी।

चरपासी तो नहीं आया, तुरन्त सामने की बेंच पर बैठा व्यक्ति जो मैजिस्ट्रेट था, सामने आ गया और उसी समय दो कांस्टेबल भी हाथ में हथकड़ी लिये हुए वहाँ आ गये। उस आदमी ने कमल का वह हाथ पकड़ लिया जिसमें उसने नोट पकड़े हुए थे। कमल पसीना-पसीना हो गया। इसी समय एक्जीक्यूटिव इंजीनियर अपने कमरे से बाहर निकला और कमल के बयान ले लिये गए। उसके साथ ही वहाँ बैठे क्लर्कों के भी बयान लिये गए। फिर हथकड़ी लगाकर कमल को हवालात में ले जाया गया। वहीं पर उसको उसके पिता द्वारा जारी कराये इंजंक्शन का नोटिस मिला। वह यह सब देख, एवं विचारकर सन्न रह गया।

जब कमल ने ठेकेदारी का काम करने के लिए अपने पिता से रूपया माँगा तो हिसाब ठीक रखने के लिए और कारोबार में अपना अधिकार रखने के लिए महानारायण ने एक प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी बना ली थी। उसमें राधा, राधा का पिता, महानारायण की पत्नी मैनादेवी, कमलनारायण और कमलनारायण के मामा के पाँच-पाँच हिस्से रखकर शेष हिस्से अपने पास रख कम्पनी बना दी। कमलनारायण को कम्पनी का मैनेजिंग डायरेक्टर बना दिया। पाँच लाख को पाँच-पाँच सौ के एक हजार हिस्सों में बाँट दिया गया था। प्रति हिस्सा दो-दो सौ रूपया नकद और शेष माँग पर देने के लिए रख दिया था।

मैनादेवी की ओर से यह प्रार्थना की गई थी कि 'रेनबो कन्स्ट्रक्शन कम्पनी' के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री कमलनारायण ने दो वर्ष से कम्पनी का बैलेंस शीट कम्पनी के सम्मुख प्रस्तुत नहीं किया और रुपये का दुरूपयोग कर रहा है। अतः उसको कम्पनी का कार्य बन्द करने का आदेश दिया जाये। जब तक वह पिछले दो वर्षो का हिसाब पास नहीं करवा लेता, उसको बैंक से रूपया निकलवाने अथवा किसी प्रकार के बिल वसूल करने अथवा कम्पनी के नाम से कुछ भी खरीदने अथवा बेचने से मना कर दिया जाय।

अस्थायी इंजंक्शन जारी हो गया और कमलनारायण को आदेश दिया गया कि वह तीन दिन के भीतर न्यायालय में उपस्थित होकर अपना स्पष्टीकरण प्रस्तुत करे।

महानारायण यह नोटिस देने के लिए स्वयं अदालत में पहुँच गया। तीसरे दिन कमलनारायण के वकील ने सब-जज की कोर्ट में उपस्थित होकर बयान दिया कि कमलनारायण एक अन्य अभियोग में फँस जाने के कारण हवालात में है। इस कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदालत का आदेश पूरा करने में वह असमर्थ है।

इस पर अदालत ने आदेश किया कि यह इंजंक्शन तब तक लागू रहे कि जब तक मैनेजिंग डायरेक्टर पिछले दो वर्षों का हिसाब-किताब कम्पनी में पास करा अपने पर वोट ऑफ कॉन्फ़िडेन्स पास नहीं करा लेता।

परिणाम यह हुआ कि सब काम ठप्प हो गया। सरकारी कार्यालयों में सब-जज का आदेश भेज दिया गया।

: 4 :

जिस दिन एक्जीक्यूटिव इंजीनियर के कार्यालय में कमलनारायण रिश्वत देता हुआ पकड़ा गया उसके दूसरे दिन सभी समाचार-पत्रों में यह सनसनीखेज समाचार प्रकाशित हो गया।

समाचार इस प्रकार था—कमलनारायण नामक एक प्रसिद्ध ठेकेदार एक्जीक्यूटिव इंजीनियर के क्लर्क निरंजनदेव को रिश्वत देने का प्रयत्न करता हुआ रंगे हाथ पकड़ लिया गया। कहा जा रहा है कि वह ठेकेदार अपना झूठा बिल पास कराने के लिए निरंजनदेव को एक हजार रूपया रिश्वत देना चाह रहा था। निरंजनदेव का कथन है कि यह व्यक्ति उसके पास पहले भी आया करता था और सदा उससे इस प्रकार के झूठे बिल पास कराने के लिए आग्रह किया करता था और उसके लिए वह रिश्वत देने का यत्न किया करता था। निरंजनदेव उसके इन दुष्प्रयत्नों की रिपोर्ट अपने उच्चाधिकारी को देता रहता था। आज की पूर्ण घटना और मैजिस्ट्रेट तथा पुलिस को बुलाने की घटना एक्जीक्यूटिव इंजीनियर की इच्छा और कथन के अनुसार हुई है। निरंजनदेव को भी इस घटना के विषय में पहले से कुछ ज्ञान नहीं था। कमलनारायण को आज मैजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित कर पुलिस रिमाण्ड लेने का यत्न करेगी।

नारायणदास ने भी यह समाचार पढ़ा। पढ़ते ही वह पूरी बात जानने के लिए निरंजनदेव के पास गया और श्यामा माया को साथ लेकर रमा से मिलने के लिए गई।

निरंजनदेव प्रातः का अल्पाहार कर स्वाध्याय करने बैठा था कि नारायणदास आ गया। उसके हाथ में समाचारपत्र देख वह समझ गया कि वह समाचार पढ़कर उसके विषय में जानकारी करने के लिए आया है।

नारायणदास ने बैठकर समाचारपत्र उसे दिखाते हुए कहा, "यह समाचार पढ़ा है ?"

"जी, पढ़ा है।"

"पर तुम तो अब लेन-देन करने लगे थे ?"

"चाचाजी! बात यह हुई है कि वह मुझे फँसाने लगा था। उसने स्वयं ही मैजिस्ट्रेट के पास जाकर यह रिपोर्ट की थी कि मैं रिश्वत लिये बिना उसका काम नहीं करता और मुझे रंगे हाथ पकड़वाने के लिए उसने मैजिस्ट्रेट को हमारे कमरे में पहले ही भेज दिया था। यह तो ईश्वर की कृपा समझिये कि मुझे मैजिस्ट्रेट के कमरे में आने पर कुछ सन्देह हो गया था। और फिर मैं पेशाब करने के लिए गया तो लैबेटरी में दो कांस्टेबल हाथ में हथकड़ी लिये छिपे दिखाई दिये। मैं सतर्क हो गया। जब कमलनारायण आया तो मेरी अन्तरात्मा मुझे कहने लगी कि इसने ही मुझे फँसाने का यत्न किया है। वह जब मेरी फाइल के नीचे रूपया रखने लगा तो मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और उसको डाँट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। इस पर उसने और रुपये देने चाहे। मैंने चपरासी को आवाज दी कि उसको पकड़कर कमरे से बाहर निकाल दे। इस पर मैजिस्ट्रेट ने उसको पकड़ लिया।"

"पर समाचारपत्र में लिखा है कि एक्जीक्यूटिव इंजीनियर ने टेलीफोन कर मैजिस्ट्रेट को बुलाया था ?"

"यह इस प्रकार कि मैजिस्ट्रेट ने जब एक्जीक्यूटिव इंजीनियर से फोन पर कहा कि वे अपराधी को पकड़ना चाहते हैं तो उसने कह दिया कि वह आकर पकड़ सकता है। टंडन तो मुझे ही पकड़वाने में प्रसन्न था। कारण यह है कि मुझ पर सदा सन्देह करते रहते हैं कि मैं धर्मभीरू होने के कारण किसी दिन सबको पकड़वा दूँगा।"

"अब आप देख लीजिये। ईश्वर-प्रेरणा पर बात बिलकुल विपरीत हो गई है।"

"विश्वास नहीं होता। देखने में तो यही आया है कि रिश्वत देने वाले रिश्वत लेने वालों को पकड़वाया करते थे, यहाँ तो उलटी बात हो गई है।"

"हाँ, जमाना बदल गया है चाचाजी! जब देने वाले और लेने वाले दोनों ही बेईमान हों तो कोई भी पकड़ा जा सकता है। परन्तु इस समय तो एक ही दोषी था और वह पकड़ा गया है।"

फिर निरंजनदेव ने बात की दिशा को बदलते हुए नारायणदास से पूछा, "रमा बहिन कैसी हैं ?"

"कह नहीं सकता। उसकी माँ उसके पास गई हैं।"

नारायणदास ने अधिक बात नहीं की और चला गया। उसके बाहर निकलते-निकलते ही रायसाहब गोपीचन्द के साथ महानारायण आ गया। नारायणदास ने उसको देखकर अनुमान लगाया कि महानारायण निरंजदेव को अपने लड़के के अनुकूल करने के लिए आया होगा। महानारायण का विचार था कि कमल के पकड़े जाने का समाचार पढ़कर और कमल की करतूत से परिचित होने पर नारायणदास प्रसन्न होगा। दोनों को जब वास्तविक स्थिति का ज्ञान हुआ तो वे विस्मय करने लगे।

महानारायण ने नारायणदास से पूछा, "आप यहाँ कैसे आये ?"

"निरंजनदेव अपना ही अजीज है। इससे पूरा समाचार जानने के लिए आया था।"

"आपको अपनी लड़की से मिले कितने दिन हो गये हैं ?"

"मुझे तो उससे मिले दस-बारह दिन हो गये हैं। चार दिन हुए, रमा की माँ गई थी। आज भी यह समाचार पढ़कर उससे मिलने के लिए गई हुई है।"

"तो आप कुछ नहीं जानते ?"

"क्या नहीं जानते ?"

"यही कि रमा....." महानारायण कहते-कहते रुक गया। फिर बात बदलकर कहने लगा, "मैं रमा को अपने साथ शिमले ले जाऊँगा। कमल तो उसको रख नहीं सकेगा।"

"रायसाहब! उसकी जमानत तो आज ही हो जानी चाहिए।"

महानारायण ने नारायणदास की आँखों में देखते हुए कहा, "मैं तो चाहता हूँ कि कम-से-कम पन्द्रह दिन तक उसकी जमानत ही न हो।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि मैं उसको बिलकुल तबाह कर देना चाहता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारायणदास भौंचक्का हो मुख देखता रह गया। वह रायसाहब गोपीचन्द को जानता था। उसने उसकी ओर देखकर पूछा, "आप क्या समझते हैं ?"

"इंजीनियर साहब ठीक फरमा रहे हैं।"

महानारायण ने कहा, "आप पहले रमा की खबर ले लीजिए। उसके बाद आपकी इच्छा हो तो कमल की जमानत लेकर अदालत में आ जाइयेगा। मैं आपकी जमानत का विरोध करूँगा।"

नारायणदास समझ गया कि राम के साथ कुछ दुर्व्यवहार हुआ हैं। अतः वह यह कह कि वह रमा के पास जा रहा है, वहाँ से चला गया।

उसके जाने के बाद गोपीचन्द ने एक और रहस्योद्घाटन करते हुए कहा, "लाला नारायणदास भी एक-दो दिन में बुरी भाँति फँसने वाला है। इसको पता नहीं, पर मैं जानता हूँ कि मुकद्दमा खुफिया पुलिस के हाथ में है। जाँच का काम लगभग समाप्त हो चुका है।"

निरंजनदेव ने उत्सुकता से पूछा, "क्या बात है रायसाहब ?"

गोपीचन्द मुस्करा रहा था। उसने उत्तर नहीं दिया। निरंजनदेव समझ गया था कि पछिले दिन कार्यालय में हुई घटना कमल के पिता की रुचि के विपरीत नहीं है। कदाचित् वह भी इसको हवालात कराने में सम्मिलित हैं। वह स्वयं भी कमल के नलिनी के प्रति व्यवहार को स्मरण कर रहा था।

महानारायण ने पूछा, "नारायणदास से आपका क्या सम्बन्ध है ?"

"वे मेरे पिताजी के बहुत गहरे मित्र हैं। मैं जब दिल्ली में काम ढूँढने के लिए आया था तो इनके पास ही आया था। चार मास तक मैं इनके क्वार्टर पर रहा हूँ। मैं रमा को अपनी छोटी बहिन मानता हूँ।"

"विवाह के बाद कभी रमा से मिले हो ?"

"मिला नहीं। इस पर भी कमल के उसके प्रति तिरस्कार की बात जानता हूँ। चार दिन हुए, रमा की छोटी बहिन माया मिली थी, उसने कुछ इस प्रकार का संकेत दिया था।"

"अब तो इससे भी भयंकर बात हो गई है। कमल ने चार दिन हुए, रमा का गला दबाकर उसकी हत्या कर देने का यत्न किया था। यह तो आकस्मात् रमा की सास वहाँ पहुँच गई। अन्यथा वह तो बेचारी समाप्त ही हो गई थी।"

निरंजनदेव मुख देखता रह गया। महानारायण ने बताया, "रमा दो दिन से तो खाट से उठ नहीं सकी। आज कुछ ठीक प्रतीत होती है। मैं ऐसे पापी लड़के को फाँसी दिलवाकर छोडूंगा।"

"किन्तु वह तो आपका इकलौता बेटा है ?"

"तो क्या इकलौते बेटे मरते नहीं हैं ? मैंने तो अभी से यह समझकर कि वह मर गया है, सन्तोष कर लिया है। ऐसे सौ दर्जन पुत्रों का पिता होने से तो निःसन्तान रह जाना अच्छा है।"

निरंजनदेव चुप रहा। गोपीचन्द ने कहा, "आफिस के सब गवाह महानारायण की बात का समर्थन कर रहे हैं। आपके विषय में कुछ सन्देह था सो हम आपसे बात करने के लिए आये हैं।"

"मैं ऑफिस वालो की इच्छा और निर्णय के विपरीत कैसे जा सकता हूँ ? आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसा कहेंगे वैसा करूँगा।"

"सुना है, कमल का आपकी पत्नी से विशेष प्रेम हैं, इस कारण सन्देह हो गया था।"

"हाँ, वह उसकी खोपड़ी की मरम्मत करने लिए लाहौर से गामाशाही जूते खरीदने के लिए गई हैं।"

"तो बात ठीक है। जूते तो विशेष प्रेमवालों के लिए ही खरीदे जाते हैं।"

"जी, परन्तु यह सूचना आपको किसने दी हैं ?"

"कमल ने किसी को बताया होगा, उसने हमें बता दिया है।"

"छोड़िये इस बात को। नलिनी तो उससे इतनी रुष्ट है कि यदि उस दिन रमा का विवाह न होता तो वहीं पर उसकी जूतों से मरम्मत कर देती।"

"हम यह चाहते हैं कि आप आज थाने में न जाएँ।"

"परन्तु पुलिसवालों ने बुलाया है ?"

"यह सब हम निपट लेंगे। महानारायणजी उसकी कम्पनी का चार्ज आज कम्पनी के एक अन्य सदस्य को दिलाना चाहते हैं। इसके लिए कमल के मामा को बुलाया है। उसके आने तक कमल के हवालात में रहने का प्रबन्ध किया जा रहा है। एक और भी मुकद्दमा चल रहा है। यदि इधर से जमानत हो भी गई तो उसमें उसको हवालात में भिजवा देंगे।"

"यदि पुलिसवाले मान जावें तो मैं वहाँ नहीं जाऊँगा।"

"आप आफिस आ जाइये। वहाँ से टंडन साहब टेलीफोन कर देंगे। फिर जैसा ठीक समझा जाएगा, वैसा कर लेंगे।"

निरंजनदेव भोजन कर आफिस जाने ही वाला था कि नारायणदास अपनी पत्नी और छोटी पुत्री के साथ आ गया। उसने कहा, "महानारायणजी क्या कहते थे ?"

"वे कहते थे कि उनके लड़के ने अपनी पत्नी के साथ बुरा व्यवहार किया है। इस कारण उसे दो-तीन वर्ष की कैद कराये बिना नहीं मानेंगे।"

"निरंजन! वे ठीक कह रहे हैं। कमल तो रमा की हत्या ही करने वाला था।"

"हाँ, उन्होंने मुझे बताया है।"

"और तुम क्या कह रहे हो ?"

"जैसा आप कहें।"

"रमा कहती है कि हमें उसके श्वसुर साहब को सहयोग देना चाहिए।"

"यदि आपकी भी यही सम्मति है तो मैं आपके कथन से बाहर नहीं जा सकता।"

उस दिन निरंजनदेव तो थाने में नहीं गया। कमल को मैजिस्ट्रेट के सम्मुख उपस्थित किया गया। उसने कमल से एक लाख रुपये की जमानत माँगी। कमल के मित्र ताराचन्द और एक अन्य व्यक्ति लाला ओंकारनाथ इसके लिए आये हुए थे। वे तो दस-दस हजार की जमानत का प्रबन्ध करके आये हुए थे। परन्तु मैजिस्ट्रेट ने दस हजार की जमानत को पर्याप्त नहीं समझा। एक लाख की जमानत के लिए कमल ने अपने पिता की ओर देखा तो महानारायण ने कह दिया, "इतनी बड़ी जमानत मैं नहीं दे सकता।"

"आप तो स्वयं जामिन बन सकते हैं।"

"नहीं, अपने विभाग के मुकद्दमे में मैं तुम्हारा जमानती नहीं बन सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु पिताजी! कल माँ ने कम्पनी पर इंजंक्शन लगवा दिया है।"

"हाँ, लगवाया तो है।"

"क्यों ?"

"वह कम्पनी का हिसाब देखना चाहती है।"

"वह हिसाब देखने का उनका क्या अधिकार है ?"

"वह कम्पनी की हिस्सेदार है।"

"किन्तु कम्पनी में उनका रूपया तो था नहीं ?"

"तुम्हारा अपना कितना है ?"

"सब मेरा ही तो है!"

"कौन-सा व्यापार करके वह दो लाख कमाया था ?"

"परन्तु पिताजी की जायदाद का मालिक पुत्र नहीं होता क्या ?"

"हो सकता है, परन्तु मरने के बाद। वह भी यदि वसीयत में हटा न दिया याए तो।"

Central Library
167950
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Ha

कमल मुख देखता रह गया। इस पर महानारायण बोला, "तुमने भी तो मुझसे रूपंया उधार लेकर ही कम्पनी में डाला था। उस उधार का प्रोनोट लिखा हुआ है। अभी तक तो तुमने उसका ब्याज भी नहीं दिया है।"

कमल को अपने पिता की बात स्मरण हो आई। उसने कहा था, तुमने यदि एक वर्ष के भीतर मुझे पोता न दिया तो मैं तुमको कहीं का भी न रखूँगा। इसको स्मरण कर उसने कहा, "आपने तो मुझे पोता पैदा करने की एक वर्ष की अवधि दी थी ?"

"और तुमने अपनी पत्नी से कह दिया कि वह जहाँ से चाहे ले आयें। तुम उसके साथ अपनी जिन्दगी तबाह नहीं कर सकते। बरखुरदार! अब तुम जाओ। जरा हवालात में बैठकर अपनी करतूत पर विचार करो। हम अगली तारीख को मिलेंगे।"

तीसरे दिन ताराचन्द उससे मिलने के लिए जेल में गया और वहीं पर उसने कमल को जज का फैसला सुनाया। उसे सुनकर कमल के मुख से निकल गया, "अर्थात् सब काम बन्द हो जाएँगे ?"

"हाँ, पिछले दो दिन तो मैं जाकर काम देखता रहा हूँ। आज महानारायणजी ने कह दिया कि यदि मैं वहाँ गया तो पुलिस के हवाले कर दिया जाऊँगा। आपके मामा तोताराम वहाँ आ गये हैं। परन्तु वे भी काम को चालू रखने का विचार नहीं करते। वे किसी समय आपसे मिलने के लिए आएँगे। तब यदि आप उन्हें अपने पक्ष में कर लें तो काम कुछ सीमा तक बन सकता है। वह अपनी बहिन को कहकर आपके पक्ष में ला सकता है।"

कमलनारायण की कमर तो एक ही झटके में टूट गई थी। परन्तु वह जब तक यह न जान ले कि उसके भावी जीवन का क्या होगा, तब तक अपनी ओर से किसी प्रकार का प्रस्ताव रखना नहीं चाहता था। इतना तो वह जान गया था कि उसके पिता ने ही उसको तंग करने के लिए कम्पनी का झगड़ा खड़ा किया है। यद्यपि दफ्तर में पकड़े जाने के विषय में वह पूर्ण जिम्मेवारी निरंजनदेव की समझता था। उसकी समझ में कुछ इस प्रकार आया कि नलिनी से बातचीत का बदला लेने के लिए ही निरंजनदेव ने यह सब किया है। इस पर भी वह देख रहा था कि उसके पिता को भी उसके पकड़े जाने पर प्रसन्नता हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह लाला तोताराम के मिलने के लिए आने की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था। तोताराम अगले दिन ही उससे मिलने के लिए आ पाया। उसने कमल के पास बैठते हुए कहा, "कमल! कम्पनी की मैनेजिंग डायरेक्टरी छोड़ना चाहते हो अथवा नहीं ?"

"क्या करूँगा छोड़कर ?"

"जो मन में आये करना। तुम बी० ए० तक पढ़े हो, कहीं नौकरी कर सकते हो।"

"नौकरी कितने रुपये महीने की ? डेढ़ सौ की ? इतना तो मैं नित्य यों ही खर्च कर देता था।"

"ठीक है पराई कौड़ी पर ही दाता बन रहे थे न ? अपनी कमाई में से जितना खर्च कर सको करना।"

"मैं तो कम्पनी की सम्पत्ति अपनी ही समझता था।"

"तो गलत समझते थे न ? तुम तो केवल एक लाख साठ हजार के मालिक थे। वह भी उधार लिया हुआ था।"

"पिताजी ने मुझे बहुत धोखा दिया है।"

"वह तो हो गया। अब तो जो परिस्थिति है उसे समझने का यत्न करो। तुम्हारी माँ ने तुम पर कम्पनी का हिसाब दिखाने के लिए दावा किया है। मैं तुम्हारे कार्यालय में हिसाब देख आया हूँ। पूँजी में से एक लाख रूपया समाप्त हो चुका है। दो वर्ष के लाभ की रकम भी तुमने सब खत्म कर डाली है। जिस दिन तुम यहाँ से छूटोगे उसी दिन पुनः पकड़ लिये जाओगे और यहाँ से बरी होने पर भी अमानत में खयानत करने के अपराध में पांच वर्ष के लिए जेल में भेज दिये जाओगे।"

"अभी तक तो तुम इस मुकद्दमे की जमानत का प्रबन्ध भी नहीं कर पाये हो। तुम्हारे मित्र सेशन कोर्ट का दरवाज़ा खटखटा चुके हैं। अब वे हाईकोर्ट में जाने का यत्न कर रहे हैं।"

"मामाजी! आप ही मेरी जमानत का प्रबन्ध कर दीजिए।"

"मेरी सामर्थ्य एक लाख की जमानत देने की नहीं है।"

"तो कहीं से जमानत का प्रबन्ध कर दीजिए। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि भागूँगा नहीं।"

"छोड़ो इस बात को। जो कुछ मैं कर नहीं सकता, उसके लिए मगजपच्ची करने की जरूरत नहीं। मैं तो तुम्हें यह कहने के लिए आया था कि मैनेजिंग डायरेक्टरी से त्यागपत्र दे दो। तब कोई अन्य मैनेजिंग डायरेक्टर चुन लिया जाएगा। इससे काम तो चालू हो जाएगा ?"

"मुझे अपने वकील से राय कर लेने दीजिए।"

"हाँ कर लो।"

"क्या आप मैनेजिंग डायरेक्टर बनना चाहते हैं ?"

"नहीं, मैं तुम्हारी भांति किसी दूसरे के रुपये से कम्पनी का हिस्सेदार भी नहीं बनना चाहता।"

"तो फिर कौन बनेगा ?"

"भगवान जाने क्या होगा ? मैं तो तुम्हारा विचार कर रहा था। तुमको इस झगड़े से बाहर कर मैं अपने काम पर लौट जाना चाहता हूँ।"

"आप कल आइये। मैं आज अपने वकील को बुलाकर राय कर लूँगा।"

"मैं कल आने का यत्न करूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 5 :

रिश्वत देने का यत्न करने पर पकड़े जाने के अपराध में कमल को दो वर्ष का कठोर कारावास का दण्ड मिला। अमानत में खयानत करने के अपराध में तीन वर्ष का कठोर कारावास का दण्ड हुआ। जितने रुपये का गबन हुआ था, उतना उसके हिस्से में से कम्पनी में कम कर लिया गया। कम्पनी दिवालिया हो गई और पूर्ण घाटा कमल के हिस्सों से वसूल किया गया। कम्पनी ने जो सरकारी काम लिये हुए थे, वे किसी अन्य को दे दिये गए।

इन सब प्रकार के मुकद्दमों का फैसला होने में छः मास लग गये। रमा के विषय में विचार किया गया। यह यत्न किया गया कि रमा का दूसरा विवाह कर दिया जाय। परन्तु न तो रमा ने स्वीकार किया और न ही कमल ने अपना अधिकार छोड़ा।

इस समय एक अन्य घटना घटी। अण्डेमान में केन्द्रीय सरकार की ओर से शासन चलता था। दो वर्ष पूर्व, वहाँ के हिसाब-किताब में कुछ गड़बड़ का सन्देह हुआ तो ऑडिटर-जनरल ने नारायणदास के साथ दस क्लर्कों की एक टोली को वहाँ का हिसाब जाँचने के लिए भेजा था। उस द्वीप का गर्वनर उस गड़बड़ के लिए उत्तरदायी था और उसने हिसाब की जाँच करने आई हुई टोली को खूब खिलाया-पिलाया और ज़ांच की रिपार्ट अपनी इच्छानुसार लिखवाकर खूब तोहफे दिये।

किसी ने इस मण्डली के विरूद्ध शिकायत कर दी। इस पर ऑडिटर-जरनल ने स्वयं सब कागज़ मँगवाकर जाँच की। कुछ लोगों को अण्डेमान से दिल्ली बुलवाकर पूछताछ की गई। परिणामस्वरूप वहाँ के गवर्नर को वाइसराय ने डिसमिस कर दिया। वहाँ जाँच करने जो मण्डली गई थी, उसके सब सदस्यों को रिटायर होने के लिए विवश किया गया। इस प्रकार नारायणदास को नौकरी से छुट्टी मिल गई। नारायणदास ने दिल्ली की एक क्लाथ-मिल में मैनेजर के रूप में नौकरी कर ली।

जर्मनी का दूसरा युद्ध आरम्भ हो गया। नारायणदास अब सब्जमण्डी में एक मकान में रहता था। सरकारी नौकरी में कुछ जमा किया हुआ धन था। इधर मैंनेजरी में भी अच्छा वेतन मिलता था। जीवन सुगमता से चलता था।

कमलनारायण के कैद हो जाने के बाद रमा पुनः अपने पिता के घर में आकर रहने लगी थी। उसने पुनः कॉलेज में भरती हो पढ़ना आरम्भ कर दिया था। माया भी अब कॉलिज में चली गई थी।

रमा को निरंजनदेव से गिला था। वह अब भी यही समझती थी कि यदि वह मान जाता तो उसका विवाह उसके साथ ही होता और वह सुखी होती। माया को रमा का यह विचार गलत लगता था। उसने रमा को कई बार समझाया था कि निरंजनदेव का इसमें कोई दोष नहीं है। भूल तो पिताजी से हुई है। यदि वे समय पर बात करते तो विवाह वहीं हो जाता।

इन दिनों निरंजनदेव और नारायणदास की मेल-मुलाकात भी समाप्त हो गई थी। नारायणदास निरंजनदेव को ही सब मुसीबत की जड़ समझता था। श्यामा इस विषय में उससे प्रमाण के लिए पूछती तो वह कह देता कि वह उनके घर पर अपशकुन आया था। इसी कारण वह मुसीबत में फँसा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस परिवार में से यदि कभी माया और सतीश, निरंजन या उसकी पत्नी से मिलते तो हँसकर ही मिला करते थे। कभी नलिनी यदि माया से कहती कि उसका रमा से मिलने के लिए चित्त करता है तो माया इसकी व्यर्थता बता देती। वह कह देती, रमा उससे मिलना पसन्द नहीं करती है। पिताजी भी उन लोगों से सम्बन्ध रखना नहीं चाहते। उनकी माँ चाहती है परन्तु वे पिताजी की इच्छा का उल्लंघन नहीं कर सकती।

इस प्रकार समय व्यतीत हो रहा था। नलिनी के लड़का पैदा हुआ था और अब वह अपने पति के पास नई दिल्ली आकर रहने लगी थी। निरंजनदेव की नौकरी स्थायी हो गई थी। इसके साथ ही उसके वेतन में भी वृद्धि हो गई थी। उसको अभी भी आफिस में रिश्वत मिलती थी, चार-पाँच सौ रुपया वेतन के अतिरिक्त आय हो जाती थी। यह आय वह सर्वथा पृथक् रखता रहा था। दो वर्ष में बारह हजार रुपये के लगभग उसकी आलमारी में जमा हो गये थे। एक दिन उसने वह धन आर्यसमाज कन्या पाठशाला को गुप्तदान के रूप में दे दिया। रायसाहब गोपीचन्द आर्यसमाज का प्रधान था।

निरंजनदेव ने एक दिन उससे कहा कि उसे पास एक मद में बारह हजार रुपये जमा हैं, उन्हें वह कन्या पाठशाला के लिए गुप्तदान के रूप में ले लें। गोपीचन्द विस्मय से निरंजनदेव का मुख देखने लगा। उसने कहा, "निरंजनदेव! यह पाठशाला रजिस्टर्ड संस्था हैं। यदि इसमें प्रकट रूप में दान दिया जाय तो इन्कमटैक्स में कटौती हो जायेगी।"

"मैं यह जानता हूँ। परन्तु जो इसको दे रहे हैं वे अपना नाम प्रकट करना नहीं चाहते।"

"तो कहीं की अण्डरहैंड इन्कम हैं ?"

"सम्भव है।"

"कहीं तुम्हारी ही आय तो नहीं है ?"

"मेरी इतनी आय कहाँ से हुई है! ढाई सौ रुपया मासिक का क्लर्क बारह हजार रुपया दान नहीं दे सकता।"

"वह तो मैं जानता हूँ। परन्तु तुम्हारी अतिरिक्त आय भी तो हो सकती है ?"

"मेरी हुई या किसी अन्य की हुई, इसमें क्या अन्तर पड़ता है ?"

"कुछ नहीं। कन्या पाठशाला को तो कुछ अन्तर नहीं पड़ता, पर मैं विचार कर रहा था कि तुमको अन्तर पड़ता है कि नहीं।"

"मुझे भी कोई अन्तर नहीं पड़ता। मैंने यह रुपया अपने प्रयोग के लिए कभी नहीं लिया। पिछले दो वर्ष में मेरे पास यह अमानत के रूप में पड़ा था। सो यदि आप ले लें तो मेर बोझ हल्का हो जायेगा।"

गोपीचन्द को आज विदित हुआ कि निरंजनदेव किस मिट्टी का बना हुआ है। उसने कहा, "तो फिर तुम वह रुपया लेते ही क्यों हो ?"

"क्योंकि कोयले की खान में सफेद कपड़ा पहनकर विचरा नहीं जा सकता। मैंने यत्न किया है कि कपड़े भले ही काले हो जाएँ, परन्तु शरीर काला न होने पाये। अभी तक तो अपनी इस योजना में मैं सफल ही हुआ हूँ।"

"इस आय का ज्ञान तुम्हारी पत्नी को है कि नहीं ?"

"उसको ज्ञान है और यह धन उसके पास ही रखा हुआ है।"

"तो फिर उसने तुमको दान करते हुए मना नहीं किया ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह भला क्यों मना करेगी ? मल-त्याग के उपरान्त यदि वह साबुन से हाथ धोने के लिए मना भी करे तो मैं क्यों मानने लगा ?"

निरंजनदेव से रुपया ले लिया गया और गुप्तदान की रसीद काट दी गई और यह बात आर्यसमाज और सी० पी० डब्ल्यू० डी० के कार्यालय में विख्यात हो गई। बात फैलते-फैलते महानारायण के कानों में भी पहुँची। इससे वह गम्भीर विचार में पड़ गया।

इस घटना के बाद कुछ लोग उसको धर्मभीरु कहते, कोई उसको मूर्ख समझता, कुछ उसे अयोग्य मानते और कुछ उसको महाशयजी कहकर सम्बोधित करने लगे थे। इस दान देने के कुछ ही दिनों बाद महानारायण अपने काम से रिटायर हो दिल्ली आ गया। जबसे उसने निरंजनदेव के विषय में यह बात सुनी थी वह उससे मिलने का विचार कर रहा था। उसका निरंजनदेव के कमल के मुकद्दमे के दिनों में साधारण-सा परिचय था। उस बात को बीते अब ढाई वर्ष हो चुके थे। निरंजदेव को अब अपना क्वार्टर मिल गया था। और इस कारण वह अब बेयर्ड रोड पर रहने लगा था।

एक दिन महानारायण निरंजनदेव को ढूंढता हुआ बेयर्ड रोड पर उसके क्वार्टर पर जा पहुँचा। नलिनी बच्चे को गोद में लिये हुए बरामदे में बैठी थी कि मोटर में से उतरकर उसके सामने आ महानारायण ने पूछा, "बाबू निरंजनदेव यहीं रहते हैं ?"

"जी, आपका शुभ नाम ?"

"महानारायण। क्या वे घर पर हैं ?"

"जी, मैं अभी बुलाती हूँ।"

महानारायण ने अनुभव किया, कितनी सौम्य मूर्ति है इस औरत की! उसको वह बहुत ही भली प्रतीत हुई। वह अभी उसकी सौम्यता पर विचार ही कर रहा था कि निरंजनदेव बाहर आ गया। महानारायण को देख विस्मय में उसने कहा, "आइये-आइये! रायसाहब! इस तुच्छ व्यक्ति पर किस प्रकार कृपा की है ?"

"भाई, अब रिटायर्ड जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। कुछ करने के लिए चाहिए, इसी सिलसिले में मैं तुमसे भी मिलने के लिए चला आया हूँ।"

निरंजनदेव उसको भीतर ले गया और उसने अपनी पत्नी से कहा कि वह चाय लें आए। महानारायण ने पूछा, "यह आपकी पत्नी हैं ?"

"जी।"

"बहुत ही भोली-भाली प्रतीत होती हैं।"

"ऐसी बात नहीं। वह बहुत समझदार और सुघड़ है। अभी इसकी बनाई हुई चाय पियेंगे तो मेरी बात की पुष्टि हो जायेगी।"

"माया के मुख से मैंने इसके विषय में सुनां है। वह भी हर समय इनकी प्रशंसा करती है।"

"अच्छा, तो वह हमारे विषय में आपसे बात करती है ?"

"हाँ, आजकल नारायणदास हमारी कोठी में ही रहता है। इतनी बड़ी कोठी में हम पति-पत्नी अकेलापन अनुभव करते थे और उधर नारायणदास बेकार था। अब उसको मैंने अपने पास ही रख लिया है।"

"वे तो क्लाथ-मिल में मैनेजर थे ? मैने तो सुना था कि वहाँ उनको बहुत अच्छा वेतन मिलता है ?"

"हाँ, मगर किस्मत का धनी है! किसी चोरी के मामले में फँस गया और वहाँ से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकाल दिया गया। चोरी की धनराशि देनी पड़ी और नौकरी भी गई। सब आभूषणादि बिक गए हैं।"

"अच्छा, मुझे तो इस विषय में कोई ज्ञान नहीं था ?"

"इस सबसे उसके मस्तिष्क पर आघात पहुँचा है और उसमें कुछ विकृति आ गई है। अब वह कोई काम करने के योग्य नहीं रह गया।"

"इस पर भी न जाने क्यों वह तुम्हें सदा गालियाँ ही देता रहता है। एक दिन माया ने उससे कहा भी कि आपसे नाराज होने का कोई कारण नहीं है। उसे व्यर्थ में भ्रम हो गया है। उसी अवसर पर उसने आपकी ओर आपकी पत्नी की बातें बताईं। मैं भी सुन रहा था। इसलिए मिलने की इच्छा होने लगी तो मैंने माया से पूछ लिया। उसने बताया कि आपने-मकान बदल लिया है। उसको इस नये मकान का पता नहीं है।"

"आज रायसाहब गोपीचन्द मिले तो मैं उनसे पूछ बैठा। वह आपका नाम सुनकर पहले तो हँसे, फिर बोले, निरंजन! नीम पागल ?"

"मैं हैरान रह गया। इस पर उसने कमल के मुकद्दमें में आपके काम का उल्लेख कर दिया। किसी प्रकार उससे पता मालूम कर आपसे मिलने के लिए आ गया हूँ।"

"मैं लाला नाराणदासजी के घर पर चार महीने तक रहा हूँ। उन्होंने उन दिनों मेरी बहुत सहायता की थी, परन्तु मुझको भी वे कुछ पसन्द नहीं आए। उनके घर में सबसे अधिक समझदार माया है। उनकी पत्नी बहुत ही नेक और सरल-चित्त हैं। सतीश होनहार युवक है।"

"और हमारी बहू रमा कैसी लगी है ?"

"वह भावुक है। बुद्धि कुछ मोटी है, किन्तु निष्ठावान् है।"

महानारायण हँस पड़ा। इस समय नलिनी चाय बनाकर ले आई। उसने चाय रखी तो निरंजनदेव ने परिचय करा दिया, "ये रमा के श्वसुर श्री महानारायणजी हैं।"

"ओह!" विस्मय से हाथ जोड़ते हुए नलिनी ने कहा। वह बैठकर चाय बनाने लगी।

महानारायण ने पूछा, "नलिनी बेटी, माया को जानती हो ?"

"हाँ पिताजी! उस बेचारी से मिलने के लिए चित्त भी बहुत करता है, परन्तु उसके पिता के घर पर जाने में भय लगता है।"

"क्यों ?"

"माया ही कहती थी कि उनके पिताजी हमारा वहाँ आना पसन्द नहीं करते। इसी कारण हम नहीं जाते। माया बहुत प्यारी लड़की है।"

"आजकल वे हमारी कोठी में रहते हैं, इसलिए तुम वहाँ आ सकती हो। नारायणदास पसन्द करें-न-करें, मैं अपनी कोठी में किसी को भी आमन्त्रित कर सकता हूँ।"

नलिनी ने अपने पति की ओर देखा तो महानारायण ने ही फिर कहा, "मैं बुलाऊँगा तो तुम दोनों को ही बुलाऊँगा। हाँ, कमल अभी जेल में ही है। जेल से छूटने पर भी वह अब वहाँ नहीं आ सकेगा।"

नलिनी समझ गई कि महानारायण नलिनी के प्रति कमल के मन के भावों से परिचित हैं। इससे उसका मुख लज्जा से लाल हो गया। इस पर महानारायण ने कहा, "वह मूर्ख मेरे पूर्ण जीवन को ही नीरस करने वाला सिद्ध हुआ है। मैं उसको क्षमा नहीं कर सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो निरंजन! कोई भी पिता अपने पुत्र को उसके पैदा होने के ही दिन से प्रेम करता है, उसका पालन-पोषण करता है, उसके नाज़-नखरे सहता है, दुःख-सुख में उसका साथ देता है, उसकी शिक्षा-दीक्षा पर सहस्रों रुपये व्यय कर देता है और जब वह सज्ञान होता है तो अपने पिता की छोटी-सी बात कि वह उसके कुल की वृद्धि करे, मानने से इनकार देता है। समझ सकते हो कि इससे किसी पिता को कितना आघात पहुँच सकता है। कुलवर्धन के लिए पिता उसको बहू भी ला देता है। बहू सुन्दर न सही पर अच्छी, औसत लड़कियों से श्रेष्ठ है। इस पर भी वह गन्दी नालियों में अपनी ज़वानी ज़ाया करता है और उसका एक बहुत ही लघु अंश भी अपने पिता की इच्छा-पूर्ति के लिए नहीं दे सकता। तो बताओ उस पिता के मन में पुत्र के लिए कितनी कटुता भरी होगी ?"

तीनों चाय पी रहे थे। नलिनी अनुभव कर रही थी कि पिता को अपनी स्वाभाविक इच्छा के हनन पर कितनी निराशा होती है। नलिनी ने सान्त्वना देते हुए कह दिया, "पिताजी! अब तो आप 'जिस विध राखो तिस विध रहिहौं' का चिन्तन कीजिए। ईश्वरप्रणिधान कर्मयोगियों के व्यवहार का एक अंग हैं।"

"मैं सन्तोष करने का बहुत यत्न करता हूँ। परन्तु बेटा! यह पापी मन मानता ही नहीं।"

महानारायण की आँखें तरल हो गईं। उसने चाय की सुरकी लगा अपने द्रवित मन की अवस्था को छिपाने का यत्न किया।

निरंजनदेव ने कह दिया, "अब हमें आशा करनी चाहिए कि दो वर्ष को जेल काटने के बाद कमल कुछ सुधरकर आएगा।"

"ठीक है, आशा तो करनी ही चाहिए। जीवन में असफल व्यक्तियों का यह अन्तिम आश्रय है। परन्तु निरंजन! तुम नहीं जानते कि जेलखाने सुधार-संस्थाएं नहीं हैं। वे तो केवल दण्ड देनेवाले संस्थान ही हैं। वहाँ से कोई सुधरकर नहीं आता। विपरीत इसके बिगड़कर ही अधिक आते हैं।"

"सुधार हो सकता है स्कूल-कॉलेजों में, परन्तु वहाँ तो इस विषय में कुछ भी नहीं किया जाता।"

"सुधर तो वह सकता नहीं। हाँ, एक बात मैं कर सकता हूँ। साँप तो डसने में किसी प्रकार का संकोच नहीं करेगा। अतः उसके दाँत निकाले जा सकते हैं। कमल का स्वभाव बदलना कठिन है। परन्तु जिस धन के आश्रय वह नीच काम करता-फिरता था, उससे उसे वंचित कर सकता हूँ।"

निरंजनदेव से मिलकर महानारायण को प्रसन्नता हुई। उसने उसको आगामी रविवार को अपनी कोठी पर आने का निमन्त्रण दे दिया। निरंजनदेव बोला, "आपकी बहू रमा और आपके समधी नारायणदास रुष्ट हो जाएँगे।"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। रमा ने एम० ए० की परीक्षा दी है। उसको कुछ तो अक्ल आ गई होगी। नारायणदास पागल हो गया है। वह भले लोगों को गालियाँ देता है और पड़ा रहता है।"

: 6 :

"बड़े दुःखी प्रतीत होते हैं रमा के श्वसुर।" नलिनी ने कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है। परन्तु नलिनी, ये भद्रपुरुष अपने दुःख का वास्तविक कारण नहीं जानते। इन्होंने जो धन एकत्रित किया है, निश्चित ही उसका कुछ अंश किसी भले व्यक्ति से छीना हुआ है और उस धन से पला हुआ कमल इनके लिए श्राप हो गया है।"

"आप इनको समझाइये। कदाचित् आपकी बात का इन पर कुछ प्रभाव हो और वे कुछ दान कर दें। मन के तो बुरे नहीं प्रतीत होते।"

"नलिनी! बताने से कोई नहीं मानता। कुछ लोग हैं जो उदाहरण देखकर मार्ग का अवलम्बन पा जाते हैं। अधिकांश व्यक्ति पूर्वजन्म और बाल्यकाल के संस्कारों से ही बनते और बिगड़ते हैं। इस अवस्था में इनके संस्कारों को बदलना बहुत कठिन है।"

"सम्भव है इनके पूर्व कर्मों के फल समाप्त हो रहे हों। ये नवीन संस्कारों की खोज में भटक रहे हैं।"

"संस्कार देना भिन्न बात है, शिक्षा दूसरी बात है। संस्कार तो संगति से मिल सकते हैं। इस पर भी बाल्यकाल का-सा निर्मल मन हो, तब!"

"आप अपनी संगति देने से इनकार मत कीजिए। शेष तो फिर सब भगवान भरोसे है ही।"

"नलिनी! तुम मुझे पारस का पत्थर समझती हो क्या कि जिसके साथ लग जाऊँगा वही सोना हो जाएगा ?"

"कम-से-कम दो ऐसे व्यक्तियों को तो जानती हूँ जो आपके साथ लगकर सोना हो गए हैं।"

"कौन हैं वे ?"

"हँसी नहीं उड़ाइयेगा, तो बता सकती हूँ।"

"यदि वास्तव में ही वे सोना हो गये हैं तो मैं हँसी क्यो उड़ाऊँगा।"

"एक तो मैं हूँ। देखिये, मैं बताती हूँ। मैं कुछ राक्षसों के पंजे से छूटकर आपके घर में आई थी। तब मैं आपके माता-पिता को देवता मानती थी। इस पर भी मैं समझती थी कि मैं धनवानों के घर में जा रही हूँ। रेशम और अतलस पहनने को मिलेगा। नित्य सिनेमा और नाटक देखूँगी। कई नोकर-चाकर मेरे अधीन होंगे।"

"जब मुझे विदित हुआ कि आप दिल्ली में किसी अच्छी पदवी पर हैं तो इससे मैं स्वयं को आकाश में उड़ती हुई अनुभव करने लगी।"

"एक दिन आपने बताया था कि जो कुछ अपने परिश्रम से प्राप्त नहीं होता, वह हराम का है। यदि परिश्रम के अनुकूल पारिश्रमिक नहीं मिल रहा है तो उसमें समाज की दुर्व्यवस्था को कारण समझना चाहिए। किन्तु इसका प्रतिकार यह नहीं कि छीना-झपटी और धोखा-धड़ी की जाय।"

"शनैः-शैनः मेरे मन के भावों में परिवर्तन होने लगा और मैं अपनी आय में ही अपने जीवन को चलाने का यत्न करने लगी। मैं उसमें सफल हो ही रही हूँ और अनुभव करती हूँ कि आपकी संगति से मैं सोना बनती जा रही हूँ।"

अपने परिश्रम के बिना प्राप्त हुए हजारों रुपये मुझे मिट्टी के ढेले के समान प्रतीत होते हैं। बताइये, ठीक है या नहीं ? यदि विश्वास न आता हो तो कभी परीक्षा करके देख लीजिये।

निरंजनदेव को पत्नी के प्रति प्यार उमड़ आया। उसने उसे अपने बाहुपाश में लेते हुए कहा, "मैं इसे गुण तो मानता हूँ। यदि यह परिवर्तन मेरी संगति से हुआ है तो मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं को धन्य समझता हूँ। परन्तु वह दूसरा कौन है ?"

"वह माया है। एक दिन उसने मेरे सम्मुख अपना हृदय खोलकर बताया कि जब आप उसके पिताजी के घर पर रहते थे तो दोनों बहिनें एक ही बिस्तर पर सोई आपके विषय में बाते करती थीं। उस समय रमा ने आपके प्रति अपने अनुराग की बात माया को बता दी। माया स्वयं भी आपके प्रति वैसा ही अनुभव करती थी। रमा अग्रसर हुई और एक रात आपसे कुछ समझने के लिए आ पहुँची। माया द्वार के बाहर खड़ी आपकी बातें सुन रही थी। आपके रमा को डाँटकर अपने कमरे से निकाल देने से माया के मन पर पारस के स्पर्श का-सा प्रभाव हुआ।"

"उसके बाद भी वह आपसे प्रेम करती रही। अब उसके प्रेम में सात्विक भावना का समावेश हो गया था। वह आपसे मिलकर बातें करने के लिए लालायित रहती थी, परन्तु सदा वह आपसे डरती रहती थी कि कहीं आप उसको भी रमा की भाँति डाँट न दें।"

"सहसा आपका विवाह हो गया। इससे आपके प्रति उसका अनुराग कम नहीं हुआ। परन्तु वह समझ गई कि वह अनुराग अब विवाह के रूप में परिणत नहीं हो सकता। इस पर भी वह आपसे मिलने का यत्न करती रही। एक दिन आपने उसे कहा था कि आप उसके लिए भी उसके माता-पिता के सामने झूठ नहीं बोलेंगे। आप उसके माता-पिता के घर तक उसको छोड़ने नहीं जाएँगे।"

"इससे वह अपने-आपको बहुत ही तुच्छ अनुभव करने लगी थी। वह स्वयं को अति दयनीय स्थिति में पाती थी। तब से वह आपको नहीं मिली। परन्तु आपको कदाचित् विदित न हो, वह कहीं से आपका चित्र पा गई है और अब नित्य ही उसके दर्शन कर दो बातों पर दृढ़ रहने का निश्चय करती है। एक आपके प्रति निस्स्वार्थ अनुराग और दूसरे किसी से भी अनृत भाषण न करना।"

"एक दिन वह कनॉट प्लेस में मिल गई थी और मेरे साथ घर तक आने का निमन्त्रण अस्वीकार करती हुई यह सब कथा बक गई। उसका कहना था कि वह स्वयं को आपसे बहुत ही हीन मानती है। इस कारण उसे आपके सम्मुख आने में लज्जा लगती है।"

"इस घटना को भी लगभग छः मास व्यतीत हो गये हैं। उस दिन वह पार्क में बैठी मुन्ना को खिलाती हुई आँखों में आँसू भरती रही थी। जब मैंने उससे कहा कि उसका बच्चा होगा, उसको आशा और विश्वास करना चाहिए, तो वह उठी और बच्चे को मेरी गोद में देते हुए उसने एक दीर्घ निःश्वास छोड़ा। फिर कहने लगी कि यह भी तो उसका ही है। इतना कहकर वह चल दी।"

"यह है वह दूसरी, जो पारस से छू जाने पर सोना हो गई है।"

निरंजन इस कथा को सुन गम्भीर हो गया। वह अपने पलँग पर लेट गया, परन्तु सो नहीं सका। नलिनी बच्चे को सुलाने अपने कमरे में चली गई।

निरंजन नारायणदास के परिवार से पृथक् रहना चाहता था, परन्तु वह अनुभव कर रहा था कि उस घर का ताना-बाना उसको भी स्वयं में लपेट रहा है। नारायणदास पागल हो गया है। इस कारण वह सोचता था कि उसकी पत्नी के प्रति तो उसे सहानुभूति प्रकट करनी ही चाहिए। रमा उसके साथ विवाह न कर सकने के कारण अभी भी उससे रुष्ट है। वह उससे मिलना नहीं चाहता था। उसको भय था कि कहीं रमा के मन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने संस्कार पुनः जागृत न हो जायँ जिससे वह अपने चित्त को अशान्त करे तथा उसके जीवन में भी अशान्ति भर दे।

उसको उस दिन की माया की बातें भी स्मरण थीं, जिस दिन वह रमा से मिलकर आई थी। और जब उसने उसको कहा था कि वह उसके माता-पिता के सम्मुख झूठ नहीं बोलेगा तो वह अति दयनीय दृष्टि से उसकी ओर देखने लगी थी। इस दृष्टि में क्या छिपा था ? यह तो वह जाने अथवा उसका भगवान जाने। परन्तु वह माया से भी एकान्त में मिलने में भय अनुभव करता था। माया रमा से अधिक सुन्दर निकल रही थी और वह ऐसी लड़की से जो उसके साथ अनुराग अनुभव करती हो, अधिक सम्बन्ध नहीं रखना चाहता था।

उसने नारायणदास का और उसके परिवार का विचार अपने मन से त्याग दिया था, परन्तु आज महानारायण का आना और उसको अपने घर भोजन का निमन्त्रण दे जाना उसके मन में हलचल मचाने वाला सिद्ध हुआ। वह निमन्त्रण अस्वीकार नहीं कर सका।

उस रात बहुत देर तक महानारायण के निमन्त्रण पर विचार करता हुआ बिस्तर पर करवटें लेता रहा। बहुत रात बीते उसको नींद आई। रविवार के दिन वह नलिनी और अपने बच्चे के साथ महानारायण की कोठी पर जा पहुंचा। सबसे पहले वहाँ उसको माया ही मिली। वह बरामदे में कुर्सी पर बैठी उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। कोठी के सामने ताँगा रुकते ही वह उठकर लपककर उनके पास जा खड़ी हुई और मुन्ने को गोद में लेकर भाग गई।

अन्दर महानारायण को निरंजन के आने की सूचना देकर वह लड़के को लेकर अपने शयनागार में चली गई। श्यामा वहीं बैठी थी। श्यामा को भी उसने बताया कि निरंजन और नलिनी आये हैं।

"यह उसका लड़का है ?" श्यामा ने पूछा।

"हाँ, देखो न कितना प्यारा लगता है!"

"बच्चे तो सब प्यारे ही होते हैं। ज्यों-ज्यों बड़े होते जाते हैं वे संसारभर के अवगुण अपने में समेटते जाते हैं। विरले ही होते हैं जो किसी के गुण ग्रहण करते हैं।"

"तो माँ! मैंने भी अवगुण ही ग्रहण किये हैं ?"

"तुमने क्या ग्रहण किया है, यह तो समय पर ही विदित होगा। इस समय तो पिंजरे में बन्द पक्षी की भाँति हो।"

"माँ! तुम स्वतन्त्र हो अथवा तुम भी मेरी भाँति पिंजरे में बन्द हो ?"

"बस, कोई बात करो कि तुम बहस करने लगती हो। कई बार बताया कि बड़ों की बातों में छिद्र नहीं निकाला करते।"

"फिर गुण-अवगुण किस प्रकार ग्रहण किये जा सकते हैं ?"

श्यामा हँस पड़ी। वह बोली, "तुमसे हारी बाबा! जाओ, अपने पिताजी से पूछो कि वे दलिया लेंगे अथवा रोटी ?"

प्रसन्नवदन माया, कोठी के पिछवाड़े में, जहाँ नारायणदास रहता था, चली गई। नारायणदास एक तख्ते पर पालथी मारे ध्यानावस्थित बैठा था। माया ने आहट की तो आँखें खोल उसकी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखने लगा। माया ने पूछा, "पिताजी! आज आप दलिया लेंगे अथवा रोटी "

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम क्या कहती हो ?"

"दलिया।"

"ठीक है। किन्तु मीठा अथवा नमकीन, कैसा लेना चाहिए ?"

"आज मीठा ही ठीक रहेगा, नमकीन नहीं।"

"तो ठीक है, कह दो मीठा दलिया।"

माया लौटने लगी तो नारायणदास ने आवाज देकर उसे बुला लिया। वह आई तो नारायणदास पूछने लगा, "माया! यह तुम्हारा बच्चा है ?"

"हाँ पिताजी!"

"क्या नाम है ?"

माया को उसका नाम विदित नहीं था, इस कारण उसने कहा, "पूछकर बताती हूँ।"

"इसके पिता से ?"

"हाँ।"

"परन्तु तुमने इसके पिता के दर्शन नहीं कराये। मुझे तुम्हारे विवाह का स्मरण नहीं। मैं बहुत पागल हो गया था क्या ?"

माया की हँसी-सी निकल गई। वह बोली, "नहीं, आप सदा ऐसे ही रहते हैं, जैसे आज है। मैंने कई बार आपको समझाया है कि आप पागल नहीं है। आपकी स्मृति कुछ बिगड़ गई है।"

"देखिये, यह बच्चा मेरा नहीं हैं। यह निरंजन भापा का है। मेरा तो अभी विवाह ही नहीं हुआ।"

"तो उस दिन बाजे कैसे बजे थे ?"

"वह तो रमा के विवाह के थे।"

"ओह ठीक, याद आ गया। कमल जेल से छूटा कि नहीं ?"

"उसके छूटने में अभी छः मास शेष हैं।"

"तो उसको छूट नहीं मिली ?"

"मिली थी, किन्तु उसने एक दिन वार्डन को पीट दिया था। इस कारण वह छूट रद्द कर दी गई है।"

नारायण ने दीर्घ निःश्वास छोड़ा और कहा, "इस बच्चे को मुझे दिखाओ।"

: 7 :

माया यह नहीं चाहती थी। उसने कहा, "इसने टट्टी कर दी है। मैं इसके कपड़े बदल आऊँ।"

इतना कहकर वह बच्चे को लेकर भाग आई। सभी लोग गोल कमरे में बैठे हुए थे। माया ने आपनी माँ से कहा, "पिताजी आज मीठा दलिया लेंगे।"

"क्यों, भयभीत क्यों हो ?"

"उन्हें आज फिर दौरा पड़ा है। आज वे फिर मेरे विवाह और बाजों की बातें करने लगे हैं।"

उसने बच्चे को नलिनी को दे दिया। वह अभी रमा के पास जाकर बैठी ही थी कि नारायणदास धीरे-धीरे चलता हुआ वहाँ आ गया। महानारायण ने उससे कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नारायणदास! इधर आओ, मेरे पास बैठो।"

"निरंजन आया है क्या ?"

"हाँ चाचाजी!" निरंजनदेव ने स्वयं ही जता दिया।

वह माया की ओर जा रहा था कि महानारायण ने उसे पकड़कर अपनी कुर्सी के पास बिठा लिया।

नारायणदास ने बैठते हुए कहा, "निरंजन! तुम उस दिन सब्जीमण्डी वाले मकान में आये थे और कह रहे थे कि तुम रमा से विवाह कर लोगे।"

निरंजनदेव तो कभी उस मकान में गया ही नहीं था। वह समझ गया कि नारायणदास अपने मन की कल्पना को ही वास्तविकता समझ ऐसा कह रहा है। वह अभी इसका उत्तर सोच ही रहा था कि श्यामा ने कह दिया, "परन्तु आपने तो कहा था कि एक पति के होते हुए वह दूसरा विवाह नहीं कर सकती ?"

"ओह! याद आ गया। हाँ, अब तुम रमा से विवाह नहीं कर सकते, निरंजन।"

"चाचाजी! मैंने अब नलिनी से विवाह कर लिया है। अब मैं भी दूसरा विवाह नहीं कर सकता।"

"ठीक है, ठीक है। वह बच्चा कहाँ है; माया ?"

"पिताजी! उसने टट्टी कर दी थी न, उसके कपड़े अभी नहीं बदले हैं।"

"वह नलिनी क्या कर रही है उसका ?"

"कपड़े बदल रही है।"

विषय बदलने के लिए महानारायण ने कहा, "नारायणदास, तुम्हारी नौकरी लग गई है।"

"कहाँ ?"

"अमेरिकन कौंसलेट में। अमरीका अब युद्ध में सम्मिलित हो गया है। उन्होंने कलकत्ता में अपना प्रधान कार्यालय बनाया है। तुम्हें अगले मास काम पर जाना है। तब तक आराम कर स्वस्थ हो जाओ।"

"क्या वेतन मिलेगा ?"

"साढ़े चार सौ।"

"ठीक है, इतने में निर्वाह हो जाएगा।"

"परन्तु तब तक तुम्हें अपनी स्मरण-शक्ति ठीक कर लेनी चाहिए।"

"वह तो ठीक है। देखो, मुझे स्मरण है कि कमल की बारात के साथ तीन बाजे आए थे।"

फिर वह स्वयं ही हंस पड़ा और बोला, "हाँ, अभी कुछ खराबी हैं। मैं माया से कह रहा था कि उसके विवाह के बाजे थे। माया कहने लगी थी कि बच्चा उसका है। बस, मेरे मस्तिष्क में बाजे बजने लगे। मैंने समझा कि उसके विवाह में बजे थे।"

"अच्छा महानारायण! मेरे लिए कार्य पर जाने की अवधि छः मास की माँग लो। तब तक तो मैं ठीक हो जाऊँगा।"

"तो फिर आप जाकर आराम करो न ?"

"मैं निरंजन से एक बात करने लिए आया था। क्यों निरंजन! तुमने कहा था न कि परमात्मा ही सब-कुछ करता है ? मैं मानता नहीं था। उस दिन परमात्मा ने मुझे बताया था कि निरंजनदेव ठीक कहता है। उसने ही मेरे सेफ में से चोरी की थी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझको फँसाने के लिए चोरी की रकम यमुना के किनारे निगमबोध घाट के बांई ओर बेरी के नीचे गाड़ रखी है।"

"ये लोग मेरी बात पर विश्वास नहीं करते। कहते हैं कि परमात्मा ने चोरी नहीं की। अब तुम इनको समझाओ।"

"चाचाजी! मैं स्वयं वहाँ जाकर देखूँगा। परन्तु आप उससे यह तो पूछते कि परमात्मा ने आपको यह दण्ड क्यों दिया है ?"

"पूछा था। उसने मुझे बताया है। वह मैं इन सबके सामने नहीं बता सकता। तुम एक ओर को चलों तो मैं तुम्हें बता सकता हूँ। ये सब नास्तिक हैं। इनको मेरी बात का विश्वास नहीं आएगा।"

"चलिये चाचाजी! आइये बता दीजिये। फ़िर मैं भी इस दिशा में कुछ यत्न करूँगा।"

"हाँ, तुम भी उससे पूछना। आओ इधर आओ।"

नारायणदास उठकर गोल कमरे के एक कोने में चला गया। निरंजनदेव उसके पास जाकर पूछने लगा, "हाँ बताइये।"

"सब बात नहीं बताऊँगा।" नारायणदास ने उसके कान के समीप मुख ले जाकर कहा, "केवल इतनी बात पर्याप्त होगी। एक लड़की का सोने का लॉकेट उतारने लगा था। उसने विरोध किया तो मैंने दो चपत उसके मुख पर लगाई और लॉकेट लेकर चला आया।"

"बाद में जब मैं सुपरिण्टेण्डेण्ट बन गया था, उस लड़की का घरवाला मेरा अधीन क्लर्क बन गया। चोरी के समय वह लड़की क्वाँरी ही थी"

"एक दिन मैंने उन दोनों को अपने घर चाय पर बुलाया। वह आई तो मुझे पहचान गई। परन्तु मुझे अपने पति का अफसर जानकर वह बोली नहीं। मैंने उचित अवसर जान उससे कहा कि उस समय मुझे रुपयों की सख्त जरुरत थी, इस कारण तुम्हारा लॉकेट छीन लिया था, अब मैं तुम्हें वह वापस कर सकता हूँ। कल मैं उसे तुम्हारे पति के हाथ भेज दूँगा।"

"किन्तु उसने इस बात का विरोध करते हुए बताया कि चोरी की बात तो उसने अपने माता-पिता तक को नहीं बताई थी। उसने उनको कह दिया था कि लॉकेट कहीं गिर गया है। यदि वह सत्य बात बता देती तो, उसकी सौतेली माँ उसको तो छिनाल कहती ही, साथ ही वह मुझे सारे स्क्वेयर में बदनाम करती।"

"इसी प्रकार, उसने कहा कि मैंने यदि उसके पति के हाथ कुछ भेजा तो वह समझेगा कि उसका मुझसे विवाह से पूर्व कोई सम्बन्ध था। मैंने उससे पूछ लिया कि वह चोरी का रुपया किस प्रकार वापस करूँ तो उसने कह दिया कि इसकी कोई जरूरत नहीं। परमात्मा हमारा हिसाब-किताब करेगा।"

"अब देखो, परमात्मा ने मेरी चालीस हजार की चोरी की और देखो, मेरी यह दशा हो गई है कि मैं लड़की की श्वसुराल में पड़ा हूँ।"

"चाचाजी! आप निश्चिन्त रहें। मैं परमात्मा से आपके विषय में बातचीत करूँगा।"

"तुम मुझे क्षमा कर दोगे क्या ?"

"आपने मेरा क्या बिगाड़ा है, जो क्षमा करने की बात कर रहे हैं ?"

"मैंने तुमको नौकरी से निकलवाने का षड्यन्त्र किया था। यह तो वह टंडन का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चा बदल गया था अन्यथा तुम भी मेरी ही भाँति हो गये होते।"

"चाचाजी! टंडन साहब ने मुझे सब बता दिया था। परन्तु मैं आपसे कभी नाराज नहीं हुआ। मैं तो सदा यही विश्वास करता हूँ कि परमात्मा जिसकी रक्षा करता है, उसको कोई हानि नहीं पहुँचा सकता।"

"अच्छा, उससे मेरे विषय में पूछना और बताना कि वह मुझे किस प्रकार क्षमा कर सकता है।"

"हाँ, पूछूँगा।"

"कब तक ?"

"मैं आज से ही यत्न आरम्भ कर दूँगा। अब यह तो उसकी इच्छा पर है कि वह मेरी बात सुनने के लिए कब आता है।"

निरंजनदेव को विस्मय हो रहा था। दोनों आकर अपने स्थान पर बैठ गये। किसी ने उनसे नहीं पूछा कि उनमें परस्पर क्या बातें होती रही हैं।

भोजनोपरान्त नारायणदास को माया अपने कमरे में ले गई। माया के सामने वह शान्त हो जाया करता था। महानारायण निरंजनदेव को अपने दफ्तर में ले गया। उसने निरंजनदेव से पूछा, "अब कितना वेतन मिलता है आपको ?"

"इस मास तीन सौ रुपये हो गये हैं।"

"इतने में निर्वाह हो जाता है ?"

"बहुत अच्छी तरह। अपने वेतन का पन्द्रह प्रतिशत मैं जमा कर देता हूँ। कभी इससे अधिक भी बच जाता है। इस समय मेरे रिजर्व फण्ड में दो हजार के लगभग रुपये हैं।"

"वेतन का पन्द्रह प्रतिशत निकाल देने पर तो आपके पास दो सौ पचपन ही बचते हैं ?"

"नहीं, इससे भी कम बचता है इसमें से तीस रुपया क्वार्टर का किराया और दस रुपया प्रॉविडेंड फण्ड पहले ही कट जाता है। पन्द्रह के लगभग बिजली-पानी के निकल जाते हैं। शेष एक सौ चालीस रुपये हमारे भोजनादि के लिए और बीस रुपये पुस्तकें, समाचारपत्र। इस प्रकार तीन सौ का पूरा हिसाब बन जाता है।"

"और खेल-तमाशा आदि के लिए ?"

"सिनेमा इत्यादि तो हम देखते नहीं। पान-सिगरेट का भी शौक नहीं है। सैर करने हम नित्य ही जाते हैं परन्तु प्रातः और सायं काल पैदल चलते हुए।"

"मैं यह विचार कर रहा था कि आपकी आय में वृद्धि का कोई उपाय किया जाय।"

"यह मैं कर रहा हूँ।"

"क्या ?"

"नालिनी को मैंने कपड़े सीने की मशीन ला दी है और घर की सिलाई का सब काम वह स्वयं कर लेती है। केवल मेरे सूट ही बाजार में सिलते हैं। इसके अतिरिक्त मैं स्वयं इतिहास पर एक पुस्तक लिख रहा हूँ। वह मैं रिटायर होने के समय छपवाऊँगा।"

"कब रिटायर होगे तुम ?"

"अभी इक्कीस वर्ष हैं।"

"और तब आप अपने परिश्रम का फल प्रकाशित कराएँगे। जानते है कि तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार क्या-क्या नई बातें जान लेगा ?"

"अभी तो प्राचीन काल का इतिहास लिख रहा हूँ। उसमें कोई विशेष आविष्कार होने वाला नहीं है।"

"होगा क्यों नहीं ? कुछ वर्ष हुए सिन्ध में प्राचीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं।"

"परन्तु उससे मेरी जानकारी में कोई नवीन बात नहीं आई। सिन्ध में पहले ही पिछड़ी हुई सभ्यता के होने का सन्देह था। उसके अवशेष मिल गए तो क्या हो गया ?"

"पिछड़ी हुई ? देखो, तुम आर्कियोलॉजी विभाग में जाकर नई खोज के परिणाम पढ़ा करो।"

"जी, मैं सप्ताह में एक दिन वहाँ तीन-चार घंटे के लिए जाया करता हूँ। जो बात वे अनुसन्धानकर्ता नहीं जानते वह उससे बड़ी सभ्यता के विषय में है। जिस व्यक्ति ने अरण्ड के ही पेड़ देखे हों वह तो पेड़ों में उन्हीं को बड़ा मानेगा। परन्तु चीड, सिरस, पीपल और बरगद के पेड़ों को जानने वाले तो अरण्ड के पेड़ को छोटा ही मानेंगे।"

"तो क्या आपने उससे बड़ी किसी सभ्यता को खोज निकाला है ?"

"जी, मैं उनके विषय में लिख रहा हूँ।"

महानारायण विस्मय करता था। जब निरंजनदेव की बात को अपनी जानकारी से बाहर समझने लगा तो बोला, "परन्तु पुस्तक प्रकाशित कर कितने लाभ की आशा रखते हैं आप ?"

"लाभ की आशा नहीं। ख्याति की तो आशा कर ही रहा हूँ। वह भी तो एक प्रकार से कमाई हैं।"

महानारायण हँस पड़ा। उसने पूछा, "ख्याति से पेट भर जाता है क्या ?"

"पेट तो वेतन से भर रहा है। हम तीनों प्राणी कभी भी रात को भूखे पेट नहीं सोये। ईश्वर की कृपा से हम स्वस्थ और सबल भी हैं। कपड़े भी साफ और शरीर ढाँपने योग्य पहनने को मिल जाते हैं। रहने के लिए सरकार ने क्वार्टर भी दे रखा है। हाँ, इससे सिनेमा सिगरेट और शराब आदि नहीं मिलते। किन्तु उनके लिए मन में लालसा भी नहीं है।"

महानारायण विचार करता था कि उसका अपना खर्चा एक हजार रूपया महीना है और जबसे नारायणदास का परिवार उसके साथ आकर रहने लगा है, लगभग तीन सौ रूपया और अधिक व्यय हो जाता है। उसने निरंजनदेव को एक बार फिर समझाने का यत्न करते हुए कहा, "देखों निरंजन! तुम गरीब आदमियों की भाँति रहकर अपने को सुखी घोषित करते हुए अपनी बुद्धि का ही उपहास कर रहे हो। आज किसी भी सभ्य मनुष्य को मोटर चाहिए, उसके लिए ड्राइवर चाहिए। कभी कोई अभ्यागत आ जाये तो उसके आतिथ्य सत्कार की सामर्थ्य चाहिए। कहीं वर्ष में भ्रमण के लिए भी जाना चाहिए।"

"अपने समय पर सब कुछ हो जायेगा।"

"मैं तो यह कहना चाहता था कि आज-कल युद्ध के दिन हैं। चारों और लूट मच रही है। हम लुटने वाले न बने रहकर लूटने वालों में सम्मिलित हो जायँ।"

"पिछले मास हमारे कार्यालय में एक सरकारी सैनिक विभाग की विज्ञप्ति आई थी। उसमें पूछा गया था कि जो लोग युद्ध में सेवा के लिए स्वयंसेवक बनना चाहें वे अपना नाम भेजें। उन्हें सब प्रकार के काम करने वालों की आवश्यकता है। मैंने सैनिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य के लिए अपनी सेवाएँ अर्पण करने का प्रस्ताव किया है। उसी में मेरी योग्यता के व्यक्ति का वेतन पाँच सौ रुपया मासिक और यूनिफॉर्म और भोजन कण्ट्रोल कीमत पर मिलने का आश्वासन दिया गया है।"

"क्या लाभ होगा ?"

"लाभ तो अनायास ही हो जाया करता है। कर्तव्य की बात सदा विचारणीय रहती है।"

"देखो निरंजन! तुम मुझसे एक हजार रुपया मासिक वेतन लेकर जैसा मैं कहता हूँ करो। तुम्हारी योग्यता के लिए सवा लाख रुपये से काम करने के लिए सुविधा दिलवा सकता हूँ। मैंने काम विचार कर लिया है।"

"आप काम बताइये, तब विचार किया जायेगा।"

"काम तो साधारण है। सेना की सप्लाई के लिए फ़ॉर्म भर दो। मेरा यहाँ अच्छा-खासा परिचय है। टैंडर स्वीकार होने पर माल सप्लाई करना होगा। 1914-1918 के युद्ध में मेरे पिता यही काम किया करते थे और दो लाख युद्ध के दिनों में पैदा किया था। यह तो ईमानदारी की आय थी। बेईमानी की आय करते तो कहीं अधिक धनवान हो जाते।"

"आप कितने भाई हैं ?"

"हम पाँच बहिनें और एक भाई। बहिनें सब मुझसे बड़ी हैं और उनका विवाह हो चुका था। विवाह तो मेरा भी हो गया था और मैं 1916 में नौकर हो गया था। मेरा अपना काम बहुत अच्छा था, इस कारण पिताजी की सम्पत्ति में से कुछ नहीं लिया। मैंने उनसे कह दिया था कि वे सब बहिनों को दे दें।"

"वे अभी जीवित हैं क्या ?"

"नहीं, 1914 में उनका देहान्त हो गया था। ऐसा प्रतीत होता है कि कोई उनकी हत्या कर गया है। यह सन्देह किया जाता हैं कि किसी ने उन्हें विष दे दिया है। वे पन्द्रह-सोलह वर्ष में पूर्ण सम्पत्ति समाप्त कर गये थे। साथ ही अपना पैतृक मकान भी गिरवी रख गये थे।"

"तो वही काम आप अपने लिए भी चुन रहे हैं। प्रथम तो सरकार पहले से अधिक समझदार हो गई है। दूसरे सेना की आवश्यकता अब वह नहीं रही, जो 1914 में थी। आज की लगभग सभी आवश्यकताओं की पूर्ति तो क़ारखानों से हो जाती है। सरकार सीधी कारखानों से ही माल ले लेती है। सरकार ने खरीद के लिए एक विभाग ही पृथक् खोल रखा है। इसमें भी बेईमानी तो हो सकती है, परन्तु ईमानदारी की आय न के बराबर होगी।"

"क्षमा करें, यह किस प्रकार की आय थी, ज़ो आपके पिताजी के पास सोलह वर्ष में दो लाख रुपया ब्याज सहित व्यय हो गई और वह भी केवल दो प्राणियों में ही ?"

"दो नहीं। माताजी का देहान्त तो पहले ही हो चुका था।"

: 8 :

"मैं यह काम नहीं करूँगा। मैं तो सेना में कमिशण्ड ऑफिसर बनना पसन्द करूँगा।"

"राम! राम!! और पत्नी का क्या करोगे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इन्हें माताजी के पास लाहौर भेज दूँगा।"

"नलिनी को यह सब बता दिया है ?"

"लिखते समय उससे राय कर ली थी और फिर लिखा था।"

"और कहीं कुछ अमिष्ट हो गया तो ?"

"बिना गोली के भी तो लाखों मर रहे हैं। जिस प्रकार किसी को मरना है, वह उसी प्रकार मरेगा। यह विधि का विधान टल नहीं सकता। देखिये लालाजी! सब मरने वाले युद्ध पर ही जाकर नहीं मरते और सब युद्ध पर गये हुए भी मरते नहीं।"

"मैं नलिनी को समझाता हूँ कि वह तुम्हें युद्ध में जाने से रोके।"

"समझा दीजिए। यदि वह आग्रह करेगी तो मैं नहीं जाऊँगा।"

"अच्छी बात।"

महानारायण ने माया को आवाज दी। जब वह आई तो उसको नलिनी को बुलाने के लिए कहा गया। नलिनी और माया दोनों ही आ गई। नलिनी के बैठने पर महानारायण ने कहा, "देखो नलिनी बेटा! ये कह रहे हैं कि इन्होंने सेना में भर्ती होने के लिए सरकार से प्रस्ताव किया है।"

"जी।"

"तुमने मना नहीं किया क्या ?"

"मैं मना किसलिए करती ?"

"यह तो बहुत ही भयंकर कार्य है। युद्ध में तो मनुष्य गाजर मूली की भांति काटे जाते हैं।"

"भापाजी! अपनी करनी से भी कभी कोई मर सकता है ? एक दिन ये कह रहे थे कि सबसे ईमानदारी का काम यदि कोई है तो वह सेना का है। मैंने भी यही विचार किया था। यह तो सत्य है ही कि किसी सैनिक अफसर का मान ऑफिस के ऑफीसर से बहुत अधिक होता है। काम भी वह बहुत आवश्यक और लाभकारी है। जब ऐसी बात है तो मैं इनको क्यों मना करूँ ?"

"परन्तु बेटा! तुम विधवा हो सकती हो, सोचा नहीं कि यह कितनी भयंकर परिस्थिति हैं ?"

"मैं विधवा नहीं होऊँगी। आप निश्चय जानिए। किसी निष्ठावान् पत्नी के जीते-जी उसके पति का देहांत नहीं हो सकता। परमात्मा के घर में इतना अन्याय नहीं है।"

"तुम कुछ बच्चों की-सी बातें करने लगी हो।"

"नहीं भापाजी! मैंने सब प्रकार विचार कर लिया है। आप जानते ही हैं कि ये बेईमानी की आय करेंगे नहीं। ईमानदारी की कमाई से मैं इनको रोककर इन पर अन्याय नहीं कर सकती।"

"तुम दोनों मूर्ख हो।"

"यह सम्भव है कि इनको सेना में कमिशन मिले ही नहीं। उस अवस्था में इन्होंने एक साधारण क्लर्क के रूप में युद्ध के लिए अपनी सेवाएँ अर्पित करने का वचन दिया है। यह भी ठीक है।"

"देखिये भापाजी!" निरंजनदेव ने कहा, "यदि मुझे सैनिक आफिसर की जगह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं मिली तो मैं समझूँगा कि मेरे अन्य कर्म अभी ढीलें हैं। तब मैं साधारण क्लर्क के रूप में युद्ध में सहायता कर सन्तोष कर लूंगा।"

"परन्तु यह काँग्रेसवाले तो युद्ध के विरूद्ध हो रहे हैं ?"

"ऐसी क़ोई बात नहीं है। इस पर भी देश में राज्य किसका हो, यह राजनीतिक नेताओं के विचार और कार्य करने की बात है। सैनिक का काम तो देश की रक्षा करना हैं। मैं तो रक्षा के विचार से भी सैनिक कें कार्य को एक पुण्य का कार्य मानता हूँ।"

महानारायण मौन हो गया। आज निरंजनदेव ने एक विशेष दृष्टिकोण प्रस्तुत किया था—उसके पिता कीं आय कैसी थी, जों दो लाख की धनरशि ब्याज-सहित सोलह वर्ष में एक व्यक्तिं द्वारा ही समाप्त हो गई ?

एक बात निरंजनदेव ने और कही थी कि एक सैनिक का काम सर्वथा ईमानदारी और पुण्य का है।

नलिनी के बुलाये जाने पर मैना और श्यामा भी वहाँ आ गईं। उन्होंने आते ही पूछा, "क्या सौभाग्य बाँट रहे हैं इन बेटियों में ?"

महानारायण बोला, "हम इतने भाग्यहीन हैं कि हमारे घर कोई लड़की नहीं हुई। इस कारण आस-पड़ोस से लड़कियाँ बुलाकर भाग्य बटोर रहा हूँ।"

"परन्तु इस समय तो नलिनी को समझाना चाहता था कि अपने पति को युद्ध में न जाने दे और इसने तो एक दावा कर दिया है। यह कहती है कि परमात्मा इतना अन्याय कर ही नहीं सकता कि किसी निष्ठावान् पत्नी के जीते-जी उसके पति को मरने दे।"

"क्या जाने भापा," माया ने कहा, "सत्यवान और सावित्री की कथा हमारे घर में भी घट जाय!"

"माया बेटी! आज कलयुग है। वह सतयुग था।"

"पर कलयुग में तो पतिव्रता धर्म का फल और भी अधिक होना चाहिए। सतयुग में तो धर्म व्यापक था। आज अधर्म व्यापक है। आज धर्मात्मा होने का फल तो और भी अधिक होना चाहिए।"

इस बात से विवाद समाप्त हो गया। परन्तु महानारायण की कुण्डली खुल गई थी। वह विचार कर रहा था कि कितनी दृढ़ निष्ठा है इस दम्पति में, परमात्मा के प्रति! कितना अगाध विश्वास है इनको अपने सुकृत्यों पर! वह स्वयं अपने विषय में कुछ नहीं कह सकता था। उसको याद नहीं आ रहा था कि कभी किसी भी सरकारी काम में उसने रिश्वत न ली हो और उस रिश्वत के प्रतिकार में ठेकेदारों को अनुचित लाभ न पहुँचाया गया हो।

वह तो यह समझता था कि सरकार का रुपया किसी का रुपया नहीं। बड़े-से-बड़े अधिकारी से लोकर छोटे कर्मचारी का सम्बन्ध केवल वेतन से है। उस वेतन को पाने के बाद उसका अपना कुछ भी नहीं रह जाता। तो फिर यदि किसी के साथ थोड़ी रियायत करके अपना बहुत-सा लाभ कर लिया तो क्या हानि हो गई ?

उसने परमात्मा पर कभी इतना अगाध विश्वास नहीं किया था जितना कि आज वह नलिनी और निरंजनदेव को प्रकट करते देख रहा था। परमात्मा के विषय में सुनकर वह सदा मुस्करा दिया करता था। वह कहा करता था कि ठीक है, वह होगा परन्तु जब बेईमान पनपते हैं तो वह हुआ अथवा न हुआ सब बराबर है। वह अपने मन में विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया करता था कि मैं भी फल-फूल रहा हूँ, जो अनायास ही दो-तीन हजार रुपये मासिक अतिरिक्त आय कर लेता हूँ।

परन्तु आज निरंजनदेव ने उससे पूछा था कि क्या उसके पिता फले-फूले थे ? क्या वह स्वयं फल-फूल रहा है ? उसको अपनी और अपने पिता की कमाई के फलने-फूलने पर संदेह हो गया था।

सांय की चाय के बाद निरंजन को अपने घर वापस जाना था। अतः उससे पूर्व स्त्री-वर्ग एक बार कोठी की लॉन में बैठकर बातें करने लग गया। इस समय वार्तालाप का विषय रमा थी। माया अपने पिताजी के लिए जल लेकर गई थी तो उनसे बातें करने ल गई थी। यों तो माया ही नारायणदास को काबू में रख सकती थी।, इस पर भी आज निरंजनदेव से पृथक् में बात करने के बाद वह बहुत शान्त और स्थिर-चित्त हो गया था।

जब माया उसके पास गई तो उसने पूछा, "निरंजनदेव गया अथवा अभी है ?"

"वे आपसे मिले बिना किस प्रकार जा सकते हैं ? इस समय वे राय साहब से बातचीत कर रहे हैं।"

"उससे कहना कि वह यहाँ आया करे। मुझे उससे बातें कर बहुत शान्ति मिली है।"

"वे आया करेंगे।"

"तुम्हारा विवाह कब होगा, माया ?"

"जब आप करेंगे।"

"मुझे अब ऐसे कामों के लिए अक्ल नहीं रही। कमल गलत व्यक्ति निकला। अच्छा, मैं निरंजनदेव से कहूँगा कि वह तुम्हारे लिए कोई अच्छा वर ढूँढ दे।"

"कहियेगा। परन्तु पिताजी, मुझे तो अभी एम० ए० तक पढ़ना है।"

"क्या करोगी इतना पढ़कर ?"

"भापा निरंजनदेव कह रहे हैं कि इस युद्ध के बाद भारत स्वतन्त्र हो जाएगा और तब फिर यहाँ इतने पढ़े-लिखे कर्मचारियों की आवश्यकता पड़ेगी कि सब पढ़ी-लिखी औरतें भी नौकरी करेंगी।"

"तो तुम नौकरी करोगी ?"

"जब देश को आवश्यकता होगी तो नौकरी भी करूँगी।"

"परन्तु मेरी राय मानो। अपने पति की नौकरी से अधिक अच्छी और कोई नौकरी नहीं होती।"

"वह भी करूँगी।"

"परन्तु दो मालिकों की नौकरी किस प्रकार कर सकोगी ?"

"जैसे पुरूष करते हैं। वे आफिस की नौकरी करते हैं और फिर घर पर बाल-बच्चों की भी करतें हैं।"

"नहीं बेटा, तुम नहीं समझीं। पुरूष घर पर नौकरी नहीं करते। वे तो केवल पत्नी के काम में सहयोग देते हैं। वास्तव में यह काम पत्नी का ही है। पुरूष एक ही मालिक की नौकरी करता है। उस मालिक के काम से समय निकालकर पत्नी के काम में सहायता देता रहता है। पत्नी का काम अधिक कठिन और थका देने वाला होता है। इस कारण उसको तो सबकी सहायता की आवश्यकता पड़ती है।"

माया विचार कर रही थी कि आज उसका पिता गहन रहस्य की बात कर रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। आज उसका मस्तिष्क ठीक काम करने लगा हैं। वह विस्मय कर रही थी कि निरंजनदेव से पाँच मिनट बात करने के बाद ही ये इतने स्थिर-चित्त हो गए हैं।

वह चुपचाप बैठी थी। एकाएक नारायणदास ने कहा, "मुझे रमा के श्वसुर के घर में रहते लज्जा लग रही है। परन्तु बेटा! मैं पंगु हो गया हूँ। कुछ काम नहीं कर सकता। बदनाम हो गया हूँ।"

"पर पिताजी! यह चोरी किसने की थी ?"

"मैंने सब कथा निरंजनदेव को बता दी है।"

"वही निगमबोध घाट पर बेरी वाली ?"

"हाँ, किन्तु उससे कुछ अधिक भी।"

माया समझ रही थी कि अपने पाप को स्वीकार कर उसके पिता का चित्त स्थिर हुआ है। वह इसे अच्छा लक्षण समझती थी। इस कारण आज वह बहुत देर तक अपने पिता के पास बैठी रही।

चार बजे रमा आई और बाप-बेटी को घुल-घुलकर बातें करते देख हँस पड़ी। उसने पूछा, "क्या बातें हो रही हैं, माया ?"

"आओ तुमको बताती हूँ। पिताजी कह रहे हैं कि पढ़ाई करनी व्यर्थ हैं। नौकरी अपने पति के घर की करनी अधिक अच्छी है। इस कारण मुझे जल्दी विवाह कर लेना चाहिए।"

"तो कर लो न ?"

"मैंने पिताजी से कहा है कि वे कर दें। इस पर उनका कहना था कि तुम्हारा विवाह गलत आदमी से कर दिया गया है। इसलिए वे भापा निरंजनदेव से मेरे लिए वर ढूँढने के लिए कहेंगे।"

"पर सुना है कि वे तो सेना में भर्ती होने के लिए जा रहे हैं ?"

"सेना में ?" नारायणदास ने तमककर कुर्सी पर से उठते हुए कहा, "नहीं, मैं उसको वहाँ नहीं जाने दूँगा। चलो मैं उसको मना करता हूँ। उसके पिता को मैं इस विषय में लिखूँगा।"

रमा ने उससे पूछा, "माताजी कह रही हैं कि आप चाय पीने के लिए वहाँ आएँगे या यहीं भेज दें ?"

"निरंजनदेव है या चला गया है ?"

"वे चाय पीने के बाद जाएँगे।"

"तो मैं भी वहीं चाय पीऊँगा।"

तीनों वहाँ जा बैठे। बैरे ने लॉन में कुर्सियाँ और तिपाई लगा रखी थीं। सब बैठ गए तो चाय की सामग्री भी आ गई। महानारायण, नारायणदास और निरंजनदेव एक साथ बैठे थे। बैठते हुए नारायणदास ने महानारायण से कहा, "भाई साहब! इन सब चीजों का बदला तो अब मैं अगले जन्म में ही चुका पाऊँगा। लड़की के घर का खाकर न जाने कितने गुणा अधिक देना पड़ेगा।"

महानारायण ने मुस्कराते हुए कहा, "परन्तु निरंजनदेव एक और बात कह रहा है ?"

"क्या कह रहा है ?"

"यही कि मैंने आपका पिछले जन्म का बहुत ऋण देना था, वहीं चुका रहा हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनका तो यह कहना है कि माया का भी विवाह कर दूँ तो ऋण कुछ और हल्का हो जाएगा ओर कदाचित् इसी जन्म में चुकता हो जाय।"

"यह निरंजनदेव ने कहा है ?"

"हाँ।"

"तुम ऐसा किस प्रकार कहते हो, निरंजनदेव ?"

"चाचाजी! परमात्मा का यही न्याय हैं।"

नारायणदास इससे सन्तुष्ट था और चाय बनाकर पी रहा था।

महानारायण भी देख रहा था कि आज वह बहुत शांत हैं। कभी-कभी तो वह चाय भी नहीं बना सकता था। कभी तो वह चाय प्याले में डालकर फिर पॉट में डाल देता था। आज उसने अपने लिए ठीक प्रकार से चाय बनाई और चीनी तथा दूध भी उचित मात्रा में ही डाला था।

एकाएक चाय पीते-पीते प्याला सॉसर में रखकर उसने निरंजनदेव से पूछा, "रमा कह रही है कि तुम सेना में भर्ती हो रहे हो ?"

"अभी तो नहीं, हाँ, मैंने अपना नाम लिखकर भेज दिया है। मुझे अभी स्वीकृति नहीं मिली। स्वीकृति मिलने के बाद परीक्षा होगी। यदि उसमें उत्तीर्ण हो गया तो फिर ट्रेनिंग होगी और तब कहीं जाकर भर्ती हूँगा।"

"ट्रेनिग किस बात की देंगे ?"

"शत्रु को गोली से मारने की।"

"पर शत्रु तुमको भी तो मार सकता है ?"

"मैं तो किसी का शत्रु नहीं हूँ, फिर मुझे कोई क्या मारेगा ?"

"नहीं निरंजन! एक बार सेना की पंक्ति में खड़े हो गए तो फिर सामने खड़ा व्यक्ति शत्रु ही होता है और जिसके सामने तुम होगे वह तुमको शत्रु समझेगा ही।"

निरंजनदेव ने उसके मस्तिष्क का बोझ हल्का करने के लिए कहा, "चाचाजी! बात तो आपने ठीक की है। यह तो अब विचारणीय हो गई है। इस कारण भर्ती होने से पूर्व विचार कर लूँगा।"

"हाँ, और मुझसे मिलकर भर्ती होना। मैं तुम्हें एक और रहस्य की बात बताऊँगा।"

"जरूर मिलूंगा।"

"पर तुम इतने दिन तक तो मिलने के लिए आए ही नहीं ?"

"मुझे पता नहीं था कि आप यहाँ आ गए हैं। अब आया करूँगा।"

: 9 :

घर आकर नलिनी ने एक और बात बताई। उसने कहा, "नारायणदास को केवल माया ही वश में कर सकती है। वह अपने पिता को बहुत ही धैर्यपूर्वक और ढंग से समझाती हैं।"

"यह तो मैं देख आया हूँ। उसका अपने पिता पर बहुत प्रभाव है।"

"माया कहती थी कि यदि आप स्वीकृति दें तो वह आपके दर्शन करने के लिए आ जाया करे।"

"क्या करेगी दर्शन करके ?"

"मैंने कहा था कि आपका चित्र उसके पास है ही। वह उसमें भी दर्शन कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती है। इस पर उसने कहा कि उसमें तो केवल रूप के दर्शन ही होते हैं। वह आपके मन और आत्मा के दर्शन भी चाहती है। उसने एक अन्य रहस्य की बात बताई है कि जबसे आपने उसके पिता से पृथक् में बात की है तब से वे सर्वथा शान्त और समझदारी की बात करने लगे हैं।"

"यह बात तो महानारायणजी भी कह रहे थे; आज से पूर्व तो वे अंटसंट बात ही किया करते थे। पहले तो मेरे रमा से काल्पनिक विवाह की बात कर बैठे थे। परन्तु अब वे कह रहे थे कि वे महानारायण का ऋण अगले जन्म में ही दे सकेंगे।"

"मेरा विचार है कि आपको उनसे मिलते रहना चाहिए।"

"और माया से नहीं ?"

"नहीं, अब मैं आपको उससे मिलने के लिए मना नहीं करती।"

"क्यों ?"

"मुझे अपने पहले के मना करने पर ही पश्चात्ताप हो रहा है।"

"यही तो मैं पूछ रहा हूँ कि क्यों ?"

"मुझे यह आशा ही नहीं करनी चाहिए कि आपसे गलती भी हो सकती है।"

"ओह, उस दिन तो मुझे पारस ही समझा था और आज साक्षात् परमात्मा ही मानने लगी हो ?"

"क्या जादू किया है आपने आज नारायणदास पर ?"

निरंजनदेव ने वह कथा बता दी जो-जो नारायणदास ने किसी लड़की के लॉकेट छीनने और फिर लड़की के परमात्मा पर उसको छोड़ने की बात बताई थी।

"आप क्या समझते हैं क्या यह ठीक होगी ?"

"यह अथवा कोई इसी प्रकार की अन्य गम्भीर बात अवश्य उसके मन पर है। मैंने उसे वचन दिया है कि परमात्मा से उसके विषय में जानकारी प्राप्त कर उसको बताऊँगा।"

नलिनी मुस्कराई।

अगले दिन निरंजनदेव आफिस से आया तो माया पहले ही उसके घर पर आई हुई थी। निरंजनदेव जब अपनी साइकिल रखने लगा तो माया और नलिनी दोनों ही बरामदे में आकर खड़ी हो गईं।

"ओह माया! कहो, कैसे आई हो ?"

"ऐसे ही।"

"तो क्या कॉलेज नहीं जातीं आजकल ?"

"अभी तो जाती ही हूँ। परन्तु आपसे राय करना चाहती हूँ ?"

"हाँ, बोलो।"

तीनों भीतर आ गए थे। जब निरंजन और माया बैठ गए तो नलिनी बोली कि वह चाय बनाने के लिए जा रही है। यह कहकर वह रसोईघर में चली गई।

माया बोली, "कल पिताजी कह रहे थे कि मुझे पति के घर की नौकरी करनी चाहिए। किसी दफ्तर की नौकरी पति की नौकरी से घटिया होती है। साथ ही पति के घर की नौकरी के लिए कॉलेज की पढ़ाई व्यर्थ है। मैं यह जानना चाहती हूँ कि इस विषय में आपकी क्या राय है ?"

"यह बात तुम्हारे पिताजी ने कही है न ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उन्होंने ही कही है, परन्तु है तो यह युक्तियुक्त ही।"

"युक्तियुक्त तो है, परन्तु इसमें एक दोष है। युक्ति वह व्यक्ति कर रहा है, जिसको इस बात पर राय देने का अधिकार नहीं है। देखो माया! जब तुम्हारा विवाह होगा तब तुम्हारा पति यह निर्णय करेगा कि वह तुमसे किस प्रकार की सेवा लेना चाहता है। जब तक विवाह नहीं होता तव तक तुम्हें जो कुछ पढ़ने-सीखने को मिले, करते रहना चाहिए।"

"हाँ, इतना ध्यान रखना कि अपने दिमाग और मानसिक विचारों में इतनी लचक स्थिर रखना कि तुम्हारी शिक्षा और संस्कार पति की सेवा के अनुरूप ही बन जायँ।"

इस प्रकार उत्तर दिये जाने पर माया गम्भीर विचार में पड़ गई। उसे चुप देख निरंजनदेव ने कहा, "जो कुछ मैंने कहा है, पहले उस पर विचार करो और फिर उसके अनुरूप ही अपना आचरण करो।"

इतना कहकर वह अपने वस्त्र बदलने के लिए दूसरे कमरे में चला गया। वास्तव में वह माया को स्वतन्त्रता से विचार करने का अवसर देना चाहता था।

जब वह वस्त्र बदलकर आया तो नलिनी चाय लगा रही थी। उसे आया देख नलिनी कहने लगी, "क्या कह गए हैं आप इसको ? इसका तो एकदम मुख ही उतर गया है।"

"मैंने कुछ कहा नहीं। एक समस्या इसके सम्मुख रखी है कि एक कुमारी लड़की क्या समझे कि उसके पति के घर में उससे क्या-क्या सेवां ली जाने वाली है ? इस कारण उसको अपने को ईश्वरार्पण छोड़कर जो कुछ भी पढ़ने-सीखने तथा समझने का अवसर मिले उसे जाने नहीं देना चाहिए।"

"यह तो वहुत अच्छी बात बताई है आपने। माया! इसका अभिप्राय तो यह हुआ कि जब तक अवसर मिल रहा है, कॉलेज की पढ़ाई करती जाओ।"

"भाभी! यही तो मैं समझने के लिए आई थी कि एक पत्नी को किस श्रेणी तक पढ़ाई करनी चाहिए।"

"जब तक विवाह नहीं हो जाता और यह पता नहीं चल जाता कि पति किस प्रकार की सेवा लेगा, तब तक जो भी और जहाँ तक भी पढ़ाई हो सके करती रहो।" निरंजनदेव ने अपने मत की पुष्टि में पुनः यही कह दिया।

माया ने अब अधिक खुलकर बात की। उसने कहा, "मुझे कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि मेरा विवाह तो बहुत देर तक होने वाला नहीं है। तो क्या मैं तब तक पढ़ती ही जाऊँ ?"

"हाँ, यदि पढ़ाई का खर्चा मिलता जाए तो।"

"इसके लिए तो लालाजी ने मुझे अपनी लड़की बना लिया है और वे मुझे उतना ही देते हैं जितना कि रमा को।"

"तो पढ़ती जाओ।"

"पढ़ाई समाप्त हो जाएगी और विवाह तब भी नहीं हो सका तो ?"

"ऐसी अवस्था में उस समय विचार कर लेंगे।"

"तो यह आपका निश्चित मत है ?"

"हाँ।"

"मैं तो भाभी से गृहविज्ञान सीखने के लिए आई थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसके लिए अभी समय है। कॉलेज की पढ़ाई तो सदा मिल नहीं सकती। घर की विद्या तो कभी भी एक मास लगाकर सीखी जा सकती है।"

"भाभी कह रही थी कि यह बहुत कठिन है।"

नलिनी हँस पड़ी। उसने कहा, "जब मेरे गुरूजी कहते हैं कि एक मास में सीख जाओगी तो ठीक है, फिर चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।"

"हाँ," निरंजनदेव ने कहा, "यदि विवाह से विलम्ब होता गया तो एम० ए० तक तो पढ़ ही लो। फिर भी अवसर हुआ तो पी० एच० डी० कर लेना, और फिर भी कहीं डोली में चढ़कर न गई तो प्रोफेसर की नौकरी कर लेना।"

"यह सब-कुछ आप चाहते हैं ?"

"हाँ।"

माया मौन हो गई। चाय बनी और तीनों पीने लगे। चाय पीते हुए और उसके बाद भी माया गम्भीर विचार में मग्न रही। जाते समय उसने कहा, "मैं समय-समय पर आपके मार्ग-दर्शन के लिए आया करूँगी।"

वह सतीश की साइकिल पर आई थी। उस पर ही चली भी गई। नलिनी ने अपने पति की ओर ध्यान से देखा तो निरंजनदेव ने कहा, "मैं इसको यह नहीं बताना चाहता था कि उसके मन के भावों को मैं समझ गया हूँ। मैं अभी उसको अपना रहस्य मुझ पर प्रकट करने में प्रोत्साहन देना नहीं चाहता। साथ ही मैं चाहता हूँ कि यह चित्त लगाकर अपनी पढ़ाई चालू रखे, जिससे वह किसी के साथ अनर्गल सम्बन्ध न बना ले।"

"भगवान जाने उसके भाग्य में क्या लिखा है! परमात्मा ही ठीक प्रेरणा देगा।"

"ठीक हैं। वैसे वह मुझें कहती थी कि मैं उसको इस घर में सेविका के रूप में रख लूँ। मैंने कह दिया है कि घर पति का है, मैं तो स्वयं सेविका हूँ।"

"प्रतीत होता है कि वह तथा उसका पिता दोनों ही उत्केन्द्र मन (एक्सेण्टिक माइंड) वाले हैं। दोनों में सामंजस्य का कारण भी यही हैं। इसको पागल होने से रोकने का यही उपाय है कि इसको अपनी धुन में लीन रहने देना चाहिए।"

इस समय निरंजनदेव को कुछ स्मरण आया तो वह कहने लगा, "मुझको युद्ध-कार्यालय से पत्र आ गया है। उसमें लिखा है कि इस मास की दस तारीख को मैं प्रातः दस बजे प्रथम परीक्षा के लिए मिलिट्री अकादमी देहरादून के कार्यालय में उपस्थित हो जाऊँ। यह परीक्षा तीन दिन तक चलेगी।"

"इतने दिन तक क्या परीक्षा होगी ?"

"यह कुछ नहीं लिखा।"

"तो आप जा रहे है ?"

"देखों नलिनी! यह तो तुम्हारे विचार करने की बात है। तुमको कुछ कष्ट होगा। लाहौर जाना पड़ेगा।"

"यह तो सर्वथा साधारण बात है। यदि आपको इस रूप में कार्य करना रुचिकर है तो आप जाइये।"

"तो ठीक हैं। मैंने तीन दिन का अवकाश ले लिया है। नौ तारीख की रात को मैं चला जाऊँगा।"

"पहले तो परीक्षा पास करने की बात है ?"

"वह तो हो जाएगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कभी घोड़े की सवारी की है।"

"हाँ, बचपन में पहाड़ी टट्टुओं पर की थी।"

"किन्तु फौजी घोड़े तो पहाड़ी टट्टू नहीं होते ?"

"इस विषय में तुम निश्चिन्त रहो। मैं सिलैक्ट हो जाऊँगा।"

निरंजनदेव को स्वयं पर बहुत विश्वास था और वह तेरह तारीख को देहरादून से कमिशण्ड आफिसर की ट्रेनिंग के लिए सिलैक्ट होकर आ गया। उसने आकर नलिनी को बताते हुए कहा, "सत्य ही परीक्षा कठोर थी। परन्तु मैं सभी परीक्षाओं में प्रथम अथवा द्वितीय रहा हूँ। इस प्रकार चुने जाने वालों में मेरा नाम सर्वोपरि है।"

"तो अब ?"

"मुझे एक फॉर्म भरने के लिए दिया गया है। उसके आधार पर खुफिया पुलिस से मेरी रिपोर्ट ली जाएगी। उस रिपोर्ट के अनुकूल होने पर मुझे ट्रेनिंग कॉर्प्स में सम्मिलित किया जाएगा। उसी दिन से मेरा वेतन लग जाएगा।"

"क्या वेतन होगा ?"

"यह सब नियमों में लिखा है। एक दिन जाकर मैं पढ़ूँगा। इस पर भी वर्तमान वेतन से तो अधिक ही होगा। और फिर इस पदवी की मानप्रतिष्ठा भी तो है।"

"घोड़े से गिरे तो नहीं ?"

"नहीं, केवल एक बात में गलती हो गई कि मैं घोड़े को उतनी तेजी से नहीं घुमा सका, जितनी तेजी से प्रथम आने वालों ने घुमाया था।"

"कोई बात नहीं। मुझे तो सदा यही डर रहता था कि कहीं आप घोड़े से गिरकर चोट न खा जायँ।"

"नलिनी! तुम्हारी शुभ-कामना के रहते हुए कभी ऐसा हो नहीं सकता था। और मैं बताता हूँ कि मैं युद्ध से भी विजयी होकर सही सलामत लौटूँगा।"

: 10 :

निरंजनदेव से वार्तालाप करने पर माया यह समझी कि जिसको उसने अपना पति चुना है, उसने उसे यह आदेश दिया है कि वह कम-से-कम पी०एच०डी० तो कर ही ले। इसे वह युक्तियुक्त भी मानती थी। वह समझती थी कि यदि कभी उसे निरंजनदेव के घर पर रहने का सुअवसर मिल गया तो उसे कम-से-कम अपना खर्चा निकालने के योग्य हो जाना चाहिए। उसको यह भली-भाँति विदित था कि निरंजनदेव महानारायण की कमाई से पली हुई लड़की को अपनी पत्नी प्रकट कर घर में नहीं रख सकता। नलिनी ने उसे बताया था कि उसके विवाह के बाद उसके पति ने अपने पिता से भी कभी एक पैसा नहीं मँगवाया। इससे वह परिस्थिति का अनुमान लगाकर अपनी पढ़ाई में लग गई।

एक दिन उसे विदित हुआ कि निरंजनदेव परीक्षा देने के लिए देहरादून गया है। तदनन्तर वह एक दिन महानारायण इत्यादि से मिलने आया। उसने बताया कि वह परीक्षा में सफल हो गया है। खुफिया पुलिस की रिपोर्ट उसके अनुकूल होने पर उसको ट्रेनिंग के लिए बुला लिया जाएगा। महानारायण ने एक बार कहा भी कि वह गलती कर रहा है। युद्ध-जैसा कार्य उसके वश की बात नहीं हैं। परन्तु निरंजनदेव अपने निश्चय पर अटल रहा।

सबसे विचित्र बात थी इस पर नारायणदास के मन की प्रतिक्रिया। वह अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्ति से सबमें आकर बैठता और बातचीत, जब रूचि होती हो करता था। महानारायण ने जब निरंजनदेव को युद्ध पर जाने से मना किया और निरंजनदेव ने अपना दृढ़ निश्चय बताया तो नारायणदास बोला, "निरंजन! तीर ठिकाने पर लगेगा। मुझे पता है।"

"तो आप ऐसा ही समझते हैं ?" निरंजनदेव ने पूछा।

"समझता नहीं, जानता हूँ। तुम जब वापस आओगे तो लोग तुम्हारी प्रशंसा करेंगे। वे तुम्हे पुष्पमालाएँ पहनाएँगे और तुम्हारी तरक्की होगी।"

सबने यह समझा कि नारायणदास का विकृत मस्तिष्क पुनः कल्पना के घोड़े दौड़ने लगा है। इस कारण किसी ने उसकी बात पर कुछ कहा नहीं।

वहाँ से लौटने से पूर्व निरंजनदेव ने नारायणदास को पृथक् ले जाकर कहा, "मैंने आपके विषय में परमात्मा से बात की थी........।"

"मुझे विदित हो गया है।" नारायणदास ने बात बीच में ही काटकर कहा, "वे स्वयं मुझे बताने के लिए आये थे। उनका कहना था कि वे तुमसे मिले हैं और यह कह गये हैं कि मेरा कर्मफल अभी समाप्त नहीं हुआ है। इस कारण वह धन जो मरघट में बेरी की जड़ में गाड़ा गया था, अब बहुत गहरा चला गया है। जब मेरे बुरे कर्मो का फल समाप्त होगा तभी वह मुझे वापस मिल सकता है। यह कदाचित् अगले जन्म में ही होगा अब।"

निरंजनदेव झूठ बोलने लगा था कि परमात्मा से उसकी भेंट हुई है। इससे बिना बोले काम बनता देख उसने सुख का साँस लिया। इस पर भी वह आश्चर्य कर रहा था कि किस प्रकार नारायणदास ने भी वही बात बताई है जो वह परामात्मा का नाम लेकर बताने वाला था। इस समय उसने चुप रहना ही उचित समझा। नारायणदास ने कहा, "मुझे परमात्मा ने यह भी बताया है कि जो दुःख मैं शान्ति से सहन कर रहा हूँ, वे मेरे पाप-कर्मो के फल को क्षीण कर रहे हैं।"

"तो क्या परमात्मा ने उसी समय आपको यह भी बताया है कि मैं विजयी होकर युद्ध से घर लौटूंगा।"

"हाँ, वे कहने लगे कि मैं अपने किसी कार्य से निरंजनदेव को बर्मा भेज रहा हूँ। वह उस कार्य को सफलतापूर्वक करके लौटेगा। इस कारण मैं उसको बहुत तंग न करूँ। एक बात उन्होंने और कही है कि माया कोई पुण्यात्मा है जो मुझे इस नरक-कुण्ड से निकालने में सहायक बनने के लिए आई है।"

निरंजनदेव इसे विकृत मस्तिष्क की हवाई कल्पना समझ रहा था। इस पर भी वह उसका इस बात से विश्वास हटाना नहीं चाहता था। इसमें नारायणदास का जीवन सुलभ और शान्तिप्रद रहा था।

इस भेंट के बाद तो सब परिचित लोग निरंजनदेव के किसी भी दिन ट्रेनिंग सेंटर में जाने की प्रतीक्षा करने लगे। इन्ही दिनों एक दिन मोहिनी और उसके बच्चे सुधा, प्रभा, महादेव और धर्मदेव दिल्ली आ पहुँचे। मोहिनी ने कहा कि वे सब उसके युद्ध पर जाने से पूर्व उससे मिलना चाहते थे। शीघ्र ही उसके पिता भी अवकाश लेकर आने वाले हैं। इस प्रकार कुछ दिन वे लोग उसके साथ रह सकेंगे। उसने निरंजनदेव को यह भी बताया कि खुफिया पुलिस की जाँच-पड़ताल लाहौर में हो चुकी है और उनको विश्वास है कि वह शीघ्र ही घर छोड़कर जाएगा।

निरंजनदेव ने कहा, "माँ! मैं युद्ध पर जाने से पूर्व लाहौर में आने वाला था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब भी, हम कुछ दिन तुम्हारे साथ रहने के लिए आये हैं।"

युद्ध का समय होने के कारण, पुलिस जिस जाँच को पूर्ण करने के लिए तीन मास लगा देती थी, वह पन्द्रह दिन में ही पूर्ण हो गई। मोहिनी इत्यादि को आये अभी तीन दिन भी नहीं हुए थे कि निरंजनदेव को चौदह फरवरी को जबलपुर ट्रेनिंग कैम्प में उपस्थित होने का आज्ञापत्र आ गया। यह पत्र उसे दस फरवरी को मिला था।

आज्ञा मिलते ही निरंजनदेव ने तार द्वारा इस विषय में अपने पिता को सूचित कर दिया। अतः अर्जुनदेव भी ग्यारह तारीख की प्रातःकाल दिल्ली आ गया।

निरंजनदेव को विदा करने के लिए महानारायण ने अपनी कोठी में एक पार्टी का आयोजन किया। इसमें नारायणदास के परिवार के व्यक्ति, महानारायण के निकटतम सम्बन्धी और अर्जुनदेव का परिवार ही सम्मिलित था। हाँ, इस दिन एक विशेष बात यह हुई कि चाय-पार्टी के समय से कुछ ही पूर्व कमलनारायण जेल से छूटकर आ गया और महानारायण की द्वितीय पत्नी राधा भी शिमला से दिल्ली आ गई।

इस प्रकार ये दोनों व्यक्ति अनामन्त्रित ही चाय-पार्टी में सम्मिलित हो गए। कमल ने घर में कुछ चहल-पहल देखी तो महानारायण से पूछा, "पिताजी! आज यह कैसा समारोह हैं ?"

"तुम्हारा मित्र सेना में भर्ती हो रहा है। उसकी विदाई के उपलक्ष्य में यह समारोह किया जा रहा है।"

"यह सब खाने-पीने का प्रबन्ध उसी सम्बन्ध में है ?"

"हाँ।"

"तब तो ठीक है। मेरे जेल से छूटने के उपलक्ष्य में की जाने वाली पार्टी भी आज ही समझनी चाहिए।"

"हाँ, समझ सकते हो। परन्तु ऐसा समझना तभी सार्थक हो सकता है जब पुनः जेल जाने का विचार न हो।"

"नहीं पिताजी! अब मैं पकड़ा नहीं जाऊँगा। मैं पहले से अधिक समझदार हो गया हूँ।"

महानारायण मन-ही-मन मुस्कराकर चुप रहा। कमल ने राधा की ओर देखकर कहा, "तो मैं अपने जेल से लौटने की दावत पर राधा मौसी को आमन्त्रित करता हूँ।"

"और मुझे निमन्त्रण नहीं दे रहे ?" महानारायण ने पूछा।

"आप ही तो यह दावत दे रहे हैं।"

"ओह! यह तो मैं भूल ही गया था।"

इस प्रकार ये दोनों भी इस दावत में सम्मिलित हो गए। कमलनारायण निश्चित तिथि से पाँच दिन पहले ही छूट गया था। उसने अपने छूटने की सूचना तार द्वारा राधा को देते हुए लिखा था कि वह बारह तारीख को जेल से छूट रहा है। उसका उससे मिलने के लिए जी कर रहा है। यह तार पाकर राधा 12 तारीख की प्रातःकाल दिल्ली पहुँची थी। किन्तु कमल को वहाँ न देख उसको कुछ विस्मय हो रहा था। जब मध्याह्नोत्तर तीन बजे कमल आया तो वह सीधी उसके पास यह जानने के लिए गई कि उसको किसलिए बुलाया गया है।

इस बीच में ही कमल और महानारायण की बातचीत हो गई और राधा तथा कमल दावत में सम्मिलित हो गये। यों तो महानारायण वैसे भी राधा को दावत में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मिलित करता ही, परन्तु कमल के उसको स्वयं निमन्त्रण देने पर महानारायण को सन्देह हो गया कि इन दोनों में कुछ अधिक सम्बन्ध बन रहा है।

जब महानारायण शिमला से दिल्ली आने वाला था तो उसने राधा को दिल्ली चलने के लिए कहा था। परन्तु राधा ने यह कहकर अस्वीकार कर दिया था कि दिल्ली की जलवायु उसके स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त नहीं है। जब महानारायण ने उसको यह बताया कि वह सदा के लिए शिमला छोड़ रहा है तो राधा ने कहा था कि इस बात से रोकने के लिए ही तो वह शिमले में रह रही है। इससे कम-से-कम गर्मी के तीन मास तो वह उसकी संगत में रहने के लिए आयेगा ही।

इस प्रकार महानारायण को शिमला से आये दो वर्ष हो गये थे। गर्मियों के तीन मास वह शिमले में व्यतीत करता था। मैनादेवी उन दिनों दिल्ली में ही रहा करती थी। उसको दिल्ली अधिक सुखप्रद प्रतीत हुआ था।

उस दिन जब एकाएक राधा आई तो महानारायण चकित रह गया। इस दावत में कमल की ओर से राधा को निमन्त्रण मिलने पर तो उसको कुछ दाल में काला प्रतीत होने लगा। इस पर भी वह इस विषय के रहस्य को अपने-आप खुलने के लिए छोड़ पार्टी के प्रबन्ध में लग गया।

दावत से कुछ समय पूर्व जब निरंजनदेव आया तो कमल को वहाँ उपस्थित देख नलिनी को पीछे छोड़कर वह कमल से मिलने गया और उसको पुनः इस संसार में लौट आने पर बधाई देने लगा।

कमल बोला, "इस बधाई के लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। मैं आपको दोषी भी नहीं मानता, क्योंकि मैं जानता हूँ कि यदि मैं आपकी स्थिति में होता तो मैं भी वही करता जो आपने किया था।"

"मैं आपकी पत्नी से प्रेम करता था। उसको पथ-भ्रष्ट करने के लिए मैं प्रत्येक उपाय प्रयोग करने वाला था और उस दिन जो कुछ हुआ वह कुछ अंशों में मेरे उस दिशा में प्रयत्नों का परिणाम ही था।"

"यह तो नहीं जानता कि आपको किसने सचेत कर दिया कि हमारे लेन-देन को कोई मजिस्ट्रेट देख रहा है, परन्तु आप मुझसे चतुर निकले और मुझको पराजित करने में सफल हो गये।"

"एक बात मैं देख रहा हूँ कि नलिनी पहले से अधिक सुन्दर हो गई है। परन्तु आपको अब मुझसे भय नहीं मानना चाहिए। इस विषय में मेरी अपेक्षा आपको मेरे पिताजी से सावधान रहना चाहिए। वे वृद्ध अवश्य हो गये हैं, परन्तु बूढ़ों की तृष्णा युवकों से अधिक भयंकर होती है!"

निरंजनदेव ने कमल का धन्यवाद करते हुए कहा, "इस सम्भावना से सचेत करने के लिए मैं आपका आभारी हूँ।" इतना कह वह महानारायण से मिलने के लिए चला गया। कमल नलिनी के पास आ गया। वह इस समय मैनादेवी और श्यामा से बातचीत कर रही थीं।

नलिनी को हाथ जोड़ नमस्कार करते हुए कमल ने कहा, "भाभी! मैं अपने पिछले अपराधों के लिए आपसे क्षमा माँगता हूँ।"

नलिनी मुख देखती रह गई। कमल ही पुनः कहने लगा, "यदि आप क्षमा कर दें तो मैं आपसे एक काम लेना चाहता हूँ। कोई अनुचित अथवा धर्मविरुद्ध कार्य नहीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्युत सर्वथा धर्मसंगत कार्य ही है।"

नलिनी चुप नहीं रह सकी। उसने कहा, "तो क्या यह धर्मसंगत कार्य आपकी माताजी ने करना अस्वीकार कर दिया है, जो माताजी की अपेक्षा आप भाभी से करने के लिए कह रहे हैं ?"

यह बात मैं चायपार्टी समाप्त होने के बाद बताऊँगा कि माँ से अधिक भाभी क्यों उसमें सहायक हो सकती है ?

"देखिये, मैं कल लाहौर जा रही हूँ। मेरे सास-श्वसुर और ननदें मुझे ले जाने के लिए आये हुए हैं। कुछ काम है तो अभी बता दो। यदि इस अल्पावधि में कर सकी तो कर दूँगी।"

सब लोग लॉन में खड़े चाय की प्रतीक्षा कर रहे थे। कमल ने नलिनी को बैठ जाने के लिए कहा तो नलिनी मैनादेवी के मुख पर देखने लगी। मैनादेवी ने कहा, "सुन लो बेटा! कमल अभी जेल से छूटकर आया है, और यह पहली बात ही उसने अभी तक कही है।"

"नहीं माताजी!" कमल बोला, "यह दूसरी बात है। पहली पिताजी ने पूरी कर दी है।"

नलिनी ने मैनादेवी से कहा, "आइये माताजी! मैं सुनना चाहती हूँ कि यह कौन-सा धर्मसंगत कार्य मुझसे करवाना चाहते हैं।"

मैना अपने साथ श्यामा को भी बैठाने ले गई। बैठने पर कमल ने कहा, "पिछले पौने तीन वर्ष के बन्दी-काल में, मेरे बहुत आग्रह करने पर भी केवल एक बार ही रमा मुझसे जेल में मिलने के लिए आई। यह पिछले मास की बात है। मैंने उसे भेंट में कहा था कि मैं उससे क्षमा चाहता हूँ। और वह मेरे साथ रहना स्वीकार कर ले। किन्तु उसने कह दिया कि इस जन्म में तो वह मेरे साथ रहेगी नहीं। मैंने बहुत अनुनय-विनय की, किन्तु फिर भी वह मानी नहीं। मेरा विचार है कि वह अभी भी निरंजनदेव से प्रेम करती है और अवसर मिलने पर उसकी पत्नी बनने की लालसा रखती है।"

"इस कारण मैं समझता हूँ कि नलिनी भाभी ही इस कार्य में मेरी सहायता कर सकती हैं। इनके समझाने का उस पर प्रभाव होगा और यह समझाना धर्मसंगत हैं। मेरे जीवन को सुधारने के लिए यह कारण बन सकता है।"

नलिनी ने गम्भीर होते हुए कहा, "यदि आप ओर रमा दाम्पत्य जीवन व्यतीत करते हुए अपना और समाज का कल्याण कर सकें तो इससे मुझे प्रसन्नता होगी। मैं इसमें सहयोग दे सकती हूँ, किन्तु केवल यह बात है कि कल सायंकाल अपनी सास के साथ मैं लाहौर जा रही हूँ और वह जाना मैं टाल नहीं सकती। इस अल्प काल में मैं क्या कर सकती हूँ और क्या करूँगी, कह नहीं सकती। फिर भी मैं कुछ-न-कुछ करने का यत्न करूँगी।"

"इस चाय-पार्टी के बाद आप उससे मिलिए। कल उसको अपने घर पर बुलाइये और आवश्यकता हो तो लाहौर आने का भी निमन्त्रण दे दीजिए। मैं अब साधारण जीवन व्यतीत करने में ही अपना कल्याण मानता हूँ।"

इस परिवर्तन का कारण और इसमें सत्यता का अनुमान नलिनी नहीं लगा सकी। इस पर भी उसने कहा, "आपके इन शुभ विचारों को सुनकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है। मैं अपनी ओर से यत्न करूँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नलिनी से यह आश्वासन मिलने पर कमल राधा के समीप जा पहुँचा। राधा उस समय निरंजन की माँ के पास खड़ी अपना परिचय दे रही थी। कमल वहाँ गया तो उससे कहने लगा, "मौसी! तुम यहाँ मेरा तार पाकर ही आई हो अथवा किसी अपने काम से ही ?"

"कमल! दो वर्ष से तुम्हारे पिता शिमला छोड़ चुके हैं। पिछली गर्मियों में वे तीन मास के लिए वहाँ गए थे और इस वर्ष भी आने की आशा दिला रहे हैं। पिछले दो वर्ष में मैं यहाँ रहने के लिए कभी नहीं आई। केवल एक बार तुमको जेल में मिलने के लिए आई थी।"

"यहाँ आने में मुझे कोई प्रसन्नता नहीं होती। अब तो तुम्हारे पिताजी की संगत में भी रूचि कम होती जाती है। मैं तो केवल अपने वचन का पालन करने आई थी कि जब तुम मिलना चाहोगे तो मैं आ जाऊँगी।"

"तो आओ। मैं तुमको अपनी एक योजना बताना चाहता हूँ। आशा करता हूँ कि उसे पूर्ण करने में तुम मुझे सहयोग दोगी।"

"तुम बताओ। यदि उचित होगी तो मैं, जो कुछ हो सकेगा, करूँगी।"

"मैं कण्डाघाट के समीप कहीं पटियाला राज्य में एक ब्रूअरी लगाना चाहता हूँ। इसके लिए यत्न तो मैंने जेल के अन्दर से ही आरम्भ कर दिया था। आशा है राज्य की ओर से स्वीकृति भी मिल जाएगी। इस विषय में मैं पिताजी का आर्थिक सहयोग चाहता हूँ। मैं यह जानता हूँ कि यदि तुम पिताजी से कह दोगी तो वे अस्वीकार नहीं करेंगे।"

राधा इस बात पर विचार करने लगी। कितनी ही देर तक वह आँखें मूँदे बैठी रही। फिर एकाएक वह उठ खड़ी हुई और बोली, मैं तुम्हारे पिता की आर्थिक बातों में हस्तक्षेप नहीं करती। आज तक मैंने कभी किया भी नहीं। आर्थिक-विषय की किसी भी योजना पर, चाहे वह पापमय हो अथवा पुण्यमय, मैंने कभी कुछ नहीं कहा। मैंने तो उनसे अपने निर्वाह के लिए भी कभी कुछ नहीं माँगा। इस कारण तुम्हारे कार्य में गुणवगुणों की टीकाटिप्पणी किए बिना ही मैं यह कहती हूँ कि इसमें न तो मैं किसी प्रकार की सहायता करूँगी और न ही किसी प्रकार की बाधा उपस्थित करूँगी।

"मैं तो उसमें तुमको आधी की पत्तीदार बनाना चाहता था।"

"आधी की बनाओं अथवा पूरी की, मेरी इसमें कोई रूचि नहीं हैं। देखो कमल! यदि इस बात के लिए ही तुमने तार दिया था तो मैं कल रात यहाँ से शिमला वापस चली जाऊँगी। यहाँ मुझे ऐसा लगता है कि मानो मेरा श्वांस रूक रहा हो।"

इतना कहकर राधा महानारायण के पास चली गई। उसने कहा, "अब तो सब आमन्त्रित आ गए हैं, आप दावत क्यों नहीं आरम्भ करवाते ?"

"क्यों निरंजन! ठीक है क्या ?"

"हाँ! ये रातभर की यात्रा करके आ रही हैं, इसलिए शीघ्र यहाँ से निपटकर आराम करना चाहती होंगी।"

"इतना ही नहीं। मुझे कल पुनः रात्रि की यात्रा करनी है और यहाँ से जाने से पूर्व बहुत कार्य करने हैं।"

"तो तुम कल ही जा रही हो ?" महानारायण ने पूछा।

"जी, यहाँ मेरा दम घुटता-सा लगता है।"

"किन्तु तुम आई किसलिए थीं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कमल ने तार देकर बुलाया था। मैंने उसे बुलाने का कारण पूछा है और उस कारण की निस्सारता को जान मैंने कल ही वापस लौट जाने का निश्चय कर लिया है।"

"क्या कारण है ?"

"यह वह स्वयं ही आपको बता देगा। मैं उसके प्रयास का न विरोध कर रही हूँ और न ही भविष्य में करूँगी। हाँ, मैं समर्थन भी नहीं करती।"

महानारायण ने बैठते हुए कहा, "राधा! तुमने तो मेरे मन में कौतूहल उत्पन्न कर दिया है। खैर छोड़ो। मैं पिछले बाईस वर्ष से तुम्हारा व्यवहार देख रहा हूँ। वास्तव में तुम कमल के लिए मुझसे कुछ कहतीं तो मुझे आश्चर्य न होता । खैर, बात तो सामने आएगी ही। तब तुम्हारे चार सौ मील की यात्रा कराने वाला रहस्य विदित हो ही जाएगा।"

जब महानारायण और निरंजन बैठे तो सब लोग भी आकर बैठ गए। कमल वहाँ गया जहाँ रमा, माया, सुधा और प्रभा बैठी थीं। उसने माया से पूछा, "माया बहिन! क्या मैं यहाँ बैठ सकता हूँ ?"

उत्तर देते हुए रमा ने कहा, "आप पुरुषों में बैठिए। यहाँ हम सब कुमारियाँ बैठी हैं, और हममें से कोई भी नहीं चाहेगी कि हंसों में कौआ आकर बैठ जाए।"

इस उत्तर पर सभी की हँसी फूट पड़ी। कमल दीनता से अपनी पत्नी की ओर देखने लगा तो माया को दया आ गई। उसने तुरन्त कह दिया, "एक शर्त पर हम आपको बैठने के लिए कह सकते हैं। वह यह कि आप मेरे पिताजी को राजी करके यहाँ पर ले आएँ।"

"उस पागल में क्या गुण है कि वह तो कुमारियों में बैठने के योग्य है और मैं नहीं ?"

"उनमें यह गुण है कि जब आप कोई पागलपन की बात करने लगेंगे तो वे अपनी बुद्धिमत्ता की बातों से आपकी उलटी-सीधी बातों का प्रभाव दूर कर देंगे।"

कमल हँस पड़ा और बोला, "बहुत खूब! अच्छी बात है। एक बात तो विदित हुई कि यह पूर्ण परिवार पागलों से भरा पड़ा है। तभी उस पागल की बात को युक्तियुक्त मानता है। मैं उनको लाने का यत्न करता हूँ।"

कमलनारायण नारायणदास के पास चला गया। वह इस समय अपनी पत्नी के समीप बैठा कुछ बातें कर रहा था।

: 11 :

कमल जब नारायणदास के पास जाकर बैठा तो नारायणदास प्रश्न भरी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा। कमल ने कहा, "पिताजी! आपको रमा बुला रही हैं।"

"मैं रमा का नौकर नहीं हूँ।" नारायणदास ने कहा।

"उसके अतिरिक्त उसकी सहेलियाँ आदि भी बुला रही हैं।"

"माया भी वहीं है ?"

"जी।"

"तो क्या वह कहती है कि मैं छोकरियों में जाकर बैठूं ?"

"जी! वास्तव में मायादेवी ने कहा है कि मैं उसके साथ तभी बैठ सकता हूँ जब आप भी चलकर बैठें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो यह बात है।" नारायणदास ने कहा और अपनी पत्नी से कहने लगा, "आओ श्यामा! तुम भी आओ। इसमें अवश्य ही माया का कोई विशेष उद्देश्य होगा।"

यद्यपि आज कई मास बाद श्यामा घर के विषय में नारायणदास से इस प्रकार बात करने बैठी थी। वह देख रही थी कि उसका पति अब इस विषय में बात करने के योग्य हो गया है। इस पर भी वह पति की किसी भी इच्छा का विरोध करना नहीं चाहती थी। उसको भय था कि इससे कहीं उसका रोग बढ़ न जाय। उसने उठते हुए कहा, "माया की बात को तो टाला नहीं जा सकता न ? चलिये।"

श्यामा और नारायणदास को साथ लेकर कमल उस मेज पर जा बैठा, जहाँ माया आदि बैठी थीं। उनको आता देखकर रमा उठकर जाने लगी तो सुधा ने उसकी बाँह पकड़कर उसे रोक दिया। उसने कहा, "रमा बहिन! इस समय तो वह तुम्हारा गला घोंट नहीं सकता। तुम डरती किसलिए हो ? हम चार हैं, वह अकेला है। कुछ किया तो हम ऐसी मरम्मत करेंगे कि जन्म-भर याद रखेगा।"

विवश रमा को बैठना पड़ा। तीनों वहाँ आकर रिक्त स्थान पर बैठ गये। माया सबके लिए चाय बनाने लगी। अन्य सब लोग मिठाइयाँ खाने लगे। नारायणदास ने कहा, "कई वर्षो के बाद इस प्रकार की दावत खाने का सुयोग बना है।"

"हाँ पिताजी! आपने रमा के विवाह के अवसर पर जो दावत दी थी वह इससे कहीं अच्छी थी।"

"हूँ।" नारायणदास ने कमल की ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखते हुए कहा, "रमा का विवाह ? किसके साथ हुआ था ? मैं तो समझता हूँ कि वह अभी कुमारी ही है।"

सब इसका अर्थ समझते थे। कमल ने बात में संशोधन प्रस्तुत करते हुए कहा, "तो रमा का विवाह नहीं हुआ ? हाँ, मुझसे भूल हो गई है। वह दावत किसी अन्य उपलक्ष्य में दी गई होगी। इस पर भी वह आपके घर के सामने वाले लॉन में आपकी ओर से दी गई थी।"

"मुझे स्मरण नहीं।"

चाय बन गई तो रमा ने प्याले उठाकर सबके सामने रख दिये। कमल ने एक प्याला उठा नारायणदास के सम्मुख रखते हुए कहा, "एक प्याला चाय पी लीजिये। शायद कुछ स्मरण आ जाय।"

नारायणदास ने प्याला लिया और उसमें एक सुरकी लगाकर प्याला पुनः मेज पर रखते हुए कहा, "बहुत गर्म है। मैं इतनी गर्म चाय नहीं पीता। माया! तुम बताओ।"

"पिताजी! आप ठीक कह रहे हैं। रमा दीदी का विवाह नहीं हुआ। आपने दावत तो रमा दीदी के विवाह के उपलक्ष्य में ही दी थी परन्तु दावत मात्र से ही क्भी विवाह होता है क्या ?"

"यह कौन है जो दावत की बात कर रहा है ?"

"ये लाला महानारायण जी के सुपुत्र हैं।"

"ओह! याद आ गया है।"

नारायणदास ने पुनः चाय उठाकर पीनी आरम्भ की। कमल ने अब इससे दूसरे ढंग से बात करते हुए कहा, "मैं समझता हूँ कि रमादेवी का विवाह हो जाना चाहिए। ये तो अब एम० ए० फाइनल में पढ़ती हैं, इस वर्ष इनकी पढ़ाई पूर्ण हो जाएगी।"

"हाँ, कोई योग्य वर मिल गया तो विवाह हो जाएगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक वर तो आपके पास ही बैठा है। यह प्रस्ताव करने के लिए ही तो मैं आपको यहाँ पर लाया हूँ।"

"परन्तु तुम तो महानारायण जी के लड़के हो और रमा को उन्होंने अपनी लड़की बना रखा है। तुम अपनी बहिन से विवाह करोगे क्या?"

"नहीं पिताजी! मेरे पिताजी ने रमा को अपनी पतोहू बनाने के लिए ही उसको अपनी पुत्री बना रखा है। वे पतोहू और लड़की में अन्तर नहीं समझते।"

"यह तो वे ही जानें। तुम उनसे जाकर बात करो। मेरा इससे कोई सम्बन्ध नहीं। क्यों माया! क्या कहती हो तुम?"

"आप ठीक कह रहे हैं। भापाजी की लड़की है अथवा पतोहू, यह उनकी है। इसलिए कमल भैया को वहीं अपनी अर्जी पेश करनी चाहिए।"

बाप-बेटी को उसको इस प्रकार डिसमिस करते देख कमल हँस पड़ा। सुधा आदि को भी हँसी आ गई। श्यामा ने अब वार्तालाप में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "कमल बेटा, तुम इस विषय में अपने पिताजी से बात करो। रमा पर उनका बहुत अहसान है। वे इस समय रमा के माता-पिता और अन्नदाता बने हुए हैं। रमा उनका कथन टाल नहीं सकती। मैं समझती हूँ कि तुम उनको प्रसन्न करो तो रमा अस्वीकार नहीं करेगी।"

रमा को इससे क्रोध आने लगा। कमल ने यह अनुभव किया तो उसने पूछा, "रमा! क्या माताजी कुछ गलत बात कह रही हैं?"

"अब मैं बाईस वर्ष की हो चुकी हूँ। कानून से भी मैं अपने विवाह के विषय में स्वयं निर्णय करने की अधिकारिणी बन गई हूँ। इस पर भी मानव हूँ और किये हुए को भूल नहीं सकती। जो कुछ भापाजी ने किया है वह मेरे मानस पर अमिट अक्षरों में अंकित है, और जो कुछ उनके बेटे ने किया है वह भी गहरी काली रेखाओं से मेरे मानस पर लिखा हुआ है। इस कारण मैं उस लिखे हुए को देखकर ही निर्णय करूँगी।"

कमलनारायण समझ गया कि अपने पिता को प्रसन्न किए बिना कुछ काम नहीं बन सकता। उसने वहाँ समय को व्यर्थ गँवाना उचित न समझ अपने पिता के पास जा बैठा।

महानारायण बोला, "लुढ़कते पत्थर पर मिट्टी नहीं जमती। देखो कमल! किसी मेज पर डटकर बैठ जाओ, नहीं तो कुछ भी खाने को नहीं मिलेगा।"

"इस समय तो मैं पत्नी की खोज में हूँ, इसलिए प्रत्येक मेज पर जा-जाकर उसे खोज रहा हूँ। खाना न मिलने से कुछ नहीं बिगड़ेगा, परन्तु पत्नी न मिलने से तो अनर्थ हो जाएगा।"

"मैंने सुना है कि तुमको को तो जेल में भी पत्नी मिलती रही है?"

'पिताजी! वह बहुत महँगी पड़ी। इसलिए मेरी पांच मास की जेल बढ़ गई थी।"

"यह तो कुछ भी नहीं हुआ। तुम-जैसा व्यक्ति तो मनपसन्द पत्नी मिल जाने पर आजीवन जेल में रहना पसन्द कर लेगा।"

"यही तो बात है। पत्नी तो मनपसन्द मिली नहीं, किन्तु जेल मिल गई।"

"तो क्या यहाँ मनपसन्द की मिल रही है?"

"एक मिली तो, किन्तु उसने आपके पास सिफारिश करवाने के लिए भेज दिया है।"

"मैंने एक बार तुम्हारे लिए सिफारिश की थी। किन्तु उस सिफारिश की तुमने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह मिट्टी पलीत की है कि मुझे तौबा-करनी पड़ गई। अब तो मैं तुम्हारी सिफारिश नहीं कर सकता।"

"उसी पुरानी सिफारिश को फिर दुहरा दीजिए। मैं इस बार उसका आदर करूँगा।"

"तुम रमा के विषय में कह रहे हो?"

"जी!"

"देखो कमल! वह तुम्हारी विवाहिता पत्नी है। उसके साथ तुमने जो व्यवहार किया है, उसके लिए क्षमा माँगो। वह यदि क्षमा कर दे तो मैं उसमें किसी प्रकार की बाधा उपस्थित नहीं करूंगा।"

"मैंने क्षमा-याचना तो की थी, परन्तु उसने अभी कोई उत्तर नहीं दिया। इस कारण मैं चाहता हूँ कि उसके उत्तर देने से पूर्व आप मेरी सिफारिश कर दें। उसका कहना है कि वह आपके अहसान से दबी हुई है। इससे वह आपकी बात को टाल नहीं सकती।"

"यह तो तुम दोनों ने मुझे भारी कठिनाई में डाल दिया है। मैं तुम्हारी सिफारिश तब तक नहीं कर सकता, जब तक कि तुम अपने पिछले कुकृत्यों का प्रायश्चित नहीं कर लेते।"

"मैं समझता हूँ कि तीन वर्ष जेल में रहकर मैंने पर्याप्त प्रायश्चित कर लिया है।"

"यह भी क्या प्रायश्चित हुआ जो वहाँ भी तुम औरतों के पीछे भागते रहे हो? वे तुम्हारे मनपसन्द की थीं अथवा नहीं, यह प्रायश्चित की शर्त नहीं हो सकती।

"तो प्रायश्चित की क्या शर्त है?"

"एक वर्ष तक शुद्ध-पवित्र जीवन व्यतीत करो और इस अवधि में स्वतंत्र रूप से अपना तथा अपनी पत्नी और उसकी सम्भावित सन्तान के पेट भरने का प्रबन्ध कर लो। तभी मैं सिफारिश कर सकता हूँ। यों स्वेच्छा से बिना सिफारिश के ही रमा मान जाय तो मैं बाधक नहीं बनूँगा।"

: 12 :

इन बातों-ही-बातों में चाय पी गई। चाय समाप्त हुई तो महानारायण ने सबको समीप-समीप बैठने के लिए कहा। सब उसके आस-पास आ बैठे तो महानारायण ने कहा, "निरंजनदेव ने सेना में अपना नाम लिखाया था और परिणामस्वरूप ये कल प्रशिक्षण के लिए जबलपुर जा रहे हैं। आज का आयोजन इस विदाई के उपलक्ष्य में ही है। इस आयोजन के बीच में ही कमलनारायण तीन वर्ष का कारावास काटकर वापस आया है। उसकी इच्छा थी कि यह आयोजन उसके जेल से छूटने के उपलक्ष्य में भी मान लिया जाय। मुझे इसमें कोई आपत्ति प्रतीत नहीं हुई।"

"इस कारण इस आयोजन के दो उद्देश्य हो गए है। हम सब भगवान से प्रार्थना करते हैं कि जिस कार्य के लिए निरंजनदेव सेना में जा रहे हैं उसमें उनको सफलता मिले। साथ ही अब यह भी आवश्यक हो गया है कि हम कमल के लिए भी प्रार्थना करें कि भगवान उसको सुबुद्धि दे और वह अपने जीवन को सुखमय बनाने में सफल हो।

"मैं आप सबका भी धन्यवाद करता हूँ कि आप मेरी इन प्रार्थनाओं में मेरा साथ दे रहे हैं।"

इस प्रकार दावत समाप्त हुई और अर्जुनदेव ने अपने लड़के के प्रति शुभ कामना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकट करने के उपलक्ष्य में सबका धन्यवाद किया और अपने परिवार को लेकर वह वहाँ से चला गया।

महानारायण, मैना, राधा और कमल महानारायण के कमरे में चले गए। नारायणदास अपने निवास-कक्ष की ओर चला आया।

वहाँ पहुँच रमा ने अपनी माँ से कहा, "माँ! यदि भापाजी का लड़का इस कोठी पर रहेगा तो आप लोगों को यह स्थान छोड़ देना चाहिए। मुझे भय है कि इससे आपका और पिताजी का अपमान हो जाएगा।"

रमा की बात का औचित्य सब समझते थे। परन्तु साधन-विहीनता के कारण किसी के मुख से कोई बात नहीं निकल रही थी। सब एक-दूसरे का मुख देखते रह गए। माया ने अन्त में कहा, "मैं अभी जाकर इस विषय में भापाजी से बात करती हूँ। यदि उनका भी यही मत हुआ तो हम नलिनी भाभी के साथ लाहौर चले जाएँगे।"

"तुम्हारी और रमा की पढ़ाई का क्या होगा?"

"जैसे अन्य साधनविहीन लड़के-लड़कियों की शिक्षा रूक जाती है, वैसे हमारी भी रूक जाएगी।"

इस निराशामय सम्भावना पर सबका मुख उतर गया। इस स्थिति को भलीभाँति न समझते हुए नारायणदास ने कहा, "क्या कह रही है माया?"

"यदि कमल को यहाँ रहना है तो हम यहाँ नहीं रहेंगे।"

"रमा क्या कहती है?"

"मैं तो इतना कहती हूँ कि जिस नगर में वह रहे, हमें उस नगर में ही नहीं रहना चाहिए।"

"तो फिर चलो, आज रात भी यहाँ रहने की क्या आवश्यकता है?"

"लेकिन जाएँ कहाँ?" श्यामा का कहना था।

"पंजाब को। मैं समझता हूँ कि हमको गुजराँवाला गए बहुत दिन हो गए हैं। पहले वहाँ चलना चाहिए। फिर मेरे भाई विष्णुदास हैं और उनका लड़का सुरेश है, उसके श्वसुराल वाले हैं।"

"यह तो ठीक है। इस प्रकार एक-एक मास सबके यहाँ रहने लगे तो पांच-छः मास तो निकल ही जाएंगे। पर मैं चाहती थी कि किसी प्रकार एक-दो वर्ष और दिल्ली में रहने का प्रबन्ध हो जाता तो लड़कियों की शिक्षा पूर्ण हो जाती।"

माया ने कहा, "मैं भापाजी से मिलकर आती हूँ। तब इसके विषय में निश्चय करेंगे। मैं समझती हूँ कि मैं इस प्रकार का प्रबन्ध करने में सफल हो जाऊँगी।"

माया उठी और महानारायण के कमरे में जा पहुँची। वहाँ इस विषय पर पहले ही वार्तालाप हो रहा था। महानारायण ने कमल से पूछा, "क्यों कमल, अब कहाँ रहने का विचार है?"

"अपने पिताजी की कोठी में।"

"कौन है तुम्हारा पिता?"

"इस बात के विषय में तो माताजी ही बता सकेंगी।"

"क्या जन्म देने से ही कोई माता-पिता होता है? क्या पिता-पुत्र में जन्म के अतिरिक्त भी कोई कर्त्तव्य है?"

"मुझे किसी ने बताया नहीं। आज बता दीजिए। मैं उस कर्त्तव्य को पालन करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का यत्न करूँगा।"

"जो कुछ तुम बी० ए० तक पढ़कर नहीं समझ सके, वह अब दो मिनट में क्या समझ सकोगे? देखो कमल! पुत्र के नाते नहीं, एक अभ्यागत के नाते तुम रातभर यहाँ रह सकते हो। कल तक रहने के लिए जब तक रमा की सिफारिश नहीं ले आते तुम यहाँ नहीं रह सकते।"

"ऐसा क्यों पिताजी? आपकी वह क्या लगती है?"

"वह मेरी बहू है। उसका पति मर चुका है और इसलिए वह अब यहाँ की मालकिन है। यह कोठी मैंने रमा और उसकी बहिन माया के नाम कर दी है।"

"और मेरे नाम आपने क्या किया हुआ है?"

"वह मैंने वसीयत में लिखा हुआ है। तुम कोर्ट से वसीयत की प्रतिलिपि प्राप्त कर सकते हो।"

माया पिता-पुत्र का यह वार्तालाप सुन रही थी। उसने यह सुन रखा था कि महानारायण ने वसीयत लिखवा रखी है और उसमें आधी कोठी उसके नाम पर भी कर रखी है। इससे वह यह तो जान गई थी कि वह और उसके माता-पिता निश्शंक होकर रह सकते हैं, इस पर भी वह यह जानना चाहती थी कि यदि कमल ने किसी प्रकार का झगड़ा किया तो उस स्थिति में उनका क्या कर्त्तव्य होगा?

पूर्व इसके कि वह कमल के पिता से कुछ पूछे कमल उठकर बाहर चला गया। महानारायण ने उसको आवाज दी तो उसने घूमकर पूछा, "कहिए?"

"किधर जा रहे हो?"

"मैं अपने किसी मित्र से मिलने के लिए जा रहा हूँ।"

"रात को यहाँ आओगे?"

"आऊँगा नहीं तो कहाँ जाऊँगा।"

"खाना कहाँ खाओगे?"

"कहीं यदि न मिला तो यहाँ भी खा सकता हूँ। इतना अवश्य है कि यदि भोजन के समय पर नहीं आया कि फिर मैं भोजन करके ही आऊँगा।"

जब वह चला गया तो माया बोली, "भापाजी! मेरी माताजी पूछ रही हैं कि वे और पिताजी यहाँ रह सकते हैं अथवा नहीं?"

"देखो माया! आधी कोठी तुम्हारी है औ" आधी रमा की है। तुम चाहो तो अपने भाग में अपने माता-पिता को रख सकती हो। यहाँ रहते हुए वे खाना-पीना भी तुम्हारी सम्पत्ति में से ही कर रहे हैं। हम रमा की सम्पत्ति में से खर्च करते हैं।"

"मैं तो यह समझती हूँ कि जिसका आप जिक्र कर रहे हैं, यह बँटवारा आपके जीते-जी तो पक्का नहीं कहा जा सकता। इस कारण आपसे राय किये बिना कुछ नहीं होगा।"

"हाँ, तुम ठीक कहती हो। मैं अपनी वसीयत को किसी समय भी बदल सकता हूँ। इसीलिए मैं बताना चाहता हूँ कि अभी तक मेरा विचार बदला नहीं है।"

इस आश्वासन पर माया प्रसन्नता से तरल नेत्र वहाँ से उठीं और अपने माता-पिता को बताने के लिए जा पहुँची। वे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। माया ने कमल और उसके पिता में उसके सम्मुख हुआ पूर्ण वार्तालाप बता दिया।

श्यामा ने पूछा, "तो अब क्या करना चाहिए?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृढ़ स्वर में माया ने कहा, "अभी यहाँ से जाने की आवश्यकता नहीं है। किन्तु जिस समय भी भापाजी हमारी अवहेलना करें, हमें तुरन्त यहाँ से चला जाना चाहिए। तब हम तुरन्त कृष्णा भाभी के घर जा सकते हैं।"

बात समाप्त हो गई। तदनन्तर इधर-उधर की बातें होती रहीं। माया और रमा अपने-अपने कमरों में जाकर अपनी पढ़ाई पर बैठ गईं।

रात भोजन के समय कमल नहीं लौटा और किसी ने उसके अभाव को अनुभव भी नहीं किया। भोजन के समय सारी बातचीत निरंजनदेव के स्वभाव-व्यवहार और उसके सेना में प्रविष्ट होने के विषय पर ही चलती रही।

भोजनोपरान्त सब उठे और अपने-अपने कमरे में चले गए। डाइनिंग हॉल से निकलते हुए माया ने महानारायण और अपनी माँ से कहा, "मैं कल प्रातःकाल निरंजनदेवजी को विदा करने के लिए स्टेशन पर जा रही हूँ। गाड़ी प्रातःसात बजकर चालीस मिनट पर छूटती है, अतः मैं बहुत प्रातः ही यहाँ से चली जाऊँगी।"

"मैं ड्राइवर को कह देता हूँ, वह सात बजे तुम्हें ले जाने के लिए तैयार रहेगा।"

"कह दीजिए।"

इस प्रकार वह अपने कमरे में गई तो रमा भी उस समय उसके साथ ही थी। माया ने कहा, "रमा अपने कमरे में अकेले डर लगता हो तो आज मेरे कमरे में ही सो जाओ।"

"मुझे डर नहीं लगता। मैं अब जीने-मरने में कोई विशेष अंतर नहीं समझती।"

"फिर भी भीतर से द्वार की कुण्डी तो चढ़ा ही लेना।"

"मैं यह कहना चाहती हूँ कि कल जब तुम स्टेशन पर जा रही हो, तो वहाँ नलिनी भाभी से पूछना कि उनकी गाड़ी का समय कौन-सा है। मैं उनको विदा करने के लिए जाना चाहती हूँ।"

"मैं पूछ लूँगी।"

"मैंने उनकी सास से पूछा था कि यदि कभी लाहौर आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तो क्या उनके पास ठहरने की सुविधा प्राप्त हो सकेगी? इस पर उन्होंने कहा कि यदि इच्छा हो तो मैं वहाँ आजीवन भी रह सकती हूँ।' इस कारण मैं उनसे सम्पर्क रखना चाहती हूँ। कहा नहीं जा सकता कि किस समय किसकी आवश्यकता पड़ जाए। इस जीवन ने मेरे साथ भारी छल खेला है।"

माया केवल मुस्करा दी। रमा माया के कमरे से निकल अपने कमरे में चली गई। रमा के जाने पर माया अपने कमरे में आकर लेट गई। लेटे-लेटे वह अपने जीवन की विडम्बना पर विस्मय कर रही थी। निरंजनदेव के प्रति अपने आकर्षण का स्मरण करती-करती वह सो गई। उसको रात में उसके स्वप्न भी आते रहे।

बहुत प्रातःकाल उठकर वह पढ़ने बैठ गई। छः बजे वह स्नान-आदि के लिए गई और पौने सात बजे प्रातःक़ाल की चाय पीने के लिए डाइनिंग हॉल में जा बैठी। सात बजे मोटर में बैठ स्टेशन के लिए चल दी।

नारायणदास प्रातःकाल श्यामा के साथ कोठी की लॉन में टहल रहा था। नित्य तो माया उसको घुमाया करती थी। आज उसके स्टेशन चले जाने के कारण यह कार्य श्यामा कर रही थी।

उनको टहलते हुए अभी दस मिनट ही हुए थे कि स्लीपिंग सूट में कमल उस ओर से आता दिखाई दिया जिधर वे रहते थे। कमल ने समीप आकर नमस्कार किया तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्यामा विस्मय में उसकी ओर देखने लगी। वह जानना तो चाहती थी कि वह किसलिए इधर आया है, किन्तु अपमान हो जाने से डरती भी थी। इस कारण चुप ही रही। नारायणदास ने पूछा, "रमा के कमरे से आ रहे हो?"

"जी।" मुस्कराते हुए कमल ने उत्तर दिया।

"तो सुलह हो गई है?"

"जी, उसने कृपा कर रात सोने के लिए स्थान अपने कमरे में दे दिया है।"

"तो ठीक है। पति-पत्नी में यदि सुलह हो जाय तो किसी को इसमें नाराज होने का कोई कारण नहीं।"

श्यामा इस प्रकार बात समाप्त होती देख प्रसन्नता और चिन्ता में किसी प्रकार का निर्णय नहीं कर सकी कि दोनों में किसकी मात्रा अधिक है। बात का सूत्र अपने हाथ में रखते हुए ही नारायणदास ने पूछा, "अपने पिताजी से मिले हो?"

"नहीं। रात में बहुत विलम्ब से आया था। रमा के कमरे में प्रकाश देख मैं सीधा वहाँ चला गया। मैंने उससे जब कहा कि वह सोने के लिए मुझे अपने कमरे में स्थान दे दे तो वह कुछ बोली नहीं। मैंने उसके मौन को स्वीकृति समझ भीतर से द्वार बन्द कर लिया और फिर जितनी सुगमता से उससे सब-कुछ निर्णय हुआ वह अन्य कहीं नहीं हो सकता था।"

"अब मैं बहुत प्रसन्न हूँ। अपने पिताजी को इस विषय की सूचना देने जा रहा था कि आप लोगों को यहाँ घूमते देख सूचना देने चला आया हूँ। आप लोगों के आशीर्वाद से अब मैं अपना स्वतंत्र कार्य करता हुआ जीवनयापन करूँगा।"

"कहाँ है रमा?" श्यामा ने पूछा।

"अभी तो वह अपने कमरे में ही है, किन्तु अब वह अपनी पुस्तकें आदि समेटकर मेरे लिए नियत कमरे में जाने की तैयारी कर रही है।"

इस प्रकार बात कर कमल वहाँ से अपने पिता के पास चला गया। उसके जाने पर श्यामा ने अपने पति से पूछा, "यह क्या हुआ है?"

"वही जो स्वाभाविक है।"

श्यामा की मुस्कराहट फट पड़ी। उसने कहा, "आखिर रमा भी पशु ही सिद्ध हुई है।"

"वह तो है ही। मानव अथवा पशु का शरीर-निर्माण तो समान पदार्थों से ही होता है। अन्तर तो आत्मा और मन का है।"

"मनुष्यों में विवाहित जीवन का आरम्भ शरीर के मिलन से होता है। परन्तु जहाँ पति-पत्नी में मन और आत्मा नहीं मिलते वहाँ उनका सम्बन्ध वही रहता है जो पशुओं में होता है। देखें इनके विषय में क्या होता है?"

श्यामा और नारायणदास लॉन से रमा के कमरे के द्वार पर जा पहुँचे। रमा अपना सामान एकत्रित कर रही थी। अपने माता-पिता को आया देख वह आँखें नीची किये हुए खड़ी रह गई। श्यामा समझ गई कि रमा कमल के कथन की पुष्टि कर रही है। इस कारण उसने पूछा, "रमा! प्रसन्न हो?"

रमा ने आँखें मूँदे सिर हिलाकर अपनी प्रसन्नता को स्वीकार कर लिया। श्यामा ने पुनः कहा, "परमात्मा तुम दोनों को सुमति दे, जिससे कि पिछली कटुता निर्मूल होकर तुम लोगों का जीवन सुखमय व्यतीत हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब कमल के कमरे में जा रही हो क्या?" नारायणदास ने पूछ लिया।

रमा ने पुनः सिर हिलाकर ही उत्तर दिया।

जब कमल ने महानारायण के पास जाकर यह सूचना दी तो श्यामा से अधिक विस्मय उसको हुआ। उसने कहा, "बुलाओ रमा को।"

कमल रमा को बुला लाया। रमा ने कहा, "पिताजी! मन की ग्लानि की अपेक्षा शरीर अधिक प्रबल सिद्ध हुआ है। इन्होंने वही कुछ किया है जो उस दिन मैंने किया था, जिस दिन इन्होंने मेरी गर्दन् दबाई थी। अन्तर यह है कि मैं अबला हूँ। इनका गला दबा नहीं सकती थी। इस कारण जो कुछ इन्होंने कहा मैंने स्वीकार कर लिया और मैं समझती हूँ कि मैंने ठीक ही किया है। आखिर कब तक इस प्रकार रूठकर बैठा जा सकता है?"

"तो अब तुम माया की कोठी की ओर का हिस्सा खाली कर कमल के साथ आकर रहने लगो।"

"वह मैं कर रही हूँ।"

"ठीक है। सुखी रहो, प्रसन्न रहो और तुम्हारा जीवन धनधान्य से सम्पन्न हो! परमात्मा करे शीघ्र ही तुम अपने श्वसुर को पोते के दर्शन कराओ। मैं इसके लिए बहुत लालायित हूँ।"

⇩⇩⇩

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

:1:

निरंजनदेव सन् 1942 के फरवरी मास में जबलपुर पहुँचा। वहाँ से मई मास में, ट्रेनिंग पूर्ण होने पर उसे आसाम की सीमा पर भेज दिया गया। उसकी रैजिमैंट की नियुक्ति इम्फाल में हो गई। निरंजनदेव को लैफ्टीनैंट पद पर नियुक्त किया गया था। एक सेना की टुकड़ी के साथ उसको समीप की पहाड़ियों और वनों में निरीक्षण को भेजा जाता था। सायंकाल आकर वह अपने कार्य की रिपोर्ट दे देता था।

एक दिन वह आया तो उसकी टुकड़ी के कई सैनिक घायल थे। उसने रिपोर्ट दी कि "हिन्दुस्तानी सैनिकों की एक अन्य टुकड़ी से सामना होने पर उसने उनसे संकेत पूछा। उन्होंने संकेत नहीं बताया। तब उसने मोर्चा गाड़ दिया। उन्होंने भी बंदूकें तान लीं। फिर वे एकाएक उठकर जंगल में घुस गये और छिप-छिपकर उन्होंने इनके सैनिकों पर गोलियाँ चलानी आरम्भ कर दीं। परिणामस्वरूप दस व्यक्ति घायल हो गये हैं।"

इस समाचार से हिन्दुस्तानी सेना में चर्चा आरम्भ हो गई। इनका अनुमान था कि निरंजनदेव की टुकड़ी का सामना सुभाष बोस की सेना की टुकड़ी से हुआ है। इससे यह परिणाम निकाला गया कि शीघ्र ही दो हिन्दुस्तानी टुकड़ियों में युद्ध होगा।

अधिकांश सिपाहियों के मनों में यह प्रश्न था कि उनको उस टुकड़ी के साथ लड़ना चाहिए अथवा नहीं। अधिकारियों का एक सम्मेलन किया गया। निरंजनदेव भी उसमें सम्मिलित था। इम्फाल की रक्षा के प्रश्न पर विचार होने लगा। कमांडिंग आफिसर मिस्टर लुडविंग ने कहा,"हमारा तो विचार था कि यहाँ पर जापानियों की सेना लड़ने के लिए आएगी। यह उनको विदित होना चाहिए कि हमारी डिफेंस लाइन बहुत गहरी है। इम्फाल तो केवल आगे की चौकी मात्र है। इस कारण उनको इस सुरक्षा लाइन को तोड़े बिना नवनिर्मित हिन्दुस्तानी बागी सेना को लड़ने के लिए भेज देना गलती है।

"हमको यदि यह विदित होता तो हम यहाँ एक अमेरिकन रैजिमैंट की नियुक्ति कराते। खैर, मैंने आज के समाचार के बाद अपने हैड क्वार्टर गोहाटी को सूचना भेज दी है और मैं वहाँ की आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। तब तक हमें यहाँ की रक्षा का प्रबन्ध करना चाहिए।"

निरंजनदेव ने कहा, "जो हिन्दुस्तानी सेना यहाँ पर नियुक्त हैं, उस पर हम अधिक भरोसा नहीं कर सकते। इस बात की चर्चा सेना में वेग से हो रही है कि हिन्दुस्तानी आक्रमणकारियों का वे सामना करें अथवा उनके साथ जा मिलें।"

"ऐसा नहीं हो सकता। हमें अपनी सेना की वफादारी पर पूर्ण विश्वास है। ये लोग देहातों के रहने वाले हैं। बगावत तो केवल नगरों में रहने वालों के मनों में है।"

निरंजनदेव ने समझा कि उसने आफिसर को इस विषय में चेतावनी देकर अपने कर्त्तव्य का पालन कर दिया है। अधिक कहने का उसका अधिकार नहीं है। अन्य हिन्दुस्तानी अधिकारियों ने इस विषय में कुछ भी सम्मति नहीं दी।

कमांडिंग आफिसर ने उस क्षेत्र का मानचित्र खोलकर सामने रखा और भिन्न-भिन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आफिसर्स को उनकी पोजीशन बताकर अगले दिन प्रातःकाल अपने-अपने स्थान पर जा खड़े होने का आदेश दे दिया।

निरंजन को इम्फाल छावनी की पूर्वी सीमा पर नियुक्त किया गया। सम्मेलन से उठते ही निरंजनदेव ने अपने दस्ते को एकत्रित होने का आदेश दे दिया। जब सब एकत्रित हो गए तो निरंजनदेव ने कहा, "मुझे सूचना मिली है कि हमारे सैनिक विचार कर रहे हैं कि वे आक्रमणकारियों का सामना करें अथवा उनके साथ मिलकर भारत को स्वतन्त्र करने के प्रयास में सहायक बन जाएँ। इस विषय में मेरा कथन है कि इस प्रकार से विचार करना हमारा काम नहीं है। हम सैनिक हैं। राजनीति हमारा विषय नहीं है। जो राजनीतिक नेता हैं उनकी बात का खण्डन न करता हुआ मैं यह कहना चाहता हूँ कि महात्मा गांधी जो तुरन्त स्वराज्य-प्राप्ति के लिए जीवन की बाजी लगाये हुए हैं वे भी जापानियों को पसन्द नहीं करते। वे भी कहते हैं कि वे जापानियों के आक्रमण का विरोध करेंगे।"

"यह कहना कठिन है कि इस समय आक्रमणकारियों की सहायता करना देश के हित में होगा। इस विषय में मतभेद है। अतः हमें अपना कर्त्तव्य-पालन करना चाहिए। हमारा कर्त्तव्य यही है कि अपने देश पर कोई भी विदेशीय आक्रमण करे तो हम उसको गोली से उड़ा दें।"

इस दो मिनट के वक्तव्य से निरंजनदेव की टुकड़ी के सैनिकों के मन स्थिर हो गए। उसको लेकर वह रात के बारह बजे ही अपने मार्ग पर जा बैठा। प्रातः चार बजे उसे सूचना मिली कि शत्रु जंगल में आगे बढ़ रहे है। आक्रमणकारियों ने जब देखा कि अंग्रेजी सेना के हिन्दुस्तानी सिपाही अपने मोर्चे पर डटे हुए हैं तो उन्होंने 'भारत माता की जय' का घोष कर दिया। एक बार तो निरंजनदेव के मन में भी संदेह हो गया कि कहीं वह गलती न कर रहा हो। परन्तु तुरन्त अपने कर्त्तव्य का स्मरण कर और स्वयं को ईश्वरार्पण कर उसने अपने साथियों को आदेश दे दिया, "इन सबको गोली से उड़ा दो।"

दनादन गोलियाँ चलने लगीं। आक्रमणकारियों ने जब देखा कि 'भारत माता की जय' के घोष से कार्य सम्पन्न नहीं हो रहा है तो उन्होंने फिर 'सुभाष बोस की जय' का घोष किया और साथ में महात्मा गांधी की जयकार भी किया। परन्तु इस पर भी जब निरंजनदेव की टुकड़ी ने गोली चलाना बन्द नहीं किया तो आक्रमणकारियों ने गोलियाँ चलानी बन्द कर दीं।

निरंजनदेव ने इस आक्रमण और तदनन्तर शान्ति-स्थापना की सूचना अपने कमांडिंग आफिसर के पास भेज दी और उसके आदेश की प्रतीक्षा करने लगा।

दिन निकलने पर छावनी की ओर से 'भारत माता की जय' और 'महात्मा गांधी की जय' का घोष सुनाई देने लगा। निरंजनदेव इसका अर्थ नहीं समझ सका। दूसरी ओर उसको युद्ध और गोली चलने का शब्द सुनाई दे रहा था।

कुछ समय और व्यतीत होने पर अंग्रेजी सेना का एक हिन्दुस्तानी सैनिक यह समाचार लाया कि इम्फाल पर आजाद हिन्द फौज का अधिकार हो गया है और बहुत से आफिसर और सैनिक आजाद हिन्द फौज के साथ जा मिले हैं। साथ ही यह समाचार भी था कि आजाद हिन्द फौज का एक दस्ता उनको हथियार डालने के लिए कहने के लिए आ रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजाद हिन्द फौज के साथ अंग्रेजी सेना का एक हिन्दुस्तानी आफिसर था। वह निरंजनदेव को यह कहने के लिए आया था कि हिन्दुस्तानी गुलाम सेना आजाद हो गई है और इस कारण उसको अब झगड़ा करने की आवश्यकता नहीं। उसने यह भी बताया कि यदि निरंजनदेव हथियार डाल दे और आजाद हिन्द फौज में काम करना चाहे तो उसकी पदवी बढ़ाकर उसको भारत को स्वतन्त्र करने के लिए ब्रिगेडियर-जनरल का पद दे दिया जाएगा।

आजाद हिन्द फौज के इस दूत के हाथ में श्वेत पताका थी। आजाद हिन्द फौज की वह टुकड़ी जो इनको अधीन करने के लिए आई थी, कुछ अन्तर पर घाटी के नीचे खड़ी थी। निरंजनदेव की स्थिति सुदृढ़ थी और वह समझता था कि वह आजाद हिन्द फौज को बहुत हानि पहुँचा सकता है। परन्तु जब उसको यह विश्वास हो गया कि इम्फाल पर आजाद हिन्द फौज का अधिकार हो गया है तो उसने अपनी टुकड़ी को हथियार डालने का दे आदेश दिया।

इस प्रकार निरंजनदेव आजाद हिन्द फौज का बन्दी हो गया। उसको तथा उसके सिपाहियों को घेरे में इम्फाल ले जाया गया।

उसी दिन सायंकाल उसको आजाद हिन्द सेना के कमांडिंग-आफिसर चरणसिंह के सम्मुख उपस्थित किया गया। चरणसिंह सिंगापुर में जापानियों का बन्दी बना था और वहाँ पर सुभाष बोस की प्रेरणा से आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित हो गया था। तब से वह सेना द्वारा आसाम पर आक्रमण करने की तैयारी में लगा हुआ था। इस सेना का यह प्रथम प्रयास पूर्ण सफल रहा। इम्फाल पर अधिकार करने में बीस से भी कम सैनिकों की हत्या हुई होगी। वहाँ अधिकार करते ही उसने आगे बढ़ने की तैयारी आरम्भ कर दी। इसके लिए समस्त हिन्दुस्तानी बन्दी सैनिकों को उसने आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित कर लिया। जो शस्त्रास्त्र उसको अंग्रेजी सेना से प्राप्त हुए थे, उनके सहारे चरणसिंह का विचार था कि वह बंगाल तक पहुंच जाएगा।

सेनापति को इतनी सरलता से इम्फाल में विजय पाने की आशा नहीं थी। इस कारण उसने आज्ञा दे रखी थी कि इम्फाल को अपने अधीन कर सेना और शस्त्रास्त्र को वहाँ एकत्रित किया जाए और फिर वहाँ से आगे बढ़ने की योजना बनाई जाए। अधिकारियों ने जापानियों से हवाई जहाजों और टैंकों की सहायता मांगी थी और उनको इसका आश्वासन भी मिला था। अतः उस सहायता की प्रतीक्षा भी इम्फाल में करनी थी।

रंगून से आसाम तक सड़क बनाने का कार्य भी जापानी सेना को ही करना था। अतः चरणसिंह को आगे बढ़ने की अपेक्षा यहीं पर ठहरने की आज्ञा आई। वह अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने में लग गया। निरंजनदेव तथा उसके अन्य सैनिकों को आजाद हिन्द फौज का अंग बनाने का कार्य होने लगा।

निरंजनदेव को जब चरणसिंह के सम्मुख उपस्थित किया गया तो हस्ताक्षर के लिए उसके सम्मुख एक छपा हुआ प्रार्थना-पत्र रख दिया गया। निरंजनदेव ने उसे पढ़कर चरणसिंह के सम्मुख मेज पर वापस रख दिया। चरणसिंह ने पूछा, "क्यों?"

"मैं एक सेना में वफादारी से कार्य करने का वचन-पत्र पहले ही भरकर दे चुका हूँ। अतः जब तक मैं उससे मुक्त नहीं हो जाता, मैं किसी दूसरी सेना में भर्ती होने के लिए प्रार्थना नहीं कर सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सेना तो एक ही है। केवल यह सेना का राष्ट्रवादी अंग है और वह दासता का अंग था।"

"मैं सैनिक हूँ और राजनीति की गहराइयों में नहीं जा सकता। मेरे लिए सुभाष बोस और महात्मा गांधी दोनों सम्मानीय हैं, किन्तु दोनों की सम्मति भिन्न है। मैं न महात्मा गांधी के वक्तव्य को ठीक समझता हूँ और न सुभाष बोस के वक्तव्य को। इस अवस्था में मैं उसी सेना का अंग रहना चाहता हूँ जिसकी मैंने शपथ खाई है।"

चरणसिंह इतनी लम्बी बहस नहीं कर सकता था। उसने सीधा प्रश्न किया, "तो तुम आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित नहीं होओगे?"

"मैं आजाद हिन्द सेना के अस्तित्व को ही नहीं मानता।"

"तो तुमको बन्दी बनाकर रखा जाएगा।"

निरंजनदेव ने इस बात को कोई उत्तर नहीं दिया। चरणसिंह ने पुनः कहा, "तो तुम देशद्रोही हो?"

निरंजनदेव ने केवल यह कहा, "मैं जापानी सेना का बन्दी हूँ।"

"हम जापानी सेना के अंग नहीं है।"

"आप जो कुछ भी हों, इस समय मैं आपका कैदी हूँ।"

"लेकिन हिन्दुस्तान में पैदा होने पर भी किस प्रकार तुम हिन्दुस्तान के हितों का विरोध कर रहे हो?"

"मैं हिन्दुस्तान के हितों का विरोध नहीं कर रहा। मैं इसमें ही हिन्दुस्तान का हित समझता हूँ कि यहाँ जापानियों का राज्य स्थापित न हो पाए।"

चरणसिंह ने समझा कि यह कोई पढ़ा-लिखा मूर्ख हिन्दुस्तानी आफिसर है। अतः इसको सीधा करने के लिए इसको दलील दी जानी चाहिए। उसने पांच सिपाहियों के संरक्षण में इसको रंगून भेजने की व्यवस्था कर ली। तदनुसार उसी सायंकाल उसको बीस मील जंगल में यात्रा करनी पड़ी।

रात की चाँदनी अथवा टॉर्च के प्रकाश में बीस मील की यात्रा कर उन्होंने पड़ाव डाल दिया। रात-भर विश्राम करने के बाद प्रातःकाल भुने चनों का अल्पाहार कर वे आगे के लिए चल पड़े।

इस प्रकार चलते हुए वे बीस दिन में रंगून जा पहुँचे। निरंजनदेव मार्ग में देखता जाता था कि गाँव-के-गाँव लूटकर जापानी सैनिकों ने भस्मसात् कर दिये हैं। जापानी सैनिकों की टुकड़ियां सेना के खाने के लिए चावल तथा अन्य वस्तुएँ एकत्रित कर रही थीं। यह भी विदित हुआ कि जापान की सेना बर्मा-चीन रोड पर अधिकार करने के लिए अभियान कर रही है।

वे सैनिक जो निरंजनदेव को बन्दी बनाकर ले जा रहे थे, इम्फाल के लिए जापानी सहायता भेजने की राह देख रहे थे। उन्हें उक्त सहायता के आने के कहीं कोई चिन्ह तक दिखाई नहीं दिये। इससे उनको निराशा हो रही थी। हिन्दुस्तानी सेना की एक और टुकड़ी रंगून से इम्फाल और आसाम की सीमा की ओर जाती दिखाई दी। उसके पास भी शस्त्रास्त्रों का अभाव था। साथ ही राशन की भी कमी दिखाई देती थी।

निरंजनदेव यह सब-कुछ देख रहा था। उसको इन सैनिकों पर दया आती थी। रंगून पहुँचकर उसको चरणसिंह के पत्र के साथ नेताजी के सम्मुख उपस्थित किया गया। पत्र पढ़कर नेताजी विस्मित हो उसका मुख देखते रहे। उन्होंने उससे पूछा, "जानते हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे फील्ड मार्शल ने तुम्हारे लिए क्या लिखा है?"

"नहीं।"

"उसका हुक्म है कि तुमको गोली मारकर उड़ा दिया जाए।"

"मुझे मालूम नहीं। न ही मुझे इसमें कोई कारण विदित है। और फिर इस साधारण-सी बात के लिए इतनी लम्बी-चौड़ी यात्रा की आवश्यकता भी मैं समझ नहीं पा रहा हूँ।"

"उसने लिखा है कि तुम अंग्रेजी सेना के वफादार पिट्ठु हो। तुमको जीवित रखना एक प्रकार के जासूस को अपने भीतर रखना होगा।"

"उसकी इस बात से तो मैं सहमत हूँ कि भारत सरकार का वफादार सैनिक हूँ। परन्तु फील्ड मार्शल के पास इस बात का कोई प्रमाण नही होगा कि मैं जासूस हूँ।"

"तुम हमारी सरकार क्यों नहीं मान लेते?"

"इसलिए कि वह भारत की सरकार नहीं है।"

"हमने हिन्दुस्तानी सेना का संगठन उसकी शक्ति के आधार पर भारत से बाहर आजाद हिन्द सरकार का निर्माण किया है। इस समय हमारे पास लगभग एक लाख सैनिक है। हमारे कोष में करोड़ों रूपया जमा है।"

"रुपये और सैनिकों की संख्या पर सरकार नहीं बना करती। अनेकों अन्य वस्तुएँ भी इसके लिए आवश्यक है। आपकी सेना और आपका जीवन भी इस समय जापानियों के आश्रित है। यदि आज जापानी अपनी सहायता वापस ले लें तो आप एक क्षण भी अपना अस्तित्व नहीं रख सकते।"

"हमारी बात यह नहीं है।" सुभाष बाबू ने कहा, "हमने अभी जापान से अपने इस प्रयास के लिए कुछ भी सहायता नहीं ली।"

"मैंने तो मार्ग में सुना था कि आप हवाई जहाज, टैंक, मशीनगन आदि जापान से माँग रहे हैं?"

"श्रीमानूजी! क्षमा करें। यह तो सहायता रूप में माँगने से भी अधिक भयानक है। सहायता के रूप में यदि जापान आपको कुछ दे देता तो उसका एहसान देने के साथ ही समाप्त हो जाता। उसके बदले में आपको कुछ देना न पड़ता। परन्तु उधार माँगने पर तो जब तक उसे लौटा नहीं देंगे, आप अपने-आपको, अपने देश को और अपने देशवासियों को उनके पास बन्धक रख रहे हैं। यदि देने में असमर्थता हुई तो उनको अधिकार होगा कि बंधक रखी वस्तु को अपने अधीन कर लें और उससे अपना ऋण वसूल करें।"

"नहीं, तुम कुछ नहीं जानते। युद्ध के समय तो मित्र राष्ट्रो में परस्पर लेन-देन होता रहता है।"

"ठीक है। मैं कुछ नहीं जानता। परन्तु इतना कह देना तो मेरी युक्ति का उत्तर नहीं है। देखिये, मैं आपके इस प्रयास को शौर्य और साहस का काम तो मानता हूँ परन्तु इसको बुद्धिमत्ता का कार्य नहीं मानता। न ही इसको देश के हित में समझता हूँ।"

"मैं अंग्रेज को जापान की तुलना में भारत का अधिक अच्छा मित्र मानता हूँ। मेरा पक्ष अंग्रेज है, जापान नहीं।"

"जापान एशियाई भाई है।"

"वह तो अरब, अफगानिस्तान, मुगल और ईरान भी थे और उन एशियाई भाइयों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने सात सौ वर्ष तक भारत को दास बना रखा था। मेरा मत है कि भले लोग हमारे मित्र तथा भाई है। दुष्ट लोग हमारे शत्रु और पराए हैं।"

"तो चरणसिंह का कथन ठीक है कि आप देशद्रोही हैं।"

"मैं स्वयं को देश तथा जाति का परम हितैषी मानता हूँ।"

"और मुझको क्या मानते हो?"

"देश का एक भ्रम-ग्रस्त नेता।"

"यदि मैं अपने प्रयत्न में सफल हो गया तो तब मुझे क्या मानोगे?"

"मुझे इसकी आशा नहीं है।"

"देखो निरंजनदेव! मैंने तुम्हारे साथ इतना समय व्यय किया है, क्या यह सब मैं व्यर्थ गया मान लूँ?"

"नहीं, इसका आप लाभ उठा सकते हैं। मेरी बातों को आप युक्ति तथा इतिहास के प्रमाण से परखिए तो इससे आपको भारी लाभ होगा।"

"तुम कहाँ तक पढ़े हो?"

"केवल बी० ए० तक। परन्तु मैंने स्वाध्याय बहुत किया है। इतिहास और महापुरूपों की जीवनियाँ मेरे विषय अध्ययन के विषय रहे हैं।"

"देखो, मैं चरणसिंह के उस ऑर्डर को, जिसमें उसने लिखा है कि तुम्हें गोली मारकर इस संसार से विदा कर दिया जाय, रद्द करता हूँ। परन्तु तुमको तब तक कैद से मुक्त नहीं कर सकता जब तक तुम आजाद हिन्द फौज में भर्ती न हो जाओ।"

"एक बात और है। हमारे पास कैदी रखने के लिए कोई स्थान नहीं है। इससे मैं यह कर सकता हूँ कि तुमको रंगून में स्वेच्छा से रहने का वचन लेकर छोड़ दूं। तुम आजीविका का उपाय स्वयं कर सकते हो। दो बातों की तुमको शपथ लेनी होगी। एक यह कि तुमको सप्ताह में प्रति सोमवार के दिन हमारे सैनिक कार्यालय में हाजिरी देनी होगी और हमारी स्वीकृति के बिना रंगून से बाहर नहीं जा सकोगे।"

"दूसरी शपथ यह लेनी होगी कि तुम किसी के साथ राजनीति के विषय पर बातचीत नहीं करोगे। बोलो, स्वीकार है?"

"स्वीकार है।"

"ठीक है, अभी इस विषय की लिखित आज्ञा तुमको दे दी जाएगी। तब तक तुम बाहर प्रतीक्षा करो।"

: 2 :

निरंजनदेव रंगून की मालरोड पर बेसरोसामान; फटी अंग्रेजी सैनिक वर्दी पहने, टूटे हुए बूट पाँव में और सिर से नंगा खड़ा विचार कर रहा था कि कहाँ जाए। आजाद हिन्द सरकार के कार्यालय ने उसके हाथ में विसा देकर उसको सड़क पर खड़ा कर दिया गया था। उसकी जेब में एक पैसा भी नहीं था। उसके पास जो कुछ पैसे अथवा हाथ में सोने की अंगूठी थी, वह बन्दी बनाते समय इम्फाल में ले ली गई थीं। उसको वचनबद्ध कर स्वतन्त्र करते समय एक दिन के भोजन के लिए भी उसको कुछ नहीं दिया गया था।

रंगून जापानियों के अधीन हो चुका था। यद्यपि सुभाष बाबू के साथ हुए समझौते के अनुसार ब्रर्मा को भी स्वतन्त्र देश घोषित करने का वचन हुआ था, परन्तु युद्धकाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में तो इसको अंग्रेजों और चीनियों के विरूद्ध प्रयोग करने का जापान अपना अधिकार समझता था।

स्थान-स्थान पर जापानी सिपाही नियुक्त थे। आजाद हिन्द फौज एक माननीय संस्था थी और उसकी यूनिफार्म भी वही थी जो अंग्रेजी हिन्दुस्तानी सेना की थी। इस कारण निरंजनदेव की फटी वर्दी भी उसके लिए एक प्रकार का पास-पोर्ट ही थी।

निरंजनदेव के लिए सबसे वड़ी कठिनाई थी वर्मी तथा जापानी भाषा को न जानना। इस कारण कुछ समय तक आजाद हिन्द फौज के कार्यालय के बाहर सड़क पर खड़े-खड़े सोचने के वाद वह एक ओर को चल पड़ा। एक घण्टे तक चलने के वाद वह स्वयं को थका हुआ अनुभव करने लगा। अतः वह एक दुकान की सीढ़ियों पर विश्राम करने के लिए वैठ गया। उस दुकान में बहुत-से लोग आ-जा रहे थे। इनमें कुछ आजाद हिन्द सेना के सैनिक भी थे। निरंजनदेव ने दुकान पर लगे वोर्ड को देखा। वह वर्मी और जापानी भाषा में था, अतः कुछ न समझ सकने के कारण वह प्रतीक्षा कर रहा था कि कोई हिन्दुस्तानी सैनिक आए तो उससे इसके विषय में जानकारी प्राप्त करे।

निरंजनदेव विचार कर ही रहा था कि एक हिन्दुस्तानी सैनिक आफिसर किसी वर्मी स्त्री के साथ उस दुकान से बाहर निकला और निरंजनदेव को वहाँ बैठा देख उसे हिन्दुस्तानी जानकर प्रश्न भरी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा।

निरंजनदेव स्वयं भी कुछ परेशानी अनुभव करने लगा था। सैनिक ऑफिसर ने अपने साथ वाली महिला से वर्मी भाषा में कुछ कहा और फिर वह महिला अंग्रेजी में निरंजनदेव से पूछने लगी, "यहाँ किसलिए बैठे हो?"

"नौ सौ मील की पैदल यात्रा से थका हुआ और कोई विश्राम का स्थान ढूँढ़ता यहाँ आराम करने वैठ गया हूँ।"

"कहाँ से आ रहे हो?"

"आसाम बॉर्डर से।"

"तो आजाद हिन्द फौज के कार्यालय में क्यों नहीं ज़ाते?"

"गया था, किन्तु वहाँ से निकाल दिया गया हूँ।"

"क्यों?"

इसका उत्तर देने की अपेक्षा निरंजनदेव ने अपनी जेव से विसा निकालकर दिखा दिया। वे दोनों उसको पढ़ने लगे।

उसमें लिखा था—"अंग्रेजी सेना का आफिसर लेफ्टिनेंट निरंजनदेव इस समय आजाद हिन्द फौज का वन्दी है। उसको इस शर्त पर कि वह प्रति सोमवार फौज के कार्यालय में अपनी हाजिरी लगाएगा और बिना स्वीकृति के रंगून से बाहर नहीं जाएगा, स्वतन्त्ररूपेण आजीविका के उपार्जन की स्वीकृति दी गई है।

ह० जनरल मोहनसिंह।"

इसे पढ़कर औरत उसको सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से देखने लगी। उसने अपने साथी की ओर देखकर बर्मी भाषा में कुछ कहा। फिर निरंजनदेव से पूछा, "मेरी नौकरी करोगे?"

"करूँगा।"

वह मुस्कराई और बोली, "आओ मेरे साथ।"

निरंजनदेव उनके पीछे-पीछे चल पड़ा। दोनों कुछ दूर जाकर एक गली के मोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर खड़े हो गए। थोड़ी देर बात करने के बाद सैनिक अफसर ने उस औरत से हाथ मिलाया और फिर एक ओर चल पड़ा। औरत गली की ओर घूमती हुई निरंजनदेव से बोली, "आओ, मेरे साथ आओ।"

निरंजनदेव उसके साथ चल पड़ा। औरत ने पूछा, "कितना वेतन लोगे?"

"जिससे भोजन और वस्त्रादि की व्यवस्था हो जाए।"

"इतना तो मिलेगा ही। इसके अतिरिक्त क्या लेकर प्रसन्न हो जाओगे, वह बताओ?"

"देखिए मैडम! मैं एक स्थान पर नौकर हूँ। यदि जीवित घर पहुँच गया और अंग्रेजों की जीत हो गई तो मुझे मेरा पूरा वेतन मिल जाएगा। इस समय मैं एक वन्दी के रूप में हूँ, कैदी को भोजन वस्त्र ही मिल सकता है। इससे अधिक का वह अधिकारी नहीं है।"

उसकी बात सुन औरत मुस्कराई और फिर बोली, "तब तो ठीक है। तुम मेरे भी बन्दी ही रहोगे।"

कुछ दूर गली में जाकर वह एक मकान पर चढ़ गई। इस प्रकार वह सबसे ऊपर की मंजिल पर तीन कमरे के एक फ्लैट के सामने जा पहुँची। फ्लैट के द्वार पर ताला लगा था। उसने चाबी निकाल ताला खोला। यह उसका सिटिंग रूम था और खूब अच्छी तरह सजाया हुआ था। फर्श पर कालीन बिछा हुआ था और दीवारों पर चित्र टँगे हुए थे। खिड़कियों और द्वार पर सुन्दर पर्दे लटक रहे थे।

भीतर जाकर उसने स्विच 'ऑन' किया और फिर खिड़की खोल दी। स्वयं एक सोफे पर बैठती हुई निरंजनदेव से बोली, "देखो, साथ के कमरे के बराबर में स्नानागार है। वहाँ जाकर स्नान करो और ये फटे कपड़े उतार दो। जब तक तुम स्नान करके निकलोगे तुम्हारे लिए इस बराबर के कमरे में नये कपड़े तैयार मिलेंगे। नहा धोकर तैयार हो जाओ, तब तुम्हारे खाने का प्रबन्ध होगा।"

प्रसन्न वदन निरंजनदेव स्नानागार में जाने के लिए बैडरूम में गया। दो बड़े-बड़े पलंग लगे हुए थे, मानों कोई दम्पत्ति वहाँ रहते हों। एक ही दृष्टि में वह समझ गया कि किसी धनी-मानी का यह मकान है। शयनागार को सब प्रकार के सुख-साधनों से सज्जित किया गया था। स्नानागार में जाकर उसने कपड़े उतारे और टब में जाकर बैठ गया। एक ओर सैल्फ शेविंग का सामान देखकर, उसने स्नान से पूर्व हजामत बना ली।

गरम जल और सुगन्धित साबुन से उसने अपने शरीर का मैल साफ किया और तौलिए से शरीर पोंछ पर सुवासित तेल बालों में डाल वह तौलिया लपेट बाहर निकला। एक बिस्तर पर उसको अपने लिए बर्मी पोशाक रखी हुई मिली। समीप ही बर्मी जूता भी रखा हुआ था। वस्त्र पहनकर वह शयनागार से बाहर निकल आया। उसे इस प्रकार उज्जवल वस्त्रों में देख वह औरत मुस्करा दी।

निरंजनदेव को इससे विस्मय हुआ और उसने उससे पूछा, "क्या मुझसे कोई भूल हो गई है, मैडम?"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है। वह कर्नल कह रहा था कि तुम कुरूप और जंगली जैसे लगते हो। परन्तु मेरा अनुमान था कि तुम अति सुन्दर युवक हो। अब अपने अनुमान को सत्य देख मुझे कर्नल की मूर्खता पर हँसी आ रही है।"

इस बात का कुछ भी उत्तर न देते हुए निरंजनदेव ने कहा, "अब दो बातें पूछनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। एक तो भोजन और दूसरा मुझको दिया जाने वाला काम।"

"भोजन के लिए तो मैंने फोन कर दिया है। अभी आ जाएगा। काम के विषय में अभी आप कुछ दिन आराम कर लें फिर बताऊँगी।"

"क्या मैं अपनी मालकिन और मालिक के नाम जान सकता हूँ?"

वह महिला हँस पड़ी। फिर बोली, "मालकिन का नाम है मैडम यू उन लुई और मालिक अभी कोई नहीं है।"

निरंजनदेव इसका अभिप्राय समझने का यत्न करने लगा। इस समय द्वार से घंटी आई। वह बोली, "भोजन वाला आया है। द्वार खोल दो।"

निरंजनदेव ने द्वार खोला तो भोजन लिए हुए होटल के बैरे को बाहर खड़ा देखा। बैरे ने बीच की मेज पर खाना रख दिया और मैडम के सम्मुख एक छोटी मेज रख दी। उसके बराबर में उसने कुर्सी रखी और फिर दो आदमियों के लिए खाना लगाने लगा।

उस महिला ने अपनी जेब से निरंजनदेव का विसा निकाला उसमें से उसका नाम पढ़कर बोली, "मिस्टर देव बैठिये।"

निरंजनदेव सामने की कुर्सी पर बैठ गया। भोजन बहुत स्वादिष्ट था। चावल, सूप और सब्जियाँ थीं। मैडम ने पूछा, "कौन सा मीट लेंगे। फिश, फाउल अथवा बीफ।"

"मैं तो निरामिष भोजी हूँ।"

"यह तो सौभाग्य की बात है, मैं भी निरामिष भोजी ही हूँ।"

दोनों चुपचाप भोजन करते रहे। बैरे की उपस्थिति के कारण अथवा किसी अन्य कारण से ही दोनों ने परस्पर कोई बात नहीं की। भोजन कर दोनों उठे तो वाश बेसिन पर हाथ धो मैडम ने बैरे के बिल पर हस्ताक्षर कर दिए। बैरा बर्तन उठाकर जब जाने लगा तो मैडम ने कहा, "ठीक साढ़े चार बजे तीन आदमियों के लिए 'आफ्टरनून टी' ले आना।"

निरंजनदेव को उसने कहा, "आप बराबर वाले शयनागार में जाकर आराम करिये। चाय के समय तक आप भली प्रकार, आराम कर सकते हैं।"

इतना कहकर स्वयं उसने अपना पैन उठाया और लिखने बैठ गई। निरंजनदेव ने कहा, "यह खाना तो बहुत महंगा है और साथ ही वह शयनागार भी किसी नौकर के लिए उसके वेतन से बहुत अधिक मूल्य के हैं?"

"नहीं-नहीं, आप नौकर नहीं है। आप तो हिन्दुस्तानी सेना के लेफ्टिनेंट के रूप में मेरे कैदी हैं। आपको कोई वेतन नहीं मिलेगा। भोजनादि तो कैदी को उसकी पदवी के अनुसार ही दिया जाता है।

"अब आप जाकर सो जाइये! मैं देख रही हूँ कि आपकी आँखें नींद से भर रही है।"

निरंजनदेव ने और अधिक कहने की आवश्यकता नहीं समझी कि कुछ कहे और समय गँवाये वह शयनागार में चला गया और वहाँ लेटते ही सो गया।

ठीक साढ़े चार बजे घंटी बजी तो निरंजनदेव की आँख खुल गई। वह उठकर बाहर जाने के लिए अपने कपड़े ठीक करने लगा। इस समय उसका ध्यान साथ के बैड पर चला गया। उसको प्रतीत हुआ कि उस पर भी कोई सोता रहा है। बिस्तर पर बिछी चादर आदि अस्त-व्यस्त हो रहे थे।

वह अभी इस बात पर विचार कर ही रहा था कि कौन यहाँ पर सोया होगा, लुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने शयनागार का द्वार खोला और निरंजनदेव को देख बोली, "आइये चाय आ गई है।"

दोनों बाहर ड्राइंगरूम में जा पहुँचे। वहाँ एक अन्य व्यक्ति पहले से ही बैठा था। यह कोई जापानी सेना का ऑफिसर प्रतीत होता था। लुई उससे जापानी भाषा में ही बात कर रही थी। वह सम्भवतया निरंजनदेव के विषय में उसको बता रही थी। उसके बोलने में 'लेफ्टिनेंट और देव' शब्द निरंजनदेव को स्पष्ट सुनाई दिये थे। इससे उसके कान खड़े हो गये और वह प्रश्न भरी दृष्टि से लुई की ओर देखता रहा। लुई ने प्रेममय दृष्टि से ही उसकी प्रश्नमयी दृष्टि का उत्तर दे दिया।

दोनों की बात को निरंजनदेव समझ नहीं रहा था। इस कारण बहरे-गूंगे की भाँति चाय पीता रहा। लगभग घण्टे-भर की बातचीत के बाद लुई और नवागंतुक बाहर चले गए। कुछ देर के बाद मैडम लुई वापस आई और बैठती हुई बोली, "यह रंगून में जापानी सेनाओं का कमांड़िग आफिसर है। मेरे घर पर चाय पीने का सौभाग्य प्राप्त करने आ जाता है। देखिये, मैंने आपका परिचय अपने पति के रूप में दिया है। आपको बर्मा स्थित पंजाबी युवक बताया है, जो केवल पंजाबी तथा इंगलिश भाषा ही जानता है।"

"यह आपने क्या किया है?"

"क्या किया है?"

"आपने यह क्यों बताया है कि मैं आपका पति हूँ?"

"इसमें कुछ हानि नहीं होगी। इससे यह ब्रूट जापानी, कम-से-कम आपके सम्मुख मेरा अपमान नहीं कर सकेगा।"

"बहुत गहरे जल में तैर रहीं हैं?"

"आप चिन्ता न करें। मैं अपने लिए पति की खोज में थी। आप मिल गए हैं। मैंने आपको अपना पति प्रसिद्ध करना शुरू कर दिया है। मैं बताती हूँ कि आप पंजाबी है और सैगाँव में ठेकेदारी करते हैं। मैं आपकी नौकर थी और पत्नी बन गई हूँ। जापानियों के यहाँ आने पर आप लापता हो गए थे और मैं जापानियों की नौकरी में चली गई। आज आप भटकते हुए यहाँ आ गए हैं।"

"समझ गए हैं न?"

"नहीं, मैं कुछ नहीं समझा।"

"देखिए मिस्टर देव! वास्तव में इसमें समझने के लिए कुछ नहीं है। आप मेरे नौकर हैं, कैदी हैं, पति है। इस पर भी आप क्या हैं, यह अभी नहीं जानते और जान सकते भी नहीं। जब आप अपनी लम्बी यात्रा की थकावट दूर कर लेंगे तब मैं आपको बताऊँगी। उस समय आप समझ जाएँगे कि आप क्या हैं? मैं समझती हूँ कि आपको मौन रहना चाहिए। मेरे पास आजाद हिन्द फौज के आफिसर भी आते हैं। उनके लिए आप मेरे नौकर और कैदी ही रहेंगे। इन जापानियों के लिए आप मेरे पति ही है। एक और पक्ष भी है। उस पक्ष वालों में आप क्या हैं, यह तब बताऊँगी कि ज़ब आप मेरा असली काम करने लगेंगे।"

निरंजनदेव समझ गया कि यह औरत अंतर्राष्ट्रीय जासूसी का कार्य कर रही है। यह समझ उसके समस्त शरीर में कँपकँपी उठ पड़ी। लुई ने यह भाँप लिया और उससे पूछा, "मुझसे डर लगने लगा है क्या? क्या मौत से डरते हो?"

"मैं मौत से नहीं, पाप से डरता हूँ।"

"परन्तु आप तो कोई पाप-कर्म नहीं कर रहे। आपने अभी तक भोजन किया है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या यह पाप है? आप नरम गद्देदार पलंग पर सोए हैं, क्या यह पाप है?"

"इनको यद्यपि मैं अपने मूल्य से बहुत अधिक समझता हूँ, तो भी यह सब पाप नहीं समझता। परन्तु आपने मुझे अपना पति घोषित किया है और कभी आपने मुझे इस पदवी का कार्य करने के लिए बाध्य किया तो वह पाप हो जाएगा।"

"वह कैसे?"

"मैं विवाहित हूँ। मेरी एक पत्नी है। बहुत सुन्दर है। साथ ही भली और नेक भी हैं। मैं उससे प्रेम करता हूँ स्वयं मैं उसका निष्ठावान पति हूँ। यदि इस निष्ठा में त्रुटि हो गई तो मैं पाप का भागी बन जाऊँगा।"

"मैं इसको ऐसा ही समझती हूँ जैसा आप कहते हैं। परन्तु कुछ अन्य बातें भी हैं। वह तो जब अवसर आयेगा, तब बतां दूंगी। इतना आप समझ लें कि आपको कोई ऐसा काम करने के लिए मैं नहीं कहूँगी जिसे आप पाप समझें। तब तो ठीक है न?"

निरंजनदेव का इससे भी समाधान नहीं हुआ था। परन्तु वह भी यह विचार करता था कि वह जब भी उसको कुछ ऐसा काम करने के लिए कहेगी जो वह अकरणीय समझेगा तब वह इन्कार कर देगा। तब तक तो इस घर में वह आराम से दिन निकाल सकता है।

उसे चुप देख लुई ने कहा, "चलिए भीतर। मैं आपको बर्मी ढंग की पोशाक से सजा देती हूँ। इस पर भी यदि कोई जापानी मिले तो आप पंजाबी में बात करें। मैं उनको आपकी बात इन्टरप्रेट कर दूँगी। यदि कोई जापानी अंग्रेजी बोले तो फिर नाटक में अपने पार्ट का ध्यान रखकर उत्तर दें। आप अन्य कोई भाषा नहीं जानते। आप मेरे साथ चलिए हम पार्क में चलेंगे।"

: 3 :

रात का खाना दोनों ने उसी होटल में खाया जिसके बाहर सीढ़ियों पर बैठे हुए लुई उसको मिली थी, भोजन के समय उनको वह आफिसर मिल गया, जो प्रथम भेंट के अवसर पर लुई के साथ था। वे दोनों बर्मी भाषा में ही बातें करते रहे। वहाँ के भोजन का बिल उसी हिन्दुस्तानी आफिसर ने चुकाया। जब भोजन समाप्त हुआ और बिल चुका दिया गया तो उस हिन्दुस्तानी आफिसर ने निरंजनदेव से हिन्दुस्तानी में बात करते हुए कहा, "मैंने आपके विषय में कार्यालय से पता किया है। मुझे यह विदित हुआ है कि आपको मृत्युदण्ड दिया जा चुका था। क्योंकि कमांडर-इन-चीफ की स्वीकृति के बिना मृत्युदण्ड कार्यान्वित नहीं किया जा सकता था, इस कारण जनरल चरणसिंह ने आपको रंगून भेज दिया। किन्तु नेताजी आपकी बातचीत से बहुत प्रभावित हुए हैं, इस कारण उन्होंने आपका दण्ड कम कर आपको बंदी मात्र रहने दिया है। हम सब आपसे आशा करते हैं कि यदि इस औरत ने आजाद हिन्द फौज के विरूद्ध कोई कार्यवाही की तो आप हमें इसकी सूचना दे देंगे।"

निरंजनदेव ने उससे पूछा, "क्या मैं आपका नाम जान सकता हूँ।"

"मेरा नाम श्रीबल्ली मेनन है। मैं त्रावणकोर का रहने वाला हूँ।"

"देखिए मिस्टर मेनन! मैं अंग्रेजी सेना का आफिसर हूँ, परन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं कि मैं अपने ढंग से हिन्दुस्तान की आजादी की जंग लड़ने वाले किसी का भी शत्रु हूँ। मैं आपको गलत मानता हूँ परन्तु मैं महात्मा गांधी की भाँति भारतवर्ष की सेवा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल अपने ही ढंग को ठीक मानने वाला नहीं हूँ। एक उद्देश्य को सिद्ध करने के कई ढंग होते हैं। इस कारण जो ईमानदारी से देश का कार्य करने वाले हैं, वे मेरे लिए मान और प्रतिष्ठा के पात्र हैं।"

"फिर आप हमारे साथ क्यों नहीं सम्मिलित हो गए?"

"मैं आपका ढंग गलत समझता हूँ। परन्तु गलत समझने में और विरोध करने में अन्तर है। मैं आपका विरोधी नहीं हूँ।"

"ठीक है। आप देश के साथ विश्वासघात नहीं करेंगे।"

"मैं आपका कथन स्मरण रखूँगा। इस समय तो मैं बन्दी हूँ। आपके हाथ में हूँ। जिस दिन भी आपके अधिकारी मुझे पुनः कैद में आकर बन्द होने की आज्ञा देंगे, मैं आ जाऊँगा।"

"इस औरत ने आपसे कैसा व्यवहार किया है?"

"जैसा किसी राजसी बन्दी के साथ किया जाता है।"

"बहुत सुन्दर!" उसने निरंजनदेव से हाथ मिलाया और चला गया। उसके जाने के बाद लुई ने निरंजनदेव की ओर मुस्कराकर देखा और कुछ पूछे बिना घर को चल पड़ी।

घर पहुँचकर उसने पूछा, "क्या इसने अपना नाम मैनन बताया है?"

"हाँ।"

"तो इसने मेरे साथ झूठ बोला है अथवा आपके साथ। मुझे तो इसने अपना नाम रघुनन्दनसिंह बताया था। उसका कहना था कि वह मध्य भारत में सागर का रहने वाला है। यह बर्मी भाषा जानता है। परन्तु यह मेरे विषय में नहीं जानता कि मैं हिन्दुस्तानी भी जानती हूँ। मैं आपकी सब बातें समझ रहीं थी। मैं प्रसन्न हूँ कि आपने सुन्दर रीति से सत्य बात कही है।

"देखिए, इसको मेरा यह रहस्य मत बताइएगा।"

निरंजनदेव को यह जानकर विस्मय हुआ कि लुई हिन्दुस्तानी भी जानती है। इससे वह स्वयं को किसी जाल में फंसा हुआ सा अनुभव करने लगा। उसको इस बात का तो विश्वास हो गया कि यह औरत जासूस का कार्य कर रही है। परन्तु वह किसकी जासूसी करती है, यह वह नहीं समझ सका।

घर पहुँच लुई कोई जापानी मासिक पत्रिका लेकर पढ़ने लगी। निरंजनदेव से उसने कहा, "आप आराम कर सकते हैं। मुझे जल्दी सोने का अभ्यास नहीं है।"

निरंजनदेव सोने चला गया किन्तु उसे नींद नहीं आ रही थी। वह एकान्त में लेटा अपनी परिस्थिति पर विचार कर रहा था।

शयनागार में जाने पर निरंजनदेव को एक अन्य बात का भी ज्ञान हुआ कि वहाँ कोई आता-जाता है। क्योंकि जब वह सोने के लिए वहाँ आया तो दोनों पलंगों पर एक स्त्री और एक पुरूष के लिए रात्रि के परिधान रखे हुए थे। और जो कपड़े वह घूमने जाते समय खूँटी पर उतारकर रख गया था, वे अब वहाँ पर नहीं थे। पलंग पर लेटकर वह इसी सब गोरखधन्धे के विषय में अनुमान लगाने लगा।

लेटे-लेटे वह सो गया। एक बार उसकी नींद खुली। कमरे में धीमी-धीमी रोशनी हो रही थी। वह उठकर बैठ गया। वह सोई हुई लुई को देखता रहा। वास्तव में ही उसको वह सुन्दर युवती प्रतीत हुई। कुछ देर तक बैठा वह अपनी और उसकी स्थिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर विचार करता रहा और फिर लेट गया।

प्रातःकाल लुई ने उसे जगाया। वह उठा तो उस समय लुई चादर ओढ़े बैठी थी। निरंजनदेव को कुछ संकोच होने लगा। वह उठकर बैठ गया। उस समय उसकी दृष्टि पलंग के समीप खड़ी एक प्रौढ़ावस्था की स्त्री पर चली गई। उसके हाथ की ट्रे में दो प्याले चाय के थे। लुई ने एक प्याला निरंजनदेव को पकड़ाया और दूसरा स्वयं ले लिया। वह औरत बाहर चली गई। निरंजनदेव ने पूछा, "यह औरत भी मुझे आपका पति ही समझती है।"

"हाँ।"

"यह कहाँ रहती है?"

"यह अपने पति के साथ ऊपर की मंजिल पर रहती है। इस घर की सफाई आदि करना, कपड़े धोना, उन पर लोहा और बैड टी बना देना ही इसके काम हैं।"

"यह तो ठीक है, परन्तु आप इस प्रकार मेरे समीप सोकर मुझे भारी प्रलोभन में फँसा रहीं हैं।"

"इंसान बनिए। और वही कीजिए जो किसी इंसान को करना चाहिए।"

"यह तो विवादास्पद बात है कि इस परिस्थिति में मनुष्य को क्या करना चाहिए।"

"आपने तो कल बताया था कि आप निष्ठावान पति हैं। इससे आपका मार्ग तो स्पष्ट है।"

"परन्तु इस प्रकार रहने पर तो विचलित होने की सम्भावना है ही। यह खतरे से खाली नहीं?"

"किसको हैं खतरा?"

"आपको।"

"मैं ऐसा अनुभव नहीं करती।"

"तो क्या आप मुझे देवता समझती हैं?"

"नहीं, मैं तो आपको एक साधारण मानव ही समझती हूँ। मैं एक बात आपको कह चुकी हूँ। मैं आपको कोई ऐसा काम करने के लिए बाध्य नहीं करूंगी जिसे आप पाप समझते हों।"

दोनों चाय पी चुके थे। निरंजनदेव तो चाय पीकर शौचालय में चला गया किन्तु लुई फिर लेट गई।

इस प्रकार दिन व्यतीत हो रहे थे। प्रति सोमवार को निरंजनदेव आजाद हिन्द फौज के कार्यालय में हाजिरी देने के लिए जाता था। वहाँ जाकर उसको विदित हुआ कि कार्यालय वालों को उसके विषय में पूर्ण जानकारी है।

इस प्रकार रंगून में आए हुए तीन मास बीत गए। इस अवधि में मैडम लुई बाहर भी जाती रही थी। वह प्रायः सिंगापुर, सैगोन और लाओस जाती रहती थी। एक बार वह टोकियो भी गई। टोकियो से लौटते हुए वह हाँगकाँग पहुँची। वह किस प्रकार वहाँ पहुँच गई। यह उसने नहीं बताया। परन्तु जब भी वह बाहर से लौटती थी, उसकी अटैची रूपयों से भरी रहती थी।

अभी तक निरंजनदेव को केवल एक ही कार्य करना पड़ रहा था। वह यह कि रंगून के जापानी क्षेत्र में वह लुई का पति विख्यात था और वह अपने को ऐसा ही बताता था। किन्तु आजाद हिन्द फौज के क्षेत्र में वह लुई का नौकर समझा जाता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लुई की नौकरानी उन दोनों को पति-पत्नी ही मानती थी। वह नित्य प्रातःकाल उनको बैड टी देने आती थी और दोनों को समीप निस्संकोच भाव से लेटे देख यही अनुमान लगाती थी।

लुई कहीं बाहर गई हुई थी। निरंजनदेव उसके घर में अकेला था। रात का भोजन करने के लिए वह उसी होटल में गया जिसकी सीढ़ियों पर बैठे उसे पहले दिन लुई मिली थी। वह अभी मेज पर बैठा भोजन का आर्डर ही दे रहा था कि मेनन वहाँ पर आ गया और उसके समीप बैठकर बोला, "मैं भी यहीं आपके साथ खाना खाऊँगा।"

"बोलिए, क्या खाएँगे?"

मेनन ने अपनी इच्छा के अनुसार आर्डर दे दिया। जब बैरा आर्डर लेकर चला गया तो मेनन ने पूछा, "लुई कहाँ है?"

"वह कहीं बाहर गई हुई है।"

"आपका गुजारा किस प्रकार चल रहा है?"

"जब वह कहीं बाहर जाती है तो मुझे पर्याप्त धन दे जाती है। इस कारण मुझे किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती।"

"मुझे लुई की नौकरानी ने बताया है कि आप दोनों एक साथ सोते हैं।"

"हाँ!"

"तो क्या आप दोनों का पति-पत्नी का सम्बन्ध है?"

निरंजनदेव ने इसका उत्तर नहीं दिया। इस समय बैरा भोजन ले आया था। वह प्लेट लगाकर चला गया तो दोनों खाने लगे। मेनन ने अपनी बात का सूत्र पुनः चालू रखते हुए कहा, "तो क्या मैं आपको इतनी सुन्दर स्त्री से सहवास का सौभाग्य प्राप्त होने पर वधाई दूँ?"

निरंजनदेव मुस्कराता हुआ खाता रहा। मेनन को हँसी आ गई। उसने कहा, "इसके बैड को एक रात के लिए शेयर करने के लिए रंगून के एक परिचित धनी-मानी सज्जन इसको एक हजार पौंड दे रहे थे, किन्तु इसने स्वीकार नहीं किया।"

इससे निरंजनदेव को हँसी आ गई। उसने कहा, "पैदा होना, मरना और औरत का संयोग, ये बिना भाग्य के प्राप्त नहीं होता। रूपया तो गौण वस्तु है। मैं समझता हूँ कि लुई वेश्या नहीं है।"

"आपकी यह धारणा ठीक ही है। लुई का एक डिस्पैंच टोकियो से आया है। उसने उसमें एक बहुत ही मार्के की सूचना भेजी है। उस सूचना से नेताजी बहुत ही परेशान प्रतीत होते हैं। वे टोकियो सैनिक अधिकारियों से मिलने जा रहे हैं। परन्तु वे जाने से पूर्व लुई से मिलना चाहते हैं।"

"वे आएँगी तो मैं सूचना भिजवा दूँगा।"

"यदि यह पता चल जाय कि वह इस समय कहाँ है तो भी सूचना देने की कृपा करिएगा।"

"दें दूँगा।"

"जनरल मोहनसिंह कह रहे थे कि यद्यपि हम आपको आज्ञा नहीं दे सकते कि आप हमको इस औरत के विषय में सूचना दें। परन्तु आपको हिन्दुस्तानी मानते हुए वे इतनी सहायता की आपसे अपेक्षा रखते हैं।"

"मैं बिना किसी प्रकार के भेदिये का कार्य किये आपकी सेवा करूँगा। मैंने अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार-प्रणाली आपको बता दी है। आपकी कार्यविधि को गलत समझते हुए भी आपको मैं ईमानदार समझता हूँ और इस कारण आपके कार्य में मैं कोई बाधा नहीं खड़ी करूँगा।"

"आपने उस दिन गांधीजी के विषय में जो धारणा बताई थी मैंने उसका जिक्र नेताजी से किया था। उस पर उन्होंने आपकी प्रशंसा की थी। यद्यपि उनको इस बात का दुःख है कि आप हमारी सेना में भरती नहीं हुए, इस पर भी वे अपके दृष्टिकोण की सराहना करते हैं।"

"एक बात और है। आपने नेताजी से कहा था कि यदि आपकी बात को वे युक्ति और इतिहास की कसौटी पर कसेंगे तो उनको इससे लाभ होगा। उन्होंने आपके लिए मुझे यह संदेश दिया है कि उन्होंने आपकी बात को इसी प्रकार परखा है और उनका कहना है कि जापानी असभ्य तो हैं, परन्तु भले आदमी हैं। अंग्रेज सभ्य हैं किन्तु वे छुरे की धार के समान काट करने वाले हैं।"

"मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि उनका अनुमान ठीक निकले।"

"आपको सन्देह है क्या इस पर?"

"मैं एक बात आपको और बताता हूँ। अभी तक यह मैंने किसी को नहीं बताई। मैंने नेताजी को वचन दिया हुआ है कि मैं राजनीति के विषय पर किसी से बातचीत नहीं करूँगा। परन्तु मैं यह बात आपके द्वारा उन तक पहुँचाने के लिए आपसे कह रहा हूँ। बोलिये, आप उनके अतिरिक्त अन्य किसी से तो नहीं कहेंगे?"

"मैं वचन देता हूँ कि उनके अतिरिक्त आपकी बात किसी अन्य को नहीं बताऊँगा।"

"मैं अपने अध्ययन के बल पर कहता हूँ कि जर्मन, जापान और इटली की पराजय आरम्भ हो गई है। इटली दो वर्ष में, जर्मन तीन वर्ष में और जापान पाँच वर्ष में पूर्णतया पराजित हो जाएंगे।"

"किस आधार पर आप यह कह सकते हैं?"

"अपने ज्ञान और अनुभव के आधार पर।"

मेनन इस भविष्यवाणी को सुनकर निरंजनदेव का मुख देखता रह गया। उसने खाना छोड़ दिया था। निरंजनदेव का पेट भर चुका था। मेनन ने पुनः खाना आरम्भ करते हुए कहा, "बहुत ही भयंकर भविष्यवाणी कर रहे हो?"

"मैं साधारण इतिहास का विद्यार्थी हूँ। जर्मन और जापान ने भारी भूलें की हैं और अब उन भूलों का परिणाम निकलना आरम्भ हो गया है।"

"इससे अधिक मैं कुछ नहीं कहूँगा। मैं उन घटनाओं को जो मेरे बन्दी होने के बाद घटित हुई हैं जानता नहीं। यदि मैं यह कहूँ तो अधिक उपर्युक्त होगा कि उनको मैं उस रूप में जानता हूँ जिसमें मेरे सम्मुख यहाँ समाचारपत्र प्रस्तुत करते हैं। उनसे भी मैं इसी परिणाम पर पहुँचा हूँ जो मैंने अभी आपको बताया है।"

मेनन मुख लटकाये हुए निरंजनदेव से विदा हुआ। भोजन का बिल निरंजनदेव ने दिया था।

निरंजनदेव घर पहुँचा तो उसने देखा कि लुई घायल अवस्था में पलंग पर पड़ी है। मकान के द्वार पर खड़ी नौकरानी निरंजन की प्रतीक्षा कर रही थी। उसे लेकर वह सीधी शयनागार में गई। लुई ने निरंजन को देख मुस्करा कर उसका अभिवादन किया। वह पलंग पर लेटी हुई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या हुआ है?" निरंजन ने विस्मय और दुःख से पूछा।

"बस जीवित हूँ, यही अहोभाग्य समझिए। सिंगापुर में उतरते समय हमारा हवाई जहाज टक्कर खा गया था। तीन व्यक्ति तो वहीं पर मर गए। दस के लगभग घायल हो गए, जिनमें से एक मैं हूँ। मेरे तो सिर पर चोट आई है अन्य सब अंग ठीक हैं। सिंगापुर में पट्टी कराई थी और फिर वहाँ से सीधी यहाँ चली आई हूँ।"

"इस पट्टी से तो आपका सौन्दर्य बढ़ गया है।"

"इन कोरे प्रशंसा के वचनों से किसी का पेट नहीं भरा करता। मैं कभी विचार किया करती हूँ कि आप तो सर्वथा पत्थर के बने हुए हैं जो मुझ जैसी स्त्री के इतने समीप लेटे रहने पर भी आपके मन में किसी प्रकार की हलचल नहीं होती।"

"मैं पत्थर का नहीं हाड़-मांस का बना हुआ हूँ। परन्तु मुझे उचितानुचित का भली प्रकार ज्ञान है।"

"मैं देख रही हूँ कि कब आपके विचार में उचित अनुचित होता है और अनुचित उचित।"

निरंजनदेव मुस्करा दिया किन्तु कुछ बोला नहीं। लुई ने पुनः कहा, "फोन करके अंग्रेजी में होटल वाले को मेरे लिए खाने का आर्डर दे दीजिए।"

आर्डर देने के कुछ समय बाद भोजन आ गया और लुई ने पलंग पर बैठे-बैठे भोजन करना आरम्भ कर दिया। निरंजनदेव ने बात चलाते हुए कहा, "होटल में मेनन मिला था, वह बता रहा था कि उनको आपका टोकियो डिस्पैच मिला है। उससे नेताजी बहुत परेशानी अनुभव कर रहे हैं और वे यथा शीघ्र आपसे मिलने के लिए उत्सुक हैं।"

यह समाचार सुनकर कुछ क्षणों के लिए लुई का हाथ रूक गया और वह विचारमग्न हो गई। फिर वह बोली, "आप छः-सात-दो-चार पर फोन कीजिए, उनसे टोकन पूछिए और यदि वे क्रोकोडाइल बतायें तो उनको कह दीजिए 'माइस'। और फिर तुरन्त ही बन्द कर दीजिए।"

निरंजदेव ने उसकी व्याख्या नहीं पूछनी चाही। वह इस रहस्य में भागीदार बनना नहीं चाहता था। वह बाहर गया और संदेश दे आया। खाना चबाते हुए लुई को दर्द हो रहा था। इस कारण वह धीरे-धीरे खा रही थी। वह अभी खाना खा ही रही थी कि उसके मकान के नीचे मोटर के हार्न की आवाज हुई। लुई ने खाना छोड़ दिया और पलंग पर से उठकर बाहर जाने योग्य कपड़ें पहनने लगी। आज उसको कपड़े पहनने में निरंजनदेव को सहायता देनी पड़ी। कपड़े पहन वह मकान के नीचे जा पहुँची। निरंजनदेव को उसने साथ चलने के लिए कहा था। नीचे कोई कार नहीं दिखाई दी। वे प्रतीक्षा में खड़े रहे। तीन-चार मिनट की प्रतीक्षा के बाद उनको बहुत दूर से उसी कार का हार्न सुनाई दिया। इस पर लुई ने निरंजनदेव से कहा, "आप सो जाइए, मैं लगभग एक घण्टे तक लौटूँगी।"

तब तक मोटर उनके मकान के समीप आ गई थी और लपककर लुई उसमें जा बैठी। निरंजनदेव ऊपर आ कपड़े बदल पलंग पर जा बैठा परन्तु वह सो नहीं पाया।

लगभग एक घण्टे बाद शयनागार का द्वार खुला और लुई भीतर आ गई। निरंजनदेव को जागता देख उसने पूछा, "आप सोये नहीं?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"आज मुझे कुछ भय-सा लग रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"किस बात का भय?"

"मुझे आपके लिए भय लग रहा है। मैं यह अनुभव कर रहा हूँ कि आप जिस गहरे जल में तैर रही है वह आपको नीचे की ओर खींच रहा है।"

लुई चिन्तित-सी निरंजनदेव का मुख देखने लगी। कुछ क्षण खड़ी रहने के बाद वह कपड़े बदलने के लिए स्नानागार में चली गई। कपड़े बदलने पर वह अपने पलंग पर आई और निरंजनदेव की ओर पीठ कर लेट गई।

"क्या मैंने कोई अशुभ बात कही है?" निरंजनदेव ने पूछा।

"अब आप सो जाइए, मैं कल बात करूंगी।"

निरंजनदेव को आज देर से नींद आई।

प्रातः नित्य की भाँति वे दोनों उठे और चाय पीने लगे। निरंजनदेव ने न उससे रात की बात पूछी और न लुई ने ही स्वयं बताने की आवश्यकता समझी।

: 4 :

अगले दिन सोमवार होने के कारण निरंजनदेव आजाद हिन्द सेना के कार्यालय में हाजिरी देने के लिए जा पहुँचा। उसने अपना विसा दिखाकर रजिस्टर पर हस्ताक्षर किये और बाहर जाने लगा तो क्लर्क ने कहा, "नेताजी आपसे मिलना चाहते हैं।"

"कहाँ और कब?"

"यह आप रूम नम्बर एक सौ बीस पर जाकर पता कर लीजिए।"

निरंजनदेव रूम नम्बर एक सौ बीस पर चला गया। उसने द्वार पर खड़े सैनिक को अपना नाम बताकर अन्दर भेजा तो उसे तुरन्त भीतर बुला लिया गया। वह भीतर गया तो नेताजी ने कहा, "आइये मिस्टर देव! कहिए कैसे हैं?"

"आपकी कृपा है।"

"रात आपने मेनन को जर्मन और जापान की पराजय के विषय में अपनी भविष्यवाणी बताई थी।"

"जी।"

"यह लुई के कथन के आधार पर आपने कही है या किसी अन्य आधार पर?"

"मैंने मेनन को बताया था कि यह मेरे अपने अनुभव के आधार पर है।"

"अनुभव का भी तो कुछ आधार होगा ही।"

"वह आधार यह है कि जापान की उन्नति अवरूद्ध हो गई है। युद्ध में जब प्रगति अवरूद्ध हो जाए तो समझदार व्यक्ति को चाहिए कि सुलह कर ले। यह समय होता है जब विजयी को अपनी विजयों का अधिकांश भाग पच जाया करता है।

"जापान को जब आभास हुआ था कि उसकी प्रगति अवरूद्ध हो गई है तो उसने अमेरिका से सन्धि करने का यत्न नहीं किया। अंग्रेजों से अथवा चियांग-काई शेक से सन्धि की जा सकती थी। जापान ने या तो इस विषय में यत्न नहीं किया और यदि किया है तो उसे सफलता नहीं मिली। दोनों ही स्थिति में लक्षण पराजित होने के ही दिखाई देते हैं।

"यही बात जर्मन की है। स्टालिनग्राड पर युद्ध रूके एक वर्ष हो रहा है। मास्को फ्रन्ट पर युद्ध की प्रगति रूके भी एक वर्ष हो रहा है। जर्मन ने अंग्रेजों से सन्धि करने का यत्न किया है। हर हैस को सुलह के लिए भेजा था। मैं समझता हूँ कि यह गलत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढंग था। किसी तटस्थ राज्य को बीच में डालकर सुलह का यत्न करना चाहिए था।

"जर्मन ने कोई ऐसा तटस्थ राज्य छोड़ा ही नहीं जो अंग्रेजों को अथवा रूस जैसे को नरहत्या का भय दिखाकर उनको युद्ध समाप्त करने के लिए राजी कर ले।

"दो स्थानों पर युद्ध का निर्णय हो रहा है। एक आसाम की सीमा पर और दूसरा मिश्र की सीमा अलामीन पर। ये दोनों स्थान इतने दूर हैं कि न तो जापान और न ही जर्मनी वहाँ अपनी प्रभावशाली सेना भेज सकता है। दोनों स्थानों पर पराजय का श्रीगणेश होने वाला है।"

नेताजी विस्मित से मुख देखते रह गये। उन्होंने कहा, "आसाम में हमारी सेना इम्फाल से धकेलकर बाहर कर दी गई है। यह सूचना हमें टोकियो से मिली है। लुई ने हमें यह सूचना भेजी थी।"

"मुझे इस बात का कोई ज्ञान नहीं। मैं लुई के साथ राजनीतिक विषयक कोई वार्तालाप नहीं करता। इस पर भी मेरी धारणा है कि आजाद हिन्द फौज को वहाँ से इस कारण लौटना पड़ा होगा कि वहाँ शस्त्रास्त्र तथा युद्ध की अन्य सामग्री नहीं पहुँच सकी।"

"जापान ने मुझे वचन दिया था कि वे पर्याप्त युद्ध सामग्री देंगे।"

"मैं समझता हूँ कि अपने मुख की लम्बाई-चौड़ाई से अधिक बड़ा ग्रास उसने अपने मुख में डाल लिया है। उसे अब वे चबा नहीं सकते।"

"मैं समझता था कि लुई ने आपसे किसी अन्य घटना का उल्लेख किया होगा।"

"आज तक हम दोनों में इस विषय पर कोई बात नहीं हुई है।"

"तो इतने दिनों तक क़िस विषय पर बातचीत होती रही है?"

"मानवता और स्त्री-पुरूष के सम्बन्ध पर।"

"ओह!"

"मैं बन्दी हूँ और अपनी स्वेच्छा से स्वीकार किए काम से पृथक् कर दिया गया हूँ। इस कारण मैं एक पुरूष मात्र ही हूँ और मेरे लिए वह केवल स्त्री ही है।"

आज अन्य सोमवारों की अपेक्षा निरंजनदेव को आजाद हिन्द फौज के कार्यालय में अधिक समय लग गया था। जब वह पहुँचा तो नौकरानी ने उसको एक परचा पकड़ा दिया। उसमें लुई ने लिखा था, 'मैं आज पुनः बाहर जा रही हूँ। आवश्यकतानुसार आपको धन रखा मिल जाएगा।

इस बार लुई गई तो छः मास तक नहीं लौटी। निरंजनदेव समझता था कि उसके साथ कोई दुर्घटना हो गई है। इससे या तो वह शत्रु की बन्दी है अथवा मर चुकी है।

इस बार वह इतना धन छोड़कर गई थी कि निरंजनदेव के विचार से वह उससे दस वर्ष तक निर्वाह कर सकता था। वह जानता था कि इतनी लम्बी अवधि तक तो युद्ध नहीं रह सकता।

मेनन उससे मिलता रहता था और वह लुई के विषय में पूछने की अपेक्षा उसके निर्वाह के विषय में ही पूछता रहता था। निरंजनदेव उसको बताना नहीं चाहता था कि यह कितना धन उसके पास छोड़ गई है। वह मेनन को केवल आश्वासन देता रहता था कि उसके पास निर्वाह के लिए धन है। जब वह समाप्त हो जाएगा तो फिर कहीं नौकरी ढूंढने का यत्न करेगा।

मेनन ने एक दिन पूछा, "दिन-भर क्या करते रहते हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लुई के पुस्तकालय में कुछ अंग्रेजी की किताबें हैं, उनको पढ़ता हूँ और कभी बाजार से खरीदकर ले आता हूँ"

इस प्रकार छः मास व्यतीत हो गए। वर्मा चीन सड़क पर जापानियों का अधिकार था। परन्तु जापानी उस सड़क का कुछ अधिक उपयोग नहीं कर सकते थे। अमेरिका वालों को भी उस सड़क की विशेष आवश्यकता नहीं रही थी। अतः जब आजाद हिन्द सेना को आसाम से बाहर कर दिया गया और अमेरिका वालों को हिमालय से कूदकर चीन जाने का हवाई मार्ग मिल गया तो उन्होंने जापानियों से वर्मा खाली कराने का यत्न नहीं किया।

जापान से दो मोर्चो पर युद्ध हो रहा था। प्रशान्त सागर के द्वीपों पर से एक-एक जापानी धकेलकर जापान की ओर किये जा रहे थे और चीन में से भी जापानियों को निकाला जा रहा था।

अंग्रेजों का पूर्ण वल अफ्रीका से इटली वालों को निकालने में लग रहा था। इसमें हिन्दुस्तान, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड सहायता कर रहे थे। अंग्रेजों को योरूप में जर्मन के विरूद्ध दूसरा मोर्चा बनाने के लिए कहा.जा रहा था। उस मोर्चे पर अमेरिका अंग्रेजों की सहायता करने के लिए योजना वना रहा था।

इस समय तक रूस ने जर्मन को स्टालिनग्राड से पीछे हटने पर विवश कर दिया था।

एक दिन निरंजनदेव को बुलाने के लिए मेनन उसके मकान पर आया। निरंजनदेव उस समय पर वाल्टर स्काट की कृति 'आइवन हो' पढ़ रहा था। मकान के नीचे घण्टी वजी तो निरंजनदेव उठकर देखने लगा। उसने मेनन को बुला लिया और पूछने लगा, "बहुत दिन के बाद दर्शन हुए हैं।"

"हाँ, मैं अपनी सेनाओं को देखने के लिए वर्मा वार्डर पर गया था।"

"कैसा चल रहा है वहाँ?"

"यह युद्ध का रहस्य है जिसे मैं प्रकट नहीं कर सकता।"

"आज यहाँ आने का कष्ट किस कारण किया है? मैं समझता हूँ कि यह बात भी युद्ध के साथ सम्बन्ध रखती है।"

"आपका कथन ठीक है। मैं उसी के लिए आया हूँ। लुई का कुछ पता चला?"

"मैं समझता हूँ कि मेरी अपेक्षा आपको उसका अधिक पता होगा।"

"यह कैसे कहते हैं?"

"इस बार उसको गए छः मास हो गए है और इस काल में आज प्रथम बार उसके विषय में पूछा है।"

मेनन विस्मय से मुख देखता रह गया। निरंजनदेव ने समझा कि उसके कथन में सच्चाई है तभी मेनन का मुख बन्द हो गया है। मेनन ने कितनी देर तक विचार कर पूछा, "परन्तु आपने भी उसके विषय में कभी नहीं पूछा।"

"वह इसलिए कि मुझे उसके विषय में जानने का कोई प्रयोजन नहीं था। मैं उसके पास बन्दी जीवन बिता रहा हूँ। जब यहाँ निर्वाह में कठिनाई होगी तो कहीं अन्यत्र नौकरी ढूंढ लूंगा। मैं जब यहाँ आया था, तब से तो अब मेरी स्थिति सुदृढ़ है। अब मैं गुजारे के लायक वर्मी भाषा वोल और समझ सकता हूँ।"

मेनन वोला, "हम पिछले पाँच दिन से लुई के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतीक्षा करते-करते थककर मुझे यहाँ उसका पता करने के लिए भेजा गया है।"

"मुझे तो उसके विषय में कोई ज्ञान नहीं है।"

"आप भारत लौट जाना पसंद करेंगे?"

"हाँ, पसन्द तो करूँगा किन्तु स्वतंत्र सैनिक के रूप में। मैं कैदी के वचन से बँधा हुआ वहाँ जाना नहीं चाहता।"

"तो आप वहाँ पहुँचते ही अपने सैनिक कार्यालय में रिपोर्ट करेंगे?"

"निस्संदेह।"

"तब तो आप हमारे काम के आदमी नहीं हैं?"

"मैं तो केवल आपका युद्धकालीन बन्दी मात्र हूँ।"

"लुई जब आ जाय तो उसे आते ही बताइये कि अब हमारा संकेत शब्द 'सर्पेन्ट' है और उसका माइस नहीं प्रत्युत 'ईव' है।"

"अच्छा! सर्पेन्ट एण्ड ईव।"

"हाँ, यह रहस्य है।"

"आप निश्चिन्त रहें। मुझसे इसको लुई के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं जान पाएगा।"

मेनन जाने ही वाला था कि लुई आ पहुँची। उसके माथे पर उस घाव का चिन्ह रह गया था जो सिंगापुर हवाई जहाज की टक्कर से उसको लगा था।

दोनों ने उठकर लुई का स्वागत किया। लुई ने अपना अटैचीकेस एक ओर रखते हुए मेनन से हाथ मिलाया और बोली, "आपको व्यर्थ परेशानी हो रही है, आप जा सकते हैं। मैं नेताजी से मिल आई हूँ।"

मेनन ने उठकर दोनों का अभिवादन किया और वह मकान के नीचे उतर गया। लुई भी उठी और स्नानागार में चली गई। स्नानादि से निवृत्त हो उसने निरंजनदेव से कहा, "देव डियर! चलो खाना खाने चलें।"

निरंजनदेव चल पड़ा। आज वे ऐसे होटल में गये जहाँ उन दोनों को कोई नहीं जानता था। दोनों चुपचाप खाना खाते रहे। दोनों ने किसी प्रकार की बात करने का यत्न नहीं किया।

घर लौटकर बैठते हुए लुई ने कहा, "आपको स्मरण है, उस रात्रि में क्या हुआ था जिस दिन प्रातःकाल मैं आपकी अनुपस्थिति में यहाँ से चली गई थी?"

"हाँ, बहुत अच्छी तरह याद है। मैंने कहा था कि मुझे आपके लिए भय लग रहा है। जिस गहरे जल में आप तैर रही हैं, वह आपको नीचे की ओर खींचता प्रतीत होता है।"

"मेरी बात सुनकर आप गम्भीर हो गई थीं। इस पर मैंने आपसे पूछा था कि मैंने कोई अशुभ बात तो नहीं कही जिसके उत्तर में आपने कह दिया था कि इस विषय में कल बात करेंगी और आप मुख मोड़कर सो गई थीं।"

"हाँ, उसको आज छः मास और पाँच दिन हो चुके हैं। उसके अगले दिन और आज भी आपने नहीं पूछा कि क्या बात थी? मैं विचार करती हूँ कि आप विचित्र पदार्थ से बने व्यक्ति हैं। आप मेरे लिए भय का तो अनुभव करते हैं परन्तु उस भय के विषय में जानने के लिए तनिक भी अपनी जबान नहीं हिलाते। मेरा यह दृढ़ मत है कि आपका हृदय बिल्कुल निर्जीव है और यदि आपके किसी अंग में जीवन है तो वह आपकी आँखों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में ही है। वे मानव उद्‌गारों की बातें कर लेती हैं।"

निरंजनदेव हँस पड़ा। उसने कहा, "आप भूल गई हैं कि आपने कहा था, आप कल बतायेंगी। मैं अभी तक उस कल की ही प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

"परन्तु क्या आप उस बात को जानने के लिए उत्सुक हैं?"

"बात यह है कि दिखावे के लिए आपका पति होते हुए भी मैं आपका नौकर हूँ। यदि इस कृत्रिम और वास्तविक सम्बन्ध के अतिरिक्त मेरा आपसे कोई सम्बन्ध है तो वह है एक शाही कैदी का।"

लुई हँस पड़ी। उसने कहा, "एक सम्बन्ध और भी है। उसे आपकी आँखें जानती हैं परन्तु उनकी पहुँच आपके हृदय तक नहीं प्रतीत होती। वह सम्बन्ध है, मैं आपसे प्रेम करती हूँ। जिस दिन मैंने आपको होटल की सीढ़ियों पर बैठे देखा था, उसी क्षण से आपके प्रति उत्कृट प्रेम का अनुभव करती हूँ। जब आप शेव व स्नान कर कपड़े पहन स्नानागार से निकले थे उसी समय अपना मन आपकी मुट्‌ठी में डाल चुकी थी। उसके बाद रात मैं आपसे कुछ अन्तर पर सोती रही हूँ, आपके ऊष्ण उच्छवासों को अपने गालों पर अनुभव भी करती रही हूँ परन्तु आपके हृदय को टस से मस होते नहीं देखा।"

"आपने एक बार पहले भी कहा था कि आपको मरने से भय नहीं लगता, परन्तु आप पाप से डरते हैं। फिर आपको मेरे लिए भय लगने लगा। परन्तु यह क्यों, आपने कभी जानने का यत्न नहीं किया?"

"किया है।"

"क्या किया है? मैं अति भयावह परिस्थितियों से निकल और जीवित बचकर छः मास बाद वापस आई हूँ, परन्तु आपने इतना भी नहीं पूछा कि मैं कहाँ रही हूँ, मुझ पर क्या बीती है? मेरे लिए भय करने की बात क्या बनावट है? यदि वह बनावट नहीं तो मेरे लिए आपके मन में चिन्ता क्यों नहीं होती?"

दस मास तक एक साथ रहने पर भी यह पहला ही अवसर था जब लुई की आँखों में निरंजनदेव ने तरलता देखी। उसे देख वह अवाक् बैठा रहा। लुई ने आँखें पोंछकर कहा, "मैं आज आपको अपने विषय में सब कुछ बता देना चाहती हूँ। सुनेंगे?"

निरंजनदेव अभी भी आश्चर्यचकित-सा बैठा हुआ उसको देख रहा था। वह नहीं जानता था कि वह किस अधिकार से उससे कहे कि वह उसे अपना रहस्य बता दे। लुई ने कुछ क्षण तक विचार कर कहना आरम्भ किया।

: 5 :

"मैं किसी अंग्रेज पादरी की किसी बर्मी कुमारी से उत्पन्न सन्तान हूँ। उत्पन्न होते ही मुझे फाउण्डलिंग हाउस में ले जाया गया। वह पादरी मेरा खर्चा देता रहा। इस पर भी उसने कभी यह स्वीकार नहीं किया कि वह मेरा पिता है। मुझे उच्च शिक्षा दी गई। मैं अंग्रेजी, बर्मी, चीनी और ज़ापानी भाषायें जानती थी। इससे सिंगापुर में एक सौदागर ने मुझे नौकर रख लिया। मैं उसकी पत्नी भी बन गई और उसके तस्कर व्यापार का कार्य भी करने लगी। वह व्यापार करते हुए मेरा सम्पर्क भिन्न-भिन्न राज्यों के उच्चाधिकारियों से होने लगा और वे अधिकारी मुझे जासूस के रूप में प्रयोग करने लगे।

"अचानक उस सौदागर का देहान्त हो गया। अपनी पूर्ण सम्पत्ति उसने अपनी विवाहिता पत्नी की लड़की को दे दी। मेरे लिए उसने एक पाई भी नहीं छोड़ी। इसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे बहुत आघात पहुँचा। मैंने तभी से निश्चय कर लिया था कि मैं किसी पुरूष से सम्बन्ध नहीं रखूँगी। अपने निर्वाह के लिए मैंने जासूसी का कार्य चुन लिया। इसी बीच युद्ध आरम्भ हो गया।

"मैं अमेरिका में जासूसी विभाग में कार्य करने लगी। वास्तव में उसी विभाग में काम करती हूँ। परन्तु जापान, आजाद हिन्द फौज के लोग और चीन की सरकार ये सब मुझसे काम लेते हैं और मैं सबको सूचनाएँ देती हूँ। इस समय मेरा अमेरिका में रूपया जमा है। वह लगभग बीस मिलियिन डालर होगा। यहाँ तो बैंक में मैंने केवल नाम-मात्र का रूपया रखा हुआ है।

"जापानी मुझसे अति प्रसन्न हैं। मैंने उनको ऐसी सूचनाएँ दी हैं जिनसे उनको युद्ध में बहुत सहायता मिली है और एक-एक सूचना के लिए उन्होंने मुझे दस सहस्र येन तक दिये हैं।

"आजाद हिन्द फौज वालों से मैं दो-तीन सौ रूपया मासिक से अधिक नहीं लेती। इनको विदित है कि मैं 'काण्ट्रेक्ट बेसिस' पर जापानियों के लिए कार्य किया करती हूँ। जापानियों को यह विदित नहीं है कि मैं च्यांगकाई शेक का भी काम करती हूँ। अमेरिका को विदित है कि मैं च्यांगकाई शेक को जापानियों की सूचनाएँ दिया करती हूँ।

"परन्तु अब जापान और आजाद हिन्द फौज वाले हार रहे हैं। हारने वाला व्यक्ति अपने हितेच्छुओं पर भी सन्देह करने लगता है। इससे मैं अब जापानियों और आजाद हिन्द फौज वालों के लिए विश्वास के योग्य नहीं रही। मुझे दीख रहा है कि उनकी आंखों का रंग बदल रहा है। इस कारण मैं अब एकाएक यहाँ से लापता होने वाली हूँ।

"मेरी इच्छा है कि यहाँ से जाने से पूर्व मैं आपको भी यहाँ से ले जाऊँ। ऐसा करने के साथ ही मेरी यह भी इच्छा है कि आपके मन में अपने प्रति कुछ तो अनुराग उत्पन्न कर सकूँ।

"क्या मैं इसमें सफल हो जाऊँगी? देखिए, अपने लिए आपके मन में प्रेम की ज्योति जगाने के लिए मैंने अपनी जान आपके हाथ में दे दी है। आप मेरा रहस्य बताकर मुझे फाँसी पर लटकवा सकते हैं। जापानी और आजाद हिन्द फौज वाले कोई भी मुझे पकड़वाने के लिए आपको भारी इनाम देंगे।

"अभी पाँच दिन तक मैं यहीं रहूँगी। वह भी चौबीस घंटे घर पर ही। जिससे आपको मुझसे छुट्टी पाने अथवा मुझे बेचने के लिए सुअवसर मिल सके।

"यदि इन पाँच दिनों में आपने मुझे उनके हाथों में नहीं सौंपा तो मैं समझूँगी कि आपके मन में मेरे लिए दया उत्पन्न हो रही है। मैं आशा कर सकूँगी कि मैं आपके प्रेम की पात्रा बन गई हूँ अथवा बन सकूँगी।

"यदि आप मुझसे मेरे काम के कारण घृणा करने लगे हैं तो आप मुझको किसी समय भी गोली मारकर समाप्त कर सकते हैं अथवा मेरे विरूद्ध मुखबरी कर सकते हैं। मैं तो अपने काम को महान् कल्याण का काम समझती हूँ। मैंने सदा अधिकारी की सहायता की है। इस पर भी आप स्वतन्त्र हैं, अपने विचार से पुण्य कमाने के लिए।"

इतना कह वह उठी और आराम करने के लिए शयनागार में चली गई। किंकर्त्तव्यमूढ़ सा निरंजन देव वहीं सिटिंग रूम में बैठा रहा। यद्यपि उसको विश्वास था कि लुई जासूसी का कार्य करती है परन्तु इस बात का तो वह स्वप्न में भी विचार नहीं करता था कि वह लड़ने वाले दोनों पक्षों में काम कर रही है और दोनों पक्ष ही पिछले दो वर्ष से उसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पक्ष में समझ रहे हैं। लुई की चतुराई का वह कायल हो गया। सबसे अधिक चतुराई की बात यह थी कि वह समझ गई थी कि जापान युद्ध हार रहा है और हारने वाला व्यक्ति अपने हितेच्छुओं को भी सन्देह की दृष्टि से देखने लगता है। इसी कारण अब वह एक ओर हट जाना चाहती थी।

परन्तु वह स्वयं क्या करे? अपनी स्थिति पर वह किसी नैतिक दृष्टि से विचार करना चाहता था। वह स्वयं कैदी था। वह किसी प्रकार भी आजाद हिन्द सेना अथवा जापान की सरकार के सामने उत्तरदायी नहीं था। वह यदि किसी के पास वचनबद्ध था तो भारत सरकार के सामने था। अभी तक लुई ने यह नहीं बताया था कि उसने कभी भारत सरकार के विपरीत कार्य किया है। इससे वह समझता था कि उसकी यह जिम्मेदारी नहीं कि वह जापान अथवा आजाद हिन्द फौज को किसी अमेरिकन अथवा चीनी जासूस के विषय में बताए।

आजाद हिन्द फौज के साथ उसकी सहानुभूति अवश्य थी। परन्तु क्या उनकी पराजय के लिए लुई कारण है? उनके कौन से रहस्य को उसने अमेरिका और भारत सरकार को बताया है जो उनकी पराजय का कारण हुआ है। केवल एक ही बात थी जो भारत सरकार को बताई जा सकती थी कि इम्फाल की सेना की सहायता के लिए पीछे से सहायता नहीं जा रही परन्तु यह सूचना तो उसको भी थी, जो किसी प्रकार की जासूसी नहीं करता था।

रह-रहकर उसके मन में आ रहा था कि लुई के कारोबार से उसका किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है। वह उसके भेद को बताने के लिए किसी के सामने उत्तरदायी भी नहीं। साथ ही वह ऐसी कोई बात जानता भी नहीं जिससे वह कह सके कि लुई ने कोई नैतिकता के विरोध में कार्य किया हैं

फिर भी वह किसी जासूस के आश्रय पर पल रहा था, उसको यह कुछ विचित्र प्रतीत हुआ। उसके मन में यह विचार आया कि जासूस का कार्य बहुत ही निम्न स्तर का है। परन्तु क्या निम्नता है इसमें? वह समझ नहीं सका था। सेना के कार्य को जैसे वह समझता था, जासूसी के बिना चल नहीं सकता था। विशेष रूप में युद्ध के दिनों में जासूसी का कार्य किसी भी लड़ने वाले सिपाही के कार्य से कम साहस का नहीं होता। यह अति आवश्यक भी था।

इसी प्रकार के विचारों में वह बाहर ड्राइंग रूम में बैठा तो बैठा ही रहा। ठीक चार बजे बाहर की घंटी बजी। होटल का बैरा चाय लाया था। उसने बैरे को चाय रखने के लिए कहा और स्वयं लुई को जगाने के लिए शयनागार में चला गया। लुई स्वयं ही बाहर आ रही थी। उसने देखा कि वह बाहर जाने के वस्त्र पहने हुए है। जब वह बैठकर चाय बनाने लगी तो उसने पूछा, "आप कहीं गये नहीं?"

"कहाँ जाता?"

"मेरी मुखबरी करने।" इतना कह वह मुस्करा दी।

"किसके पास मुखबरी करने के लिए जाता?"

"आजाद हिन्द फौज वालों के पास।"

"मैं उनका नौकर नहीं हूँ। न ही उनके सम्मुख अपने अथवा आपके कार्यों के लिए उत्तरदायी हूँ।"

"तो जापानियों के पास जा सकते थे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वे मेरे मालिकों के शत्रु हैं।"

"कौन हैं आपके मालिक?"

"भारत सरकार! मैंने उसकी वफादारी की शपथ ले रखी है।"

"तब तो ईश्वर का धन्यवाद है कि मैंने उसका रहस्य किसी को नहीं बताया।"

"परन्तु अमेरिका, अंग्रेजों का मित्र होने के नाते मेरा कुछ दूर का उत्तरदायित्व उसके प्रति बनता है। मैं उनके प्रति अपने उत्तरदायित्व की सीमा और रूप रेखा निश्चित नहीं कर सका।"

"तो ऐसा करिए। मैं आपको अमेरिका ले जाती हूँ। वहाँ जाकर मुझे पकड़वा देना।"

चाय बन गई। लुई चाय की चुस्की लगाती हुई बोली, "यदि आप कहेंगे तो मैं आपको अपनी ऐसी बातें बता दूंगी जो यदि अमेरिका वालों को विदित हो जाएँ तो वे तुरन्त मुझे फाँसी पर लटका दें।"

"तब तो बात बन जाएगी।" निरंजनदेव की हँसी निकल गई -"परन्तु तुम्हें मौत का भय नहीं लग रहा?"

"मौत से डरने वाले जासूसी का काम नहीं करते। सेना का सिपाही तो घिरा हुआ परिस्थितिवश शौर्य का कार्य कर सकता है परन्तु जासूस तो प्रत्येक कार्य करने से पूर्व यह जानता है कि उसे मार्ग में ही मारकर समाप्त किया जा सकता है। और उसके लिए प्रायः उस कार्य को करने से इन्कार करने का अवसर होता है।"

"इस पर भी मुझे आपकी मुखबरी नहीं करनी।"

"क्यों?"

"पहले आप बताइए कि आप मेरे ही हाथ से मरने की इच्छा क्यों कर रही हैं?"

"वह इसलिए कि यदि आप मेरे साथ अमेरिका नहीं जाना चाहते तो मैं भी नहीं जाऊँगी। मैं यदि एक-दो मास तक यहाँ से नहीं गई तो जापानी अथवा आजाद हिन्द फौज वाले मुझ पर सन्देह कर मेरी हत्या कर देंगे। मैं चाहती हूँ कि यदि हत्या ही होनी है तो वह आपके करने से हो। इससे मेरे सब पाप धुल जाएँगे। मैं समझूँगी कि मैंने अपने प्रेमी पर विश्वास कर अपने को बलि चढ़ा दिया है।"

निरंजन हँस पड़ा। वह बोला "मैं यह शुभ कार्य नहीं करूँगा।

और मैं नहीं चाहता कि मैं किसी ऐसे को, जिसके लिए मेरे मन में मान और अनुराग है, उसको इस कठिन कार्य का, जो वह कर रही है, इतना भयंकर फल दूँ। कम-से-कम मेरे हाथ से तो यह नहीं होगा।"

प्याला वापस सौसर पर रखती हुई लुई बोली, "आप यह सत्य कहते हैं कि आप मेरा मान करते हैं और आपके मन में मेरे लिए अनुराग है?"

"हाँ, इतना तो मेरे मन में निश्चित है। परन्तु अनुराग और प्रेम में तो बहुत अन्तर है?"

"यह उसी ओर एक पग है। तब तो मैं आशा कर सकती हूँ।"

"किस बात की?"

"यह मैं अपने मुख से नहीं कहूँगी।"

निरंजनदेव स्वयं ही अपने मन के भावों का विश्लेषण करने लगा कि वह लुई के प्रति किस प्रकार का अनुराग रखता है। इसी समय लुई उठ खड़ी हुई और बोली,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चलिए, आज सागर के तट पर भ्रमण करने चलें।"

निरंजनदेव उठकर कपड़े बदलने के लिए चला गया। दोनों बाँह-में-बाँह डाल दो घंटे तक बिना एक शब्द कहे 'पायर' पर घूमते रहे। सायं साढ़े छः बजने पर लुई बोली, "मुझे जापानी अधिकारियों से कुछ काम है। आप घर लौट जाइए मैं भोजन के समय आ जाऊँगी।"

उनका घर वहाँ से एक ओर को एक मील था तो जापानी कार्यालय दूसरी ओर दो मील पर। लुई टैक्सी में चली गई और निरंजन पैदल ही आ गया।

वह अभी घर नहीं पहुंचा था कि मेनन ने उसके साथ-साथ चलते हुए कहा, "मिस्टरा देव! अपनी चार्मिंग साथिन को किधर छोड़ आए हो?"

बात टालने के लिए निरंजन बोला, "तो आप भी उसे चार्मिंग कहते हैं?"

"निश्चय! परन्तु मेरी तो वह पहुंच से ही बहुत दूर है। न तो मैं कोई सुन्दर युवक हूँ और न ही धनी आदमी। मैं उसे पाने की आशा नहीं करता। हमारे नेता उसका बहुत आदर करते हैं। तीन बार वह उनकी जान बचा चुकी है। दो बार तो जापानियों से और एक बार अमेरिकन जासूसों से।"

"सत्य! तब तो बहुत ही जीवट की औरत है वह।"

"हम उसको कुछ अधिक देते भी नहीं। कुछ दे सकते भी नहीं। इस पर भी पिछली बार अमेरिका वालों ने षड्यन्त्र कर नेताजी की हत्या की योजना बनाई थी। लुई ने आकर बता दिया। नेताजी एक 'लांच' में तट से चार मील के अन्तर पर एक द्वीप में पिकनिक के लिए जाने वाले थे। यहाँ के हिन्दुस्तानी नागरिकों की ओर से वह पिकनिक मनाया गया था। लांच का प्रबन्ध भी नागरिकों ने ही किया था। वास्तव में वह अमेरिका के जासूसों की ओर से था। अगले दिन हमने अपने एक बंगाली सैनिक को नेताजी के परिधान में उस स्थान पर भेजा और नेताजी को अन्य लांच पर, जिसका प्रबन्ध हमने किया था, भेज दिया गया।

"वह नागरकों की, 'लांच' मार्ग के मध्य, ध्येय पर पहुँचने से पहले ही फट गई। ऐसा प्रतीत होता है उसमें कोई जबरदस्त 'टाइम बम' रखा हुआ था। उसमें बैठे हुए दस-के-दस व्यक्तियों के चिथड़े उड़ गए। कोई नहीं बचा।

"उस दिन सायंकाल वहाँ से लौटने पर नेताजी ने दस हजार रुपये का चैक देकर मुझे लुई के पास भेजा। उसने चैक तो ले लिया लेकिन अभी तक कैश नहीं कराया। एक दिन जब नेताजी ने चैक के रुपये के विषय में पूछा तो बोली कि यदि वह चैक न लेती तो स्वयं नेताजी का अपमान हो जाता, परन्तु रूपयों की उसको आवश्यकता नहीं है।"

"एक दिन उसने मुझे बताया था कि वह नेताजी को नेशनल हीरो समझकर उनका कार्य करने में प्रसन्नता अनुभव करती है।"

निरंजनदेव घर के समीप पहुँच गया था। मेनन ने उससे विदा ली और निरंजनदेव अपने मकान पर चढ़ गया।

: 6 :

उक्त घटना के चार दिन बाद प्रातःकाल बिस्तरे पर ही चाय पीते हुए लुई ने कहा, "आपके लिए आजाद हिन्द फौज की ओर से पासपोर्ट बनवा दिया है। पासपोर्ट में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपका नाम मिस्टर एन० देव लिखा हुआ है। आप यहाँ से सिंगापुर जाएँगे। वहाँ से आपको एक सौ पाँच नम्बर के 'यैच' का टिकट बैटेविया का मिल जाएगा। बैटेविया में पहुँचने से पहले उस यैच वाले आपको एक अमेरिकन लाइनर में भेज देंगे। अमेरिकन लाइनर में आपको आजाद हिन्द फौज का पासपोर्ट नहीं दिखाना होगा। वहाँ एक दूसरा पासपोर्ट, जो चीन गवर्नमेन्ट का है, दिखाना होगा। नाम आपका उस पर भी यही लिखा होगा।

"एक बार आप अमेरिकन लाइनर पर गये कि वह आपको केप का चक्कर लगाते हुए दक्षिणी अमेरिका के किसी बन्दरगाह पर पहुँचा देगा। वहाँ से आप न्यूयार्क पहुँच जाएंगे। रूपयों के लिए आप अमेरिकन लाइनर के कमांडर को एक टोकन दिखा दीजिएगा, वह सब प्रबन्ध कर देगा।

"वताइये कर सकते हैं यह सब?"

"उसके बाद क्या होगा?"

"मैं आपको न्यूयार्क में मिलूँगी। वहाँ आपको अमेरिकन सरकार की सीक्रेट इन्टैलिजेन्स डिपार्टमेन्ट के लोग एक होटल में ठहरा देंगे। आपको व्यय करने के लिए रूपया मिलेगा और मैं आपको ढूँढ़ लूँगी।"

"देखिये जून की पहली तारीख है और मैं समझती हूँ कि जिस प्रकार मैंने बताया है, उस प्रकार सब चलता रहा तो आप अगस्त के प्रथम सप्ताह में न्यूयार्क पहुँच जाएँगे। अमेरिकन लाइनर में तो पहुंचने तक भय है। आपको सन्देह में पकड़ा जा सकता है। जापान और आजाद हिन्द फौज में तनातनी हो गई है। यह सम्भव है इन चार-पाँच दिनों में स्थिति और बिगड़ जाए और यह पासपोर्ट व्यर्थ सिद्ध हो जाय, उस स्थिति में आप चीनी पासपोर्ट नष्ट कर दें। अमेरिकन लाइनर में जाकर आपको एक ही भय रहेगा। जहाज के तारपीडो हो जाने का। इतना भय तो मेरी खातिर आपको मोल लेना ही पड़ेगा।"

"यहाँ से किस समय जाना चाहिए?"

"साढ़े ग्यारह बजे। आपके मेनन साहब आपको लेने के लिए आयेंगे। आपको सिंगापुर का टिकट देकर वे हवाई जहाज में चढ़ा आंयेंगे।"

निरंजन लुई के प्रभाव तथा जानकारी के विषय में कुछ समझ नहीं पा रहा था। उसने यह सब प्रबन्ध ऐसे कर दिया था जैसे कोई नई दिल्ली से पुरानी दिल्ली जाने के लिए ताँगे का प्रबन्ध कर रहा हो।

वह उठकर स्नानादि करने के लिए गया तो लुई ने उसका किट तैयार कर दिया। उसने एक सूटकेस में दो सूट, तीन कमीजें और दो अण्डरवियर रख दिये। हजामत का सामान और तेल-साबुन भी उसी में था। अटैची केस में एक गुप्त खाना था, उसमें उसने चीनी पास-पोर्ट भी रख दिया। उसी में उसने बर्मी नोटों का बंडल और आजाद हिन्द फौज का पासपोर्ट भी रख दिया।

ठीक साढ़े ग्यारह बजे मेनन जीप लेकर आया और निरंजनदेव को ले गया। मार्ग में मेनन ने कहा, "नेताजी आप पर बहुत विश्वास करते हैं और आशा करते हैं कि आप उनके भारत में आने के लिए मार्ग बनाएँगे। पूर्ण कागजात एक अन्य जहाज में न्यूयार्क पहुँच गये हैं। लुई उनके विषय में आपको वहीं समझा देगी। वहाँ से आप भारत जायेंगे और लुई वापस रंगून आ जाएगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक बारह बजे हवाई जहाज सिंगापुर के लिए रवाना हो गया। पाँच बजे हवाई जहाज सही सलामत सिंगापुर उतर गया। हवाई जहाज से उतरते ही पासपोर्ट देखने के लिए उसको एक केबिन में ले गये। वहाँ उसका पासपोर्ट और उसके साथ टोकन देखते ही उसको एक मोटर गाड़ी पर चढ़ाकर सिंगापुर पोर्ट पर ले जाया गया। ड्राइवर ने उसको एक अन्य चीनी रूपरेखा के व्यक्ति के हवाले कर दिया। वह उसको एक अफसर के पास ले गया जो जापानी प्रतीत होता था। अफसर ने पासपोर्ट देखा। तस्वीर से निरंजनदेव की शक्ल मिलाई, टोकन देखा और बिना एक भी शब्द कहे उसे एक सैनिक के साथ कर दिया। वह सैनिक उसको एक सौ पाँच नम्बर के यैच पर ले गया।

यैच डच सौदागरों का था, जो सिंगापुर और बैटेविया में तिजारत करते थे। यैच के मैनेजर ने जब टोकन देखा तो उसने ख़ड़े होकर हाथ मिलाया और उसे एक केबिन में ले गया। वहाँ बैठाकर उसकी भोजन आदि की व्यवस्था कर दी। रात को सोने से पूर्व मैनेजर आया और बोला, "प्रातः चार बजे हम यहाँ से चल देंगे। साढ़े पाँच बजे यहाँ से दस मील के अन्तर पर अमेरिकन लाइनर मिलेगा। वह सागर के मध्य में होगा। आपको हम मोटर बोट में बैठाकर उसमें पहुँचा देंगे। हम उस जहाज के समीप नहीं जा सकते।"

"मोटरबोट हमारा एक आदमी चलाकर ले जायेगा और वह भी आपके साथ ही ज़ायेगा। उसको अफ्रीका अथवा अमरीका के किसी बन्दर पर उतार देना होगा।"

यह सब नई बात थी जो लुई ने बताई नहीं थी। इस कारण निरंजनदेव परेशानी में मुख देख रहा था। उसे परेशान देख मैनेजर ने कहा, "हमारे यैच में एक जापानी अफसर यात्रा कर रहा है। हम यह तो कह सकते हैं कि आप मोटरबोट चुराकर ले गये हैं। हमारे पास तोपें नहीं हैं। उस अफसर के साथ दो बन्दूकची हैं। इस कारण आप मोटरबोट में लेट जाइएगा जिससे वे आपको गोली का निशाना न बना सकें।"

निरंजनदेव समझ गया कि कितनी भययुक्त स्थिति में वह पड़ गया है। परन्तु वह जानता था कि समय से पूर्व वह मरेगा नहीं। और जो कष्ट उसके भाग्य में लिखा है, उसे भोगे बिना मुक्ति भी नहीं है।

इतना विचारकर उसने कहा, "मैं ऐसा ही करूँगा। मेरे विषय में आप चिन्ता न करें। उस आदमी को जिसे मेरे साथ जाना है, मेरे पास यहीं छोड़ जाइये।"

एक जहाज का नौकर, जो हालैण्ड निवासी-प्रतीत होता था, उसके पास आकर लेट गया। वह अंग्रेजी नहीं जानता था। परन्तु मैनेजर ने उसको सब कुछ समझा दिया था।

वह आदमी पाँच बजे उठा। मुंह-हाथ धाकर उसने निरंजनदेव को उठाया। दोनों दबे पाँव डैक पर जा पहुंचे। वहाँ क्रेन के साथ मोटरबोट बँधी हुई थी। डच सेलर ने क्रेन को धीरे-धीरे घुमाया तो किश्ती नीचे उतरकर सागर पर तैरने लगी। जहाज के पहरेदार ज़ाग रहे थे परन्तु उनकी इनकी ओर पीठ थी। निरंजनदेव और उस सेलर का सूटकेस पहले ही उस बोट पर रखा हुआ था। किश्ती जब जल पर तैरने लगी तो उसी रस्से को पकड़कर दोनों नीचे उतर गये। किश्ती में बैठ जहाजी ने रस्सी काट दी और उसे जहाज से दूर बह जाने दिया। जब पचास फुट के अन्तर पर बोट पहुंच गई तो उसने मोटर स्टार्ट कर दी। उसको ख्याल था कि मोटर की आवाज यैच पर नहीं जायेगी। परन्तु शान्त वातावरण में यह आवाज छिपी नहीं रह सकी। साथ ही दूर खड़े लाइनर को बन्दूक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलाकर संकेत करना था। उसने अपनी बैल्ट से पिस्तौल निकालकर हवा में चला दी।

इस समय यैच और दो मील दूर खड़े लाइनर पर हलचल दिखाई दी। यैच में सीटी बजी, खतरे की घण्टी बजी और लोग डैक पर आकर खड़े हो गये। निरंजनदेव और वह जहाजी दोनों मोटरबोट में लेट गये। इस समय यैच से धड़ाधड़ गोलियाँ चलने लगीं। लाइनर ने तोप दाग दी। यह कहना कठिन है कि यह केवल यैच को डराने के लिए था अथवा किसी अन्य कारण से। परन्तु यैच को गोला नहीं लगा। इस पर भी यैच ने अपनी दिशा बदली और तीव्र वेग से भाग गया।

इस समय तक किश्ती को कई गोलियाँ लगी थीं। कई किश्ती के आगे के हिस्से में लगीं किन्तु एक तो पैट्रोल की टंकी में ही लगी थी। पैट्रोल बह गया और किश्ती में पानी भरने लगा। लाइनर अभी भी डेढ़ मील के अन्तर पर था। दोनों ने लाईफ बैल्ट निकाल ली और किश्ती के डूबने की प्रतीक्षा करने लगे। जहाज वालों ने प्रभात के मन्द प्रकाश में देख लिया था मोटरबोट डूब रही है। उन्होंने अपने जहाज से लाइफ बोट उतारकर इनकी ओर भेज दी। जब तक वह बोट इन तक पहुँची, तब तक वे दोनों समुद्र में तैर रहे थे। निरंजनदेव ने अपना सूटकेस हाथ से उठाकर कंधे पर रखना चाहा, परन्तु वह किसी प्रकार छूटकर समुद्र की तह में जा पहुंचा।

निरंजनदेव और जहाजी बच तो गये, परन्तु चीनी सरकार का पासपोर्ट और टोकन दोनों समुद्र की तह में पहुँच गये थे।

निरंजनदेव ने अमेरिकन लाइनर के कैप्टेन को सारी स्थिति से अवगत कराया तो वह कहने लगा, "मैं तुमको अफ्रीका के किसी बन्दरगाह पर उतार तो दूँगा, परन्तु तुम्हारे लिए रुपये का प्रबन्ध नहीं कर सकता।"

निरंजनदेव समझ नहीं सका कि वह किस प्रकार अमेरिकी सीक्रेट इंटैलीजेंस विभाग से सम्पर्क स्थापित कर पाएगा। इस पर भी वह यह समझ रहा था कि एक बार वह किसी भी मित्र राष्ट्र के बन्दरगाह पर पहुँच गया तो फिर वह कुछ न कुछ प्रबन्ध कर लेगा।

डच जहाजी ने अपना अटैचीकेस डूब जाने की बात बताई और अमेरिकन लाइनर के कैप्टेन को बताया कि वह और उसके यैच वाले मित्र राष्ट्रों के जासूसों को जापानी क्षेत्रों में पहुँचाने का काम करते रहे हैं।

कैप्टेन ने कहा, "कलकत्ता से रेडियो द्वारा उनको यह सूचना मिली थी कि हमको सिंगापुर से दस मील के अन्तर पर बैटेविया से पचास मील इधर लेटीच्यूड 0.5 और 162.7 पर खड़े होकर वहाँ एक मोटरबोट पर से एक हिन्दुस्तानी को लेना है।

"इससे हम आपको ले जायेंगे। परन्तु आगे के विषय में क्या होगा, मैं नहीं कह सकता।"

"आप कलकत्ता से सम्पर्क उत्पन्न कर इस विषय में जानने का यत्न कीजिए।"

कैप्टेन ने रेडियो द्वारा कलकत्ता पोर्ट से 'कॉन्टैक्ट' किया। उसने उन्हें बताया कि हिन्दुस्तानी कैप्टेन मिस्टर देव मिल गया है, परन्तु वह कहता है कि उसका सूटकेस उसकी मोटरबोट के साथ डूब गया है। उसमें उसका पासपोर्ट और टोकन था, इस स्थिति में क्या करना उचित होगा?

कलकत्ता से उतर मिला कि इस विषय में उन्हें कोई सूचना नहीं है। यदि कोई सूचना होगी तो वे डर्बन भेज देंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार बिना सामान के और जेब में एक भी पैसा न होने की स्थिति में बीस दिन की यात्रा के बाद निरंजनदेव डर्बन पहुंच गया।

इस स्थिति कें भी निरंजनदेव सर्वथा स्वस्थ और प्रसन्न था। उसको विश्वास था कि उसके वहाँ पहुँचने से पूर्व ही उसके लिए कोई-न-कोई वहाँ पहुँचा होगा। किन्तु जो वहाँ पहुंचा हुआ था, वह था दक्षिणी अफ्रीका की खुफिया पुलिस का कर्मचारी। उसने उसे बन्दी बनाकर सैनिक हवालात में डाल दिया। तीन दिन हवालात में रखने पर निरंजनदेव को पूछताछ के लिए सैनिक अफसर के पास ले जाया गया।

उसने पूछा, "आपका नाम?"

"एन० देव।"

"आप हिन्दुस्तानी है।?"

"जी।"

"अमेरिकन सीक्रेट इन्टैलिजेन्स डिपार्टमेन्ट में आप किस प्रकार नौकर हो गए?"

"यह मैं आपको नहीं बताऊँगा।"

"तो किसको बताएँगे?"

"किसी अमेरिकन अधिकारी को।"

"क्या चाहते हैं आप?"

"मुझे अमेरिकन एम्बेसी में भेज दिया जाय।"

"यहाँ अमेरिकन एम्बेसी नहीं है।"

"कोई अमेरिकन स्टेट अधिकारी हो?"

वह सैनिक अफसर चुप रहा। कुछ विचार करने के बाद उसने कहा, "मैं अपने ऑफिसर से पूछकर बताऊँगा।"

"पूछ लीजिए।"

इसके बाद पन्द्रह दिन तक कोई उसकी सुधि लेने नहीं आया। एक दिन एक अन्य सैनिक अधिकारी आया और बोला, "हम आपके खाने का खर्चा नहीं दे सकते।"

"तो मुझे मुक्त कर दीजिए।"

"परन्तु तुम्हारा पासपोर्ट तो है ही नहीं।"

"वह गुम हो गया है।"

"हमने न्यूयार्क पत्र भेजा है। एक मास से पूर्व उसका उत्तर नहीं आ सकता।"

"या तो मुझे छोड़ दीजिए या खाने को दीजिये। मैंने कोई अपराध नहीं किया।"

"तुम हिन्दुस्तानी हो इसलिए तुम्हारे कथन का विश्वास नहीं किया जा सकता।"

"तो जो जी में आए करिये।"

वह अधिकारी भी उसको बन्द करके चला गया। परन्तु उसी सायंकाल वह अधिकरी फिर लौट आया। उसके साथ एक सिविल पोशाक में अमेरिकन अधिकारी था। जब सैनिक अधिकारी ने हवालात की कोठरी का द्वार खोला तो कोठरी की बदबू से बचने के लिए अमेरिकन ने नाक पर रूमाल रखकर निरंजदेव से हाथ मिलाया औश्र एक भी शब्द कहे बिना उसको घसीटता हुआ हवालात के फाटक की ओर ले चला।

बाहर निकलकर उसने उस सैनिक अधिकारी से कहा, "आप किसी आदमी को इतनी गन्दी जगह पर किस प्रकार से रख सकते हैं?"

"यह यहाँ का नियम है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"धिक्कार है तुम्हारे नियमों को। इस स्थान पर तो गाय-बैल भी नहीं रखे जा सकते।"

फाटक के बाहर मोटर खड़ी थी। वह अमेरिकन निरंजनदेव को लेकर अपनी मोटर में बैठ वहाँ से चल दिया। वहाँ से मोटर में ही कैपटाउन पहुँचे। सड़क चौड़ी और साफ थी, इस पर भी यात्रा में दस घंटे लगे।

कैपटाउन पहुंच एक अमेरिकन लॉज के एक कमरे में निरंजनदेव को ठहराकर उससे भोजन के लिए पूछा गया। परन्तु उस अमेरिकन ने मार्ग में ही निरंजनदेव को इतना खिला दिया था कि उसको भूख नहीं रही थी। उसने कहा, "मुझे स्नान के लिए गरम जल और पहनने के लिए साफ वस्त्र चाहिएँ।"

उस अमेरिकन ने कहा, "हाँ, उस नरक से निकलने के बाद तो इन चीजों की आवश्यकता नितान्त रूपेण होनी चाहिए।" वह हँस पड़ा और फिर अपना परिचय देते हुए बोला, "मेरा नाम जे० डब्ल्यू० किंग है। मैं मिलिटरी अटैची टू दि ट्रेड काउंसिल हूँ।"

परिचय होने के बाद उसने निरंजनदेव को स्नानागार दिखा दिया। वहाँ गरम तथा ठंडे जल का प्रबन्ध था। निरंजनदेव को स्नान करने के लिए कहकर वह स्वयं उसके कपड़ों का प्रबन्ध करने के लिए चला गया।

निरंजनदेव ने स्नान किया और फिर बदन पोंछकर वह वस्त्रों की प्रतीक्षा किये बिना बिस्तर में घुस सो गया।

: 7 :

उस समय सागर में 'यू बोटस' ने तूफान मचा रखा था। इस कारण जब निरंजनदेव से पूछा गया कि वह हवाई जहाज से न्यूयार्क की यात्रा करना चाहेगा अथवा समुद्र के मार्ग से तो उसने हवाई जहाज के लिए कह दिया। इसके लिए पहले मोरेक्को के बैरूत बन्दरगाह पर जाना पड़ता था। साथ ही हवाई यात्रा के लिए अनिश्चित काल के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ती थी।

कैपटाउन से निरंजनदेव को बैरूत पहुँचा दिया गया। वहाँ एक मोरोकियन होटल में उसके ठहरने का प्रबन्ध हो गया। सप्ताह में एक हवाई जहाज जाता था और जाने वालों की सूची बड़ी लम्बी बनी हुई थी। साथ ही जाने वाले प्रायः सैनिक अधिकारी होते थे। इस कारण निरंजनदेव को हवाई जंहाज में दो मास तक स्थान मिलने की आशा नहीं थी।

होटल का खर्च तो सरकार की ओर से दिया जा रहा था। इस पर भी वह इस प्रकार बेकार पड़े रहने से ऊब गया था। वह स्वयं को अभी भी बन्दी ही समझता था, इस कारण उसने सन्तोष कर लिया था।

उसको डर्बन और कैपटाउन से निकाल देने का कार्य तो लुई के कहने से ही हुआ था। लुई को डच 'यैच' के मैनेजर ने सूचना भेजी थी कि मिस्टर देव डूबता-डूबता बचा है और जब अमेरिकन लाइनर पर पहुँचा तो उसके पास उसके भीगे वस्त्रों के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं रह गया था।

लुई उसका अभिप्राय समझ गई। एक तो यह कि निरंजनदेव के पास पासपोर्ट और टोकन नहीं रहा और दूसरे निर्वाह के लिए धन भी डूब गया है।

अमेरिकन जासूसी अड्डा सुमात्रा के जंगलों में था। वहाँ से ही संसार-भर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध-क्षेत्रों के जासूसों की गतिविधियों पर नियन्त्रण रखा जाता था। डच हवाई जहाजो से बैटेविया संदेश जाते थे और वहाँ से स्वतन्त्र संसार में फैलाये जाते थे। जंगल में एक अति प्रबल ट्रांसमीटर लगाया गया था। उसके द्वारा ही सब ओर सूचनाएँ प्रसारित की जाती थीं। इसी ट्राँसमीटर से यह पता किया गया कि एक अमरीकन लाइनर हिन्द सागर में है। उसको मिस्टर देव को लाने के लिए समुद्र में एक निश्चित स्थान पर प्रतीक्षा करने के लिए कहा गया था। यह कह दिया गया था कि यात्री अपना पासपोर्ट इत्यादि दिखाएगा और अपने यात्रा के लक्ष्य को बताएगा।

अमेरिकन लाइनर पर पहुँचने से पूर्व मोटर बोट के डूबने की दुर्घटना की सूचना लुई को मिली तो उसने पुनः सुमात्रा के जंगलों में स्थित ट्रांसमीटर द्वारा डर्बन और फिर केपटाउन में इसकी सूचना भेज दी। इतना कुछ करने पर भी लुई के चित्त को शान्ति नहीं मिली। उसने स्वयं न्यूयार्क जाने का प्रबन्ध कर लिया।

बैटेविया वह जापानी जहाज में पहुँची और वहाँ से जंगल में स्थित अड्डे पर पहुँच गई। वहाँ से हवाई जहाज से आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और दक्षिणी अमेरिका और वहाँ से न्यूयार्क जा पहुँची।

वहाँ पहुँच उसने कैपटाउन से पता किया कि मिस्टर देव का क्या हुआ। उसे सूचना मिली कि वह बैरूत में न्यूयार्क जाने के लिए हवाई जहाज में अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहा है।

अब निरंजनदेव को न्यूयार्क में बुलाकर ले जाना लुई के लिए सुगम था। इसके लिए सीक्रेट वार इंटैलिजैंस को प्रेरणा देनी पड़ी। उसने बताया कि उसके लिए न्यूयार्क में एक अत्यावश्यक कार्य है। इन प्रयत्नों का परिणाम यह हुआ कि देव को दो मास की प्रतीक्षा करने के स्थान पर बीस-बाईस दिन ही प्रतीक्षा करनी पड़ी। एक दिन हवाई सेना का एक अधिकारी उसको ढूँढता हुआ आया और उसको हवाई जहाज में बैठाकर न्यूयार्क ले गया।

वहाँ हवाई अड्डे पर ही लुई उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। ज्योंही वह हवाई जहाज से नीचे उतरा कि खुशी से पागल लुई उछलकर उसके गले से लिपट गई।

निरंजनदेव ने उसको बलपूर्वक अपने से पृथक् कर कहा, "कुछ तो ख्याल करो।"

"ओह! मैं तो भूल ही गई थी कि आप केवल दिखावे के लिए ही पति हैं।"

इस प्रकार उसने उसके गले से अपनी बाँह निकाल ली। वहाँ से वे होटल डी पेरिस में जा पहुंचे। कमरे में पहुँचकर निरंजनदेव ने कहा, "अब तुम्हारी योजना पूरी हुई। बताओ अब क्या काम लेना चाहती हो मुझसे?"

"मैं चाहती हूँ कि अब जासूसी का काम छोड़ दूँ। मेरा बैंक बेलैंस इतना है कि मै, आप और आपकी पत्नी तथा बच्चे सब-के-सब आजाद दुनिया के किसी भाग में रह सकते है और शान्ति का जीवन व्यतीत कर सकते हैं।"

"क्या उस शान्ति में वह भी सम्मिलित है जो तुम स्वयं को विस्मरण कर हवाई अड्डे पर कर रही थीं?"

"वह तो आपको जीवित, स्वस्थ और सब प्रकार से ठीक देख स्वयं पर अस्वाभाविक नियन्त्रण की बात भूल गई थी। मैं क्षमा चाहती हूँ। प्रणय सुख तो बिना आपकी स्वीकृति के मैं नहीं लूंगी।

"मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि सन् उन्तालिस से लेकर आज चार वर्ष हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गए है। मैं निरन्तर भाग-दौड़ में रही हूँ। जीवन का भय सदा सिर पर लटकता रहा है। मैं अत्यन्त थक गई हूँ और अब आराम करना चाहती हूँ।"

परन्तु मैं तो अभी वचन मुक्त नहीं हूँ। लुई रानी की कृपा से मैं शत्रुओं की कैद से तो छूट गया हूँ, परन्तु स्वेच्छा से मैंने भारत सरकार को जो वचन दिया था, उससे तो मेरा बन्धन अभी छूटा नहीं है। यदि तुम समझती हो कि तुम पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं है तो तुम अमेरिका में किसी स्थान पर, जहाँ भी चाहो रहो, और मैं आज ही अपने नई दिल्ली के वॉर आफिस को केबल कर उनकी आज्ञा की प्रतीक्षा करता हूँ।

"परन्तु आप नौकरी छोड़-नहीं सकते क्या? आपको क्या अभी उस वेतन की आवश्यकता है जो आपको भारत सरकार से मिल रहा है?"

"लुई! यह वेतन की बात नहीं। यह तो वचन की बात है। जिस कार्य के लिए मैंने भारत सरकार को अपनी सेवाएँ दी थीं, वह प्रयोजन अभी पूर्ण नहीं हुआ। अभी युद्ध समाप्त नहीं हुआ। यद्यपि युद्ध का अन्त अब समीप आ गया है। अंग्रेज और अमेरिका ने अपनी सेनाएं इटली के तट पर उतार ली हैं और वे सेनाएँ आगे बढ़ रही हैं। इस पर भी मंजिल अभी दूर है और मैंने उनको सहयोग देने का वचन दिया हुआ हैं।"

"क्या यह मित्र पक्ष ईमानदारी का पक्ष है? क्या ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका वालों ने अत्याचार और अनाचार नहीं किये थे?"

"हाँ, उन्होंने अत्याचार किये थे और उस अत्याचार का फल वे भोग रहे है। उनकी वर्तमान अग्निपरीक्षा इसी कारण हो रही है। परन्तु जो पक्ष उन्होंने ग्रहण किया था, वह बेईमानी का नहीं था। मैं तो उसी पक्ष की विजय के लिए सेना में भरती हुआ था। अंग्रेजों अथवा अमेरिकनों के लिए नहीं।

"हिटलर का जर्मनी को निर्भय करना तो न्यायोचित ही था। उसके लिए उसका पिछले युद्ध का हर्जाना देने से इन्कार करना भी सर्वथा उचित ही था। मित्र राष्ट्रो ने जो सेना और शस्त्रास्त्र सम्बन्धी प्रतिबन्ध लगाये थे, उनको तोड़ देना उसका अधिकार था। परन्तु उसने इससे अधिक किया। उसने आस-पास के देशों को, बिना उनकी इच्छा के आत्मसात् करना चाहा। यह अनर्थ था। उसने पोलैंड को हजम करने के लिए राक्षसराज स्टालिन से योरूप का बंटवारा कर लिया। यह घोर पाप था। मैं तो इस पाप के विरोध के लिए सेना में भरती हुआ हूँ। जब तक धर्म के पक्ष की विजय नहीं हो जाती तब तक मैं युद्ध-कार्य में लगा रहने के लिए वचनबद्ध हूँ।"

"इससे तो यहीं अच्छा था कि आपको रंगून में ही पड़ा रहने देती।"

"मैं समझता हूँ कि आपके मुझको यहाँ ले आने के लिए मैं जीवन भर आपका आभारी रहूँगा।"

"केवल मौखिक आभार ही प्रदर्शित करेंगे या उसका कभी प्रतिकार भी देंगे?"

"यथाशक्ति उसका प्रतिकार देने का यत्न करूँगा। उसके लिए अभी समय नहीं आया। जो आप चाहती हैं वह सम्भव तो है, परन्तु उसके लिए भारत में जाना पड़ेगा।"

"यदि आप कहें तो मैं आपके सारे परिवार वालों को यहाँ बुलवा लूँ?"

"उनको यहाँ बुलाने से क्या होगा? मुझे तो अभी यह ज्ञात ही नहीं कि मुझे कहाँ भेजा जायेगा।"

"अच्छी बात है। आशा ही जीवन है। इसके आधार पर ही मैं अपनी ड्यूटी पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिपोर्ट करती हूँ। मैं भी दो मास से छुट्टी पर हूँ।"

निरंजनदेव ने उसी दिन सेक्रेटरी टु दि वार आफिस, गवर्नमैंट आफ इंडिया नई दिल्ली को एक केबल भेज दिया। उसमें उसने अपना नाम, नम्बर आदि लिखकर सूचना दी कि वह शत्रु की कैद से निकलकर न्यूयार्क पहुँच गया है। पूर्ण विवरण वह पृथक् पत्र में लिख रहा है और भविष्य के लिए उनके आदेश की प्रतीक्षा कर रहा है।

अपने पिता तथा पत्नी को भी निरंजनदेव ने न्यूयार्क से पत्र भेजा। उसी दिन शाम को लुई ने बताया कि उसको आज्ञा हुई है कि वह उत्तर मंगोलिया पहुँच वहाँ की चीन की अवस्था पर रिपोर्ट लिखकर दे। सो वह दो तीन दिन में वापस सिंगापुर और वहाँ से टोकियो, पेकिंग और उत्तर मंगोलिया के लिए जा रही है।

वह कहने लगी, "मैं समझती हूँ कि यह कार्य मेरे जीवन के सब कामों से अधिक भयावह है। यदि मैं वहाँ से ठीक रिपोर्ट लेकर लौट सकी तो वह केवल इस आशा पर ही कि लौटने पर मैं आपकी वास्तव में पत्नी बनने का सौभाग्य प्राप्त कर सकूँगी।"

"देखो लुई! हमारे एक बहुत बड़े युगद्रष्टा श्रीकृष्ण ने कहा है कि कर्म करना तो मनुष्य के अधीन है, परन्तु उस कर्म का फल परमात्मा के अधीन है। इस कारण हमें निरन्तर कर्म-रत रहना चाहिए, यही जीवन का सार है।"

लुई ने एक दीर्घ निश्वास लिया और फिर बोली, "कल आप सानफ्राँसिसको चलेंगे?"

"क्यों, वहाँ क्या है?"

"मेरा बैंक अकाउंट वहाँ पर है। मैं वह सब आपके नाम ट्रांसफर कर देना चाहती हूँ। यदि जीवित रही तो आपसे भिक्षा मांगकर जीवन चला लूंगी।"

"तुम वह सब कहीं दान-दक्षिणा में क्यों नहीं दे जातीं?"

"अभी मेरा यह विचार नहीं है। उसका कारण यह है कि कल आपने एक आश्वासन दिया था और उसे पूर्ण करने के लिए मैं अभी भारत पहुँचने की आशा मन में बनाये हुए हूँ। फिर मैं यह धन उसको दिये जा रही हूँ जो इसका उचित प्रयोग कर सकेगा।"

सान फ्रांसिसको के ईस्ट कौंटिनैंटल बैंकिंग कारपोरेशन की शाखा में लुई का लगभग बीस मिलियन डालर जमा था। निरंजनदेव को वह हवाई जहाज से वहाँ ले गई। उसने पूर्ण सम्पत्ति उसके नाम लिखकर दे दी। कार्यवाही पूर्ण कर अगले दिन वे न्यूयार्क लौट आये।

वहाँ दिल्ली का केबल निरंजनदेव की प्रतीक्षा कर रहा था। उसमें उसको कहा गया था कि वह न्यूयार्क में ब्रिटिश एम्बैसी के इंडियन सैक्शन से सम्पर्क स्थापित करे।

निरंजनदेव वहाँ पहुँच गया। वहाँ से सेक्रेटरी आफ स्टेट फार इंडिया का प्रतिनिधि उससे मिला और पूर्ण विवरण जानने के बाद उससे उसने पूछा, "आप ठहरे हुए कहाँ हैं?"

"होटल डी पैरिस में।"

"वह तो बहुत महँगा होटल है।"

"मिस लुई जो मुझे निकालकर लाई है, स्वयं वहाँ ठहरी है। वह कुछ दिनों में यहाँ से बाहर जाने वाली है। तब तक मेरा प्रबन्ध होना चाहिए।"

"आपको तब तक न्यूयार्क में ही रहना है जब तक आपके विषय में हिन्दुस्तान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से सब वृतान्त और आज्ञा नहीं आ जाती। जब आपको इस होटल में रहने की सुविधा न रहे तब आप मुझे फोन पर सूचित कर दें। मैं प्रबन्ध कर दूँगा।"

अपने कमरे का नम्बर देकर निरंजन चला आया। तीन दिन तक और वह लुई के साथ उस होटल में रहा। तब एक बार फिर लुई उसे गले मिलकर विदा हो गई। जाते समय वह रो रही थी।

लुई ने उसको अमेरिका में रहने के लिए पर्याप्त धन दे दिया और कहा कि जब तक उसको सेना में उपिस्थत होने की आज्ञा नहीं हो जाती तब तक उसी होटल में रहे।

निरंजनदेव ने ब्रिटिश एम्बैसी से निरन्तर सम्पर्क बनाये रखा। कुछ ही दिनों में उसे भारत लौट आने की आज्ञा आ गई और उसके लिए आवश्यक कागजात और मार्ग-व्यय भी आ गया।

घूम-घुमाव के मार्ग से दिसम्बर 1943 में निरंजनदेव कोलम्बो जा पहुंचा। उसको न्यूयार्क से सानफ्राँसिसको, वहाँ से कोलम्बिया और वहाँ से समुद्री जहाज द्वारा सिडनी और फिर कोलम्बो तथा रेल द्वारा दिल्ली पहुँचा दिया गया।

कोलम्बो से तार द्वारा उसने अपने दिल्ली पहुँचने की सूचना भेज दी। अतः जब वह वहाँ पहुँचा तो पूर्ण परिवार रेलवे स्टेशन पर उसके स्वागत के लिए उपस्थित था।

उसके अपने आदमियों के अतिरिक्त महानारायण, मैनादेवी, श्यामा, माया और सतीश भी आये हुए थे। नारायणदास का देहान्त हो चुका था। रमा का भी देहान्त हो चुका था। सन्देह किया जाता था कि कमल ने उसकी हत्या कर दी है। शव का पोस्टमार्टम हुआ था परन्तु कोई प्रमाण न मिलने के कारण कमल मुक्त हो गया। कमल अपने पिता से पृथक् रहता था, इस कारण उसके आने की किसी को अपेक्षा भी नहीं थी।

निरंजनदेव को महानारायण अपनी कोठी पर ले गया। सब लोग जो लाहौर से आये हुए थे, वे भी उनके साथ ही ठहरे हुए थे।

:8:

निरंजनदेव माया के मुख से रमा की कहानी सुनने बैठा। सुनते हुए उसके आँसू टपक रहे थे।

माया बता रही थी, "आपको जबलपुर के लिए विदा करने के लिए मैं स्टेशन पर गई थी। उससे पहली रात लगभग दस बजे अपने कमरे में पढ़ाई करने के लिए गई थी। मुझे तो नींद आ रही थी। इस कारण मैं तो अपने कमरे में आते ही सो गई थी। प्रातः जब सभी लोग सो रहे थे, मैं उठकर स्नानादि से निवृत्त हो स्टेशन पर चली गई।"

"स्टेशन पर नलिनी भाभी ने मुझे परीक्षा के बाद लाहौर आने का निमन्त्रण दिया। किन्तु अभी तक मैं जा नहीं पाई। स्टेशन से घर लौटी तो रमा का कमरा खाली देख विस्मय से देखती रह गई।

"मुझे इस प्रकार परेशानी में खड़ा देख माताजी ने आकर बताया कि उसकी कमल के साथ सुलह हो गई है और वह अब उसके कक्ष में उसके साथ रहने के लिए चली गई है। मैं उसको बधाई देने और यह जानने कि यह सब एकाएक कैसे हो गया है, उधर को चल पड़ी। पिछली रात तो रमा कह रही थी कि हमको अब उस कोठी में रहना नहीं चाहिए। जब मैं गई तो कमल वहीं था, इसलिए मैं केवल बधाई देकर ही लौट आई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर भी मेरे मन में उत्सुकता बनी रही। मध्यान्ह के भोजन के बाद अपने कमरे में एकान्त में मेरी रमा से बात हुई। मैंने उससे पूछा कि वह प्रसन्न है, तो उसने स्वीकृति प्रकट की। मैंने जब उससे पूछा कि यह किस प्रकार हो गया। तो उसने बताया कि इससे सुगम बात और कभी हुई ही नहीं। उसने बताया कि वह कमरे में पहुँची तो भय के मारे द्वार भीतर से बन्द कर पढ़ने के लिए बैठ गई। किन्तु पढ़ने में उसका चित्त नहीं लगा। इससे उसने कपड़े बदले और सोने के लिए पलंग पर जा पहुँची। पलंग पर पहुँच उसने देखा कि वहाँ पर कोई इससे पूर्व सिर, मुख छिपाये पड़ा हुआ है। उसने रजाई उतारी तो देखा कि कमल लेटा हुआ है। वह जागा हुआ था और उसने रमा के सोने के लिए स्थान छोड़ा हुआ था।

"रमा कहती है कि कोई अदृश्य शक्ति उसको कमल की ओर ले गई। दो घंटे के बाद उन दोनों की चेतना हुई तो उन दोनों ने भावी जीवन के विषय में योजना बना ली।

"उस दिन प्रातःकाल उठ वे दोनों कमल के पिताजी से आशीर्वाद लेने के लिए पहुँचे, तो उनको भी आश्चर्य हुआ। किन्तु उन्होंने आशीर्वाद दे दिया। साथ ही उन्होंने बताया कि यदि कमल जीवन भर कोई काम न भी करना चाहे तो वे जीवन-भर के लिए पाँच सौ रूपया मासिक देते रहेंगे। कमल ने उनसे काम-धन्धे में सहायता की याचना की तो उन्होंने कहा कि जब उनका उस पर विश्वास बैठ जाएगा तो वे इस विषय पर विचार कर लेंगे।

"मैंने रमा को बधाई दी और बात समाप्त हो गई। मुझे तो उस समय भी सन्देह हुआ था। मैंने अपना सन्देह जब माताजी को बताया तो उन्होंने कहा कि अज्ञात भय से बचने के लिए तो मनुष्य को भगवान् भरोसे ही रहना चाहिए।

"एक वर्ष तक जीवन चलता रहा। रमा ने कालेज छोड़ दिया। उसने परीक्षा नहीं दी। मैंने बी० ए० परीक्षा दी और इतिहास में प्रथम आने के कारण वजीफा मिल गया। अब मैं एम० ए० फाइनल में पढ़ रहीं हूँ।

"पिछले मार्च मास से रमा आकर कहने लगी कि उसके गर्भ ठहर गया है। कमल कहता है कि वह गर्भपात करा दे किन्तु रमा ने स्वीकार नहीं किया।

"यही बात एक दिन रमा ने अपने श्वसुर से कही तो उन्होंने कमल को बुलाकर बहुत डाँटा और उसे पुलिस में देने की धमकी भी दी। अगले दिन प्रातःकाल हमको बताया गया कि रमा का हार्ट फेल हो गया है। भापाजी ने पुलिस को फोन किया और अपना सन्देह बता दिया। इस पर रमा के शव की परीक्षा की गई। तब तक के लिए कमल हवालात में रहा। डाक्टरों ने यही सम्मति दी कि मृत्यु हृदय-गति के रूक जाने से ही हुई है। कमल तो छूट गया, इस पर भी भापाजी का सन्देह बना ही रहा। उन्होंने कमल को कोठी से निकाल दिया है।

"जब पिताजी को रमा की मृत्यु की सूचना मिली तो उन्होंने कह दिया कि कमल ने उसकी हत्या की है। इसी बात की रट लगाते-लगाते वे उन्माद ग्रस्त हो गए। फिर तो वे मेरे भी वश में नहीं रहे। एक दिन बहुत प्रातःकाल वे कोठी से भाग गये और बहुत ढूँढने पर भी उनका पता नहीं चला। सायंकाल सूचना मिली कि दरयागंज में एक व्यक्ति फौजी ट्रक के नीचे दबकर मर गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमें सन्देह था और वहाँ देखने गए तो हमारा सन्देह ठीक निकला।"

सारी कहानी सुनकर निरंजनदेव को भी बहुत दुःख हुआ। कुछ देर मौन रहने के बाद निरंजनदेव ने पूछा, "माया! पढ़ाई कैसी चल रही है?"

"आपने कहा था कि जब तक विवाह नहीं हो जाता तब तक जो कुछ भी पढ़ने-सीखने का अवसर मिले चित्त लगाकर सीखना चाहिए, इस कारण मैं चित्त को पढ़ाई की ओर लगा रही हूँ।"

"तो विवाह का अवसर अभी नहीं मिला?"

"नहीं।"

श्यामा ने कहा, "अब तो महानारायणजी ही हम सबके संरक्षक हैं और वे इसके लिए यत्न कर रहे हैं। यह अभी मानती नहीं।"

"भैया! मैं सत्य कहती हूँ कि जहाँ के लिए वे कह रहे हैं, मेरा वहाँ विवाह के लिए चित्त नहीं करता।"

"तो कोई और लड़का ढूँढ लिया जाएगा। मेरा एक साथी था। इम्फाल में वह आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित हो गया था। मेरा विचार उसके लिए था। इस विषय में मैंने उससे बात की थी। उसका विचार युद्ध के बाद विवाह करने का था।"

"देखा जाएगा भापा! अभी तो परीक्षा देनी है।"

नलिनी से भी एकान्त में बात करने का अवसर मिला। उसने बताया, "नीता के जन्म के समय मैं बीमार हो गई थी। तब आपरेशन करने की आवश्यकता पड़ गई थी। डाक्टरों का कथन है कि अब मेरे सन्तान नहीं हो सकती।"

"तो?"

"तो आप बताइए। यदि आपको और सन्तान चाहिए तो माया से बातचीत हो सकती है। वह तो सब-कुछ छोड़-छाड़कर आपके घर में रहने के लिए चली आएगी।"

"परन्तु मैं तो अभी घर नहीं आ रहा। कल मैं अपने आफिस में रिपोर्ट करूँगा और सम्भव है मुझे पुनः किसी 'फ्रण्ट' पर भेज दिया जाए।"

"तो युद्ध से लौटने पर सही।"

"नहीं नलिनी! उसमें बहिन की भावना बन जाने के बाद अब उससे विवाह नहीं हो सकता। उसको झूठी आशा मत देना।"

"आशा का तो प्रश्न ही नहीं। वह तो जानती है कि आपके साथ विवाह असम्भव है। इस पर भी वह आपके प्रेम में जीवनभर निकालने का प्रयत्न कर रही है। उसको विश्वास है कि वह अपनी श्रेणी में प्रथम आएगी और कहीं-न-कहीं कॉलेज में प्रोफेसर बन जाएगी। तब जीवन का कार्यक्रम बन जाएगा। कठिनाई यह है कि महानारायण जी चाहते थे कि उनके घर में एक पोता हो जाए। कमल को वे अपना नहीं मानते। रमा उनको पोता देने वाली थी परन्तु वह चल बसी। अब वे माया से आशा लगाए हुए हैं।"

"कभी हमारे लड़के को भी गोद लेने का विचार करते हैं। परन्तु यहाँ भी तो एक ही है।"

"देखो नलिनी! मैं यत्न करूँगा कि माया का किसी अच्छे लड़के से विवाह हो जाए और वह महानारायण जी की आशाएँ पूर्ण कर देगी।"

जब नलिनी ने लुई की कथा सुनी तो वह हँस पड़ी। उसने कहा, "तो एक और लड़की का जीवन बरबाद करने जा रहे हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसमें मेरा क्या दोष है?"

"मैं तो समझती हूँ कि जिस प्रकार भीम ने हिडिम्बा से और अर्जुन से अलूपी और चित्रांगदा से विवाह किये थे वैसे ही आप भी कर लेते तो उस बेचारी को जीवन निकालने के लिए एक आश्रय तो दे आते।"

"परन्तु न तो वह हिडिम्बा है और न अलूपी ही। वह तो स्थायी सम्बन्ध चाहती हैं।"

"उसके जीवन में भला कुछ स्थायी है भी? जासूस का कार्य और वह भी युद्ध-काल में। इसमें जीवन का कुछ भी भरोसा किया जा सकता है क्या? आप बहुत निर्दयी हैं।"

"मैं तो समझ नहीं पाया कि तुम लोग मुझमें क्या देख रही हो?"

"मैंने तो कुछ नहीं देखा। मैं तो उस कीले से बँध गई हूँ, जिसके साथ माता-पिता और उनके पड़ोसी ने बाँध दिया था। यह तो वे जानें कि आप में क्या गुड़ लगा हुआ है।"

"यह तुम माया से और फिर कभी यदि लुई आ गई तो उससे पूछ लेना। मुझे तो स्वयं में कुछ भी विशेषता प्रतीत नहीं होती।"

"एक विशेषता तो है। आप एक वर्ष तक उसके बराबर में पलंग पर लेटे रहें। वह भी ऐसे जैसे दो लकड़ी के लट्ठे पड़े हों। यह तो विशेषता ही है।"

"परन्तु यह गुण तो लुई में भी होने के कारण मुझमें विशेषता कहाँ रही?"

"हाँ, वह रमा नहीं थी। यदि वैसी होती तो या तो आप पर विजय पा लेती अथवा आप कमल की भाँति उसका गला घोंटकर उससे छुटकारा पा जाते।"

"परन्तु मैंने तो विना गला घोंटे ही छुटकारा पा लिया था।"

"फिर भी उस अवस्था और इस अवस्था में भारी अन्तर है।"

"नलिनी! कुछ अन्तर नहीं। दोनों समय मन की अवस्था एक समान ही थी। मैं तो इसे मन की दृढ़ता की बात मानता हूँ। स्वयं में और लुई में भी। रमा में वह दृढ़ता नहीं थी।"

जिस दिन निरंजन ने सैनिक कार्यालय में रिपोर्ट की, उसी दिन उसको दिल्ली के कार्यालय में काम मिल गया। उसको मिलिटरी सप्लाई के कार्यालय में सुपरिण्टेण्डेंट बना दिया गया।

निरंजनदेव ने अपने आजाद हिन्द फौज द्वारा वन्दी बनाए जाने और उसके उस सेना में सम्मिलित न होने से अधिकारियों के मन में उसके प्रति भारी प्रतिष्ठा उत्पन्न कर दी थी। उसके रंगून से एक औरत की सहायता से भाग कर निकलने की कथा ने तो कमांडर इन चीफ के मन में भी उसके मुख से पूर्ण कहानी सुनने की लालसा उत्पन्न कर दी। उस औरत का नाम उसके कारनामों के विषय में पता किया गया तो बहुत ही मार्के के रहस्य प्रकट करने की कहानियों का पता चला।

कमांडर इन चीफ को अपनी पूर्ण कथा बताने के पश्चात् निरंजनदेव ने कहा, "मेरे मन में उसके विषय में जानने की इच्छा बनी रहती है।"

"मैंने अमेरिका के आफिस को लिखा है परन्तु उससे मिलने का सौभाग्य तो युद्ध वन्द होने के बाद ही प्राप्त हो सकता है। यदि कुछ सूचना मिली तो आपको बता दी जाएगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब निरंजनदेव का काम मुख्य रूप में दिल्ली में ही था। इस पर भी महीने में एक आध बार उसको दिल्ली से बाहर जाना पड़ता था। उसने अपने लिए एक मकान लेने का विचार किया तो महानारायण ने आग्रह किया कि वह उसकी कोठी में ही एक भाग अपने रहने के लिए ले ले। निरंजनदेव ने पूछा, "आप किराया लेंगे?"

"हाँ, बोलो क्या दोगे?"

"यह तो आप बताइए कि कितने कमरों का किराया कितना लेंगे?"

"कमरे तो तुम अपनी आवश्यकतानुसार ले लो और किराया वह दे देना, जो तुम्हें इसके लिए सरकार देती है।"

"सरकार तो पैंसठ रूपया मासिक देगी। परन्तु ऐसी आलीशान कोठी के दो कमरों का किराया तो पैंसठ से कहीं अधिक होगा।"

"नहीं देव! पैंसठ ही होगा। मैं समझता हूँ कि कमल वाले दो कमरे तुम ले लो। पैंसठ रूपया दे देना।"

निरंजनदेव मान गया। परन्तु जब वह किराया देने के समय आया तो महानारायण ने कहा, "देखो देव! यह किराया तुम मेरे एक बैंक में जमा करते जाओ। जब कुछ जमा हो जाएगा तो मैं निकलवा लूंगा।"

"आप जिस बैंक में कहें जमा कर दिया करूँगा।"

"इसी कोठी में एक बैंक है नलिनी देवी। समझे? उसके पास जमा करा दो।"

"यह तो आप ही जमा करा दीजिए। देख लीजिए। हाँ यहाँ जमा कराने में आपको दूर जाने का कष्ट तो नहीं करना पड़ेगा, परन्तु एक औरत का बैंक है?"

"क्यों उस बैंक पर विश्वास नहीं है तुम्हारा? क्या इसके फेल हो जाने की सम्भावना है?"

"तो क्या इससे पूर्व आपका कोई बैंक फेल हो चुका है?"

"हाँ, तीन बैंक फेल हो चुके हैं। एक राधा नाम का बैंक था शिमला में। उसमें लेन-देन बन्द कर दिया।"

"दूसरा बैंक यहां था कमल नाम का। वह तो सब-कुछ खा पीकर दिवाला निकाल चुका है।"

"एक तीसरा बैंक था रमा का। भूचाल आने पर वह बैंक ही रसातल को चला गया है।"

"यों तो एक और बैंक भी है जिसमें मेरा धन जमा होता है उसका नाम है माया। अभी तक उसके नाम कभी चैक काटा नहीं। अभी यह देखना है कि उसके नाम का चैक भुगतान कर सकेगा कि नहीं।"

"इसी कारण एक और बैंक में खाता खोलना चाहता हूँ। यह है नलिनी नाम का बैंक।"

"ऐसा करिए। आप जाँच कर लीजिए। यदि इसकी 'पोजीशन साउण्ड' हो तो इसमें खाता खोलिए अन्यथा कोई और देख लीजिए।"

"अच्छी बात है। बैंक के मालिक से बात करके बताऊँगा।"

रात के भोजन के समय बात हुई। महानारायण ने कहा, "नलिनी बेटी! हमारा एक काम करोगी?"

इससे पूर्व निरंजनदेव नलिनी को महानारायण की बात बता चुका था। नलिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने कहा था कि वे हमसे किराया लेना नहीं चाहते, इस कारण इस प्रकार की बातें कर रहे हैं।

अतः महानारायण ने जब उससे बात पूछी तो नलिनी उत्तर के लिए तैयार थी। उसने कह दिया, "एक लड़की अपने माता-पिता की जितनी भी सेवा कर सकती है, वह करने के लिए मैं तैयार हूँ।"

"तो देखो, मेरे नाम का एक खाता खोल लो। निरंजन उसमें मेरे नाम से कुछ रुपये जमा करवाता जाएगा। तुम वह जमा कर लिया करना।"

"वे रुपये कब, कहाँ और किसको देने होंगे?"

"अभी वे चालू खाते में जमा रहेंगे। जब मैं उसका चैक काट कर भेजूँ तो उस समय उसको दे देना।"

"परन्तु भापा! चालू खाते पर ब्याज नहीं मिलता।"

"यह तो मुझे मालूम है। विपरीत इसके 'बैंकिंग चार्जेज' काट लिया करना।"

"कितने?"

"यह तो तुम अपने बैंक के नियमों के अनुसार कर लेना।"

"बात तो भापाजी! आपकी ठीक है। परन्तु कहीं बैक का दिवाला निकल गया तो?"

"कैसे निकल जाएगा दिवाला?"

"जैसे रमा का निकल गया है।"

"नहीं, वैसे नहीं होगा। इसके दो कारण है। एक तो रमा की आधार शिला खोखली थी। दूसरे उसने अपना उत्तराधिकारी पैदा करने से पहले ही दिवाला निकाल दिया। तुम्हारी अवस्था में दोनों ही दोष नहीं है। तुम्हारी आधार शिला है निरंजन। वह बहुत मजबूत है। साथ ही तुम्हारे उत्तराधिकारी हैं। वे अपने पूर्वजों के चैक औनर करेंगे।"

इस रूपक में बात आगे नहीं चल सकी। नलिनी ने बात स्पष्ट कर दी। उसने कहा, "भापा! यह स्नेह का प्रसाद आप इस प्रकार बाँट रहे हैं। परन्तु मैं तो पहले ही आपके स्नेह के भार से दबी हुई हूँ।"

'स्नेह का भार नहीं होता बेटी! यह आश्रय होता है। जीवन का आश्रय। मेरा कहा मानो, तुम निरंजन से यह पैंसठ रुपये ले लिया करो और अपने लड़के के लिए कुछ ले लिया करो। समझ गईं?

⇩⇩⇩

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

:1:

महानारायण का पूर्ण जीवन भग्नाशाओं की एक श्रृंखला मात्र था। वह एक मध्यम श्रेणी के परिवार में उत्पन्न होने पर भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर सका था। बी० ए० पास कर रूड़की से सिविल इन्जीनियरी में प्रथम रहने पर भारत सरकार के पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेण्ट में नौकर हुआ तो उसका प्रथम संघर्ष पड़ा भारत सरकार में बंगालियों से।

नौकरी तो उसको मिली अपने परीक्षाफल के आधार पर, परन्तु उसकी नियुक्ति कलकत्ता तथा इसी प्रकार के अन्य आय वाले स्थानों पर नहीं हो सकी। वे क्षेत्र बंगाली ऑफीसर्स बंगालियों के लिए सुरक्षित रखे हुए थे। अतः 1910 में जब भारत की राजधानी कलकत्ता थी, उसकी नियुक्ति हुई शिमला में और वह भी सरकारी कर्मचारियों के क्वार्टरों की देखभाल के लिए।

मस्जिद के चूहे की भाँति वह यहाँ वेतन-मात्र और ऊपर से नगण्य आय पर रहने लगा। 1911 में परिस्थिति बदली। राजधानी कलकत्ता से उठाकर दिल्ली लाई गई और राजधानी का निर्माण बंगाली इन्जीनियरों के हाथ में ही दिया गया.फिर भी महानारायण शिमले में ही टंगा रहा।

इस समय महानारायण का विवाह हुआ और उसकी पत्नी साधारण रूपरेखा की आई। एक तो साधारण आकृति जो कुरूपता के समीप ही समझी जाती थी और दूसरे उसने आते ही एक वर्ष के अन्दर एक सन्तान उत्पन्न कर दी।

जीवन-सुख के अभिलाषी महानारायण के जीवन में स्त्री-सुख इस प्रकार आया जैसे मेघाच्छादित गगन में विद्युत चमक जाती है। विवाह से पूर्व उसके ओवरसियर मालाराम की लड़की राधा उसकी स्त्री से मिलने आती रहती थी। मालाराम कण्डघाट के समीप के किसी गाँव का रहने वाला था और उसकी लड़की जहाँ अति सुन्दर थी, वहाँ चंचलता और चपलता की मूर्ति थी। मैनादेवी सरल चित्त स्त्री थी और उसको राधा के अपने पति के सम्पर्क में आने में कुछ भी आपत्तिजनक प्रतीत नहीं हुआ।

जब गर्भावस्था के कष्ट आरम्भ हुए तो मैनादेवी को वापस अपने गाँव में जाना पड़ा और राधा महानारायण की पत्नी बन गई। कुछ ही दिनों में महानारायण को ज्ञान हुआ कि राधा ने उसको एक घिनौने रोग से दूषित कर दिया है। उसको उपदंश के लक्षण दिखाई देने लगे।

इस बात का ज्ञान होते ही उसने राधा की गर्दन पकड़ ली। उसने पूछा, "जब तुम मेरे पास आई थीं तब तुम कुमारी थीं क्या?"

"मैंने कभी आपसे ऐसा कहा था?"

"तुम बीमार थीं?"

"जी।"

"तुमने बताया क्यों नहीं?"

"आपने मुझसे पूछा नहीं। पहाड़ में जहाँ राजा-रईस बेलगाम घूमते रहते हैं, आपको कुछ ऐसी आशा नहीं करनी चाहिए थी क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुमने तो मेरी जिन्दगी बरबाद कर दी है।"

"तभी तो दोनों इकट्ठे रह सकेंगे। अपना और मेरा दोनों का इलाज करवा लीजिए।"

"परन्तु सदा मेरे पास रहोगी?"

"रखोगे तो रहूँगी। इलाज करा देंगे तो जीवन भर अहसान मानूँगी।"

अपने भाग्य पर तो महानारायण को रोष था किन्तु राधा पर उसे दया आ गई। उसने उसकी गर्दन छोड़ दी और दोनों हकीम साहब का इलाज करने लगे। जुलाब लिया गया और चालीस दिन तक दवाई खाई गई। साथ ही घी और काली मिर्च खाते रहे।

प्रत्यक्ष रूप में दोनों ठीक हो गए। परन्तु जब मैनादेवी छः मास का बच्चा लेकर आई तो आते ही वह भी बीमारी में फँस गई। यह तो घटनावश ही था कि बच्चा होने के एक मास के भीतर मैनादेवी का दूध सूख गया था और बच्चा रोग से बच गया। ज्योंहि मैनादेवी के रोग के लक्षण प्रगट हुए महानारायण उसी हकीम की दवाई खिलाने लगा।

अस्थाई लाभ उसको भी हो गया। परन्तु एक मित्र के कहने पर महानारायण ने अपने रक्त की परीक्षा करवाई तो विदित हुआ कि रोग के लक्षण विद्यमान है। उसने फिर राधा और मैना का भी रक्त परीक्षण करवाया। सबमें रोग के कीटाणु विद्यमान थे।

तीनों की डाक्टरी चिकित्सा होने लगी। नये प्रकार के इंजेक्शन दिए गए। इस नई चिकित्सा पर मैना को पता चल गया कि वह रोग उसके पति तथा उसको मिलने के लिए आने वाली राधा को भी है।

महानारायण के राधा से सम्बन्ध का ज्ञान मैना को हुआ तो वह रूठ बैठी। घर में भारी झगड़ा हुआ। इस पर महानारायण ने राधा और मैना को एक दर्पण के सम्मुख खड़ा कर मैना से कहा, "झगड़ा करना है तो परमात्मा से करो, जिसने तुमको इस लड़की से इतना कुरूप बनाया है।"

मैनादेवी ने देखा तो अपने भाग्य को कोसती चुप हो गई।

महानारायण ने राधा और मैना में सुलह करा दी और अविवाहित राधा को विवाहित पत्नी की भाँति रखने लगा। दोनों एक ही मकान में रहती हुई एक बच्चे का लालन-पालन करने लगीं।

कमल जब पाँच वर्ष का हुआ और दो-दो पत्नियाँ होने पर भी और सन्तान नहीं हुई तो इस विषय में चिन्ता लगने लगी। महानारायण के शुक्र की परीक्षा की गई तो पता चला कि उसमें अब सन्तान उत्पन्न करने की योग्यता नहीं रहीं। उसके सब शुक्र-कीटाणु मर चुके हैं। डाक्टर का यह अभिमत था कि उपदंश रोग के कारण ही ऐसा हुआ है।

महानारायण के लिए जीवन की यह तीसरी महान निराशा थी। उसने अपनी पत्नियों को अपनी अवस्था बता दी और उनको कह दिया कि वे सन्तान चाहती हैं तो किसी अन्य से प्राप्त कर सकती हैं। राधा तो इससे मुस्कराकर बोली, "मुझको पति की आवश्यकता थी सो मिल गया है। सन्तान के लिए न कभी लालसा थी और न है।"

मैनादेवी ने तो अपने पति को डाँटते हुए कहा, "कितनी नीच भावना है आपके मन में! भला इस छोटी-सी बात के लिए कहीं पत्नियाँ बेची जा सकती हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु मैना! महाराज पाँडु ने अपनी महारानी कुन्ती को सन्तान लेने के लिए स्वीकृति दे दी थी।"

"दी होगी। मैं कौरवों और पांडवों के परिवार से नहीं हूँ। वे भले लोग तो अपनी पत्नी को जुए में हार गए थे। क्या यह भी आप पसन्द करते हैं?"

"देख लो, हिन्दू लोग तो उनको देवता और कुन्ती को देवी के समान मानते हैं।"

"जी नहीं, यह नहीं होगा।"

"परन्तु इससे भी बड़ी बात तो कमल के दस वर्ष की आयु में चोरी करते पकड़े जाने पर हुई। वह जौहरी की दूकान से अंगूठी चुराता हुआ पकड़ा गया। जौहरी ने उसको पुलिस के हवाले कर दिया। मैना ने तो कह दिया था कि उसको दण्ड भोगने दीजिए, परन्तु राधा ने महानारायण को विवश किया कि वह जौहरी से मिलकर और पुलिस को ले-देकर समझौता कर लें और लड़के को छुड़ा लाएँ।"

इसके बाद राधा का स्नेह कमल पर बढ़ गया और वही उसकी देखभाल करने लगी। ज्यों-त्यों कर कमल ने बी० ए० थर्ड डिवीजन में पास किया और ठेकेदारी का काम करने के लिए हठ करने लगा। राधा इस योजना में उसकी सहायक हो गईं।

महानारायण ने कमल पर अंकुश रखने के लिए एक प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी बना ली। कमल को उसका मैनेजिंग डायरेक्टर बना दिल्ली में ठेकेदारी के काम पर लगा दिया। उसका यह आशय था कि तीन वर्ष में वह रिटायर होगा तो स्वयं कम्पनी के काम की देखभाल करने लगेगा।

कमल के हाथ में जब रूपया आया तो उसको पथभ्रष्ट करने वाले साथी मिल गए। एक बार मैनादेवी दिल्ली आईं और कमल के उन्होंने इस प्रकार के लक्षण देखे तो वे घबरा उठीं। उन्होंने अपने पति को सुझाव दिया कि कमल का विवाह कर दिया जाए। इस पर नारायणदास की लड़की से विवाह का प्रबन्ध हो गया। विवाह होने के बाद कमल के साथ महानारायण का जो वार्तालाप हुआ वह बहुत ही आघात पहुँचाने वाला सिद्ध हुआ। महानारायण ने कमल को बन्दी कराकर कम्पनी तोड़ दी।

यह जीवन की एक और भारी निराशा थी। इस पर चित्त बहलाने के लिए महानारायण ने नारायणदास के परिवार की सहायता करनी आरम्भ कर दी।

कमल और रमा में सुलह हुई तो पिता ने समझा कि जीवन ने करवट बदली है। परन्तु घर में पोता होने से पहले ही बहू का देहान्त हो गया।

रमा की मृत्यु के बाद तो वह स्वयं को निस्सहाय अनुभव करने लगा।

पिता ने जब पुत्र को कैद कराने का यत्न किया तो राधा ने तभी से उससे तटस्थता स्वीकार कर ली थी। उसके कैद से छूटने पर भी जब महानारायण ने कमल को अपना उत्तराधिकारी नहीं माना तो राधा ने महानारायण से तिनका तोड़ दिया। जब पिता के यत्न करने पर भी कमल किसी प्रकार से भी अपराधी सिद्ध नहीं किया जा सका तो राधा और कमल महानारायण से सर्वथा पृथक् हो गए। वहाँ कमल अमेरिकन सैनिक कार्यालय में छोटी-मोटी वस्तुएँ सप्लाई करने का कार्य करने लगा। यह तो महानारायण की निराशाओं की श्रृंखला में मुख्य कड़ी बन गया।

इस समय निरंजनदेव, जिसके विषय में यह पता चला था कि वह जापानियों का कैदी है, एकाएक लौट आया। उसकी कैद से छूटकर आने की कहानी ने महानारायण के मन पर बहुत प्रभाव किया। इस कारण उसका ध्यान उसके लड़के की ओर चला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। इसके लिए पहले उसने निरंजनदेव को अपनी कोठी में ही स्थान दिया और वह भी बिना किराया लिए ही।

निरंजनदेव को सरकारी काम से इधर-उधर आना-जाना पड़ता था। नलिनी अपने बच्चे के साथ श्यामा और माया के सहारे रहती थी।

युद्ध अन्तिम परिणामों पर पहुँचने लगा। इटली में अंग्रेजी सेनाएँ पहुँच चुकी थीं। जनरल मांटगुमरी ने रोम में डेरा डाल दिया था। तेहरान की कांफ्रेंस ब्रिटेन, अमेरिका और रूस के भीतर हो चुकी थी और उस सम्मेलन में रूजवेल्ट अपने सलाहकार हॉपकिन्स की सम्मति से चर्चिल की योजना रद्द कर चुका था। चर्चिल टर्की को अपनी ओर मिलाकर बलकानज में एक मोर्चा लगाना चाहता था। वास्तव में यह मोर्चा बर्लिन में बढ़ने वाली रूसी शक्ति को रोकने के लिए था। रूजवेल्ट या तो यह समझा ही नहीं और यदि समझा तो गलत समझा और स्टालिन के साथ सहर्ष सहयोग कर उसने इस योजना का विरोध किया।

आजाद हिन्द फौज को धकेलकर बर्मा में फेंक दिया गया। इस समय पुनः निरंजनदेव को सबल सेना के साथ मिश्र भेज दिया गया। निरंजनदेव ने घर आकर बताया, मुझे मरहठा राइफल के साथ काहिरा भेजा जा रहा है।

कुछ क्षण के लिए इस समाचार से नलिनी के मुख पर चिन्ता की झलक दिखाई दी। निरंजनदेव ने देखा और बोला, "क्यों, क्या विचार कर रही हो?"

"कुछ नहीं। भगवान जाने फिर कब तक वियोग सहन करना पड़ेगा।"

"जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ युद्ध नहीं हो रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि योग्य सैनिकों को सब स्थानों से किसी एक ऐसे स्थान पर एकत्रित किया जा रहा है जहाँ-जहाँ से जर्मनी पर आक्रमण किया जाएगा और मेरे जैसे युद्ध से अपरिचित सैनिकों को ऐसे स्थानों पर भेजा जा रहा है, जहाँ युद्ध की सम्भावना नहीं है।"

इस सम्भावना से नलिनी को सन्तोष हुआ। परन्तु उसने प्रत्यक्ष रूप में कहा, "मुझे एक क्षण के लिए भी आपके साथ किसी अनिष्ट की सम्भावना प्रतीत नहीं हुई। मुझको विश्वास है कि मुझ पर परमात्मा की कृपा है और मेरा सौभाग्य बना रहेगा।"

"तो फिर तुम्हारा मुख विवर्ण क्यों हुआ?"

"मैं माया के विषय में विचार कर रही हूँ।"

"क्यों कोई विशेष बात है क्या उसके विषय में?"

"विशेष तो नहीं। उसने एम० ए० की परीक्षा दे दी है। पास तो वह हो जाएगी पर उसके भावी जीवन के विषय के विषय में कुछ निश्चय नही हुआ।"

"कुछ कहा है उसने?"

"भापाजी उसके विवाह के सम्बन्ध में एक लड़के के विषय में उसकी माँ से बात कर रहे थे। उन्होंने मुझसे पूछा था। मैं चाहती हूँ कि जिस समय माया से इस विषय में पूछा जाय उस समय आप उपस्थित होते तो अच्छा होता।"

"मुझे तो दो-चार दिन में ही यहाँ से पूना, वहाँ से बम्बई और फिर काहिरा भेंज दिया जाएगा।"

"तो आप जाने से पूर्व इस विषय में माया तथा भापाजी से बातें करके जाइये। मैंने श्यामा चाची से कहा है कि आपके द्वारा माया से स्वीकृति ली जाय।"

निरंजनदेव ने उसी रात भोजन के समय अपने विदेश में जाने की बात बताई तो माया ने पूछ लिया, "आप कब तक लौटेंगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विचार है कि योरूप का युद्ध समाप्त होने में एक वर्ष और लगेगा। और इस बार युद्ध समाप्त होने से पहले नहीं लौट सकूंगा।"

"तब तक मैं अपने डाक्टरेट में लगी रहूँगी।"

"डाक्टरेट करने में सुविधा तो तभी होगी जब एम० ए० में बहुत अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण हो जाओ।"

"यह तो होगा ही। आपको विश्वास रखना चाहिए कि मैं प्रथम श्रेणी में तो अवश्य ही उत्तीर्ण होऊँगी।"

"मैं मन की इस प्रकार की भावना की सराहना करता हूँ। आत्मविश्वास ही संसार में सफल जीवन का द्वार है।"

"सफल जीवन?"

यह प्रश्नसूचक वाक्य कहकर वह हँस पड़ी और फिर गर्दन नीची कर भोजन करती रही।

महानारायण ने बातों का सूत्र आगे चलाते हुए कहा, "मैं चाहता था कि माया के विवाह के अवसर पर निरंजनदेव यहीं होता।"

"यह तो अब कठिन प्रतीत होता है।"

"क्यों? माया ने पुनः सिर उठाकर पूछा।"

"भापाजी ने यदि विवाह का प्रबन्ध जल्दी कर दिया तो मैं सेना से छुट्टी नहीं पा सकूँगा।"

"मैं जानती हूँ कि आपकी अनुपस्थिति में मेरा विवाह नहीं हो सकता।"

"तब तो सब किया कराया रखा रह जाएगा।"

"क्यों रखा रह जाएगा?"

"मैंने एक लड़के को देखकर पसन्द किया है। मैं समझता हूँ कि माया भी उसको पसन्द कर लेगी। न पसन्द करने का कोई कारण नहीं। अगले सप्ताह वह दिल्ली आने वाला है और उसके आते ही मैं विवाह कर दूँगा।"

"और मेरी डाक्टरेट की पढ़ाई का क्या होगा?"

"वह तो तुम विवाह के बाद भी कर सकती हो।"

"जी नहीं। मेरा विचार है कि अभी दो वर्ष तक आपको इस लड़की का बोझा और वहन करना पड़ेगा।"

"देखो भापा!" निरंजन ने कहा, "मेरा सदा यह सिद्धान्त रहा है कि शिक्षा, विवाह और जन्म-मरण के विषय में ईश्वरेच्छा का विरोध न किया जाय। उसकी इच्छा का विरोध अकल्याणकारी भी हो सकता है।"

"परन्तु यह कैसे पता चले कि यह विवाह ईश्वर की इच्छा से हो रहा है?"

"यह अनायास ही सम्पन्न हो रहा है।" महानारायण ने बताया।

"माया ने बी० ए० की डिग्री ली थी तो स्वरूपकृष्ण ने उस समारोह में एम० ए० की डिग्री प्राप्त की थी।"

"यह तो मैं जानता नहीं कि कैसे, परन्तु स्वरूपकृष्ण का कहना है कि उसने माया को उसी दिन पहली बार देखा था तभी से वह उससे विवाह की इच्छा करने लगा था। दो मास हुए वह यहाँ आया था और मुझसे मिल कर गया है। मैंने कहा था कि माया परीक्षा की तैयारी में व्यस्त है। परीक्षा के बाद वह आ जाए। यदि माया ने स्वीकार किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उसका विवाह तुरन्त हो जाएगा।"

माया गम्भीर विचारमग्न चम्मच से दाल खाती रही। निरंजनदेव ने पूछा, "वह इस समय कहाँ है और क्या करता है?"

"दिल्ली के एक रईस का सुपुत्र है और बम्बई यूनिवर्सिटी में अध्यापन कार्य कर रहा है।"

"काम तो अच्छा है; और यदि लड़का भी अच्छा हुआ तो मेरा आशीर्वाद निश्चय मानिये।"

एकाएक माया ने सिर उठाकर कहा, भापा! मैं विवाह तो करूँगी परन्तु मैंने भी किसी को वरा हुआ है। मैं उस वर की स्वीकृति की प्रतीक्षा कर रही हूँ। इस कारण इन नये महाशय को यहाँ बुलाकर कष्ट नहीं देना चाहिए।

"कौन है वह?"

"अभी बताने की स्वीकृति नहीं है।"

"तो स्वीकृति लेकर उनको हमें दिखा दो। फिर हम तुम्हारी उस दिशा में सहायता कर सकते हैं।"

"मैंने एक बार उनसे पूछा था। वे कहने लगे कि मैं अभी पढ़ती जाऊँ इससे जितनी योग्य से योग्य हो जाऊँ ठीक है। इसक कारण मैं एम० ए० और फिर डाक्टरेट करने का विचार रखती हूँ।"

"पर वह है कौन? क्या काम करता है? तनिक हम भी तो उसे देख लें।"

"मैं उनसे पूछूँगी। यदि उन्होंने स्वीकार किया तो मैं माताजी को बता दूँगी।"

"कब तक बता दोगी? यदि निरंजनदेव के जाने से पूर्व हो जाए तो वह भी उसे देखकर पसन्द कर जाएगा।"

"एक-आध दिन में मिलकर बात करूँगी। इस पर भी मुझे विश्वास है कि आप सब उसको पसन्द करेंगे।"

बात समाप्त हो गई।

: 2 :

निरंजनदेव आशा करता था कि जाने से पूर्व माया उससे चर्चा करने आएगी। वह आई और उसी रात को आई। सोने से पहले वह नलिनी से कह गई थी रात को वह ऊषा के पिता से एक बात करना चाहती है इसलिए दरवाजा बन्द न करें।

जब सब सो गये तो माया उस कमरे में जा पहुंची। कुर्सी पर बैठते ही उसने कहा, "बताइये, आप मुझसे विवाह करेंगे?"

"मुझे तुम्हारे साथ विवाह करना चाहिए क्या? इस विषय पर कभी तुम्हारे साथ मेरी बातचीत हुई है?"

"बात न हुई हो, परन्तु यह तो आप जानते ही हैं कि मैं आपसे प्रेम करती हूँ।"

"प्रेम के अर्थ विवाह करना होता है, यह किस शब्दकोष में लिखा है? अविवाहितों में भी परस्पर प्रेम हो सकता है।"

"सुना तो यही था।"

"तो किसी ने तुम्हें गलत बताया है। प्रेम काम की भावना है। इसका अर्थ है कि मन किसी को इतना अधिक पसन्द करता है, अथवा मान-प्रतिष्ठा और आदर की दृष्टि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से देखता है कि उसको अपना समझने लगता है और जैसे अपने एक अंग के लिए दूसरा अंग प्रत्येक प्रकार का त्याग करने के लिए उद्यत रहता है वैसे ही प्रेमी अपने प्रेमी पात्र के लिए करता है।"

"और माया! विवाह तो एक प्रकार से शारीरिक सम्बन्ध है। यह तो शरीर की ओर से समाज की कुछ आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए किया जाता है।"

"आप खूब हैं। हर बात के लिए आपके पास युक्ति तैयार रहती है। मैं पूछती हूँ कि विवाह में परस्पर प्रेम न हो और जैसा आप कहते हैं कि एक-दूसरे के लिए त्याग और बलिदान की भावना न हो तो क्या मजा रहेगा उसमें?"

"देखो माया! तुम दो बातों को परस्पर मिलाकर अपने मस्तिष्क में भ्रम उत्पन्न कर रही हो। मैं इस प्रकार समझाता हूँ। सेना के दो सिपाही एक आवश्यक स्थान की रक्षा के लिए नियुक्त हो जाते है। वे दोनों उस स्थान की रक्षा करते हुए एक-दूसरे की रक्षा करना, सहायता करना और परस्पर सहयोग देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। यहाँ तक कि अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए वे अपनी जान तक दे देते हैं, इसको तुम प्रेम कहोगी अथवा कर्त्तव्य-पालन?"

"कर्त्तव्य-पालन करना।"

"यही बात समाज में विवाहित पति-पत्नी की भी है। उन दोनों के प्रति एक कार्य निश्चित कर दिया जाता है। वे परस्पर सहायता, सहयोग और अपना कार्य सम्पन्न करते हुए कर्त्तव्य का पालन करते हैं। प्रेम तो उससे भिन्न वस्तु है।

"देखो, जब मुझे पिताजी का तार मिला था तो मुझे यह विदित नहीं था कि मेरा विवाह होने वाला है। और इसका तो मुझे स्वप्न में भी विचार नहीं आ सकता था कि नलिनी से मेरा विवाह होगा।

"नलिनी को मैंने देखा हुआ था। यह हमारे मौहल्ले में ही रहती थी। मेरे मन में कभी यह भी विचार नहीं आया था कि यह सुन्दर लड़की विवाह करने के लिए ही है।

"मैं लाहौर पहुँचा तो पिजाजी ने बताया कि उन्होंने इसके साथ मेरा विवाह करने का निश्चय किया है। मुझे पिताजी का कथन कुछ इस प्रकार का प्रतीत हुआ जैसा कि आज मुझे अपने आफिसर्स का आदेश आया है कि मुझे पूना के मराठा रेजिमेण्ट नं० 11 में उपस्थित होकर काहिरा जाना है। दो-तीन दिन तक कार्यक्रम का विस्तृत विवरण मेरे पास आ जाएगा।

"जैसे आज मैं सेना के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिए तैयार हो गया हूँ, वैसे ही उस समय अपने परिवार का कार्य सम्पन्न के लिए तैयार हो गया था।

"मेरा यह विवाह अपने शरीर के प्रति, परिवार के प्रति और अपने समाज के प्रति कर्त्तव्य पालन करने के लिए था। नलिनी भी यही समझती थी। हम दोनों अपना कर्त्तव्य-पालन कर रहे थे। उसके बाद भी हमने यथाशक्ति सन्तान उत्पन्न की और अब उसका पालन-पोषण कर रहे हैं और उनकी शिक्षा-दीक्षा के लिए यत्न कर रहे हैं।

"इसका अर्थ यह नहीं है कि मैं अनेकों अन्य वस्तुओं, विचारों और व्यक्तियों से प्रेम करता हूँ तो विवाह के बाद उसमें शिथिलता आ गई है।

"परन्तु इस सम्बन्ध को धर्म का सम्बन्ध किसलिए कहा जाता है?"

"धर्म और प्रेम पर्यायवाचक नहीं है। कर्त्तव्य और धर्म पर्यायवाची हो सकते हैं। जब हम सन्तान उत्पन्न करते हैं तो सन्तान हमारे परिवार की परम्परा चलाने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। परिवार का सदस्य होने के नाते यह हमारा कर्त्तव्य है। परिवार की परम्परा चलाने वालों में सर्वश्रेष्ठ गुण उपस्थित हों, इससे हमने अपने आपको श्रेष्ठ, ईश्वरभक्त, ईमानदार और धर्मात्मा बनाकर रखा हुआ है।"

"तो क्या शारीरिक आवश्यकताएँ भी धर्म का कार्य हैं?"

"हाँ, परन्तु नियमान्तर्गत ही; अनियमित ढंग से वासना तृप्ति ऐसे ही अधर्म हो जाती है जैसे अस्वस्थकर भोजन करना अथवा अति मात्रा में भोजन करना।"

"नियम क्या है?"

"जैसे भोजन-व्यवस्था कोई डाक्टर अथवा वैद्य ही कर सकता है वैसे ही काम की प्राप्ति की व्यवस्था इस विषय के विद्वान ही कर सकते हैं। उस व्यवस्था का पालन करना चाहिए। भोजन वस्त्रादिक सम्बन्धी दुर्व्यवस्था इतनी हानिकारक नहीं होती, जितनी कि काम-सम्बन्धी दुर्व्यवस्था।"

"तो क्या विवाह करने के बाद भी आप मुझसे प्रेम करते रहेंगे?"

"मैं तुम दोनों बहनों से तब से ही प्रेम करता था जबसे मैं तुम्हारे पिताजी के क्वार्टर में रहने लगा था। यदि प्रेम न करता होता तो रमा से वासना तृप्ति कर फिर भूल जाता। मुझे ज्ञान था कि ऐसा करने से उसका अहित होगा। यह उसके प्रति मेरा प्रेम ही ऐसा करने से रोकता था।

"इसी प्रकार मैंने तुम्हें सदा ठीक दिशा का प्रदर्शन किया है तो इसी कारण कि मेरा तुम्हारे प्रति प्रेम अपने किंचितमात्र सुख से बहुत अधिक पवित्र है।"

माया ने दीर्घ निश्वास छोड़ा और उठ खड़ी हुई। उसने कहा, "मैं कल किसी समय तक आपके इस कथन पर अपना विचार आपको बताऊँगी। आप इस ढंग से युक्ति करते हैं कि तुरन्त उत्तर नहीं बन पड़ता।"

"हाँ, अब तुम जाओ और विचार कर लो। मैं प्रेम और कर्त्तव्य में अन्तर मानता हूँ। कर्तव्य तो बिना प्रेम के भी निभाया जा सकता है। कर्त्तव्य ही धर्म है। प्रेम भावना की बात है परन्तु विवाह तो एक युक्तियुक्त व्यवहार का रूप है।"

माया गई तो नलिनी मुख देखती रह गई। निरंजनदेव ने उठकर शयनागार की ओर जाते हुए कहा, "नलिनी! कल तुम इससे मिलकर इसको भाग्य पर भरोसा करने के लिए कहना। भाग्य पर भरोसा ही भगवान के भरोसे रहना है। अर्थात् इसे ईश्वर प्रणिधान कहते हैं।"

अगले दिन नलिनी स्नानादिक के उपरांत माया से मिलने गई तो वह उस समय भी बिस्तर पर पड़ी सो रही थी। नलिनी ने उसे हिलाकर जगाया तो वह आँखें मलती हुई उठ बैठी।

"क्यों, क्या बात है?" नलिनी ने पूछा।

"मैं रात भर जागती रही हूँ। दिन निकलने से कुछ ही समय पूर्व जब सोचते-सोचते मस्तिष्क थक गया तो सो गई। अभी जी चाहता है और सोऊँ।"

"तो सो जाओ।"

"नहीं भाभी! अब नहीं सोऊँगी। मेरी समस्या का समाधान हो गया है। मैं अब प्रसन्न हूँ।"

"क्या समाधान हो गया है। मैं तो समझती हूँ कि आज से तुम्हारी समस्या आरम्भ होती है। अभी तक तो विजन मार्ग था। वह सीधा और अटूट बिना मोड़ के चला जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा था। तुम उस नीरस मार्ग पर चली जा रही थीं। अब तुम्हें दूसरा मार्ग ग्रहण करना है। यह न तो विजन होगा, न ही नीरस और सीधा। इसमें मोड़-तोड़ भी आएंगे। इस मार्ग में अनेकानेक सुन्दर लुभायमान दृश्य और रसमय घटनाएँ भी आएँगी। तुमको उनको देखते हुए, उनका रस लेते हुए और उनसे अलिप्त रहते हुए अपने मार्ग पर चलना होगा।"

"भाभी! मन में एक उन्माद उठता प्रतीत होता है। संयम की सीमा टूटी है तो अब कुछ दिखाई नहीं देता। इच्छा होती है कि भागकर पहुँचूं। परन्तु कहाँ? यह तो पता ही नहीं। इस पर कल्पना के घोड़े दौड़ने लगते हैं।"

"चलो, चलकर स्नान करो। मैं तुमको एक बात बताती हूँ। मेरे कमरे में आ जाना।"

"पर मेरे मन की यह अवस्था ऊषा के पिताजी को मत बताना वे मेरी अधीरता पर उपहास करेंगे।"

"मैं तुम्हें एक और बात बताने वाली हूँ, जल्दी करो तैयार हो जाओ।"

माया उठकर नित्य कर्म में लग गई। नलिनी अपने कमरे में लौट आई। निरंजन माया के निराशा में पड़ी होने की आशा करता था। इस कारण नलिनी आई तो उसने पूछा, "कैसी है?"

"बहुत प्रसन्न और विवाह के लिए बहुत उत्सुक प्रतीत होती है।"

"परन्तु मुझे भय है कि अपने पिता की भाँति कहीं अपने मस्तिष्क का सन्तुलन खो न बैठे। उनको अपने जीवन की दुर्घटना पर बहुत दुःख हुआ था और इसको अति प्रसन्नता हुई है।"

"मैं उसको यहाँ आने के लिए कह आई हूँ। उसको कर्त्तव्य की कठिनाई के विषय में थोड़ा-सा ज्ञान कराना चाहूँगी। इससे उसका आह्लाद कम हो जाएगा।"

"देखो नलिनी! धीरे धीरे। मेरी उत्कट इच्छा है कि भापाजी के घर में एक दोहता हो जाए तो उसने भी जीवन की निराशा मिट जाएगी।"

सायंकाल निरंजनदेव अपने जाने के कार्यक्रम को अपनी जेब में लिए हुए कोठी पर पहुँचा। वह सीधा महानारायणजी से मिलने के लिए गया। वहाँ नलिनी, माया, श्यामा और मैनादेवी भी बैठी हुई थीं। निरंजनदेव को आया देख माया उठी और चुपचाप कमरे से बाहर निकल गई। निरंजनदेव उसको जाते देख ही रहा था कि महानारायण ने कहा, "आओ निरंजन! आओ।"

निरंजनदेव बैठा तो महानारायण ने घण्टी बजाकर चाय का आर्डर दे दिया। फिर बोला, "मध्याह्न के समय अपनी माँ के साथ माया आई थी। उसने विवाह की स्वीकृति तो दे दी है परन्तु अंतिम निर्णय के लिए उसने कहा कि वह लड़का देखकर ही किया जा सकता है। घटनावश आज ही डाक से स्वरूपकृष्ण का पत्र और उसका फोटोग्राफ आया है। मैंने फोटोग्राफ माया को दिखा दिया। उसका कहना है कि फोटो से तो जो कुछ भी पता चलता है वह सन्तोषजनक ही है। इस पर भी वह अन्तिम निर्णय उसको देख कर ही देगी।"

"मैं इस समय वही फोटोग्राफ इन सबको दिखा रहा था। तुम आये हो तो माया चली गई है। और वह फोटोग्राफ भी साथ ही ले गई है।"

"मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपके परिवार की गाड़ी के प्रगति करने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्षण दिखाई देने लगे हैं।"

बैरा चाय लाया तो नलिनी ज़ाकर माया को बुला लाई। निरंजन देव ने कहा, "माया बहिन! हमें नहीं दिखाओगी वह चित्र?"

माया का मुख लज्जा से लाल हो गया और वह गर्दन नीची किए चुपचाप चाय बनाती रही। निरंजनदेव ने बात बदलकर कहा, "मुझे मेरा कार्यक्रम मिल गया है। आज ही मुझे दफ्तर से अवकाश मिल गया है और पूना पहुँचने के लिए एक सप्ताह की अवधि दी गई है। उसके बाद दो दिन में ही वहाँ से रेजिमेंट कूच करेगी और उसी दिन हम सायंकाल बम्बई से हवाई जहाज से सवार हो चार दिन में काहिरा पहुँच जाएँगे।"

"यदि मैं अभी तार कर दूँ तो लड़का परसों सायंकाल तक दिल्ली पहुँच जाएगा और मैं समझता हूँ कि यदि सम्भव हुआ तो तुम्हारे जाने से पूर्व विवाह हो जाएगा।"

"आज मंगलवार है, मैं रविवार प्रातःकाल यहाँ से चला जाऊँगा।"

"मैं अभी टेलीग्राम करता हूँ। यदि वह कल वहाँ से चल पड़े तो बृहस्पति को यहाँ पहुँच जाएगा। तदनन्तर शनिवार को रात्रि में विवाह हो सकता है।"

"हाँ, यदि माया बहिन स्वीकार करे तो मैं जाने से पूर्व उसके माथे पर सुहाग चिह्न देख लूँगा।"

: 3 :

कमल और राधा का स्वभाव मिल गया था। राधा आरम्भ से ही कमल पर मुग्ध थी। और उसके प्रति बहुत स्नेह रखती थी। वास्तव में वह भी उसकी आदतों के बिगड़ने में भारी कारण हुई थी। उसको वह खूब खर्चने के लिए रुपये दिया करती थी, उसके कारण कमल उच्छृंखल प्रवृत्ति का होता गया।

जब कमल जेल से छूटा तो राधा उसकी सिफारिश करने के लिए दिल्ली आई थी। परन्तु महानारायण को उसके विरोध में देख बिना कुछ कहे ही वापस चली गई थी। इस पर भी जाने से पूर्व कमल ने रमा से सुलह कर ली थी। इससे राधा को भी आशा बन गई कि कमल और उसके पिता में सुलह हो जाएगी।

लगभग एक वर्ष तो सुख से व्यतीत हुआ। रमा कमल के सम्मोहन में इस प्रकार जकड़ गई थी कि वह अपने आभूषण और उसको मिलने वाला मासिक व्यय सब उसको दे देती थी। इससे कमल का जीवन साधारण सुख-सुविधा का व्यतीत हो रहा था। रमा ने गर्भ धारण किया तो कमल उसको गर्भपात कराने के लिए कहने लगा। रमा ने स्वीकार नहीं किया तो दोनों में तनातनी रहने लगी। एक दिन उसका पारिवारिक डाक्टर रमा को देखने के लिए आया तो उसने कैलशियम के इन्जेक्शन रमा के लिए बताये। इंजेक्शन लेते हुए कई दिन हो गए थे कि एक दिन डॉक्टर उसको इन्जेक्शन देकर गया तो उसके जाने के बाद रमा का प्राणान्त हो गया। कमल ने इस बात को छिपाकर रखा। उसने प्रातः ही प्रकट किया कि वह रात को भली-भाँति सोई है और उठी नहीं। डाक्टर ने उसे हृदय की गति रूक जाने की घटना बताई।

महानारायण को यह सत्य प्रतीत नहीं हुआ तो उसने पुलिस को टेलीफोन कर दिया। पुलिस आई तो मैनादेवी ने कहा कि रमा कह रही थी कि उसका पति उसको गर्भपात कराने के लिए कहता रहता है। उसने स्वीकार नहीं किया इस कारण दोनों में झगड़ा हो रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमल को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और रमा के शव को अन्त्य परीक्षा के लिए भेज दिया गया। इस पर भी जब किसी प्रकार के विष के लक्षण नहीं दिखाई दिये तो कमल को छोड़ दिया गया। इस बार कमल के पकड़े जाने की सूचना पाने पर राधा दिल्ली आ गई और कमल के छूट जाने पर वे दोनों कलकत्ता चले गये। राधा के पास कुछ रूपया था। उसके बलबूते पर कमल अमेरिकन्स को उनके उपयोग की वस्तुएँ सप्लाई करने लगा। इसे साथ एक उल्टा काम भी होने लगा। अर्थात् अमेरिकन सिपाहियों को अनेकों प्रकार का सामान अमेरिका से लाकर सस्ते दामों पर दिया जाता था। अमेरिकन सिपाही वह सामान कमल के द्वारा हिन्दुस्तानी जनता में चोर बाजारी कर देते थे। ये चीजें होती थीं फाउन्टेनपैन, काले चश्मे, कैंची, उस्तरे, कपड़े इत्यादि। यह सब वस्तुएँ इम्पोर्ट ड्यूटी के बिना, बिना किसी प्रकार का लाभ लिये अमेरिकन सिपाहियों को मिलतीं थीं। 'पार्कर फिफ्टीवन' का पैन अमेरिकन सिपाहियों को तीस रुपये में मिलता था। कमल उसको पचास रुपये में खरीदकर सत्तर-अस्सी रुपये में बचे देता था। फोटो खींचने का कैमरा सिपाही को दस रुपये में मिलता था, कमल उसको बीस रुपये में खरीदता और पचास रुपये में बेच देता था। इस प्रकार के तस्कर व्यापार से उसे दो-तीन हजार रुपये मासिक की आय हो रही थी।

इस पर भी अधिकांश आय कमल मधु और मधुबाला में व्यय कर देता था।

राधा उसकी जेब में से जब वह शराब पिये हुए होता था तो सब रूपया निकाल लेती थी और फिर उसके माँगने पर आवश्यकतानुसार दे देती थी। इस प्रकार वह युद्ध समाप्त होने पर जब यह तस्कर व्यापार समाप्त हो जाएगा तो उसके लिए कुछ पूँजी अपने पास जमा कर लेने की आंशा करती थी।

इस काल में कमल को एक अन्य व्यवसाय मिल गया। वह था अमेरिकन सिपाहियों को हिन्दुस्तानी लड़कियाँ लाकर देना।

इस प्रकार आनन्द से कार्य चल रहा था। राधा जितना भी रूपया कमल की जेब से निकालती, उसका सोना अथवा जेवरात खरीद लेती थी। सन् 1945 आया तो जर्मनी ने हथियार डाल दिए। बर्लिन पर रूसियों का अधिकार हो गया। इस समय तक रंगून पर अमरीकी और अंग्रेजी सेना का अधिकार हो चुका था और आजाद हिन्द फौज सिंगापुर, सुमात्रा और जावा में धकेल दी गई थी।

जापान की पराजय निश्चित थी। इस पर भी विचार किया जा रहा था कि अभी एक वर्ष और लग जाएगा। कमल अभी अपने वर्तमान जीवन के लिए एक वर्ष की अवधि समझ रहा था।

एकाएक समाचार आया कि अमेरिकन हवाई जहाज ने हिरोशिमा पर ऐटम बम्ब फेंका है और एक ही बम्ब से पूर्ण नगर जल कर भस्म हो गया है। इसके कुछ दिन बाद नागासाकी पर एक और बम्ब फेंका गया। इस पर तो जापान ने घुटने टेक दिये।

युद्ध-विराम सन्धि हुई तो अमेरिकन सिपाही लौटने लगे और कमल का काम ढीला पड़ने लगा।

कुछ ही दिनों में अमेरिकन सैनिक कार्यालय ने हिन्दुस्तान से डेरा कूँच कर दिया। कमल ने जब राधा को बताया कि युद्ध समाप्त हो जाने से अमेरिकन अब लौट रहे हैं, इसलिए उनके लिए अब कोई काम नहीं रहा तो राधा ने कह दिया, "तो ठीक है। चलो शिमला चलें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वहाँ क्या है?"

"तुम्हें पता नहीं वहाँ क्या है? यहाँ गर्मी, पसीना और बदबू है वहाँ साफ-सुथरी हवा, चारों ओर हरियाली, सर्दी और सुन्दर लड़कियाँ हैं।"

"पर वहाँ पैसा नहीं माँ! यहाँ पैसा है।"

"यहाँ खर्चा भी बहुत है।"

"यही सोच रहा हूँ कि किसी प्रकार व्यय से आय अधिक हो सके।"

वह हो नहीं सकी। कमल प्रतिदिन माँ से कहता, "माँ! कुछ है तुम्हारे पास?"

"किसलिए चाहिए?"

"कोई काम ढूँढने के लिए जा रहा हूँ।"

"कितने से काम चल जाएगा?"

"कम-से-कम दस रूपया।"

राधा एक नोट निकाल देती। जब कई दिन इसी प्रकार चलता रहा तो कमल को विचार आया कि देखना चाहिए कि माँ कि पास क्या है। उसने एक दिन एक सौ रूपया माँग लिया। माँ ने आनाकानी की। कमल ने मिन्नत खुशामद की। राधा मान गई। उसने कमल को बाहर ठहरने के लिए कहा और अपने सोने के कमरे में रुपये लेने चली गई। कमल ने किवाड़ की ओट में खड़े होकर झाँका। राधा ने सन्दूक खोला और उसमें से एक सन्दूकची निकाली। सन्दूकची खोल उसमें से रुपये निकाल ही रही थी कि कमल लपककर भीतर आया और सोना और जवाहरात इत्यादि से भरी संदूकची देख पागलों की भाँति वह उसे माँ से छीनने लगा। राधा ने उसे दोनों हाथों से पकड़ छाती से लगा रखा था। कमल और राधा में छीना-झपटी होने लगी थी। कमल राधा की छाती पर सवार हो गया। इस पर भी राधा ने संदूकची नही छोड़ी। वह हल्ला करने लगी। कमल ने देखा कि पड़ोस के रहने वाले कहीं आ न जावें। उसने माँ की गर्दन पकड़कर दबा दी। दो झटकों में ही उसके प्राण निकल गये।

माँ को मृत देख कमल अपनी करनी पर पश्चात्ताप करने लगा। परन्तु अब तो हत्या हो चुकी थी। वह संदूकची में से सब मूल्यवान वस्तुएँ एकत्रित करने लगा। वह अभी यह सब सामान एकत्रित कर ही रहा था कि किसी ने बाहर से उसके फ्लैट का द्वार बन्द कर दिया।

इससे कमल को चेतना हुई और उसने संदूकची बगल में दबाई और वहाँ से भागने का विचार करने लगा। परन्तु द्वार बाहर से बंद था। खिड़कियाँ थीं तो, परन्तु उसमें लोहे की सीखें लगी थी। और लोग बाहर एकत्रित हो रहे थे। कमल के पड़ौस का एक व्यक्ति खड़ा होकर हल्ला कर रहा था, "चोर! चोर!"

सड़क पर से दो पुलिस के कॉन्स्टेबल मकान पर चढ़ आए। उनको उस व्यक्ति ने बताया, "मैं दफ्तर जाने के लिए अपने कमरे से निकल इस फ्लैट के सामने से गुजर रहा था कि इस घर में रहने वाली बुढ़िया की पुकार सुनाई दी। वह कह रही थी बचाओ, बचाओ! मैं लपक कर भीतर गया तो एक आदमी बुढ़िया की छाती पर चढ़ा उसका गला दवा रहा था और पास ही आभूषण और रुपये बिखरे पड़े थे। मैंने भागकर बाहर से द्वार बन्द कर दिया और हल्ला कर दिया। वह चोर अभी तक भीतर है। यहाँ से निकलने का और कोई मार्ग नहीं है।"

पुलिस वालों ने उस फ्लैट का घेरा डाल लिया। टेलीफोन कर थाने से एक दर्जन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिपाही बुला लिए गए। जब सब ओर से रक्षा का प्रबन्ध कर लिया गया तो दरवाजा खोला गया। कमल हाथ में संदूकची लिये किंकर्त्तव्यविमूढ़ की भाँति पकड़ लिया गया। मक़ान की तलाशी ली गई तो बुढ़िया को मृत पाया गया।

कमल को हथकड़ी लग गई। संदूकची सील कर दी गई और पुलिस ने उसे अपने अधिकार में कर लिया। राधा का शव परीक्षा के लिए अस्पताल भेज दिया गया।

डाक्टर की रिपोर्ट पर कि मौत गला घोंटने से हुई है कमल पर हत्या और चोरी का मुकदमा दायर किया गया। यह तो पड़ौसियों ने बताया कि कमल ने अपनी माँ की हत्या की है। पुलिस को जब कमल के पिता का पता चला तो उसको मुकदमें की सूचना दे दी गई।

: 4 :

निरंजनदेव का अनुमान ठीक था कि अमरीका, इंग्लैंड और कैनाडा के योग्य, सुदृढ़ और मैकानाइज्ड युनिट्स फ्रांस में उतारने के लिए इंग्लैंड में इकट्ठे किये जा रहे थे और शेष स्थानों को सुरक्षित रखने के लिए भारत, फ्रांस और दक्षिणी अफ्रीका के सिपाहियों को नियुक्त किया जा रहा था। मिस्र में युद्ध की सम्भावना नहीं थी। इस कारण निरंजन का काहिरा भेजा जाना एक साधारण-सी घटना ही रही।

पाँच जून 1944 को इस युद्ध का सबसे बड़ा आक्रमण फ्रांस के नौर-मंडी क्षेत्र पर किया गया। पन्द्रह दिन के भीतर अर्थात् 20 जून तक चार लाख बीस हजार सैनिक और एक लाख नवासी हजार मोटर गाड़ियाँ समुद्र पार कर आक्रमण के लिए पहुँचाई गई। दो मास में सैनिकों की संख्या सत्रह लाख तीस हजार हो गई और मोटर गाड़ियों की संख्या तीन लाख पैंसठ हजार हो गई।

पाँच जून 1944 तक इस विश्वव्यापी युद्ध में अफ्रीका शत्रु से खाली कर दिया गया था। हिन्दुस्तान की रक्षा सम्पूर्ण हो चुकी थी। जापान थककर अपने घर को लौट रहा था। जापानी आक्रमण का भय न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया पर से हट चुका था। इटली की सेना अब मित्र राष्ट्रो की सहायता कर रही थी। रूस में से भी जर्मन सेना भारी हानि के साथ निकाल दी गई थी।

इतना कुछ हो जाने पर तो हिटलर की पराजय निश्चित थी। इस पर भी पाँच जून 1944 से लेकर 30 अप्रैल 1945 तक योरूप में रक्त की नदियाँ बहती रहीं। 30 अप्रैल को रूस ने बर्लिन पर अधिकार जमा लिया और हिटलर ने आत्महत्या कर ली।

इसके कई मास बाद हिन्दुस्तानी सेनाएँ अपने देश को वापस होनी आरम्भ हुई। इस पर भी निरंजन्नदेव दिसम्बर 1945 में ही दिल्ली पहुँच सका था।

निरंजनदेव के हिन्दुस्तान पहुँचने से पूर्व ही कमल को फाँसी की आज्ञा हो चुकी थी। महानारायण ने मुकदमें में कमल की किंचित् भी सहायता नहीं की। वह और उसकी पत्नी उससे हवालात में मिलने के लिए भी नहीं गये।

कमल ने जेल के अन्दर से हाईकोर्ट और फिर प्रिवि-कौंसिल में अपील कराई, परन्तु कुछ लाभ नहीं हुआ। मार्च 1946 में कमल को फाँसी पर लटका दिया गया।

निरंजनदेव ने जब कमल के विषय में सुना तो वह महानारायण के व्यवहार पर विस्मय करता था। उसने पूछा, "आपने उसे बचाने के लिये कुछ यत्न नहीं किया।"

"मेरे यत्न करने से कुछ हो सकता था क्या? उसने एक नहीं कई हत्याएँ की थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटे-छोटे बच्चों का गला घोंटकर यमुना में बहा देना उसका मनोरंजन रहा था। रमा को उसने दो वार मारने का यत्न किया था। दूसरी बार तो वह सफल हो ही गया था। यह तो उसके भाग्य में इस जन्म में अपनी माँ की हत्या करनी लिखी थी, तभी रमा के समय उसका अपराध सिद्ध नहीं हो पाया।

"कमल महापातकी था। इस कारण उसके जीवन का अन्त फाँसी की टिकटिकी पर ही होना लिखा था।"

कमल को फाँसी देने के बाद कलकत्ता कोर्ट का महानारायण को नोटिस मिला कि कमल और उसकी माँ के पास पाँच सौ तोला सोना, दस हीरे, पचास मोती और पाँच सौ रूपया नकद मिले थे। यदि उनका कोई दावेदार हो तो उसको कचहरी में उपस्थित होकर अपना अधिकार बताना चाहिए।

इतनी सम्पत्ति की वात जानकर एक बार तो महानारायण के मुख में पानी टपकने लगा था। उसने निरंजनदेव और अपनी पत्नी से राय की तो इन दोनों ने ही राय दी कि यह धन किसी पाप का परिणाम है, इस कारण इस धन को नहीं लेना चाहिए।

निरंजनदेव ने तो यह भी कहा, "भापा! यह सब धन जो आपने एकत्रित कर कमल के व्यापार में लगाया था अथवा जिससे यह कोठी और कनॉट प्लेस के मकान बनाए थे वह क्या आपके वेतन का वचा हुआ है?"

"यह तुम किसलिए पूछ रहे हो?"

"मुझे नलिनीं ने बताया है कि माया की दो सन्तानें हो चुकी हैं, किन्तु दोनों ही मृत हुई हैं।"

महानारायण विस्मय से मुख देखता रह गया। उसने पूछा, "देव! उसका इस धन के साथ क्या सम्बन्ध हो सकता है?"

"आप चाहते थे न कि माया के कोई सन्तति हो तो आप अपनी पूर्ण सम्पत्ति उसके नाम लिख दें।"

"हां! ऐसा विचार तो था?"

"तो इस धन का भोग करने के लिए कोई भी पुण्यात्मा तैयार होता प्रतीत नहीं हो रहा।"

"तो फिर क्या किया जाए?"

"मेरा तो विचार है कि आप अपनी पूर्ण सम्पत्ति दान कर दें। यह कमाई ईमानदारी की प्रतीत नहीं होती। जिस जिसने यह कमाई खाई है उसी की दुर्दशा हुई है।"

महानारायण घबरा गया। वह समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे। वह देख रहा था कि जब दुनिया के सब बेईमान फल-फूल रहे हैं तो भाग्य का कोप उस पर ही क्यों है?

उस रात वह सो नहीं सका। बेचैनी में करवटें लेता रहा। मैनादेवी भी अपनी पूर्ण जीवन-कथा स्मरण कर रोती रही थी। यों तो उसको अपने पूर्व जन्म में कर्म अति हीन प्रतीत हो रहे थे, तब से ही जब कमल की बच्चों को मार-मारकर यमुना में बहा देने की बात उसने सुनी थी। परन्तु आज निरंजनदेव के मुख से यह बात सुन तो वह फूट पड़ी।

रात के दो बजे के लगभग महानारायण लघुशंका करने के लिए उठा और उसने लैंम्प जलाया तो उसने मैनादेवी को अपने पलंग पर बैठ अश्रु बहाते देखा। उसने पूछा, "क्यों क्या है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ नहीं, यह प्रकाश आँखों को चौंधिया रहा है।"

"अच्छा, मैं अभी लैंप बुझा देता हूँ।"

"परन्तु दिन के सूर्य को तो आप बुझा नहीं सकेंगे न?"

"क्या मतलब?"

"जब इस छोटे-से लैंप का प्रकाश दुःखदायी प्रतीत हो रहा है तो सूर्य का प्रकाश किस प्रकार अच्छा लगेगा।"

"तो फिर?"

"फिर विष खाकर इस जीवन को समाप्त करने का विचार मन में आ रहा है।"

"चित्त तो मेरा भी बेचैन हो रहा है।"

"क्या कष्ट है आपको?"

"निरंजनदेव का कहना है कि मेरे धन में खराबी है, इस कारण मुझे इसे दान कर देना चाहिए।"

"तो कर दीजिए।"

"तुम्हें इससे सुख मिलेगा क्या?"

"सुख की बात तो मैं कह नहीं सकती, हाँ, वर्तमान दुःख तो मिट ही जाएगा।"

महानारायण कुछ नहीं बोला, उसने बत्ती बुझाई और लेट गया। दोनों को रात-भर नींद नहीं आई।

प्रातः होने से पूर्व उसको निरंजनदेव के जीवन की एक घटना स्मरण हो आई। वह रायसाहब गोपीचन्द ने बताई थी कि जितना भी रिश्वत का रूपया लेने के लिए उसे विवश किया था, वह सब-का-सब उसने गुप्त दान कर दिया था।

प्रातः उठकर स्नानादि से निवृत्त हो उसने निरंजनदेव को बुलवा लिया। महानारायण ने कहा, "देव! रात तुमने कहा था कि हमारे धन को भोगने के लिए कोई पुण्यात्मा तैयार नहीं होता तो इसमें दो प्रश्न हैं। एक तो यह कि यह रायसाहब और अन्य पी० डब्ल्यू० डी० के कर्मचारी हैं। इनके घरों के बच्चे क्यों नहीं मर जाते अथवा मरे हुए पैदा क्यों नहीं होते? दूसरी बात यह है कि यदि धन इतना पातकी है तो जिस संस्था को यह दिया जायेगा वह बरबाद क्यों न हो जाएगी?"

"देखिये भापा! यह रहस्य परमात्मा ने अपने अधीन कर रखा है। और जो कुछ मैं कह रहा हूँ उसे प्रामाणिक सत्य तो कहा नहीं जा सकता। हाँ, उसे युक्तियुक्त अनुमान कहा जा सकता है। पहले संशय के विषय में तो मैं यह कह सकता हूँ कि उन्होंने अपने पूर्व जन्म में अवश्य कुछ पुण्यकर्म भी किये होंगे, जो इस जन्म के पाप-कर्मों के प्रभाव को विलीन कर रहे हैं।"

"दूसरी बात का एक उपाय मैंने किया था। आप भी कर सकते है। मेरे पास एक समय कई सहस्र रूपया अनियमित आय का हो गया था। मैंने उसे गुप्तदान के रूप में दे दिया था।"

"तो तुम समझते हो कि हमने पूर्व जन्म में कोई भला कर्म नहीं किया?"

"यह मैंने नहीं कहा। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि आपके पूर्व जन्म के पुण्य इतने प्रबल नहीं कि आपके वर्तमान जन्म के पापों को विलीन कर सकें। कुछ तो पुण्य कर्म आपने भी किये हैं। अन्यथा आपको यह मानव जन्म और धर्मात्मा सरल चित्त पत्नी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ ही उच्च शिक्षा प्राप्त न होती।"

महानारायण दान देने की बात पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने लगा। निरंजनदेव ने दिल्ली पहुँचते ही माया को अपने लौट आने का पत्र लिखा और वह पत्र पहुँचने के एक सप्ताह के भीतर ही वह दिल्ली आ गई थी। माया के साथ उसका पति स्वरूपकृष्ण भी था। माया ने निरंजनदेव की प्रशंसा के पुल बाँध रखें थे। इस कारण स्वरूपकृष्ण उससे मिलने के लिए बहुत ही उत्सुक था।

निरंजनदेव प्रोफेसर से मिला तो अनेकों विषयों पर वार्तालाप होने लगा। युद्ध तो तत्कालीन विचार का विषय था। प्रोफेसर ने पूछा, "बहुत शोर सुनते थे पहलू में दिल का, जो चीरा तो कतरये खून निकला। भाई साहब! यह क्यों हुआ ? क्या जर्मन सिपाही बहादुर नहीं थें ?"

"बहादुर तो बहुत थे। मुझ तो जर्मनों के साथ लड़ने का अवसर नहीं मिला। परन्तु जिनको यह अवसर मिला है। उन्होंने बताया है कि वे भयावह से भयावह काम भी करने के लिए तैयार रहते थे। इस पर भी आजकल की युद्ध-कला में सैनिक का शौर्य तो बहुत अल्प अंश है। युद्ध की सफलता में देश के चोटी के व्यक्ति राजा, प्रधानमंत्री, प्रधान अथवा फ्यूरर से लेकर देश के छोटे-से-छोटे आदमी, शस्त्रास्त्र के कारखाने में सफाई करने वाले तक, पर निर्भर है।"

"परन्तु एक बात और है, वह है धर्माधर्म और पाप-पुण्य की। धर्म और पुण्य दोनों मनुष्य की आत्मा में अपूर्व उत्साह और शक्ति भरने वाले है। इनके बिना तो रावण, हिरणयकश्यप, कंस और दुर्योधन असीम शक्ति के स्वामी होते हुए भी धराशायी हो गए। इसी प्रकार हिटलर और मुसोलिनी अपने पाप-कर्मो के बोझ से दबे हुए इस संसार को छोड़ गये।"

"अभिमानी, मूढ़, अनृतभाषी, लोभी और हठी हिटलर और मुसोलिनी युद्ध का संचालन कर रहे थे। ऐसे पक्ष की पराजय, जिसके ये नेता थे, निश्चित था। यों तो दूसरी ओर भी मूढ़ों की संख्या कम नहीं थी। परन्तु वे मूर्ख अभिमान से रहित थे।"

"जब चैम्बरलेन की नीति असफल सिद्ध हुई और वहाँ की संसद ने उस नीति को अशुद्ध माना तो वह स्वेच्छा से पद छोड़ एक ओर हो गया। संसद के वे सदस्य भी, जो पहले चैम्बरलेन और वाल्डविन की मिथ्या शान्ति की नीति का समर्थन करते थे, यह समझने पर उनकी नीति असफल हो गई है, उनकी नीति के विरोधी चर्चिल को नेता मान बैठे। अर्थात् ये लोग न तो अभिमानी थे और न हठी ही।"

"इसके विपरीत हिटलर तो कभी भी अपनी नीति के विरोधी की बात सुनने के लिए तैयार नहीं। अन्त काल में भी उसने अपनी भूल स्वीकार नहीं की और आत्महत्या करना ही ठीक समझा।"

"परन्तु यह बात निर्विवाद सत्य है कि जर्मन जनता अपने नेता पर जान निछावर करती थी और जनता जनार्दन है। इसका आदेश और इच्छा ही धर्म नहीं है क्या ?"

"जी नहीं। प्रथम हिटलर को जर्मन जनता का समर्थन प्राप्त नहीं था। जर्मनी में सैनिक-वर्ग का समर्थन निस्सन्देह हिटलर को प्राप्त था। और उस सैनिक-वर्ग के बल पर पूर्ण जनता से कुलियों की भांति कार्य लिया जाता था।"

"इसके अतिरिक्त जनता जनार्दन का वाक्य किसी थर्ड रेट व्यक्ति का गढ़ा हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। दोनों का आरम्भ 'ज' अक्षर से होने के कारण दोनों समान नहीं हो गए। अतः जनता का निर्णय धर्म नही होता। धर्म का एक आधारभूत सिद्धान्त है। उसके विपरीत जनता का निर्णय भी अधर्म और अन्याय है। एक बात 'दया धर्म का मूल है, नरक मूल अभिमान।" यह सर्वथा सत्य उक्ति है। हिटलर में न तो दया थी और न विनय। वह महा अभिमानी था।

"इसके अतिरिक्त 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् का सिद्धान्त नीति-शास्त्र में वर्णित है।"

"धैर्य, क्षमा, दया, अस्तेय, शौच, दन्द्रिय निग्रह, धीः विद्या, सत्य, अक्रोध ये व्यापक धर्म के लक्षण है। इनके विपरीत एक देश की जनता क्या भूमण्डल के सभी लोग भी आदेश दें तो भी वह अनर्थ ही होगा।"

"अब आप देख सकते हैं कि हिटलर और मुसोलिनी कौन-कौन से उक्त धर्म के लक्षणों का उल्लंघन का अधर्य पालन करने वाले हुए थे।"

"उनकी पराजय निश्चित थी। लगभग छः वर्ष तक उन्होंने ऊधम मचाये रखा। यह भी इस कारण कि इनके विरोधी पक्षवाले भी सर्वरूपेण धर्मात्मा नहीं थे। वे मूर्ख थे। एक ओर तो वे शान्ति शान्ति की इच्छा करते हुए निःशंस्त्रीकरण में लग गए थे। वे चाहते थे कि जर्मनी को बलपूर्वक शस्त्रविहीन रखा जाए और स्वयं भी शस्त्र-अस्त्रविहीन हो जाएँ। उन्होंने शस्त्र चलाने वाले का मन बदलने की अपेक्षा शस्त्रास्त्र विनाश करने आरम्भ कर दिये। यह महामूर्खों की बात थी। युद्ध इसलिए नहीं किये जाते कि उनमें शस्त्रास्त्रों का प्रयोग किया जाएगा प्रत्युत युद्ध करने के लिए शस्त्रास्त्र बनाये जाते हैं। युद्ध के कारण शस्त्रास्त्रों की विद्यमानता नहीं होती, प्रत्युत युद्ध की भावना इसमें कारण होती है।"

"यह मूर्खतापूर्ण व्यवहार वाल्डविन और चैम्बरलेन का था। चर्चिल इसका विरोध करता था। अन्त में शान्ति स्थापित करने के लिए तोपें, टैंक, हवाई बम्ब फेंकने वाले और हवाई लड़ाकू जहाज बनाने पड़े। न कि इनका नाश करना पड़ा।"

महानारायण भी इस वार्तालाप को सुन रहा था। वह पूछने लगा, "तो क्या विनाशकारी साधन हटा लेने से विनाश की प्रवृत्ति विलुप्त नहीं हो जाती ?"

"इसके विलुप्त होने में कारण नहीं । विनाशकारी साधन उपकारी भी हो सकते हैं। उन साधनों के प्रयोग करने वाले की प्रवृत्ति रचनात्मक होनी चाहिए। इस कारण प्रथम आवश्यकता प्रवृत्ति बदलने की है। बदली हुई प्रवृत्ति वाले के पास साधन हानिकर होने की अपेक्षा हितकर सिद्ध होते हैं।"

महानारायण ने कहा, "मैंने भी यही भूल की थी। मैं कमल को साधनविहीन बनाकर समझ बैठा था कि मैं उसका सुधार कर रहा हूँ। मैंने उसकी प्रवृत्ति बदलने का यत्न नहीं किया। इस कारण वह बदला नहीं और अन्त में फांसी पर चढ़कर ही उसका सुधार हुआ।"

"भापाजी! जैसे आपने कमल को निर्धन कर दिया था वैसे ही यूरोप के कुछ देशों ने मिलकर जर्मनी को अस्त्र-शस्त्र-विहीन कर दिया था। वे यह समझे थे कि साधन विहीन होने से जर्मनी भले लोगों का देश बन जाएगा। ऐसा नहीं हो सका। मानसिक भावना वही बनी रही और परिणामस्वरूप जर्मनी ने अस्त्र-अस्त्र बना लिये और अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरोधियों को पीस डालने का यत्न किया।"

"कमल ने भी वही किया जो जर्मनी ने साधन-विहीन होने पर किया था।"

: 5 :

महानारायण ने माया की मुसीबत का वृत्तान्त भी सुना। उसका विवाह हुआ था सन् 1943 में और पति के घर में जाते ही उसके गर्भ स्थापित हो गया। उसके पति ने उसकी इस अवस्था पर दुःख प्रकट किया। वह अभी स्त्री-सुख से तृप्त नहीं हुआ था न ही वह अभी सन्तान के पालन-पोषण में फँसना चाहता था। साथ ही वह चाहता था कि माया पी० एच० डी० कर ले तो उसकी शोभा बढ़ जाएगी। इन सब में होने वाली सन्तान बाधक थी। परन्तु माया ने यह कह कि वह यह सन्तान भापाजी के लिए धारण कर रही है और वह अपनी गर्भावस्था में भी तो अपना थीसिस लिखने की तैयारी कर सकती है, अपने पति को शान्त कर दिया।

परन्तु बच्चा उत्पन्न होने से पहले ही मर गया। इससे माया को भारी दुःख हुआ। इस दुर्घटना के छः मास बाद, वह पुनः गर्भवती हुई। इस बार उसका थीसिस लगभग तैयार हो गया था। फिर भी इस बार पहले से अधिक कष्ट होने के कारण पढ़ाई-लिखाई का काम स्थगित करना पड़ा। परन्तु दुर्भाग्य की बात यह हुई कि इस बार भी वही दुर्घटना हो गई और फिर मृत शिशु को पेट चीरकर निकालना पड़ा। अब तो प्रोफेसर साहब ने निश्चित रूप से कह दिया कि अब वे थीसिस दे लेने के बाद ही पुनः सन्तान के लिए यत्न करेंगे।

महानारायण को निरंजन देव का कथन स्मरण हो आया कि कोई भी पुण्यात्मा उसके दूषित धन का भोग पसन्द नहीं करता। इस कारण माया के साथ यह दुर्घटना हो गई है। इससे उसने अपने धन के विषय में माया को कह दिया, "माया बेटी! अब मुझे पोते की लालसा नहीं रही। मैंने अपने धन को संचित कर सब-का-सब दान में देने का निश्चय कर लिया है। मैं समझता हूँ कि अब तुमको मेरे लिए प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं। अब तुम अपने और अपने पति की सुख-सुविधा का ध्यान करो।"

"क्या यह सुझाव भी निरंजन भैया ने दिया है?"

"हाँ, किन्तु तुम किस प्रकार जानती हो ?"

"मैं उनके मन की बहुत-सी बातें जानती हूँ ?"

"हाँ, जैसे राजा महाराजा अश्वमेघ यज्ञ कर अपना सर्वस्व दान दे दिया करते थे, वैसा ही मैं करने वाला हूँ।"

"मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई है। मैं अब प्रार्थना किया करूँगी कि आपकी यह सुमती बनी रहे।"

महानारायण मुस्कुराकर चुप रहा। माया यहाँ एक मास के लिए आई थी। आने से पूर्व वह अपना थीसिस देकर आई थी।

स्वरूपकृष्ण तो दो दिन ठहरकर बम्बई लौट गया। माया दिल्ली में ही रह गई। कोठी का नौकर निरंजनदेव के पास आकर कहने लगा, "माया बहिन बुला रही है।"

"क्यों क्या बात है, तबीयत तो ठीक है न ?"

"उनके यहाँ कोई हवन यज्ञ हो रहा है।"

निरंजन विचार करता था कि हवन के लिए आज कौन-सा पर्व है। मकर संक्रान्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का दिन था। उसने समझा अवश्य इसी सम्बन्ध में कुछ आयोजन होगा। अतः वह जल्दी-जल्दी स्नानादि से निवृत्त हो नलिनी और बच्चों को लेकर वहाँ जा पहुँचा। हवन प्रारम्भ हो गया था। महानारायण और मैना देवी सिर मुँडाए काषाय वस्त्र धारण किए हुए यज्ञ वेदी पर विराजमान थे। महानारायण का वकील भी उपस्थित था।

हवन समाप्त हुआ तो स्वामी मुनीश्वरानन्दजी ने महानारायण और मैनादेवी को संन्यास की दीक्षा दी। इस प्रकार इस संस्कार के होने पर महानारायण का नाम भूमानन्द और मैनादेवी का नाम कल्याणी रख दिया गया।

अब वकील ने अपना थैला निकालकर महानारायण का लिखा हुआ दानपत्र पढ़कर सुनाया—

"मैं अपनी पहली वसीयत रद्द करता हूँ। आज तेरह जनवरी 1946 को यह नई वसीयत, जो वास्तव में दानपत्र है, लिखता हूँ। मैंने अपनी पूर्ण सम्पत्ति जिसकी सूची नीचे दी जा रही है किन्तु जिसमें सिविल लाइन्स वाली कोठी सम्मिलित नहीं है सब की सब दान कर दी है। इस दान के पात्र का निर्णय करने लिए, मैं तीन व्यक्तियों का ट्रस्ट नियुक्त करता हूँ। वे व्यक्ति होंगे, श्री सोहनलाल बार एटला, लैफ्टिनेंट निरंजनदेव और प्रोफेसर स्वरूपकृष्ण।"

"इस दान के विषय में मेरी यह इच्छा है कि इस सूचिपत्र में दिए धन में से ये ट्रस्टी अपने लिए कुछ नहीं लेंगे। उनके पारिश्रमिक के लिए मैं अपनी पत्नी के आभूषण जो लगभग बीस तोले हैं और जिन्हें वे अपनी माँ के घर से लाई थीं, देता हूँ। वे उसे बाँट लें।"

"यह दान जिस किसी को भी दिया जाय, गुप्तदान के रूप में दिया जाय उसमें मेरे नाम का उल्लेख न हो। उचित यही होगा कि जायदाद को बेचकर उसका रूपया एकत्रित कर लिया जाय। मैं इस विषय में कोई सम्मति नहीं देता। ट्रस्टी निर्णय करने में पूर्ण स्वतन्त्र हैं।"

"भगवान सबका कल्याण करें।"

दान पत्र में सिविल लाइन्स वाली कोठी के विषय में यह लिखा गया था कि श्यामा के जीवन काल तक वह उसके अधिकार में रहे और बाद में उसे भी दान कर दिया जाय। इस विषय में उन्होंने श्यामा से अनुरोध किया था कि अपने मरने से पूर्व वह उसे कोठी का दानपत्र लिखकर जाए।

माया, सतीश और श्यामा भी हवन पर उपस्थित थे। श्यामा और सतीश के आँसू बह रहे थे। माया, निरंजनदेव और नलिनी इत्यादि प्रसन्न थे। सबसे पहले निरंजनदेव ने स्वामी भूमानन्दजी को बधाई दी। फिर उसने परमात्मा से प्रार्थना करते हुए कहा, "भगवान आपका मार्ग दर्शन करे।"

स्वामी भूमानन्द तो स्वामी मुनीश्वरानन्द के साथ हरिद्वार के लिए चल पड़े। कल्याणी अपना कमण्डलु उठा भिक्षार्जन के लिए चल पड़ी।

उसे जाते देख नलिनी ने पूछा, "ताई! किधर जा रही हो?"

"ताई नहीं नलिनी! देखो, मैं हूँ अब माई कल्याणी और माई कल्याणी भिक्षार्जन के लिए जा रही है।

नलिनी ने हँसकर कहा, "माई! आज हमारे द्वार को पवित्र कर दो।"

कल्याणी कमण्डलु लें उधर ही चल पड़ी। नलिनी भागी हुई भीतर गई और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्याणी माई को आसन दे उसके हाथ धुला भोजन परोस लाई। कल्याणी ने हाथ पर ही दो रोटियाँ लीं। रोटियों पर साग रख लिया और कमण्डलु में जल ले खाने लगी।

"निरंजनदेव ने पूछा, "माई जी! अब क्या कार्यक्रम है आपका?"

"यहाँ से पैदल उत्तरकाशी जाने का विचार है। वैशाख तक वहाँ पहुँच जाऊँगी। उत्तरकाशी में गंगोत्री, जमनोत्तरी, केदारनाथ और बद्रीनाथ होकर वापस लौटूंगी।"

निरंजनदेव ने नलिनी के कान में कुछ कहा और नलिनी भीतर से दस दस के बीस नोट ले आई। उनको कल्याणी के चरणों में रखकर बोली, "माँ! जहाँ मार्ग में भिक्षा मिलने की सुविधा न हो, उस समय के प्रयोग में लाने के लिए हैं।"

कल्याणी कुछ देर तक सोचती रही और फिर उसने नोट उठा लिए। रुपये झोले में डाल वह चल पड़ी।

घर के सभी प्राणी इस प्रकार मैनादेवी को पैदल ही जाते देख रहे थे। जब वह आँखों से ओझल हो गई तो सब विस्मय से एक-दूसरे का मुख देखने लगे।

तब तक तो माया प्रसन्न ही रही, जब तक कि यह उसकी आँखों से दिखाई देती रही। जब कल्याणी भी कोठी से निकल गई तो अनायास ही उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े। यह देख निरंजनदेव ने पूछा, "क्यों क्या बात है?"

"मुझे कुछ ऐसा आभास मिला है कि ताईजी ने ताऊजी का इस प्रकार त्याग किया है मानो वे किसी भूल का सुधार कर रही हों।"

"हाँ, हो सकता है। पर यह भूल ताई जी ने नहीं की प्रतीत होती है। यह तो भाग्य की विडम्बना थी जो इस प्रकार, दो सर्वथा भिन्न प्रकृति के जीव छत्तीस वर्ष तक एक साथ रहे हैं। विस्मय करने की बात तो यह है कि जो बात हमको अत्यन्त दुःखद प्रतीत हुई उसे इस निर्भीक जीव ने कैसे अनायास ही स्वीकार कर लिया?"

निरंजनदेव अभी भी सैनिक कार्यालय में कार्य करता था, सेना तोड़ी जा रही थी और इसके पुनर्गठन के लिए योजनायें बन रही थीं। इस समय देश में विप्लव के लक्षण दिखाई देने लगे थे।

युद्ध के बाद स्वराज्य की बात तो वे भी कहने लगे थे जिन्होंने कभी किसी स्वराज्य आन्दोलन में भाग तक नहीं लिया था। सरकार इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर रही थी।

इससे भी अधिक उथल-पुथल मचाने वाली बात मलाया इत्यादि देशों में आजाद हिन्द सेना के साठ हजार सैनिकों को कैद कर हिन्दुस्तान में लाया जाना था। सरकार उनके विषय में कोई निर्णय नहीं कर पा रही थी।

देश में तो यह धारणा बन गई थी कि ये अपराधी नहीं हैं और इनको मुक्त कर देना चाहिए। लोग ऐसा समझते थे कि स्वराज्य मिलते ही उन्हें पुनः सेना में मानयुक्त स्थान मिल जाएगा।

परन्तु सेना में इसके विषय में मतभेद था। जो सेना के नियमों को जानते और समझते थे वे कहते थे कि वे देशद्रोह के अपराधी हैं। इन्होंने जिस सरकार की सेना के विरूद्ध उन्होंने युद्ध किया था। देश के शत्रु के साथ मिलकर इन्होंने देश पर आक्रमण किया था।

सेना के आफिसर्स और साधारण सैनिकों में यह विवाद का विषय बन गया था। निरंजनदेव इस वाद-विवाद में रूचि ले रहा था। इस समय सरकार ने आजाद हिन्द फौज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कुछ आफिसर्स का जिनमें कर्नल मोहनसिंह इत्यादि भी थे 'कोर्टमार्शल' कर दिया। देश के वकीलों ने उनकी रक्षा के लिए मुकदमे की पैरवी करनी आरम्भ कर दी।

जब तक मुकदमा चलता रहा, देश में भारी तनाव की अवस्था चलती रही। कोर्टमार्शल ने इन अफसरों को अपराधी माना और आजीवन कैद का दण्ड दे दिया। कमांडर-इन-चीफ ने इन मुकदमों पर पुनरावलोकन किया।

इस समय हिन्दुस्तानी सेना में आजाद हिन्द फौज के सैनिकों के लिए बेचैनी अनुभव होने लगी। यह केवल एक साधारण सैनिक नियन्त्रण की बात न रहकर एक राजनैतिक प्रश्न बन गया। इस पर सेक्रेटरी आफ स्टेट के कमांडर-इन-चीफ को यह आज्ञा भेजी कि सेना के सब 'कमीशण्ड' आफिसर्स से इस विषय पर 'सिक्रैट गैलप पोल' लिया जाय। अतः कमांडर-इन-चीफ ने वैलेट पेपर जारी कर दिये। सबसे यह प्रश्न पूछा गया कि ये लोग देश-द्रोही हैं अथवा नहीं।

भारत सरकार का विचार था कि अधिकांश कमीशंड आफिसर्स इन्हें देशद्रोही बताएँगे। इसमें सरकार यह युक्ति समझती थी कि कमीशण्ड आफिसर्स कुछ अंग्रेज हैं और उनमें से भी अधिकांश 'मार्शल रेसिज्म' अर्थात् सैनिक वर्ग में से हैं और वे अंग्रेजी सरकार के वफादार हैं। कुछ थोड़े आफिसर्स जो पढ़े-लिखों में से युद्ध के समय भरती किये थे, उन पर सन्देह था। इस पर भी उनकी संख्या बहुत कम रह गई थी। बहुत से ऐसे अफसरों की सेवाएँ समाप्त कर दी गई थीं। इनमें से कुछ ही अभी सेना में रखे हुए थे।

इस गुप्त मतदान प्रणाली में मतदाता के नाम का पता नहीं चलता था। परिणाम यह हुआ कि अस्सी प्रतिशत से अधिक आफिसर्स ने आजाद हिन्द फौज को देशद्रोही नहीं माना।

इससे तो हिन्दुस्तानी सरकार को अपने पाँव के तले से मिट्टी खिसकती-सी दिखाई देने लगी। इसका प्रथम परिणाम यह हुआ है कि वे सब आफिसर्स जिनके विरूद्ध मुकदमे किये गये थें, बरी कर दिये गये। इसका दूसरा परिणाम यह हुआ कि साठ हजार के लगभग आजाद हिन्द सेना के अधिकारी भी छोड़ दिये गये।

इस गैलप पोल में निरंजनदेव ने न केवल अपना मत आजाद हिन्द सेना के पक्ष में दिया, प्रत्युत उसने घूम-घूमकर इस दिशा में मतदान भी कराया। अपने यूनिट के कर्नल मार्टिन से भी वह इस विषय में मिला और उससे पूछा, "आप अपना मत किस पक्ष को दे रहे हैं?"

"यह गुप्त है। बताया नहीं जा सकता।"

"परन्तु मैं तो आपसे यह प्रार्थना करने आया हूँ कि आप उन्हें देशद्रोही नहीं प्रत्युत देशभक्त घोषित करें।"

"इसमें कौन-सी युक्ति है?"

"युक्ति यह है कि भारत को स्वराज्य मिल रहा है। हम हिन्दुस्तानी उन सैनिकों को भूले हुए तो मानते हैं परन्तु हृदय से ट्रेटर नहीं मानते। हम समझते हैं कि भूल से किया गया काम सेना में क्षम्य माना जाता है। हम प्रायः बहुत गम्भीर परिस्थितियों में निर्णय करते हैं। कभी वे निर्णय विनाशकारी भी हो सकते हैं। परन्तु हमारे अधिकारी यह देखते हैं कि गलत निर्णय भूल के कारण हुआ है और इसमें निर्णय का कोई स्वार्थ निहित नहीं है। इससे हमको क्षमा कर दिया जाता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यही बात इन सैनिकों के विषय में है। ये दिल से किसी स्वार्थ के निमित्त उस सेना में भरती नहीं हुए थे जो भारत पर आक्रमण कर रही थी। ये तो हृदय से देश की सेवा के लिए लड़ रहे थे।

यह लगभग वैसे ही है जैसे डिगाल के सैनिक विदेशी सरकार के विरूद्ध फ्रांस पर ही आक्रमण करते।"

मार्टिन इस युक्ति पर चकित रह गया। उसने कहा, "मिस्टर देव! मैं तुम्हारी युक्ति करने की योग्यता की प्रशंसा करता हूँ। इस पर भी मैं बता नहीं सकता कि मैं मत किसी पक्ष में दूंगा। जो कुछ करूँगा, वह विचारकर ही करूँगा।"

निरंजनदेव को विश्वास हो गया कि मार्टिन का मत आजाद हिन्द फौज के पक्ष में ही जाएगा। इस प्रकार दिल्ली में स्थित लगभग ढाई सौ आफिसर्स से निरंजन मिला और उसका विचार था कि उनके शत प्रतिशत मत उसके पक्ष में मिल रहे हैं।

: 6 :

निरंजनदेव दिल्ली में पहुँचा और अपने काहिरा जाने से पूर्व के कागजात देखने लगा तो मिस लुई के बैंक एकाउण्ट ट्राँसफर करने के कागज निकल आये। अब युद्ध बन्द हो जाने पर उसने लुई के विषय में पता करने का यत्न किया। वह विचार कर रहा था कि यदि कहीं वह मिल जाय तो उसका रूपया उसको वापस कर दे।

इसके लिए उसने अमेरिका सीक्रेट सूचना विभाग को पत्र लिखा। उसे आशा थी कि वहाँ से उसके विषय में जानकारी मिल जाएगी।

इस पत्र का उत्तर एक मास बाद आया जिसमें लिखा था कि 1943 के आरम्भ में वह सानफ्राँसिसको से सिडनी, वहाँ से सुमात्रा और ब्रिटेविया गई थी। फिर उसकी एक रिपोर्ट सिंगापुर से, दूसरी टोकियो से और तीसर ब्लैडीवास्टोक से आई थी। वहाँ से उसने नार्थ मंगोलिया जाने की बात लिखी थी और फिर उसकी कोई सूचना नहीं आई। ऐसा अनुमान किया जाता है कि उसके साथ किसी प्रकार की दुर्घटना हो जाने से उसका देहान्त हो गया है।

निरंजनदेव के लिए यह सूचना अत्यन्त दुःखजनक थी। वह विचार करता था कि इस रुपये का वह क्या करे। उसने बैंक वालों को हिसाब बनाकर भेजने के लिए लिखा, जिससे वह जाने सके कि कुल कितना रूपया है।

तीन मास बाद हिसाब आया। कुल धन बीस मिलियन डालर और दो वर्ष का उसका ब्याज एक मिलियन दो लाख डालर ज़मा था।

उसने बैंक वालों को लिखा था कि यदि अकाउंट ट्राँसफर करने वाली किसी समय बैंक में आए तो उसे उसके दिल्ली के पते पर सूचना भेज दी जाए।

1946 का वर्ष बीत गया था। लुई की कोई सूचना नहीं मिली स्वराज्य सरकार की अस्थायी सरकार बन गई। निरंजनदेव सेना से मुक्त हो गया और उसे पुनः पी० डब्ल्यू० डी० में भेज दिया गया। यहाँ उसको उसी विभागानुसार वेतन और भत्ता मिलने लगा।

निरंजनदेव अभी महानारायण वाली कोठी में ही रहता था। कोठी अब श्यामा के अधिकार में थी। निरंजनदेव के अतिरिक्त एक अन्य किरायेदार भी उसमें रहने लगा था। दोनों मिलकर श्यामा को दो सौ रूपया मासिक किराया देते थे। श्यामा स्वयं कोठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पिछवाड़े में रहती थी। उसका पुत्र सतीश भी अब सरकारी कार्यालय में नौकर हो गया था और उसको ढाई सौ रूपया मासिक वेतन मिलता था। इस प्रकार आनन्द से माँ-पुत्र का निर्वाह हो रहा था।

स्वामी भूमानन्द जब गए तो फिर उनके दर्शन किसी को नहीं हुए। मैनादेवी चारों धाम की यात्रा करके लौटी तो तीर्थयात्रा पर जाते हुए दिल्ली से गुजरी। एक दिन वह नलिनी के पास भी रही। नलिनी ने उसे दो सौ रुपये और दिये तथा पुनः आने का निमन्त्रण दे दिया। अब वह सन् 1948 में लौटी। वह समस्त भारत के तीर्थ स्थानों की पैदल यात्रा करके लौटी थी। इस बार वह आई तो श्यामा की कोठी अभ्यागतों से भरी हुई थी। देशविभाजन के कारण अर्जुन देव का पूर्ण परिवार, चन्द्रभानु का पूर्ण परिवार लाहौर से वहां आकर टिक गया था।

निरंजनदेव की दोनों बहिनों सुधा और प्रभा का विवाह हो गया था। वे अपने-अपने पति के परिवारों के साथ वहाँ आकर कोठी के लॉन में खेमे लगा ठहरे हुए थे। अर्जुनदेव का परिवार कोठी के दो कमरों में ठहरा हुआ था। नलिनी के पिता का परिवार भी कोठी के एक कक्ष में विराजमान था। नलिनी की बहिन कामिनी भी अपने पति के परिवार के साथ कोठी के लॉन में लगे खेमे में ठहरी हुई थी।

सन् 1948 का आरम्भ था और ये पंजाब से उखड़कर आये लोग अभी अपने निवास स्थान और कारोबार के विषय में स्थिर नहीं हुए थे।

अर्जुनदेव ने सबके रहने की व्यवस्था कर दी थी। अब सब अपने-अपने रहने के लिए पृथक् स्थानों की व्यवस्था में लग गए। चन्द्रभानु इन स्थानों को ढूंढ़ने वालों में सर्वप्रथम था। वह सब्जीमण्डी क्षेत्र के एक अधजले मकान में चला गया। उसके जाते समय अर्जुनदेव ने पूछा, "कहाँ जा रहे हैं आप?"

"बिरला मिल के समीप एक मकान अधजला पड़ा हुआ है। आधा गिर गया है और आधा खड़ा है। दरवाजे और चौखट सब जल गए हैं। उस मकान पर अभी तक किसी ने अधिकार नही किया है।"

"किसी ने बताया आपको यह मकान?"

"सतीश आज प्रातःकाल आया था। कहता था कि एक मकान है। यदि थोड़ा साहस करें तो मिल सकता है। मैं उसके साथ देखने के लिए गया। देखकर मैंने कहा, साहस तो मैं कर सकता हूँ, परन्तु किवाड़ और चौखट के लिए रूपया चाहिए। मेरा अनुमान है कि उसमें एक सहस्र रूपया लग जाएगा। उसने मुझे रूपया देने का वचन दिया है। आज उसने दो सौ रूपया भी दिया है। मैं लकड़ी लेकर वहां रख आया हूँ। कुछ ईंट और सिमेंट भी रख आया हूँ नलिनी की माँ अभी वहीं पर है। मैं शेष बच्चों को लेने के लिए आया हूँ।"

अर्जुनदेव मुख देखता रह गया। वह इस लूट-खसोट को अनियमित मानता था। इस समय सतीश और निरंजनदेव दफ्तर से लौट आए थे। उनसे बात हुई तो दोनों ने यही राय दी कि चन्द्रभानुजी ने ठीक किया है।

सतीश का कहना था कि वे अपना मकान सही सलामत किसी मुसलमान को देकर आए हैं। उसके बदले में अधजला मकान ले रहे हैं। यह वह कोई पाप नहीं कर रहा। अनेकों अन्य विस्थापित ऐसा ही कर रहे हैं। मकान के नीचे दुकानें हैं। वे किराए पर दे दी जाएँगी उससे इनको कुछ आय हो जाएगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरंजनदेव ने अपनी राय देते हुए कहा, "इस समय इतने लोग पंजाब से दिल्ली में आ गए हैं कि उनके लिए सरकार प्रबन्ध नहीं कर सकती। एक पुनर्वास मन्त्रालय खोला गया हैं। परन्तु वह तो सरकारी महकमा है। उसकी व्यवस्था करने में पाँच-दस वर्ष लग जाने सहज हैं। तब तक के लिए जिसके जहाँ सींग समाएँ, बैठ जाना चाहिए। फिर सरकार से निपट लिया जाएगा।

"जितना रूपया व्यय हो उसका सारा हिसाब रसीद आदि के साथ रखना चाहिए। जिससे कि समय पर उसका क्लेम किया जा सके।"

अर्जुनदेव ने इसका प्रतिवाद नहीं किया और चन्द्रभानु अपने बच्चों को लेकर वहाँ चला गया।

अगले दिन सतीश वहाँ गया तो उसने दो सौ रूपया और चन्द्रभानु को लेकर कहा, "यथाशीघ्र दरवाजे आदि बनवाकर रहने लायक बना लीजिए। जितनी जल्दी आप रहने लायक बना लेंगे उतना ही आपका कब्जा पक्का होता जाएगा।"

चन्द्रभानु का लाहौर वाला मकान केवल दो सौ गज भूमि पर था। वह मकान छः सौ वर्ग गज में था और तिमंजिला था। चन्द्रभानु ने सबसे पहले नीचे की दीवार और दरवाजे ठीक करवाए। पहले ही दिन उसने दो कमरे ठीक करवा उनको ताला लगा दिया। इसके बाद पिछले कमरे बनवाकर वह अपने पूर्ण परिवार को वहाँ लाकर रहने लगा। तब उसने ऊपर की मंजिल ठीक करनी आरम्भ कर दी।

चन्द्रभानु के जाने का प्रबन्ध होते-होते फरवरी 1948 आ गई। इस समय माई कल्याणी तीर्थयात्रा से लौटी तो वह कुछ बीमार प्रतीत हुई। नलिनी ने कहा, "माँ! कुछ दिन यहाँ ठहरकर स्वास्थ्य ठीक कर लो।"

"क्या होगा स्वास्थ्य, ठीक हो जाने पर?"

अर्जुनदेव भी कल्याणी की बात सुन रहा था। उसने पूछा, "माई! क्या मिलता है इस तीर्थयात्रा से?"

"धूर्त, ठग, बदमाशों और दुराचारियों की संगति और भगवान के नाम को कलंकित करने वाले पुजारियों के दर्शन।"

"तो क्या लाभ हुआ इतना कष्ट भोगने से?"

"लाभ भी हुआ है। जीवन के दो वर्ष व्यतीत हो गए- कुछ सुन्दर स्थानों के दर्शन हो गए और भिन्न-भिन्न प्रकार के जीव जन्तुओं के दर्शन से ज्ञानवृद्धि हुई है।"

"तो आप रेल-यांत्रा क्यों नहीं करतीं?"

"पैसा कहाँ से लाऊँ? रोटी माँगने से मिल जाती है, यही बड़ी बात है। दो वर्ष में नलिनी ने चार सौ रूपया दिया है, उससे वस्त्रादि और कभी-कभी भिक्षा न मिलने से निर्वाह होता रहा है। अभी उसमें से कुछ रूपया मेरे पास बचा है।"

"अपने पति का कुछ पता है आपको?"

"अब तो मेरा पति मेरा भगवान है। कमल के पिता तो ऐसे ही चलते-चलते संगत में आ गए थे। वह संगति छूट गई है। अब उसकी कोई लालसा भी नहीं रही।"

नलिनी ने अपनी बात दोहराते हुए कहा, "माँ! कुछ दिन यहाँ रह जाओ।"

"तुम कहोगी तो रह जाऊँगी। जानती हो क्यों?" तुम्हारे पति ने मेरा उस संगति से उद्धार किया था जिसमें मैं नीचे की ओर ही जा रही थी।

"जब निरंजन ने बताया कि हमारी सब मुसीबत कमल के पिता की खराब कमाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कारण है तो मैं उसको छोड़ देने का निश्चय कर बैठी थी। इस पर भी डरती थी कि संसार में अकेली क्या करूँगी? एक दिन मैंने कमल के पिता से पूछा, यह तो बता दिया कि हम अपनी सम्पत्ति का दान कर दें, किन्तु उसने यह तो बताया ही नहीं कि इसके विना हम निर्वाह कैसे करेंगे?

"इस पर कमल के पिता ने कहा कि मैं संन्यासिन बन जाऊँ। मैंने जब खाने की समस्या बताई तो कहने लगा कि उसका प्रबन्ध परमात्मा कर देगा। फिर मेरे सामने अकेलेपन की वात आई। उसके विषय में उसने कहा कि परमात्मा सबके साथ सब समय संग-संग रहता है। अकेले वे होते हैं, जिनका परमात्मा पर विश्वास नहीं। जो परमात्मा को सर्वव्यापक मानते हैं वे तो जहाँ भी जाते हैं, उसे अपने साथ खड़ा देखते हैं।"

"सो नलिनी बेटा! मैंने कल कमल के पिता से कह दिया, कि वे सब कुछ जानते हुए भी धन-दौलत के साथ इस प्रकार चिपटे हुए हैं कि उनको गोद लिया हो। मैंने कह दिया कि मैंने तो संन्यास ले रही हूँ।"

"वे पूछने लगे कि संन्यास लेकर मैं कहाँ जाऊँगी? मैंने बताया कि तीर्थयात्रा करने जाऊँगी। उनका कहना था कि अकेली तीर्थयात्रा के लिए जाने में तो भय की सम्भावना है तो मैंने निरंजन की बात दुहरा दी। वे कहने लगे कि फिर मुझे उनकी आवश्यकता नहीं है तो मैंने कह दिया कि मैं उन्हें मरते समय रोक लूं अथवा वे मुझे मरते समय रोक लें तो बात हो सकती है। किन्तु जब हम यह नहीं कर सकते तो समझ लेना चाहिए कि कुछ वर्ष पहले ही बिछुड़ गए हैं।"

"उन्होंने मुझसे जाने के समय के बारे में पूछा तो मैंने कह दिया कि परसों मकर सक्रान्ति है, मैं उसी दिन घर छोड़ दूँगी। उन्होंने स्वीकृति दे दी।"

"उससे अगले दिन वे आर्यसमाज मन्दिर में गये और स्वामी मुनीश्वरानन्दजी से तय कर आए और संक्रान्ति के दिन हम दोनों ने सन्यास ले लिया। मैंने उनको पहले ही बता दिया था कि मैं उनके साथ नहीं जाऊँगी। उन्होंने पूछा था कि मैं कहाँ जाऊँगी। मैंने बताया कि यहाँ से पैदल हरिद्वार, वहाँ से उत्तरकाशी फिर चारों धामों की यात्रा पर।"

"वे फिर कभी मिलने के विषय में कहने लगे तो मैंने उन्हें समझाया कि वह झूठी मोह-ममता है। इसी प्रकार जिस प्रकार नदी में बहती हुई दो लड़कियाँ मिल जाती हैं, वैसे ही हमारे साथ हुआ है और हम नहीं जानते कि कहाँ-कहाँ जा रहे हैं।"

अर्जुनदेव मुख देखता रह गया। उसको एक बात सूझी। उसने पूछा, "माई कुछ कल्याण कार्य भी तो किया करो।"

"किया करती हूँ। पहले अपना कल्याण कर रही हूँ। सुख-दुःख, शोक, मोह, लोभ, हानि को समान समझने का यत्न कर रही हूँ। जब अपने मन को ऐसा बना लूँगी तो फिर किसी दूसरे का कल्याण भी करने का यत्न कर पाऊँगी।"

माई कल्याणी को वह कमरा दे दिया गया जो चन्द्रभानु ने खाली किया था।

अर्जुनदेव के दोनों दामाद सरकारी नौकर थे और दोनों को क्वार्टर मिले तो वे अपने-अपने परिवार लेकर चले गये।

: 7 :

सन् 1948 की वर्षाऋतु आ गई। एक दिन सतीश निरंजनदेव के पास आकर बैठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। निरंजनदेव अपने सिटिंग रूम में बैठा सानफ्रांसिसको के बैंक को पत्र लिख रहा था। युद्ध-बन्द हुए तीन वर्ष से अधिक हो गए थे और समय व्यतीत होने के साथ उसको अमेरिकन अधिकारियों के अनुमान ठीक प्रतीत होने लगे। वह अब योजना बनाने लगा था कि किस प्रकार लुई के धन का अमेरिका में प्रयोग करे। पिछले वर्ष हिसाब आया था। इस वर्ष पुनः हिसाब मँगवाने के लिए लिख रहा था।

इस समय सतीश आया और चुपचाप निरंजनदेव के समीप बैठ गया। पत्र लिखकर लिफाफे में बन्द कर उस पर बैंक का पता लिखा तो सतीश ने पूछा, "भैया! इस बैंक से क्या काम है?"

"वहाँ कुछ रूपया जमा है, जो कोई सज्जन मेरे पास अमानत रख गए थे। वह अभी तक लेने के लिए नहीं आए। मैं उनका हिसाब देखा करता हूँ।"

"कितना रूपया है?"

"इक्कीस मिलियन और दो सौ हजार डालर।"

"डालर?"

"हाँ।"

"और अमानत रखकर वह कहाँ चला गया है?"

"चन्द्रलोक में।"

"हँसी मत करो भैया! इन रूपयों की बात सुनकर मेरे मस्तिष्क में रक्त प्रवाह बढ़ रहा है।"

निरंजनदेव ने हँसते हुए कहा, "छोड़ो इस रुपये की बात। बोलो इस समय किसी काम से आए हो अथवा ऐसे ही?"

इससे सतीश को अपने आने का प्रयोजन स्मरण हो आया बोला, "सोने की चमक में मैं अपना काम ही भूल गया था। भैया! मैं विवाह करना चाहता हूँ।"

"बहुत अच्छी बात है।"

"आप बड़े भाई हैं। आपकी सहायता के बिना तो विवाह हो नहीं सकेगा।"

"यदि तुम्हारा चुनाव ठीक हुआ तो अपनी सामर्थ्य के अनुसार मैं अवश्य सहायता करूँगा।"

"चुनाव तो अच्छा है, आप उसे खराब नहीं कहेंगे। हाँ, मेरी सिफारिश करनी होगी। न पिता हैं न कोई बहिन-भाई। माँ है, पर वे माई कल्याणी के साथ संन्यासिनी बनने लगी हैं। अब आप ही है जो इस नौका को पार लगा सकते हैं।"

"बताओ, कौन है वह?"

"नलिनी भाभी की छोटी बहिन भामिनी।"

निरंजनदेव ने कुछ क्षण विचार किया और बोला, "सम्बन्ध तो ठीक है। लड़की दसवीं पास कर चुकी है। इसमें तुम्हें मेरी सहायता की आवश्यकता क्यों पड़ गई? तुमने तो चन्द्रभानु के लिए बहुत कुछ किया है। वे तुम्हें इंकार तो नहीं करेंगे।"

"इन्कार तो नहीं किया। परन्तु वे कहते हैं कि घर के किसी बड़े आदमी के द्वारा बात करो तो उस पर विचार किया जा सकता है। मैं माँ के पास गया था। उस समय माई कल्याणी माताजी को संन्यास लेने के लाभ बता रही थीं। इस कारण उन्होंने कह दिया कि उन्हें मैं संसार से विरक्त होने दूं। इस कारण अब आपके पास आया हूँ।"

"अच्छा ठहरो, नलिनी से राय कर लें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नलिनी आई तो निरंजनदेव ने उसे बैठाकर पूछा, "जानती हो यह कौन हैं?"

नलिनी इस प्रश्न का आशय न समझते हुए मुस्कराकर मुख देखती रही। निरंजनदेव ने कहा, "ये हैं सतीशकुमार। माया का भाई। माया बहिन हैं न, तो यह मेरा भाई हुआ। यह अपने विवाह का प्रस्ताव लेकर आया है। बताओ तुम क्या कहती हो?"

"मैं क्या कहूँगी! मेरी लड़की तो अभी बहुत छोटी है।"

"परन्तु नलिनी! घर में और लड़कियाँ भी है। उदाहरण के रूप में बहिन भामिनी। अब बोलो क्या कहती हो?"

"वह तो बड़े तेज मिजाज की है। क्या सतीश को पसन्द है?"

"पहले तुम और हम पसन्द कर लें तो फिर उससे बात कर लेंगे। देखो एक और तो वह मेरी साली है और विवाह हो गया तो वह भाभी बन जाएगी। इसलिए देख लो, देवरानी के रूप में अपनी बहन तुम्हें कैसी लगेगी?"

"मुझे तो बहुत अच्छी लगेगी। किसी दिन उसने इसके कान मरोड़ दिए तो यह रोता हुआ आया तो फिर क्या करूँगी। देवर की बात का अनादर करूँगी तो आप नाराज हो जाएँगे और बहिन को कुछ कहूँगी तो वह कहेगी कि इतना तो पहले ही जानती थी।"

सतीश और निरंजनदेव हँसने लगे। हँसते हुए सतीश ने कहा, "भाभी! तुम्हारे पास शिकायत लेकर तो तब ही आऊँगा, जब कान खिंचकर फिर खिंचवाने होंगे।"

"पिताजी से बात कर ली है?"

"उनसे बात करने के लिए ही भैया को कष्ट देने के लिए आया हूँ।"

"मैं समझती हूँ कि यह काम हो जाना चाहिए।"

"जुग-जुग जियो भाभी!"

निरंजनदेव बोला, "तुम कह रहे हो कि माँ संन्यास ले रही हैं?"

"हाँ, माई कल्याणी इसके लिए बहुत प्रोत्साहित कर रही हैं।"

"तो एक बात करनी होगी।"

"क्या?"

"इस कोठी की आय से तुम्हारी पत्नी और उसके बाल-बच्चों का पोषण नहीं होगा। इस धन का प्रयोग आज से ही समाप्त होना चाहिए।"

"यदि माँ गई तो वे इस कोठी को दान कर जाएँगी। यदि न गईं तो तुमको किराया देकर इस कोठी में रहना होगा अन्यथा किसी अन्य स्थान पर निवास करना होगा।"

"भैया! दान-दक्षिणा की बात तो आप स्वयं कर लेना। हाँ, मैं अपने लिए कहता हूँ कि इसमें से एक कौड़ी भी नहीं लूँगा।"

"तो तुम्हारा विवाह एक सप्ताह के भीतर हो जाएगा।"

"भैया! यदि हो सके तो आज भामिनी के पिताजी से बात पक्की कर आओ। कहीं ऐसा न हो 'फिर पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत'।"

"क्यों, बहुत मन भा गई है भामिनी?"

"भाभी! वह तो आपसे भी सुन्दर है।"

"ओह! तो यह बात है।"

मुस्कराता हुआ सतीश अपने कमरे की ओर चला गया। निरंजनदेव को सतीश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का कथन—'फिर पछताये होत का जब चिड़िया चुग गई खेत' कानों में कुछ खटका। इस कारण उसने चाय पी और सीधे सब्जीमण्डी का रास्ता पकड़ा।

चन्द्रभानु ने सारे मकान की मरम्मत कर ली थी। नीचे की दुकानें किराये पर दे दी थीं। ऊपर की तीन मंजिलें किराए पर चढ़ा दी थीं। नीचे की मंजिल में वह स्वयं रहने लगा था। निरंजनदेव ने द्वार खटखटाया तो सुभद्रा ने द्वार खोला। उसके भीतर जाने पर उसके लिए चाय का प्रबन्ध होने लगा। निरंजनदेव ने कहा, "मैं चाय पीकर आया हूँ। पिताजी कहाँ हैं?"

"वह अपर की मंजिल पर एक किरायेदार से मिलने के लिए गये हैं।"

"कितने किरायेदार रहते हैं मकान में?"

"तीन तो ऊपर की मंजिल पर रहते हैं। उनसे तीन सौ रूपया किराया मिलता है। नीचे चार दुकानें हैं, उनसे दो सौ रूपया मिलता है।"

"फिर तो आनन्द से निर्वाह हो रहा होगा।"

"हाँ बेटा! ईश्वर की कृपा है।"

"इस मकान के विषय में कोई पूछ-ताछ तो नहीं हुई?"

"हाँ, पुनर्वास मन्त्रालय के कुछ लोग आये थे। भामिनी के पिता उनसे कुछ निश्चय कर रहे हैं। ऊपर की मंजिल वाले बाबू शोभाराम इसमें हमारी सहायता कर रहे हैं"

तब तो ठीक है। कब तक नीचे आ जायेंगे वे। मुझें उनसे काम था।

"क्या काम है? अगर बहुत जल्दी हो तो बुलवा देती हूँ।"

"नहीं, इतनी जल्दी नहीं।"

"इसके बाद इधर-उधर की बातें होने लगीं। निरंजनदेव ने पूछा, "अब तो भामिनी को पढ़ाया जा सकता है।"

"इसके तो विवाह का प्रबन्ध हो रहा है?"

"कहाँ?"

"इस समय चन्द्रभानु नीचे आ गया। उसके हाथ में दो साड़ियाँ थीं। एक तिलई की और दूसरी छपी हुई। दोनों मुर्शिदाबाद रेशम की थीं।"

चन्द्रभानु ने निरंजनदेव को देखा तो साड़ियाँ अपनी पत्नी को रखने के लिए देकर स्वयं वहीं पर बैठ गया। निरंजनदेव ने कहा, "माताजी कह रही थीं कि भामिनी का विवाह हो रहा है। कहाँ हो रहा है?"

"यहीं ऊपर की मंजिल पर एक बाबू शोभाराम रहते हैं। बहुत ही भले आदमी हैं। कमालिया, पश्चिमी पंजाब के रहने वाले हैं। पुनर्वास मन्त्रालय में नौकरी करते हैं।"

निरंजनदेव का मुख उतर गया। बहुत देर तक विचारकर उसने पूछा, "पिताजी! कभी सतीश ने आपसे इस विषय में कुछ कहा था?"

"हाँ, वह तो उस दिन से ही पीछे पड़ा हुआ है। जबसे उसने इस मकान पर कब्जा करने तथा उसकी मरम्मत करने में सहायता दी थी। पर निरंजन बेटा! वह लड़का उससे कहीं अच्छा है।"

"उसे मिला सकते हैं आप?"

इस समय तो वह कहीं बाहर जा रहा है। यह साड़ियाँ उसने ही लेकर दिखाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए भेजी हैं। यदि कुछ गड़बड़ न हुई तो शीघ्र ही विवाह हो जाएगा।"

"आपने सतीश को किसी प्रकार का आश्वासन दिया था क्या?"

"आरम्भ में तो मैंने उसे आशा दिलाई थी। परन्तु चार-पाँच दिन हुए, मैंने उससे कहा था कि वह किसी घर के बड़े आदमी को भेजकर बात करे।"

"तो शोभाराम ने किसी बड़े आदमी को भेजा है क्या?"

"उसका तो कोई है ही नहीं।"

"सतीश का भी तो कोई नहीं है। यह शोभाराम पढ़ा हुआ कितना है?"

"सुना था कि एम० ए० पास करके नौकर हुआ था।"

"इस पर भी आपने उस अपरिचित व्यक्ति से भामिनी का विवाह करना उचित समझा।"

"मुझे वह सतीश से कहीं अच्छा प्रतीत हुआ है। एक सौ पच्चीस रूपया महीना तो मकान का किराया देता है। उसका रहन-सहन भी धनी-मानियो जैसा प्रतीत होता है।"

"किन्तु आपको यह विदित नहीं कि उसको क्या वेतन मिलता है और वह क्या काम करता है?"

"निरंजन बेटा! उसे देख लो, फिर आगे बात करना।"

"अच्छी बात है। आपकी इच्छा है तो दिखा दीजिए। उसमें क्या गुण-दोष हैं, यह मैं नहीं जानता। परन्तु आपके व्यवहार में दोष प्रतीत हुआ है। आपने अपनी बड़ी लड़की से भी इस विषय में राय नहीं की।"

चन्द्रभानु मुख देखता रह गया। निरंजनदेव उठ खड़ा हुआ। चन्द्रभानु उसको छोड़ने के लिए बाहर तक आया। वे अभी घर से निकल ही रहे थे कि ऊपर की मंजिल से तीन युवक हँसते हुए नीचे उतर आये। चन्द्रभानु और उसके साथ एक व्यक्ति को खड़ा देख वे चुप हो गए। चन्द्रभानु ने आवाज दी, "शोभारामजी! देखिए आपका इनसे परिचय करा दूँ।"

अपने साथियों को छोड़कर शोभाराम आगे बढ़ आया। चन्द्रभानु ने कहा, "ये हैं लेफ्टिनेंट निरंजनदेव, मेरे बड़े दामाद।"

"और निरंजनजी! ये हैं शोभारामजी। अभी मैं इनकी ही बात कर रहा था।"

निरंजनदेव ने हाथ जोड़कर नमस्कार की। शोभाराम ने निरंजनदेव से हाथ मिलाया और बोला, "तो आप ही युद्ध पर गए हुए थे? कुछ तो इन्होंने आपके विषय में बताया था। आप कभी दर्शन दीजिए, अभी तो मैं सिनेमा देखने जा रहा हूँ।"

"तो फिर कभी आपके दर्शन करूँगा।" मैं इस समय पी० डब्ल्यू डी० में हूँ। वैसे मैं चौंतीस सिविल लाइन्स में रहता हूं। कभी उधर आइये तो दर्शन दीजिए।"

"अच्छी बात, अब समय हो गया है।" इतना कह शोभाराम अपने मित्रों के साथ चला गया।

इतना कह शोभाराम अपने मित्रों के साथ चला गया।

जब वह चला गया तो निरंजनदेव ने कहा, "इसकी आयु तो बहुत बड़ी लगती है। मैं समझता हूँ कि पैंतीस वर्ष से अधिक होगी। मेरी आयु अभी बत्तीस भी पूरी नहीं हुई हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आयु कोई खास अधिक नहीं है निरंजन! लड़का बहुत अच्छा है। इसने हमारी बहुत सहायता की है।"

निरंजनदेव लौटकर नलिनी को चन्द्रभानु के निश्चय की बात बताते हुए बोला, "सतीश ने विलम्ब कर दिया।"

"क्या विलम्ब किया है उसने?"

"यही कि भामिनी के पिता के धनी हो जाने से पहले ही विवाह का प्रस्ताव कर देना था।"

"तो क्या बहुत धनी हो गए हैं वे?"

"यह तो मैं जानता नहीं इस पर भी पाँच सौ रूपया मासिक उनकी मानसिक गगरी को भरकर ऊपर से छलकने लगा है?"

"वह लड़का कैसा लगा है आपको?"

"देखने में तो खराब मालूम नहीं होता। इस पर भी उसकी आयु पैंतीस वर्ष से अधिक ही होगी।

नलिनी विस्मय से मुंह देखती रह गई। उसने केवल यह कहा, "मैं कल जाकर अपने आप बताने का यत्न करूँगी।"

"मैंने भी विचार किया था कि उसके विषय में स्वतन्त्र रूप से जाँच कराऊँगा और उसकी अन्य बातों को ज़ानने का यत्न करूँगा। परन्तु यह विचारकर कि—'तुम कौन? खामखाह!'—वाली बात न हो जाय, चुप रह गया हूँ।"

"आपने तो सतीश को वचन दिया है कि एक सप्ताह में उसका विवाह हो जाएगा।"

"भूल कर बैठा हूँ। मैं यह समझता था कि तुम्हारे पिता तुमसे और मुझसे राय किये बिना लड़की के विषय में निश्चय नहीं करेंगे।"

"तो सतीश को अब क्या कहेंगे?"

"यही कि यहाँ तो अब उसके विवाह की आशा नहीं की जा सकती। मैं कहीं अन्यत्र यत्न करूँगा।"

:8:

अगले दिन निरंजनदेव के आफिस चले जाने पर और बच्चों के स्कूल चले जाने के बाद नलिनी अपने पिता के घर जा पहुँची। चन्द्रभानु कहीं बाजार गया हुआ था। भामिनी मध्याह्न का भोजन कर रही थी। भामिनी का बड़ा भाई अपने पिता के साथ गया हुआ था। छोटा भाई स्कूल गया हुआ था और सुभद्रा मशीन पर सीं रही थी।

साधारण शिष्टाचार के उपरान्त नलिनी ने उलाहना देते हुए कहा, "माँ! भामिनी के विषय में बताया भी नहीं और तैयारी आरम्भ कर दी है?"

"बेटा! जहाँ संयोग होता है वहाँ स्वयमेव बात हो जाती है। सतीश ने तो वहाँ कोठी में ही मुझसे बात की थी। कुछ दिमाग में बात बैठी ही नहीं। एक दिन उसने बहुत मिन्नत की तो मैंने कह दिया कि जब तक रहने के लिए कोई मकान नहीं मिल जाता तब तक उसकी बारात का स्वागत कहाँ करेंगे?"

"इस पर तो अगले दिन उसने यह मकान दिखाकर इस पर कब्जा करने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह दिया। इसकी मरम्मत करने के लिए थोड़ा-थोड़ा करके दो हजार रूपया भी दिया। इसके बाद भी वह कहता रहा। परन्तु यह ऊपर वाले बाबू को आये दो मास हो गए हैं और अब बात पक्की हो गई है। भामिनी का तो उससे मेल-जोल भी हो गया है। पिछले शनिवार ये दोनों एक साथ ही सिनेमा देखने के लिए भी गए थे। भामिनी प्रसन्न प्रतीत होती है।"

बात को इस सीमा तक गई सुन नलिनी ने कुछ नहीं कहा। उसने घर आकर सतीश को बुला उससे पूछा, 'अब कहीं अन्यत्र विवाह की बात करें?

"भाभी! यह विवाह नहीं होगा। प्रातःकाल निरंजन भैया ने मुझे बताया तो मैं दफ्तर में पता करने के लिए गया था। शोभाराम तो काफी बड़ी आयु का व्यक्ति प्रतीत होता है। वह मैट्रिक तक पढ़ा हुआ है। पहले पंजाब में नौकरी करता था और फिर यहाँ आकर नौकर लग गया है। वह है तो क्लर्क ही। उसको सवा दो सौ रूपया मासिक वेतन मिलता है और वह रहता है रईसों की भांति। इस बात का रहस्य मुझे अभी प्राप्त नहीं हुआ। शीघ्र ही इसका भी पता करूँगा। मुझे कुछ ऐसा लगता है कहीं कुछ धोखा हो रहा है।"

"पर सतीश! तुम क्या भामिनी का विचार छोड़ नहीं सकते?"

सतीश नलिनी का मुख देखने लगा। फिर कुछ विचार कर बोला, "भाभी! आप कहती है तो मैं छोड़ सकता हूँ। दूसरों के छिद्रान्वेषण करने में मुझे कोई मजा नहीं आता। मैं तो अब भाभी की बहिन के विचार से ही यह कर रहा था।"

"मेरी राय मानो तो इस बात को छोड़ो। तुम्हारे भैया से कह कर कहीं अन्यत्र प्रबन्ध करवाऊँगी। तुमको थोड़ा धीरज रखना चाहिए।"

सतीश ने अपने मन से भामिनी का विचार निकाल दिया। इसके कुछ ही दिनों बाद श्यामा ने भगवे वस्त्र धारण किये और कल्याणी के साथ चल दी। हरिद्वार के किसी महन्त के नाम उसने सिविल लाइन्स की कोठी कर दी। महन्तजी दिल्ली आए और निरंजनदेव तथा किरायेदारों से मिल कोठी का कब्जा ले वे भी चले गए।

नलिनी का विचार था कि उसको भामिनी के विवाह के अवसर पर निमन्त्रण आएगा। परन्तु दो मास की अवधि बीत जाने पर भी कोई निमन्त्रण नहीं आया। उन्हें विस्मय हो रहा था। अर्जुनदेव अब दिल्ली में बर्न एण्ड कम्पनी में नौकरी करने लगा था। एक दिन वह निरंजनदेव और नलिनी से पूछने लगा, "तुम लोग लाला चन्द्रभानु से मिलते रहते हो अथवा नहीं?"

"दो मास से अधिक हो गये हैं, उनसे मिले।" निरंजन ने बताया।

"और तुम नलिनी!"

"मुझे इनसे एक दिन कम हुआ है। किन्तु बात क्या है पिताजी?"

"मैं आज चाँदनी चौक से गुजर रहा था कि उसे टोकरे में केले बेचते हुए देखा है।"

"सत्य?" विस्मय से नलिनी ने पूछा।

"मैं आज सांयकाल जाकर पता करूँगा।" निरंजनदेव ने कहा।

निरंजनदेव गया और रात को बहुत विलम्ब से लौटा। नलिनी चिन्ता कर रही थी। निरंजनदेव ने कहा, "मैं उनके मकान पर गया तो पता चला कि वहाँ कोई और ही रहता है। एक दुकानदार से पूछने पर पता चला कि ऊपर रहने वाले शोभाराम ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकान अपने नाम एलाट करवा लिया है। उसने पुलिस की सहायता से चन्द्रभानु के परिवार को धक्के दे-देकर बाहर निकलवा दिया था। रात-भर उसका परिवार सड़क पर पड़ा रहा। अगले दिन वे बैलगाड़ी में अपना सामान लादकर कहीं चले गये थे। दुकानदार ने बताया कि उसको पता चला है कि काले पर्वत पर कहीं झोंपड़ी डालकर वह रह रहा है।

"मैं काले पर्वत पर गया तो वहाँ बहुत ढूँढ़ने पर तुम्हारी माताजी दिखाई दीं। उन्होंने बताया कि पिता और पुत्र दोनों सब्जीमण्डी से फल लेकर चाँदनी चौक में घूम-घूमकर बेचा करते हैं। भामिनी वहाँ से एक रात कहीं लापता हो गई है। वह ढूँढने पर भी मिली नहीं। छोटे का स्कूल भी छूट गया है।"

"मेरे चलने से पहले ही लालाजी और महेन्द्र आ गये। उन्होंने अपने फलों के छाबड़े एक ओर रखे और लेट गये। मैंने मकान की बात चलाई तो कहने लगे कि इस समय मैं थक गया हूँ। कल किसी समय कोठी पर आऊँगा तब बात बताऊँगा।

"मैं वापस लौट आया हूँ।"

अगले दिन सतीश को भी इस विषय में पता चला तो वह उनसे मिलने के लिए आया और आकर बोला "मुझे सन्देह है कि भामिनी के घर से लापता होने में शोभाराम का हाथ है। यदि कहें तो मैं इसका पता लगा सकता हूँ।"

"कैसे पता करोगे?"

"मेरा एक मित्र उसके कार्यालय में कार्य करता है।"

"तब तो अवश्य पता करो। यह पुण्य का कार्य होगा।"

चन्द्रभानु निरंजनदेव से मिलने के लिए नहीं आया। निरंजनदेव एक सप्ताह की प्रतीक्षा के उपरान्त पुनः काले पर्वत पर जाने का विचार कर रहा था कि एक दिन सतीश ने आकर बताया, "भैया! भामिनी का पता तो चल गया है, परन्तु बात बहुत भयंकर है।"

"क्या?"

"वह करौलबाग के एक मकान में शोभाराम के मित्र की पत्नी बनकर रहती है। इस पर भी उसके पालन-पोषण और उसके साथ भोग करने के लिए पाँच व्यक्ति है। वे सब वहाँ जाते रहते हैं और उन्होंने उसका नाम द्रौपदी रख दिया है। वे पाँचों स्वयं को पंच पाण्डव कहा करते हैं।"

"शोभाराम ने अपने विभिन्न नामों से दिल्ली में अपने नाम दस मकान अलाट करा रखे हैं। उनसे उसको लगभग चार सहस्र रूपया मासिक की आय होती है।"

"दफ्तर वालों को यह सब विदित है क्या?"

"नहीं, पाँचों पाण्डव ही यह बात जानते है। उनमें से मेरे एक मित्र का मित्र हैं। जब मैंने उसे बताया कि वह लड़की मेरी दूर की बहिन है तो वह सब पता करके आया है। आज उसने मुझे वह मकान भी दिखाया था और घटनावश उसी समय शोभाराम भी उस मकान में प्रविष्ट हो रहा था।"

सतीश के सहयोग से निरंजनदेव और अर्जुनदेव ने एक योजना बनाई। अगले दिन वे तीनों गए और चन्द्रभानु को चाँदनीचौक से ढूँढ़कर उसको करोलबाग थाने में ले गए और उससे रिपोर्ट लिखवाई कि उसकी लड़की भामिनी जो कि नाबालिग है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको शोभाराम भगाकर ले गया है। उसने उसे छिपाकर करोलबाग में रखा हुआ है।

इस पर केस रजिस्टर किया गया और लेन-देन की बात कर रात के ठीक आठ बजे उस मकान पर छापा मारा गया। पाँचों पाण्डव और द्रौपदी बहुत ही असभ्यतापूर्ण स्थिति में पकड़ लिये गये। रात भर पाँचों को हवालात में रखा गया। भामिनी की जमानत लेकर अर्जुनदेव उसको अपनी कोठी पर ले आया।

अगले दिन बहुत प्रातः निरंजनदेव पुनर्वास मन्त्री की कोठी पर जा पहुँचा। मन्त्री महोदय उड़ीसा के रहने वाले भद्र पुरूष थे। निरंजनदेव ने शोभाराम के कई मकान अपने नाम एलाट करने की बात बताई। सब्जीमण्डी वाले मकान का पूर्ण इतिहास बताया। इस पर मन्त्री ने जाँच करने का वचन दिया।

निरंजनदेव ने उससे कहा, "वह बात कार्यालय के कई अन्य अधिकारियों की जानकारी में हो रही है। सम्भव है कुछ अन्य लोग भी हों जिन्होंने इसी प्रकार किया हुआ हो। ऐसी स्थिति में विभागीय जाँच तो असफल रहेगी। वे सब एक-दूसरे की बात को छिपाने का यत्न करेंगे। इस कारण मेरा एक सुझाव है।"

"बताइये।"

"आज आप कार्यालय खुलते ही स्वयं चलकर जाँच करें तो मैं शोभाराम को रंगे हाथों पकड़वा दूँगा।"

"यह तो बहुत ही भद्दी बात हो जाएगी।"

"तो फिर यह बात तो हो सकती है कि पुलिस में रिपोर्ट लिखवा देता हूँ और साथ ही पुलिस की जाँच समाचार-पत्रों में छपवा देता हूँ।"

ये दोनों बातें मन्त्री महोदय को पसन्द नहीं थीं। वे मन्त्रालय में इस प्रकार की गड़बड़ का शोर मचने देना नहीं चाहते थे। उसे चुप देख निरंजनदेव ने उठते हुए कहा, "मुझे खेद है कि मैंने व्यर्थ ही आपको कष्ट दिया। मैं इसके लिए क्षमा याचना करता हूँ।"

"तो क्या करेंगे आप?"

"निस्सहाय व्यक्ति की भाँति ईश्वर से प्रार्थना करूँगा कि वह आपको सुमति प्रदान करे।"

मन्त्री ने घंटी बजाई तो एक अन्य वृद्ध महाशय वहाँ पर आ गये। मन्त्री ने कहा, "ये मेरे पी० ए० है। आप इनको ले जाइये।"

"क्या करेंगे ये?"

"जाँच करके मुझे रिपोर्ट देंगे।"

"यदि कोई कागजात इस प्रकार के पकड़े गये कि जिन पर सन्देह हो उनको मुहरबन्द कर सम्बन्धित व्यक्ति को निलम्बित करने का इनको अधिकार है क्या?"

"यह तो बहुत मुश्किल है।"

"फिर इनको भेजने का लाभ ही क्या है? वे कागज गुम कर दिए जाएंगे। समय पर वे अधिकारी अपना वक्तव्य बदल देंगे और सब प्रमाण भी समाप्त कर देंगे।"

"भाई! अब स्वराज्य है। अंग्रेजी हुकूमत नहीं है जो ऐसी धाँधली मचा सके।"

"क्षमा करें। स्वराज्य के अर्थ सुशासन नहीं होते। शासन की परीक्षा लेने के लिए ही तो आपसे कह रहा हूँ। किन्तु आपको साहस नहीं होता कि आप उसकी परीक्षा करें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और यदि आपकी रिपोर्ट गलत निकली तो?"

"मैं भी सरकारी नौकर हूँ मुझ पर गलत रिपोर्ट करने का आरोप लगाकर मुझे डिसमिस किया जा सकता है।"

"यह लिखकर दे सकते हैं?"

"जी।"

"अच्छी बात है। लिखित रिपोर्ट दे दो।"

निरंजनदेव ने वहीं से एक कागज लेकर लिखा, "पुनर्वास मन्त्रालय के नई दिल्ली कार्यालय के एक क्लर्क शोभाराम ने अपने कई झूठे नाम लिखाकर मन्त्रालय में होने का अनुचित लाभ उठाकर कई मकान जो मुसलमानों के चले जाने पर ख़ाली पड़े हुए थे, एलाट करवा लिये हैं। मेरे पास उन मकानों के पते और प्रमाण है। एक ही व्यक्ति ने कई नाम लिखाकर नगर में कई मकान ले लिये हैं।"

"यदि मैं अपने इस आरोप को सिद्ध न कर सकूँ तो झूठी रिपोर्ट करने वाले एक सरकारी अफसर को जो दण्ड हो वह मुझे स्वीकार है।"

"यह बहुत गम्भीर आरोप है।" मन्त्री ने डराते हुए कहा।

"मैं जानता हूँ। मैं इनको पुलिस के द्वारा सिद्ध कर सकता हूँ। परन्तु आपके मन्त्रालय को बदनाम होने से बचाने के लिए कहने आया हूँ।"

मन्त्री महोदय ने समय देखा। उस समय पौने दस बज रहे थे। वह उठा और बोला, "चलो चलें।"

ठीक दस बजे ये तीनों पुनर्वास मन्त्रालय के कार्यालय के बाहर जा खड़े हुए। चपरासी ने तो पहले पहचाना नहीं। ये लोग सीधे भीतर जा पहुँचे। सतीश और उसका मित्र शम्भूनाथ वहाँ खड़े थे। पूर्ण कार्यालय में हलचल मच गई। शम्भूनाथ ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया और उसको शोभाराम की मेज पर ले जाकर बोला, "यह मेज शोभाराम की है। इसकी दराजों में प्रमाण विद्यमान हैं जिनसे यह आदमी सरकार से धोखा करने वाला सिद्ध हो सकता है।"

"आप कौन हैं?"

"मैं इसी विभाग का एक क्लर्क हूँ।"

"तुम यह मुखबरी क्यों कर रहे हो?"

"यह मैं उसके मुख पर ही बताऊँगा जिसके विपरीत यह आरोप लगा रहा हूँ।"

"कहाँ है शोभाराम?"

"इस समय हवालात में है।"

"क्यों?"

"उसे किसी नाबालिग लड़की के अपहरण के अपराध में पकड़ा गया है।"

"इस विभाग का सुपरिण्टेण्डेण्ट कौन है?"

एक मोटा-सा आदमी काँपता और हाथ जोड़ता हुआ आगे आ गया। मन्त्री ने कहा, "इस मेज की दराज़ खुलवाओ।"

"यह तो आपत्तिजनक होगा।"

"क्या आपत्तिजनक है?"

"क्लर्क की अनुपस्थिति में उसकी तलाशी नहीं ली जा सकती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु यह उसकी व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं है। यह सरकारी मेज है। इसमें सरकारी कागजात होने चाहिएँ।"

"इसमें उसका अपना ताला लगा हुआ है।"

"इसको तोड़ डालो।"

सुपरिण्टेण्डेण्ट परेशानी में मन्त्री का मुख देख रहा था। इस पर तो मन्त्री को विश्वास हो गया कि कुछ गड़बड़ है। उसने चपरासी से कहा, "इस दराज का ताला तोड़ दो।"

चपरासी भी खड़ा रहा। शम्भूनाथ बाहर गया और कार्यालय के काम में लगे हुए एक बढ़ई को बुला लाया। बढ़ई ने अपने औजार से दराज खोल दिया।

शम्भूनाथ ने उनमें से एक फाईल निकाल मन्त्री महोदय के हाथ में देते हुए कहा, "इसमें सब प्रमाण विद्यमान हैं।"

मन्त्री ने अन्य कागजों को एक लिफाफे में रखवा लिया और उन्हें अपने साथ ले अपने कमरे में चला आया। जहाँ बैठ वह फाइल का निरीक्षण करने लगा। निरंजन आदि बाहर रहे।

शम्भूनाथ ने पाँच एलाटमेंट सर्टिफिकेट दिखाकर कहा, "ये पाँचों शोभाराम के अपने नाम पर हैं। यह बात इन मकानों में रहने वाले किरायेदार, जो प्रतिमास उसका किराया देते है, लिखकर देंगे। यह तुरन्त और चुपचाप किया जाए तो ठीक रहेगा। अन्यथा वह किरायेदारों को सिखा देगा।"

"यह तो पुलिस केस है। इस आदमी को ससपैंड कर शेष बात पुलिस के हाथ में दे रहा हूँ।"

शम्भूनाथ चुप रहा। सचिव ने पार्लियामेंट पुलिस थाने में सुपरिण्टेण्डेंट को फोन करके सारा केस उसके हवाले कर दिया।

बड़ी मुश्किल से दस हजार की जमानत पर बाहर आकर शोभाराम जब अपने कार्यालय पहुँचा तो उसको वहीं पर पकड़ लिया और पुनः उसे हवालात में डाल दिया गया।

: 9 :

सब्जीमण्डी के मकान के विषय में जांच की गई तो विदित हुआ कि उस इलाके के इन्स्पेक्टर ने रिपोर्ट की थी कि लाहौर किशनगंज का रहने वाला चन्द्रभानु शरणार्थी सं० एल० पी० 1295 जो मकान नं० 30 नजफगढ़ रोड पर रहता है। उसने इस मकान पर 2345 रू0 व्यय किया है और इसे रहने लायक बनाया है। और वह इसके एलॉटमेंट के लिए प्रार्थी है। इसी रिपोर्ट के ऊपर अकारण यह आज्ञा हो गई कि मकान कमालिया निवासी शोभाराम को एलॉट किया जाए।

इस पर चन्द्रभानु की प्रार्थना पर पुनः विचार होने लगा। लगभग एक वर्ष के विचार और मुकद्दमे के बाद शोभाराम को पुनर्वास मन्त्रालय से निकाल दिया गया। अपहरण के मामले में उसे पाँच वर्ष का दण्ड मिला।

इस अवधि में भामिनी नलिनी के पास ही रहती थी। भामिनी का इसमें इतना ही दोष समझा जाता था कि घर से निकलते समय वह समझती थी कि शोभाराम उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने वाला पति है और वह उसके पास ही जा रही है। बाद में जब उसके साथ दुराचार किया जाने लगा तो वह समझ गई कि वह अब इस काम के योग्य ही रह गई है। अतः अब उसके यहाँ से भाग कर जाने में कोई प्रयोजन नहीं।

इस पर भी नलिनी इस स्थिति में सतीश से उससे विवाह कर लेने के लिए कहना उसके प्रति अन्याय समझती थी। इस प्रकार मुकद्दमा पूर्ण हो जाने भी वह अपनी बहिन के घर अविवाहित ही पड़ी रही।

इस प्रकार 1950 आ गया। लुई का जो रूपया सानफ्रांसिसको में जमा था, वह अब पच्चीस मिलियन हो गया था। निरंजनदेव गम्भीरतापूर्वक विचार कर रहा था कि उसे अमेरिका की यात्रा करनी चाहिए और उस रुपये का प्रबन्ध कर आना चाहिए। यह विचार कर उसने पासपोर्ट के लिए प्रार्थना कर दी। आने-जाने का हवाई जहाज का किराया तीन हजार रूपया बनता था। उसने इन रूपयों का भी प्रबन्ध कर लिया।

एक दिन वह कार्यालय से लौटा तो सानफ्रांसिसको बैंक से उसके नाम एक केवल आया पड़ा मिला। जिसमें लिखा था कि 'लुई हांगकांग में है, उसे पोस्टमास्टर के द्वारा पत्र भेजा जा सकता है और आपका पता उसको भेज दिया गया है।'

निरंजनदेव घबरा उठा। उसने उसी समय एक हांगकांग और दूसरा बैंक को तार कर दिया। लुई को उसने लिखा कि उसने सानफ्राँसिसको बैंक को लिख दिया है कि जितना रूपया तुम्हें चाहिए दे दे। इसी प्रकार बैंक को उसने लिख दिया कि लुई को जितना रूपया चाहिए वह ड्राफ्ट द्वारा भेज दिया जाय।

परिणाम यह हुआ कि एक सप्ताह बाद कलकत्ते से लुई का तार आया कि रात को नौ बजे पालम हवाई अड्डे पर मिलें।

टैक्सी कर निरंजनदेव नलिनी को साथ ले पालम हवाई अड्डे पर जा पहुँचा। हवाई जहाज से निकलते ही निरंजनदेव को देख लुई उससे गले मिली। निरंजनदेव ने उसे सावधान करते हुए कहा, 'मेरी पत्नी से परिचय नहीं करोगी?"

लुई समझ गई कि अपने मनोद्गारों में बहती हुई वह भूल कर बैठी है। इस कारण उसने निरंजनदेव के समीप ही खड़ी नलिनी को हाथ जोड़कर नमस्कार किया। नलिनी उसके लिए हार लाई थी। वह उसने उसके गले में डाला और उससे गले मिली।

मार्ग में टैक्सी में बैठे हुए लुई ने कहा, "मैं नरक से निकल साढ़े छः हजार मील की पैदल यात्रा कर हांगकांग पहुँची हूँ और छः वर्ष बाद आपके दर्शन कर पाने पर अपने होश-हवास खो बैठी थी।" फिर उसने नलिनी को सम्बोधित करते हुए कहा, "आपको तो अपने पति की निष्ठा पर किसी प्रकार का सन्देह नहीं करना चाहिए। ये देवता पुरूष है।"

"परन्तु आपने क्या किया है? मैं अपने पति को आपसे अधिक ही जानती हूँ।"

"हाँ, मेरा तो इनसे केवल डेढ़ वर्ष तक का ही सम्पर्क है। इस पर भी स्त्री-सुलभ ईर्ष्या का ध्यान कर आपसे डर गई थी।"

निरंजनदेव ने बात बदलते हुए, "लुई! इतने वर्ष तक तुम कहाँ गायब रही हो। मैंने अमरिकन सैनिक गुप्तचर विभाग से मालूम किया था तो उन्होंने बताया कि तुम ब्लैडिवोस्टोक पहुँच गई थीं। किन्तु उसके बाद तुम्हारा कोई पता नहीं चला। उन्होंने इतना तक कह दिया कि तुम्हारे मृत होने की सम्भावना है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने एक बात आपसे सीखी है। जब कोई बात अपने वश की न रहे तो उसे परमात्मा के अर्पण कर दो। इससे वही होने लगता है जो उसे स्वीकार हो। चार वर्ष तक यही मेरे साथ हुआ है। फिर एकाएक मैं छूट गई। भूल से में वहाँ से पैदल ही चल पड़ी। रूस और चीन के उन इलाकों को लाँघती हुई जहाँ सौ-सौ मील तक कोई मानव दिखाई नहीं देता मैं चली आई। वहाँ भी चलती गई जहाँ कम्युनिस्ट चीन पर अपना दबदबा स्थापित कर रहे हैं। मैं कहीं कम्युनिस्ट और कहीं नैशनलिस्ट बनती चली आई हूँ। डेढ़ वर्ष चलने के बाद मैं हांगकांग पहुँची तो सीधी ब्रिटिश कॉउन्सिल के कार्यालय में चली आई। वे लोग मेरी कहानी सुनकर चकित रह गये।"

"जब आपका केबल आया तो मेरी जान में जान आई। मैंने सानफ्रांसिसको से रूपया मँगवाया और आपकी ओर चल पड़ी। वास्तव में आपको पाकर मैं पागल हो गई थी।"

लुई के लिए उन्होंने पहले ही एक पृथक् बैडरूम का प्रबन्ध कर रखा था। घर पहुँचन पर उन्होंने उसे भोजन कराया और वह सो गई। अगले दिन निरंजनदेव ने कहा, "लुई! यहाँ तो तुम्हें वह आराम नहीं मिल सकता जिसकी तुम अभ्यस्त हो। कहो तो यहाँ के किसी अच्छे होटल में प्रबन्ध कर दूँ?"

"जो आराम मुझे पिछले छः वर्षो में मिला है उसकी तुलना में तो यह स्वर्ग है। और फिर मैं आपके साथ रहने के लिए आई हूँ। रहने के लिए होटल तो दुनिया भर में बहुत हैं।"

"तो बहुत कष्ट रहा है?" नलिनी ने पूछा।

"अपनी कहानी सुनाने के लिए मैं तैयारी कर रही हूँ।"

"तैयारी?"

"हाँ, इतनी कष्टकारक और दुःखप्रद घटनाओं को स्मरण करने के लिए भी प्रयत्न करना पड़ता है।"

"तो मत सुनाओ। हमें आपको अपने समीप पाकर ही असीम आनन्द प्राप्त हो रहा है। उसे कटु करने की आवश्यकता नहीं।" नलिनी ने कह दिया।

रोमांच अनुभव करती हुई लुई बोली, "यदि मैं उन घटनाओं को भूल जाऊँ तो सुख का अनुभव करूँगी। परन्तु वे मेरे मस्तिष्क पर भूत बनकर सवार रहती हैं। मैं चाहती हूँ कि उनको लेखनीबद्ध कर अपने मन का बोझ हलका कर लूँ। परन्तु अभी नहीं। कुछ दिन आपके परिवारिक जीवन में रम जाऊँ तभी यह करूँगी।"

कुछ दिन तक निरंजनदेव के आफिस चले जाने पर और बच्चों को स्कूल भेजने के बाद नलिनी लुई को दिल्ली के ऐतिहासिक महत्व के स्थान दिखाने चली जाती। शाम को सब एक साथ चाय पीते और बातें होती रहतीं। रात्रि का भोजन कर लुई अपने शयनागार में चली जाती और अपनी आप बीती लिखने बैठ जाती।

"रात को बहुत देर तक लिखती रहती हैं आप?"

"हाँ, मैं अपनी गुप्तचर जीवन की कथा लिख रही हूँ?"

"तब तो यह बहुत ही रोचक होगी।"

"यह तो लिखने के बाद ही कहा जा सकता है कि रोचक होगी अथवा शिक्षाप्रद।"

निरंजन ने पूछा, "भारत में कब तक रहने का विचार है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब तक आप रखेंगे अथवा जब तक यह जीवन है।"

"मैं इस देश के साथ बँधा हुआ हूँ। यहाँ से जाने में अनेकों बाधाएँ हैं।"

"एक-दो बाधाओं का उल्लेख तो कीजिए।"

"मुझे इस देश के प्रति प्रेम है।"

"किन्तु अमेरिका चले जाने पर वह प्रेम कम तो नहीं हो जाएगा?"

"लुई! तुम एक बार कहती थीं कि तुम मुझसे प्रेम करती हो।"

"वह तो मैं अब भी कह सकती हूँ।"

"और इस कारण मेरे समीप ही रहना चाहती हो।"

"हाँ।"

"मुझसे दूर रहने पर यह प्रेम शिथिल हो जाएगा?"

लुई हँस पड़ी। फिर वह बोली, "आपमें और हिन्दुस्तान में अन्तर है। हिन्दुस्तान में आपके प्रेम की प्रतिक्रिया उत्पन्न नहीं होगी। परन्तु आपके हृदय में मेरे प्रेम की प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है।"

"यह तुम जानती हो?"

"हाँ, और यह भी जानती हूँ कि वह प्रतिक्रिया एक दिन आपको मेरा वास्तविक पति बनाकर रख देगी।"

निरंजनदेव हँस पड़ा। लुई कहती गई, "मैं निरन्तर यत्न कर रही हूँ कि मुझे वह सफलता प्राप्त हो।"

"परन्तु लुई! मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। तुम्हारा आदर करता हूँ और तुमको अपना निकटस्थ मानता हूँ। मन से हम एक हैं। कदाचित् हमारी आत्मा भी एक हो। केवल शरीर का सम्बन्ध ही नहीं है न? इस श्रेष्ठ सम्बन्ध को पाने के बाद घटिया सम्बन्ध के लिए यत्न करना कौन-सी बढ़िया बात है?"

"आप बुद्धिजीवी व्यक्ति हैं, इस कारण आप मन की भावना को नहीं समझ सकते। मैंने अपने मन की बात नलिनी को बता दी है। वही आपको समझाये तो कदाचित् आप समझ सकें।"

"देखिये, मैं आपके सामने एक प्रस्ताव रख रही हूँ।"

"क्या?"

"मैं, आप और नलिनी बहिन वर्ल्ड टूर पर चलें। यहाँ से हम इंडोनेशिया, सिंगापुर, हांगकांग, टोकियो, पीकिंग, सियोल, कनाडा, अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, योरोप और फिर मिस्र, ईरान से होते हुए यहाँ आ जाएँ। बच्चों को या तो अपने पिताजी के पास छोड़ जाइए अथवा किसी होस्टल में प्रविष्ट करा दीजिए।"

"क्या होगा इस दर-दर की मिट्टी देखने से?"

"एक तो मेरे गाढ़े पसीने की कमाई सार्थक होगी, दूसरे आपके कुछ पुराने गले-सड़े विचार बदलेंगे। और..."

"और क्या?"

"और हम यहाँ से तीन जाएँगे और चार लौटने की आशा करेंगे।"

"तो कहीं लुई ने विवाह करने का निश्चय कर लिया है?"

"निश्चय हुए तो आठ वर्ष हो चुके हैं। अब उस निश्चय को कार्यन्वित करने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चय कर विचार कर रही हूँ।"

"ओह! 'गैस्ट विद-आउट विद ए होस्ट'।"

"होस्ट है। उसको राजी करना है।"

"परन्तु वह यत्न भारत से बाहर जाकर ही क्यों और रुपये की होली करके ही क्यों?"

"यह प्रस्ताव तो नलिनी बहिन का है। वह दुनिया देखना चाहती हैं।"

"तब तो बात विचारणीय हो गई है।"

"तो विचार करिए। देखिए, मैंने आपको बीस मिलियन डालर दिया था व्यय करने के लिए। आपने उसे बैंक में जमा कर रखा है दूसरों के भोग के लिए। भला यह कहाँ की अक्लमन्दी है?"

"मैं तो जब निराश हो गया था तो उस धन का ट्रस्ट बना किसी लोक कल्याण के कार्य में व्यय कर देना चाहता था।"

"तो आप उस धन के प्रथमदाता की इच्छाओं की अवहेलना करते? मैंने वह धन मिस्टर देव को उनके और उनके परिवार के भोग करने के लिए दिया था और आप उसको व्यर्थ में फेंकने वाले थे। अमेरिका जैसे धनी देश में दूसरों के उपभोग के लिए देना चाहते थे। यह तो परमात्मा की असीम कृपा है मैं जीवित बचकर आ गई हूँ और आपके पास रखी अमानत का सदुपयोग करने का आग्रह कर रही हूँ।"

"मैंने समझा था कि तुमने वह धन बिना किसी शर्त के मुझको दिया है।"

"आपने गलत समझा था। मैंने कहा था कि मैंने अपनी जान को हथेली पर रखकर वह धन कमाया है। इस कारण आपको देकर उसका सदुपयोग कर रही हूँ।"

: 10 :

इस सब वार्तालाप में नलिनी मुस्कराती हुई दोनों की बातें सुनती रही। उसी रात निरंजनदेव ने अपनी पत्नी से पूछा, "क्या-क्या बातें तुम लुई के साथ करती रहती हो?"

नलिनी खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसने कहा, "मैं देख रही हूँ कि यह प्रेम और विचार का संघर्ष कैसे चल रहा है और किस परिणाम पर पहुँचता है?"

"मैं यह नहीं पूछ रहा कि तुम क्या देख रही हो। मैं तो यह जानना चाहता हूँ कि तुम इसमें क्या सहयोग दे रही हो?"

"मैं सर्वथा निष्पक्ष हूँ। मैं उस बेचारी की आपके प्रति श्रद्धा और भक्ति को देख रही हूँ और आप जो शारीरिक प्रलोभनों को परास्त करने में शौर्य दिखा रहे हैं, उसका भी दर्शन कर रही हूँ।"

"वह मेरी खुशामद करती रहती है कि मैं आप पर से धर्म का प्रतिबन्ध उठा लूँ। मैंने इतना स्वीकार कर लिया है कि यदि आप उसे अपनी पत्नी बनाना चाहेंगे तो मैं बाधक नहीं बनूंगी। मुझे इसमें सुख ही होगा।"

"वह कहती है कि शरीर, मन और आत्मा से पृथक् अवश्य है, परन्तु इसकी आवश्यकताओं के लिए वह मन और आत्मा को बंधक नहीं रख सकी। इस कारण शरीर की माँग उससे ही पूरा करेगी, जिसके लिए मन और आत्मा अर्पण कर चुकी है। आप नहीं मानेंगे तो वह शेष जीवन ऐसे ही निकाल देगी, जैसे अब है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बहुत विकट समस्या में फँस गया हूँ। जब तुम समीप नहीं थीं तब तो मेरा मन विचलित नहीं हुआ था। और अब तुम्हारी उपस्थिति में वह मेरे मन पर प्रभाव उत्पन्न करती जाती है। तुम उसकी वकालत करती प्रतीत होती हो।"

"जी नहीं, वकालत नहीं। मैं इसमें कुछ नहीं कर रही। उसका ही कहना है कि जब मैं वहाँ नहीं थी और मेरी सहमति से वह परिचित नहीं थी तब उसने अपने मन पर नियन्त्रण कर रखा था। अब वह यत्न कर रही है।"

"मैं समझता हूँ कि माया की भाँति इसको भी टाल दूँगा। परन्तु उसके लिए कोई स्वीकार योग्य पति मिले तभी तो न?"

"व्यर्थ है। माया की बात दूसरी थी। वह हिन्दुस्तानी और हिन्दू संस्कारों में पली हुई लड़की थी। उसको आप टाल पाए थे। यह तो अपने पूरे बल और युक्ति से आक्रमण कर रही है। मैं समझती हूँ कि पराजित होने की अपेक्षा तो स्वेच्छा से समर्पण करना उत्तम होगा।"

निरंजनदेव ने इसका कुछ उत्तर नहीं दिया। जबसे उसने लुई को पालम हवाई अड्डे पर देखा था वह अनुभव कर रहा था विगत छः वर्षों में उसके सौन्दर्य और आकर्षण में वृद्धि हुई है। कई बार वह उससे सम्बन्ध बनाने के विषय में विचार कर चुका था और संस्कारों के बल से ही वह इस विचार को अपने मस्तिष्क से निकाल पाया था।

यह शारीरिक विवशता नहीं थी। प्रत्युत्त एक प्रकार का अपने पर आश्रित के साथ सहानुभूति, एक सुहृदय प्राणी के साथ सहयोग और एक सुस्वर मन से साध ध्वनित होने की बात थी। इस पर भी वह यह विचार करता था कि क्या आवश्यकता है शारीरिक सम्बन्ध की? उसका शरीर तो तृप्त है। आज उसकी समझ में आया था कि यह उसकी तृप्ति का नहीं, प्रत्युत किसी दूसरे की तृप्ति का प्रश्न था।

इतना विचार कर लेने पर वह सोने का यत्न करने लगा। बहुत रात गये उसको नींद आई।

प्रातः तक भी वह अनिश्चित मन था। कार्यालय जाने से पूर्व वह प्रातः का आहार लेने बैठा तो सतीश आ बैठा। भामिनी रसोई घर में खाना बना रही थीं। नलिनी खिला रही थी। निरंजन और दोनों बच्चे बैठे खा रहे थे। लुई सामने बैठी थी, परन्तु खा नहीं रही थी। तीनों औरतें इनके चले जाने के बाद खाना खाया करती थीं। सतीश आया तो निरंजनदेव ने कहा, "सतीश! भोजन करोगे?"

"मैं घर से चाय आदि पीकर आया हूँ।"

"किस काम से आए हो?"

"आपसे एक बात पूछने आया था।"

"क्या?"

"मैं यह जानना चाहता था कि क्या अब मेरा भामिनी से विवाह ठीक नहीं रहेगा?"

"किस अधिकार से पूछते हो?"

"भैया छोटे भाई के अधिकार से। आपके अतिरिक्त अब मेरा कोई संरक्षक नहीं रहा। इससे पूछ रहा हूँ। हमारे कार्यालय में एक लड़की काम करती है। वह विवाह के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए कह रही है। मैं विचार करता हूँ कि यदि विवाह करना है तो भामिनी के साथ क्यों न करूँ? भामिनी उस लड़की से अधिक सुन्दर है। वैसे भी एक वर्ष से मैं उसको आपके घर में देख रहा हूँ। मुझको वह भली प्रतीत हुई है।"

"भामिनी से इस विषय पर तुमने बात की है?"

"नहीं भैया! मैं भाभी से डरता हूँ। कहीं वे इसका गलत अर्थ न लगा लें।"

"देखो सतीश! जहां तक मैं समझता हूँ यह सम्बन्ध अच्छा रहेगा। इस पर भी अपनी भाभी से पूछ लो।"

नलिनी आई तो निरंजन ने ही कहा, "सतीश पूछ रहा है कि क्या अब भी भामिनी के साथ उसका विवाह हो सकता है?"

"और आपने क्या कहा है?"

"मैंने कहा है कि इस समय नलिनी उसकी संरक्षिका है। वही बता सकती है।"

"मुझे भामिनी से और माता-पिता से पूछना पड़ेगा।"

"हाँ भाभी! आज पूछ लीजिए। मैं एक-दो दिन में ही विवाह कर लेना चाहता हूँ।"

निरंजनदेव हंस पड़ा। उसने कहा, "अधीर होने की आवश्यकता नहीं सतीश!"

सतीश गया तो लुई हंस पड़ी। उसने कहा, "आप सबको धीरज बँधाते रहते हैं या कुछ और भी करते हैं?"

इससे तो निरंजन को हँसी आ गई। वह भोजन समाप्त कर चुका था। हाथ धोकर उसने लुई से पूछा, "तो मुझे पासपोर्ट के लिए आवेदन-पत्र दे देना चाहिए न?"

दोनों औरतें उसका मुख देखने लगीं। निरंजनदेव ने पुनः कहा, "नलिनी की इच्छा दुनिया देखने की हो रही है। लुई उसको दिखाने का वचन दे रही है। तो मैं कौन हूँ उसमें बाधक बनने वाला?"

"तो यह आपने रातभर में विचार किया हैं? नलिनी बहिन ने बताया है कि आप रातभर जागते रहे हैं।"

"तो यह मेरा रहस्य तुमको बताती रहती है?"

"हम धर्म की बहिनें बन गई हैं। जिस प्रकार द्वितीय विश्वयुद्ध में मैं अमेरिकन्स के लिए गुप्तचर का कार्य करती थी वैसे आपके साथ मेरे विचार संघर्ष में यह आपके साथ गुप्तचर का कार्य कर रही हैं।"

"तो यह तुम्हें राय भी देती होंगी कि इस संघर्ष में आगे अब तुम क्या करो?"

"नहीं, गुप्तचरों का काम राय देना नहीं होता। गुप्तचर तो विपक्षी की अवस्था का वर्णन करते हैं। उस अवस्था में क्या करना चाहिए यह तो युद्ध करने वालों का विचार का काम है।"

"ओह तो मुझको भी कोई गुप्तचर रखना होगा?"

"आप भी नलिनी बहिन से काम ले सकते हैं। वैसे ही जैसे जापानी और चीनी भी मुझसे लेते थे।"

"और तुम चाहती हो कि जैसे जापानी और जर्मन हारे हैं वैसे ही मैं भी हार जाऊँ। मैं वैसे नहीं हारूँगा। मैं उनसे अधिक बुद्धिमान हूँ। जिस दिन मुझे विश्वास हो जाएगा कि मैं जीत नहीं सकता, उसी दिन मैं आत्म-समर्पण कर दूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरंजनदेव गया तो लुई ने नलिनी को गले लगा लिया। वह बोली, "हिन्दू कहते हैं कि आत्मा बार-बार जन्म लेती है। मैं कहती हूँ कि यदि यह ठीक है तो मैं जन्म-जन्मान्तर तक तुम्हारी आभारी रहूँगी।"

इस समय भामिनी आ गई। नलिनी ने तीनों के लिए भोजन लगाया और वे बैठकर खाने लगीं। नलिनी ने भामिनी से पूछा, "भामिनी! तुम सतीश से विवाह करोगी?"

भामिनी का मुख रक्तिम हो गया। वह नलिनी के मुख पर देखने लगी। नलिनी ने कहा, "सतीश अभी आया था और तुम्हारे जीजाजी से पूछ रहा था।"

"तो वह अभी भी मुझसे विवाह करने को इच्छुक हैं?"

"हाँ, वह कह रहा था।"

"मुझे भय लगता है।"

"किससे, सतीश से?"

"नहीं, अपने पूर्व कर्मों की स्मृति से।"

"उनको भूल जाओ। वह सब पिताजी की भूल का परिणाम था।"

भामिनी चुप रही। कुछ विचार कर नलिनी ने कहा, "माताजी से भी इस विषय में पूछना होगा। तुम्हारा विवाह हो जाए तो हम विश्व-भ्रमण के लिए ज़ाने का कार्यक्रम बना सकेंगे।"

"तो पूछ लो। मैं तो भाग्य भरोसे पड़ी हूँ।"

"भाग्य नहीं भामिनी! भगवान भरोसे रहो तो ठीक होगा। भाग्य को किसी ने देखा नहीं है। परन्तु भगवान को तो सब देखते हैं। पुरूषार्थ से भाग्य की विडम्बना मिट सकती है, परन्तु परमात्मा की इच्छा को कोई नहीं मिटा सकता।"

समाप्त

081
167950

Central Library
167950
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R 089.9143 GUR-B आगत संख्या 167950

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की कुछ चुनी हुई रचनाएँ

राजनीति पर आधारित

स्वाधीनता के पथ पर, पथिक, स्वराज्यदान, विश्वासघात, देश की हत्या, दो लहरों की टक्कर, दासता के नये रूप।

पौराणिक कथाओं के आधार पर

कुमार सम्भव, उमड़ती घटाएं, (राम कथा पर आधारित) अमृत-मंथन, परम्परा, अग्नि परीक्षा, (महाभारत पर) परित्राणाय साधूनाम्।

ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि पर

कुमकुम, विक्रमादित्य, पुष्यमित्र, लुढ़कते पत्थर (अशोक-कालीन), पत्रलता (हर्षवर्धन पर), गंगा की धारा (अकबर कालीन), खण्डहर बोल रहे हैं (औरंगजेब के काल पर)

सामाजिक उपन्यास

अनदेखे बन्धन, एक और अनेक, मानव, गुण्ठन, आवरण, यह संसार, धरती और धन, भगवान भरोसे, घर की बात।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

शिक्षा: एम. एस. सी.

8-12-1894 से 8-4-1989

लेखक की कुछ अन्य रचनाएँ

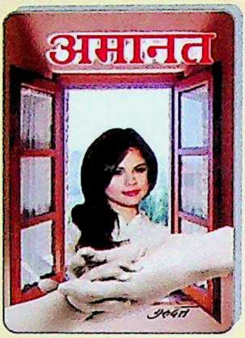

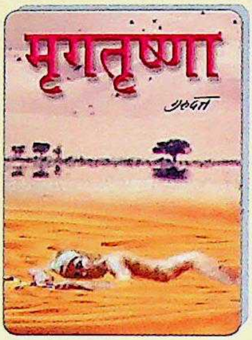

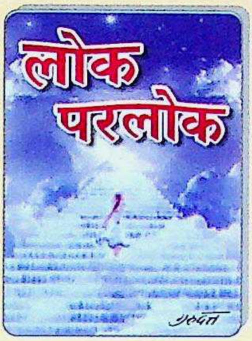

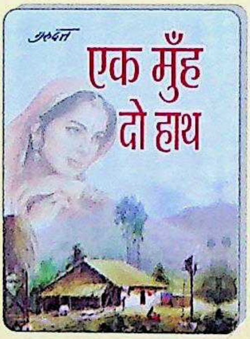

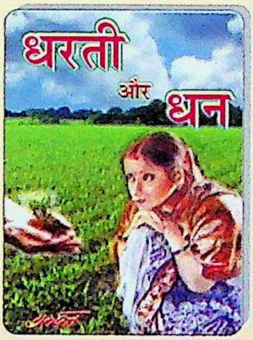

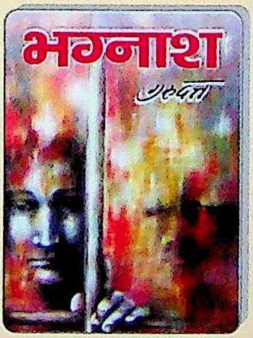

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देश बंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110 005, फोन : 23553624, 23551344
ई-मेल : indiabooks@rediffmail.com, hindisahityasadan@gmail.com
www.hindisahityasadan.com

ISBN 818838841-6

9 788188 388417

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar